व्यापारी का बेटा

व्यापारी का बेटा

लेखक :

मैक्सिम गोर्की
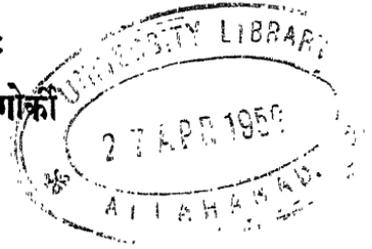
अनुवादक :

महाव्रत विद्यालंकार

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक :

प्रभात प्रकाशन

मथुरा।

★

अनुवादक :

महाव्रत विद्यालंकार

★

१९५७ ई०

★

सर्वाधिकार सुरक्षित

★

मुद्रक :

सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस,

मथुरा।

★

मूल्य :

चार रुपया पचास नए पैसे

मैक्सिम गोर्की

अलक्सेई मैक्सिमोविच पेश्कोव उपनाम मैक्सिम गोर्की का जन्म १६ (२४) मार्च १८६८ में निझनिनोवोगोरद नामक नगर में, वोल्गा नदी के तट पर एक लोहार मैक्सिम सेवातेविच पेशकोव के घर में हुआ। इनके पिता का देहान्त १८७२ में हैंजे से हो गया। इसके बाद इनकी माँ वारवारा वसीलेव्ना इन्हें लेकर अपने पीहर चली गई। कुछ काल बाद इनकी मां का भी स्वर्गवास हो गया। इसके बाद इनका लालन-पालन इनकी नानी अकूलिना इवानोव्ना कशीरिना के घर हुआ। वह महिला बड़ी समझदार और रूसी भाषा की अच्छी जानकार थी, और थी अनेक प्रकार की लोक-गाथाओं का चलता फिरता भण्डार। वह बड़े चाव से इन कहानी किस्सों को अपने दोहिते को सुनाती। गोर्की की प्रारंभिक शिक्षा अभी तीसरी कक्षा तक ही हो पाई थी कि, उनके नाना के व्यापार में घाटा पड़ने से, परिवार को गरीबी का शिकार होना पड़ा। फलत: गोर्की को बचपन से ही दौर्भाग्य, श्रम और जीवन की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। गोर्की के शब्दों में उनका बाल्यकाल हुआ ही नहीं। उनके जीवन का सूत्रपात ही कठिनाइयों और आपत्तियों से हुआ। इसका एक सुपरिणाम यह हुआ कि उनका अनुभव और सम्पर्क श्रम-जीवी जनता से बढ़ा। उनके जीवन का बहुत सा समय वोल्गा नदी के तट पर गुजरा, जहाँ उन्होंने दरबान, रसोइया, चौकीदार, तुलइय्या और केस्पियन तट पर मछुआरे के रूप में भी काम किया। जहाज पर

उनकी मित्रता स्मूरी नामक रसोइये से हुई जो पुस्तकों का बड़ा प्रेमी था। गोर्की ने उससे ही गोगल, निक्रासोव, ग्लेब और उस्पेन्सकी इत्यादि की कृतियाँ पढ़ीं। काज़ान नगर में गोर्की का स्थानीय क्रान्तिकारी विचारों वाले नवयुवकों से सम्बन्ध हो गया और उन्होंने गम्भीरतापूर्वक आत्म शिक्षण शुरू किया। तीन चार वर्ष तक उन्होंने मार्क्स तथा दूसरे सोशलिस्ट विचारकों का अध्ययन किया। १८९१ में गोर्की ने रूस की पैदल यात्रा की और वोलगा नदी के तट पर निझनी से त्सारित्सिन (वर्तमान स्तालिनग्राद) तक गए और फिर दोन, युक्राइन, बास-अराबिया, दून और पुनः कृष्ण-सागर, कुबान फौजी जार्जियन मार्ग से त्वलिसी (तिफ़लिस) पहुँचे। मार्ग में गुजारे के लिये उन्हें जो काम हाथ लगा वही किया। त्वलिसी में गोर्की को पुलिस ने अवारा-गर्दी में पकड़ लिया। पुलिस अफसर के पूछने पर उन्होंने अपनी यात्रा के लक्ष के संबन्ध में उत्तर दिया था, "मैं रूस को अच्छी तरह जानना चाहता हूँ।" वस्तुतः बात भी ऐसी ही थी। १८९२ की गर्मियों में गोर्की ने पुनः वोलगा, दोन, युक्राइन, क्रिम और कावकाज़ की यात्रा की। इन दोनों यात्राओं में गोर्की को अपने भावी उपन्यासों के लिये प्रचुर सामग्री प्राप्त हुई और उसके आधार पर ही 'मकारचूद्रा' 'चेलकश', 'बुढ़िया इजर्गिल' और 'परिणाम' इत्यादि रचनायें लिखी गईं। गोर्की की कृतियों में उनके समकालीन समाज का बहुत सजीव और वास्तविक चित्रण है। यह सत्य है कि "गोर्की की कहानियाँ उन्नीसवीं सदी के रूस का विश्व-कोष हैं।" यही कारण है कि रूसी क्रान्ति में भाग लेने वाले श्रमजीवी साहित्यकारों में गोर्की का स्थान बहुत ऊँचा है।

व्यापारी का बेटा (Foma Gordeyev)

'फ़ोमा गर्देयेव' या व्यापारी का बेटा गोर्की के प्रसिद्ध उपन्यासों में से एक है। यह १९१८ ई० में प्रकाशित हुआ। इस

उपन्यास में नवयुवक फ़ोमा गर्देयेव प्रधान पात्र है। फ़ोमा को विरासत में बाप का फलता फूलता कारोबार और प्रचुर सम्पत्ति के साथ साथ माता पिता की कमज़ोरियाँ भी सहज संस्कारों के साथ मिलीं। वह स्वस्थ और स्वतन्त्र जीवन का अभिलाषी है और यौवन की उच्छृंखलता तथा उन्माद-पूर्ण भावनाओं का भी पूरा शिकार है। न तो ठीक प्रकार उसकी शिक्षा ही हुई है और न उस पर ठीक ठीक नियंत्रण ही रहा है। पिता की असमय मृत्यु के पश्चात् उसके संरक्षण का भार उसके धर्मपिता मायाकिन पर पड़ता है, जो अपनी पुत्री ल्यूबा के साथ उसके विवाह सम्बन्ध द्वारा दोनों परिवारों की सम्पत्ति को एक कर उसे बढ़ाने की कोशिश करता है। पिता की मृत्यु के तुरंत बाद, जब कि फ़ोमा के भावुक तरुण-हृदय पर ताजा ही घाव था, मायाकिन उससे कहता है:

"तुम अब कैप्टिन हो। कैप्टिन अपनी फौजों का वीरता से नेतृत्व करता है। तुम्हारी फौज रूबलों की है और वह बहुत बड़ी है...।" और उसे फुसलाता है—"तुम्हारे पिता ने कभी तुम से कहा था कि मैं समझदार व्यक्ति हूँ और तुम्हें मेरी बात सुननी चाहिये। ...तो ध्यान रखो, मेरी बात सुनो! यदि मेरा दिमाग़ और तुम्हारी तरुणाई मिल जाएँ तो तुम्हें और मुझे महान् विजय प्राप्त होगी।"

सरमायादार समाज का सजीव चित्र

याकोव मायाकिन की स्वार्थवृत्ति और जीवन की फिलासफ़ी संसार के सरमायादारों का विश्व-चित्रण है, जिसे हम नाना रूपों, रंगों और अङ्कों में प्रचलित-पूँजीवादी विचार धारा में सर्वत्र एक जैसा ही पाते हैं। गोर्की ने तत्कालीन रूसी पूँजीवादी समाज का बहुत बारीकी से चित्रण किया है। इसमें फ़ोमा के पिता इग्नात गर्देयेव और मायाकिन के अतिरिक्त अनानी श्चुरोव,कनोव, रेझनिकोव और बैंकर मकार वब्रोव इत्यादि अनेक व्यापारी पात्रों का बड़ा सजीव चित्रण है। ये लोग रूसी

सरमायादार समाज के अग्रणी बने हुए थे और इन्होंने प्रवञ्चना, व्यभिच
तथा नाना प्रकार के भ्रष्टाचारों से पैसा पैदा किया था। इन लोगों के जी
का एकमात्र लक्ष था पैसा पैदा करना और समाज में धन के बल पर अस्तं
सामन्तवाद का स्थान लेना। सामन्तवादी तलवार के अत्याचारों के स्थ
पर वे धन के बल पर जनता का उत्पीड़न और शोषण करना चा
थे। टका धर्म, टका कर्म और टका ही उनका परम लक्ष था। फ़ोमा
पिता का मित्र और उसका ऋण-दाता अनानी श्चुरोव, जिसने अपने जी
में हत्या लूट व्यभिचार व अत्याचार द्वारा ही बीस लाख रूबल पैदा कि
थे, फ़ोमा को भी अपने ऋण के शिकंजे में कस कर निचोड़ना चाहता है
'महामहिम' पैसे की प्रशंसा में वह कहता है—

"पैसा! नौजवान, पैसा सब कुछ है। इसे अपने सामने फैला क
देखो कि इसकी क्या शक्ति है। तब तुम्हें पैसे की शक्ति पता लगेगी
पैसा ही दिमाग़ है। हजारों लोगों ने उस पैसे में, जो आज तुम्हारे प
है, जीवन डाला है। और, तुम चाहो तो चूल्हे में डालकर इसे जल
देख सकते हो। और, यदि तुम ऐसा करो तो तुम पैसे की शक्ति अनुभ
कर सकते हो। ठीक…"

उपन्यास में व्यापारी समाज की क्रियात्मक दुनियादारी
फिलासफी, जिसे मायाकिन दर्शन-विज्ञान बतलाता है, उनके धर्म, प्रे
पाप और न्याय-मीमांसा का भी गूढ़ चित्रण है। गोर्की सरमायादारों
गिद्ध-समाज के रूप में चित्रित करता है; जो समाज को, और आप
में एक दूसरे को भी, हड़पने में लगे हैं। वे ईश्वर, धर्म, दया और न्य
की आड़ में लूट शोषण और जैसे-तैसे धन-संग्रह करना चाहते हैं। माय
किन का चित्रण अधिक विशद और प्राणवान है। गोर्की के अनेक प
चित मायाकिन को किसी वास्तविक व्यापारी का चित्रण समझ रहे
जो पहिले अपने धर्म-पुत्र फ़ोमा को अपना जामाता बनाना चाहता है।

बाद में सगे पुत्र तारास के वापिस आने और नये जामाता के साथ साझे में काम शुरू कर लेने के बाद उसे विनाश के गड्ढे में धकेल देता है।

गोर्की की कला

गोर्की की भाषा बड़ी प्राञ्जल प्रौढ़, एवं सजीव है। उसमें जन-साधारण की भाषा और मुहावरों का भी अच्छा पुट है, जिन्हें हमने अनुवाद में निकटतम तत्समता देने का प्रयत्न किया है। उपन्यास यथार्थता से ओत-प्रोत है। इसमें प्रकृति, समाज और व्यक्तियों के ग्राहक चित्रण हैं और साथ ही शिक्षित तथा श्रमजीवी वर्ग का भी यथार्थ वर्णन है। यही कारण है कि नवीन श्रमजीवी समाज के महान् लेखकों में गोर्की का स्थान प्रमुख है। इन विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए हमें आशा है कि गोर्की तथा अन्यान्य रूसी साहित्यकारों की यथार्थवादी कृतियों का हिन्दी में स्वागत होगा।

अति शीघ्रता के कारण पुस्तक में यत्र-तत्र जो अशुद्धियाँ रह गई हैं उन्हें आगामी संस्करण में दूर कर दिया जायगा। आशा है, हमारे प्रेमी पाठक इस दिशा में अपने अमूल्य सुझावों से अनुगृहीत करेंगे।

दयालवास
पहाड़ी धीरज,
दिल्ली।

महाव्रत विद्यालङ्कार

अनुवादक :

श्री महाव्रत विद्यालंकार—गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी के योग्य स्नातक, योरुप एवं एशिया के चिरकालिक यात्री, सोवियत संघ में इतिहास, राजनीति एवं अर्थ शास्त्र की शिक्षा प्राप्त, दैनिक 'समाचार' के प्रवर्तक एवं 'नेताजी' के पूर्व सम्पादक, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा रूसी के श्रेष्ठ ज्ञाता एवं स्वातन्त्र्य-संग्राम के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आप अब तक अठारह ग्रन्थों का मूल रूसी से हिन्दी में अनुवाद कर चुके हैं।

१.

लगभग ६० साल गुजरे जब कि वोल्गा नदी पर रातोंरात लाखों की सम्पत्ति पैदा की जाती थी। उस समय एक बंधानी (Bailer) जिसका नाम इग्नात गोर्देयेव था, एक माल ढोने वाली किश्ती पर काम करता था, जो एक मालदार व्यापारी जायेव की थी।

गोर्देयेव एक बलवान् सुन्दर युवक था—मूर्खता से बहुत दूर। वह उन लोगों में से था जो हमेशा ही सफल होते हैं; वे सफल इसलिये नहीं कि वे प्रतिभाशाली या परिश्रमी हैं, परन्तु क्योंकि उनमें एक जबरदस्त कार्य करने की शक्ति होती है, इसलिये वे किसी काम से इन्कार नहीं करते ; वस्तुतः वे उन सब तरीकों को अपनाने से इन्कार करने में अपने को असमर्थ पाते हैं जिनसे उनका मतलब सिद्ध होता हो। उनके लिये अपनी इच्छापूर्ति के अलावा और कोई नियम नहीं होता। कभी-कभी ये लोग अपनी आत्मा से भी भयभीत होने की बातें कहते हैं और उन्हें आत्मिक संघर्ष भी सहन करना पड़ता है। परन्तु, इस संघर्ष में केवल निर्बल मनुष्य ही अपनी आत्मा पर विजय नहीं प्राप्त कर पाता; बलवान् मनुष्य अपनी उद्देश्य-सिद्धि के लिये अपनी आत्मा पर सदैव विजय पा लेता है। ऐसे मनुष्य को आत्मिक संघर्ष में कई रातें जागते हुए भले ही बितानी पड़ें, और भले ही अन्त में उसकी आत्मा की ही विजय हो ; परन्तु, यदि ऐसा होता है तो फिर भी उसके हौसले इस पराजय से नहीं टूटते और वह पहले की ही तरह जोश के साथ अपना जीवन व्यतीत करता रहता है।

फायदा ? रो लो, मगर आंसूओं से आग तो नहीं बुझती, सारी किश्तीयाँ जल जायें, मैं जरा भी परवाह नहीं करूँगा जब तक मेरे दिल में भी आग जल रही है।"

"हुं हुं" मायाक्रिन ने थोड़ा मुस्कराते हुए कहा—"जो मनुष्य ऐसा कह सकता है वह असली धनवान है, चाहे उसके तन पर एक कपड़ा तक न हो ?"

इस दस हजार रूबल के नुकसान को दार्शनिकता के साथ स्वीकार करने के बावजूद, इग्नात हर छदाम का महत्व जानता था। वह भिखारियों को भीख बहुत कम देता था और वह भी उन को जो काम करने में अशक्त हो चुके थे। अगर वह किसी ऐसे भिखारी को देखता जो काम कर सकता हो तो बड़ी कठोरता से कहता : "हटो, परे हटो ! तुम काम नहीं कर सकते ? चलो वहाँ मेरे अहाते में। वहाँ मेरे कुलियों को खाद ढोने में मदद करो, मैं तुम्हें दो कोपेक दूँगा।"

जब उसे काम करने का भूत सवार होता तो वह अपने आस-पास के लोगों के प्रति बड़ा कठोर और निर्दय बन जाता—परन्तु रुपये की खोज में वह अपने प्रति भी बड़ा निर्दय था। और, अचानक (यह प्रायः बसन्त में होता था, जब संसार सुन्दर और प्यार-भरा दिखता है, जब कि आत्मा आकाश के स्वच्छ नजारों की हल्की अनुभूति कर रही होती है) इग्नात गोर्देयेव को ऐसा महसूस हुआ कि वह अपने मामलों का मालिक नहीं, वरन् उनका घृणित गुलाम है। ऐसे समय वह विचारों में डूब जाता और अपनी भारी भौहों के नीचे से प्रश्नसूचक नजर डालता और एकदम गम्भीर और गुस्से वाला बन जाता, जैसे कि वह किसी अपने सवाल का जबाव न दे सकता हो। इस समय उसके हृदय में एक और भावना—एक भूखे जानवर की भयंकर लालची आत्मा जाग उठती। ऐसे मौकों पर वह लोगों के प्रति बड़ा असभ्य बन जाता, गालियाँ बकने लगता, दूसरों को अपने साथ शराब पिलाता, गँवारू बातें बकता और मजाक करता, और ऐसा दिखता था जैसे, कोई ज्वालामुखी उसकी भीतरी गन्दगी को बाहर फेंक रहा हो। इस समय वह ऐसा दिखता जैसे कि वह अपने

आप बनाई और अपने को बाँधने वाली जन्जीरों को तोड़ना चहाता हो, मगर तोड़ न सकता हो। उसका गन्दा, बिखरे बाल, नींद और शराब के नशे से सूजा चेहरा, बहशी आंखें, भारी और धौंकती आवाज में पैसे का ख्याल न करता हुआ, वह एक वेश्यागृह से दूसरे में जाता। जब कहीं दिल पसन्द गाने गाये जाते, तो वह पागल हो जाता, नाचता और जो सामने आता उससे लड़ने लगता परन्तु, किसी भी चीज से उसे शान्ति न मिलती।

शहर के लोगों ने उसकी इस आचार भ्रष्टता की अतियों के बारे में तरह २ की कहानियाँ बना रखी थीं परन्तु कोई भी उसके सामने न तो कठोरता से उसकी आलोचना कर सकता था और न उसके निमन्त्रण को ठुकरा सकता था। इस प्रकार कई बार वह हफ्तों तक इन्हीं कामों में डूबा रहता; और फिर अचानक शराबखानों की बदबू से भरा, उदास और हारा थका घर में आ घुसता। आंखें नीचे किये हुए, जिनसे लज्जा के अलावा और कुछ नहीं टपकता था, वह जिबह किये जाने वाले मेमने की तरह चुपचाप अपनी बीबी की झिड़कियां सह लेता फिर अपने कमरे में जाकर उसे अन्दर से बन्द कर लेता। घन्टों तक वह वहाँ ईसामसीह की पवित्र मूर्ति के सामने घुटनों के बल झुका रहता, उसका सिर घण्टों झुका रहता। उसकी बाहें उसके दोनों बगलों में लटकी रहतीं और कन्धे झुके रहते। वह एक शब्द भी नहीं बोलता था जैसे कि उसे प्रार्थना करते हुए डर लगता हो। इन मौकों पर उसकी बीबी चुपचाप दरवाजे के छेदों में से उसे देखती। कमरे में से एक बीमार थके घोड़े की भारी सांसों के समान गहरी आहें सुनाई देतीं।

"प्यारे प्रभु ! तुम अन्तर्यामी हो, सर्वदृष्टा हो" अन्त में इग्नात धीरे २ बड़बड़ाता और अपने हाथों से अपनी भारी छाती को दाब लेता।

इस प्रकार जब तक उसका प्रायश्चित जारी रहता वह पानी और रोटी पर ही रहता। हर सुबह उसकी बीबी एक बड़ी बोतल में पानी, कोई डेढ़ पाउंड भर रोटी और थोड़ा सा नमक उसके कमरे के बाहर रख देती। इस साधुओं के से भोजन को लेने के लिये वह दरवाजा खोलता और फिर अपने

को बन्द कर लेता। इन दिनों उससे कोई भी नहीं बोलता बल्कि सब लोग परे ही रहते।

कुछ दिनों के बाद वह फिर स्टाक-ऐक्चेन्ज में वापिस जाता, हंसता और मजाक करता, अनाज ढोने के ठेकों पर हस्ताक्षर करता। कारोबारी बातों पर उसकी नजर शिकारी बाज़ की सी रहती थी।

परन्तु, जीवन के इन तीनों रूपों में इग्नात के दिल में एक प्रबल इच्छा थी—वह थी पुत्र की इच्छा। ज्यों २ उसकी उमर बढ़ती गई, यह इच्छा और अधिक प्रबल होती गई। कई बार उसने यह अपनी बीबी से कहा। नाश्ते या दोपहर के भोजन के समय वह अपनी भारी मोटी गुलाबी गालों और उनींदी आँखों वाली पत्नी अकुलिना से गुस्से में कहता:

"क्यों तुझे कुछ महसूस नहीं होता?"

वह भली भांति जानती थी कि इसका क्या मतलब है, परन्तु, वह बात पलट कर जवाब देती:

"मैं कैसे, कुछ जान सकती हूँ? तुम्हारा मुक्का ही पांच सेर का है।"

"बेवकूफ, मैं तेरे पेट के बारे में पूछ रहा हूँ।"

"क्या कोई औरत इतनी मार खा कर बच्चा रख सकती है?"

"यह मार नहीं तेरा भूखों की तरह खाना है। जब पेट भोजन से भरा होगा तब बच्चे के लिये वहाँ जगह कहाँ रहेगी।"

"क्यों, पहले मेरे बच्चे नहीं हुए हैं क्या?"

"सब लड़कियाँ ही तो!" इग्नात ने तिरस्कारपूर्वक कहा—"मैं बेटा चाहता हूँ, क्या तू इस बात को समझ नहीं सकती? एक बेटा और उत्तराधिकारी। किसके लिये मैं मरने के बाद ये सब पैसा छोड़ कर जाऊंगा। कौन मेरे मरने के बाद मेरी आत्मा की शान्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करेगा? क्या यह सब गिरजे को दे दूँ? मैं उन्हें काफी दे चुका हूँ। तेरे पास छोड़ जाऊँ? तू बहुत अच्छी सरपंच बनेगी! तेरे दिमाग में तो गिरजे में भी मांस

के समोसे ही भरे रहते हैं। मेरे मरने के बाद तू झट दूसरी शादी कर लेगी और यह मेरा सारा धन किसी बेवकूफ के हाथ लग जायेगा। तू समझती है, मैं इसीलिये कमा रहा हूँ ? वाह !"

और इस प्रकार वह चिड़चिड़ा और उदास हो जाता। उसे यह विश्वास हो गया था कि उसके पीछे नाम लेवा पानी देवा बेटे के बिना उसका जीवन निरर्थक है।

नौ वर्ष के विवाहित जीवन में उसकी पत्नी ने चार कन्याओं को जन्म दिया, परन्तु, वे सब मर गईं। यद्यपि प्रत्येक प्रसूति के समय उसने इच्छा-पूर्वक उनके जन्म की प्रतीक्षा की, परन्तु उनकी मौतों पर उसने बहुत दुख नहीं मनाया। उसे लड़कियों की इच्छा नहीं थी। विवाह के दूसरे वर्ष से उसने अपनी पत्नी को मारना भी शुरू किया। पहिले पहिले वह तभी मारता था, जब उसने शराब पी होती थी। इन मौकों पर वह अपनी पत्नी को बिना किसी द्वेष भाव के इस कहावत के अनुसार मारता था: 'अपनी पत्नी को जीवन की तरह प्यार करो, परन्तु उसे सेव के पेड़ की तरह झकझोरो भी।' परन्तु, जैसे २ प्रत्येक बच्चे के जन्म के साथ उसकी निराशा बढ़ती गई, वह उससे घृणा करने लगा और पुत्र पैदा करने की असमर्थता के कारण उसे पीटने में विशेष आनन्द लेने लगा।

एक बार जब वह अपने कारोबार के सम्बन्ध में समारा गुर्वेनिया गया हुआ था, उसे संदेश मिला कि उसकी धर्मपत्नी का देहान्त हो गया है। उसने अपनी छाती पर क्रॉस का चिह्न बनाया और कुछ सोच-विचार के बाद अपने मित्र मायाकिन को लिखा—

"उसे मेरे बिना ही दफ़ना दो। सम्पत्ति पर नज़र रखना।"

वह गिरजे में गया और अंत्येष्टि क्रिया का पाठ करवाया, और जब वह अपनी दिवंगत पत्नी की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना कर रहा था, उसी समय उसने निर्णय किया कि वह जल्दी से जल्दी पुनर्विवाह कर लेगा।

अब उसकी उमर तेतालीस वर्ष की थी। वह कद्दावर, चौड़े कन्धों

और भारी भरी आवाज वाला पुरुष था। उसकी काली भौंहों के नीचे से झाँकती हुई बड़ी-बड़ी आँखों की नजर से साहस और चतुरता झलकती थी। उसके शक्तिशाली शरीर, सघन काली दाढ़ी के साथ धूप से थके चेहरे पर एक सौम्य, स्वास्थ्यपूर्ण, सुन्दरता झलकती थी। लचकदार सबल चाल और सारी आकर्षक चेष्टाओं से, उसकी शारीरिक शक्ति के नैसर्गिक आत्म-विश्वास की अनुभूति टपकती थी। स्त्रियाँ प्रायः उसकी ओर आकर्षित होती थीं, और वह भी उनकी उपेक्षा नहीं करता था।

अपनी पत्नी की मृत्यु के छः महीने होने से पहले ही उसने एक कट्टर-पंथी ईसाई कज्जाक से, जो यूराल रहता था, और जिसके साथ उसका व्यापारिक सम्बन्ध भी था, उसकी लड़की से विवाह करने की याचना की। कज्जाक तुरन्त इस विवाह के लिये तैयार हो गया, यद्यपि इग्नात की 'झक्खीपन' की नामवरी यूराल तक भी पहुँच चुकी थी। लड़की का नाम नतालिया था। वह ऊँची, सुन्दर, बड़ी-बड़ी नीली आँखों वाली तथा चेसनट रङ्ग के लम्बे बालों वाली थी—और इग्नात जैसे सुन्दर मनुष्य के लिये सर्वथा योग्य थी। वह अपनी पत्नी पर अभिमान करता था, और एक स्वस्थ पुरुष की तरह उससे प्रेम भी करता था। परन्तु, शीघ्र ही वह गम्भीरतापूर्वक उसका अध्ययन करने लगा।

उसकी पत्नी के सुन्दर अण्डाकृति चेहरे पर कभी ही हँसी दिखाई पड़ती थी। वह सदा चिंतित रहती और कभी २ उसकी नीली आँखों की शांति एक घृणा पैदा करने वाली काली नजर से भंग हो जाती। घरेलू कामों से छुट्टी पाकर वह घर के सब से बड़े कमरे में जाती, खिड़की के पास बैठ जाती और वहाँ दो-दो, तीन-तीन घण्टों तक बिना हिले-डुले चिंतामग्न बैठी रहती। यद्यपि, वह गली की ओर निहार रही होती थी, परन्तु खिड़की से बाहर होने वाली बातों और वस्तुओं से निर्लिप्त वह अपनी आत्मा में कुछ तलाश करती हुई चिन्ता-मग्न बैठी रहती। उसकी चाल अजब-सी थी। वह इस विशाल कमरे में स्वतंन्त्रतापूर्वक नहीं चलती थी परन्तु धीरे-धीरे सावधानी

के साथ चलती। घर की सजावट भारी, और मँहगे तरीके पर की हुई थी, जिसमें गँवारूपन और आडम्बर बहुत था। कमरे का सारा सामान मानो अपने मालिक की सम्पत्ति के बारे में जोर २ से चिल्लाकर बता रहा था। परन्तु, मँहगे फर्नीचर से सुसज्जित घर में यह कज्जाक स्त्री मेज़-कुर्सियों और चांदी के बर्तनों से भरी आलमारियों के बराबर तिरछी चाल से ऐसी गुजर जाती, जैसे कि उसे भय था कि कहीं यह सब समान उसे पकड़कर तोड़-मरोड़ न डाले। इस व्यापारिक शहर के शोर शराबे और धूम-धाम से उसे कोई दिलचस्पी नहीं थी। जब कभी वह अपने पति के साथ गाड़ी की सवारी पर जाती तो उसकी अपलक आंखें कोचवान् की पीठ पर ही जमी होती थीं। यदि उसका पति उससे मेल मुलाकातियों में जाने के लिये कहता, तो वह इन्कार कभी नहीं करती, परन्तु, वहां दूसरे लोगों के साथ वह बिल्कुल चुप और अलग-सी रहती, जैसी कि, वह घर पर रहती थी। यदि, मेहमान उसके घर पर आते, तो उनके सामने खाने-पीने की चीजें रख देती, परन्तु उनकी बातचीत में किसी प्रकार की दिलचस्पी नहीं लेती। वह किसी की ज्यादा परवाह नहीं करती थी। सिर्फ एक व्यक्ति, जो उसके चेहरे पर कभी जबर्दस्ती हल्की मुस्कान ला सकता था, वह था समझदार और मजाकिया मायाकिन।

"यह औरत नहीं, यह तो छड़ी है" वह उसके बारे में कहता—"जरा और ठहरो, आखिरकार जीवन भी एक होली है, और यह सन्यासिनी किसी दिन उत्तेजित हो उठेगी। अभी उसे कुछ समय चाहिये, तब हम देखेंगे कि वह कैसे २ सुन्दर फूल बखेरेगी।"

"क्यों, अश्वमुखी जी" इग्नात दिल्लगी में अपनी पत्नी से कहता—"क्या कुछ सोच रही हो ? क्या पीहर जाने के लिये उदास हो ? आओ, जरा खुश होओ।"

वह शान्त भाव से, उत्तर दिये बिना, उसकी ओर देखती।

"तुम गिरजे में बहुत समय बिताती हो। अभी गिरजे के लिये बहुत जल्दी है। तुम्हें अपने पापों के प्रायश्चित् की प्रार्थना करने के लिये बहुत समय

है। परन्तु पहिले इसके लिये कुछ पाप तो करो। यदि तुमने पाप ही नही किये तो पश्चाताप किस बात के लिये करोगी ? और यदि पश्चाताप नहीं किया तो तुम्हें मुक्ति भी नहीं मिलेगी। इसलिये आओ, जब तक जवान हो खूब पाप करो। आओ, चलो गाड़ी पर घूम आएँ, चलोगी ?"

"मेरी तबियत नहीं।"

वह उसके बराबर बैठ जाता, उसके गले में बाँहें डाल देता। परन्तु, वह ठण्डी बैठी रहती और जवाब में न कुछ कहती, न करती।

"नतालिया, क्या बात है, तुम इतनी उदास क्यों रहती हो ? क्या मैं मनहूस हूँ, क्यों ?"

"नहीं", वह संक्षेप में जवाब देती।

"तो फिर क्या बात है ? क्या तुम अपने लोगों से दूर होने के कारण उदास हो ?"

"नहीं, ऐसी कोई खास बात नहीं।"

"फिर तुम क्या सोचती हो ?"

"कुछ नहीं।"

"फिर भी बात क्या है ?"

"कुछ नहीं।"

एक दिन उसने उसे पूरी तरह अपने दिल की बात कहने के लिये मजबूर किया। वह बोली :

"मेरे दिल में एक हल्की-सी भावना है। मुझे सब चीजें अस्पष्ट सी दिखाई देती हैं......मुझे ऐसा लगता है कि ये सब चीजें अवास्तविक हैं।"

उसने हाथ के इशारे से दीवार, फर्नीचर और आसपास की चीजों की ओर इशारा किया। इग्नात उसके कहे पर विचार किये बिना एक हल्की हँसी हँसा और बोला :

"खैर, यह सब ग़लत है। यह सब असली, अच्छा, ठोस और बहुमूल्य है। परन्तु, यदि तुम चाहो तो मैं इसे जला दूँगा; मैं इसे बेच दूँगा; मैं इसे दान कर दूँगा और सब चीजें नई खरीद लूँगा। क्या तुम ऐसा चाहती हो ?"

"ऐसा क्यों करोगे ?" उसने बिना किसी आवेश के कहा।

उसे अचम्भा होता था कि इतनी नौजवान, सुन्दर और स्वस्थ स्त्री इस प्रकार घबराहट में बिना कुछ चाहे कैसे रह सकती थी, जो गिरजे के अलावा न कहीं जाना और न कुछ देखना पसन्द करती थी।

"और, थोड़ा ठहरो जब तुम्हारे, मेरा एक पुत्र हो जायेगा तो तुम्हारा जीवन ही बदल जायेगा।" उसने उसे सांत्वना दी—'ऐसा लगता है कि तुम कुछ काम न होने से दुःखी और उदास रहती हो; वह तुम्हें बहुत काम में लगाये रक्खेगा। तुम मुझे एक बेटा दोगी न, हाँ जरूर ?"

"यदि परमात्मा ने चाहा", उसने आँखें नीची करते हुए कहा।

कुछ समय बाद अपनी बीबी के सदा उदास और चिन्तित रहने वाले चेहरे से इग्नात चिढ़ने लगा।

"क्यों, भगतिन जी ! ऐसे चेहरा लटकाये क्यों बैठी हो ? तेरी चाल ऐसी है मानो तू शीशे पर चल रही है, और तेरी नजर ऐसी है जैसे तूने हत्या की है। तू तन्दरुस्त, मोटी, नौजवान स्त्री है; परन्तु तुझमें जिन्दगी नहीं, तू निपट मूर्ख दीखती है।"

एक दिन वह शराब के नशे में लड़खड़ाता घर आया, और उसे प्रेम करने लगा। उसकी बीबी ने आनाकानी की, वह नाराज हो गया।

"नतालिया ! जरा होश करो", वह चिल्लाया। वह उसके चेहरे की तरफ बिना घबराहट के देखती रही और पूछने लगी :

"और अगर मैं होश न करूँ तो क्या करोगे ?"

इग्नात उसकी निडरता और रूखे शब्दों से बहुत गुस्से में आ गया।

"क्या कहा ?" वह जोर से चिल्लाया और उसकी ओर बढ़ा।

"शायद, तुम मुझे मारना चाहते हो ?" उसने बिना नजर गिराये और वहीं कदम जमाये कहा।

इग्नात अपने गुस्से के सामने लोगों को काँपते देखने का आदी था। अपनी बीबी के शान्त और तिरस्कारपूर्ण चेहरे को देखकर वह पागल हो उठा।

"मैं तुझे अभी बताता हूँ !" वह अपनी बाँह उठाते हुये चिल्लाया। उसकी बीबी ने बिना किसी जल्दी के ऐन वक्त पर उसके आघात को रोका और बांह पकड़ कर उसे परे धकेल दिया।

"अगर मुझे जरा भी छुआ तो ख़बरदार, मेरे पास फिर कभी भी न भटकना।" उसने बिना किसी घबराहट या आवाज ऊँची किये कहा।

उसकी बड़ी २ आँखें सिकुड़ गईं और उनकी चुभने वाली चमक से इग्नात की अक्ल ठिकाने आ गई। उसके चेहरे ने बता दिया कि वह भी बलवान् थी और चाहे वह उसे जान से ही मार डाले पर उसके सामने झुकने वाली नहीं थी।

"छि: ! लम्बे चेहरे वाली," वह चिल्लाया और घर से बाहर निकल गया।

वह बीबी के सामने परास्त हो चुका था, परन्तु आगे कभी ऐसा न होने देगा। एक स्त्री से हार खाना बड़ा लज्जाजनक है, और फिर अपनी बीवी से जो उसके सामने झुकने से इन्कार करे। वह समझ गया, कि वह कभी उसके सामने झुकने वाली नहीं, और इसका मतलब यही है, कि उन दोनों के बीच लम्बी लड़ाई ठन जाये।

"बहुत अच्छा, देखते हैं कौन जीतता है ?" उसने अगले दिन उसकी हरकतों को दिलचस्पी से देखते हुए अपने मन में कहा। उसके हृदय में बेचैनी का तूफान उठ रहा था : जितनी जल्दी लड़ाई छिड़ती है उतनी ही जल्दी उसे विजय की खुशी होगी।

परन्तु चार दिन बाद नतालिया ने उसे बताया कि उसे बच्चा होने वाला है। उसके हृदय में एक खुशी की बिजली सी दौड़ गई। उसने उसे अपनी बाँहों में बांधकर आलिंगन कर लिया और भावुकतापूर्ण भारी आवाज में बोला —

"नताशा ! अगर यह बेटा हुआ :···अगर तुमने मुझे बेटा दिया··· मैं तुम्हें सोने से मढ़ दूँगा ! मगर यह तो कुछ भी नहीं। मैं जिन्दगी भर

तुम्हारा गुलाम रहूँगा। परमात्मा की कसम खा कर कहता हूँ, मैं तुम्हारे पाँवों में लेट जाऊँगा और चाहो तो तुम मेरे ऊपर चल सकती हो!"

"हम क्या कह सकते हैं, यह तो परमात्मा की इच्छा है कि क्या होगा।" उसकी बीबी ने उसे शान्त भाव से समझाया।

"हाँ ठीक है······परमात्मा ही," इग्नात ने कड़वाहट के साथ सिर झुकाते हुए कहा। इसके बाद से इग्नात अपनी पत्नी का ऐसा ख्याल रखने लगा जैसे वह छोटा बच्चा हो।

"तुम खिड़की के पास क्यों बैठी हो? तुम्हें ठण्ड लग जायेगी अगर ध्यान न रखोगी," वह प्रेमपूर्वक व कड़ाई से अपनी बीबी से कहता। तुम यहाँ सीढ़ी से ऊपर नीचे क्यों आ जा रही हो? तुम्हें इससे नुकसान पहुँच सकता है। लो, थोड़ा सा और खाओ। अब तुम्हें दो के लिये खाना है, ताकि उसे भी उसका हिस्सा मिल जाये।"

नतालिया—बच्चे वाली नतालिया, अब और अधिक शान्त और विचारमग्न रहने लगी। वह अपने में सिमट गई और अपने पेट के बच्चे के प्रति नाना प्रकार के विचारों में डूबी रहने लगी। अब कभी-कभी उसके ओठों पर साफ मुस्कान भी झलकती और उसकी आँखों में प्रभात के हल्के प्रकाश की तरह एक चमक दिखाई देती।

पतझड़ के एक प्रातःकाल उसे प्रसूति-पीड़ा शुरू हुई। जैसे ही उसकी पत्नी की पहली चीख आई इग्नात का चेहरा पीला पड़ गया। वह कुछ कहना चाहता था, परन्तु, उसे शब्द न मिलते थे। निराशा के साथ उसने हाथ हिलाया और अपनी पत्नी का कमरा छोड़ कर नीचे एक छोटे से कमरे में चला गया, जो उसकी माँ का प्रार्थना-गृह रहा था। उसने नौकर से थोड़ी सी वोदका (शराब) मँगवाई और बड़े दुःख के साथ सारे घर की चहल-पहल को सुनते हुये पीने लगा। घर के कोनों में टंगी पवित्र मूर्तियों के धुंधले उदास चेहरे कोने में रखे इकोन लैम्प के प्रकाश में दिखाई दे रहे थे। उसने ऊपर सीढ़ियों पर पांव की आवाज और फर्श पर किसी भारी चीज के खींचे जाने तथा

चिलमची और बर्तनों की खनखनाहट सुनी। घर में सब काम बड़ी तेजी साथ हो रहा था और समय गुजरता जा रहा था।

"वह बहुत धीरे धीरे बच्चा जन रही है !" किसी ने निराशा पू आवाज में कहा—"शायद हमें गिरजे से किसी को परमात्मा के राज्य के दरवा खोलने के लिए बुलाना पड़ेगा।"

एक सास्रुनी जो इग्नात के घर में टुकड़खोर की तरह गुजारा करती थी इग्नात के बराबर वाले कमरे में आई और ऊँची आवाज में फुसफुसा कर प्रार्थना करने लगी :

"प्यारे प्रभु और रक्षक······जो आकाश से पवित्र कुमारी के रूप में अवतरित हुई······अपने प्राणियों की कमजोरिओं को जानते हुए······इस सच्चे सेवक को क्षमा कर दो······"

थोड़ी २ देर के बाद दिल दहला देने वाली चीत्कारें उठतीं जो अन्य सब आवाजों को दबा देतीं, या घर के कमरों में से एक लम्बी आह उठती जो घर के कोनों में सांझ की छायाओं के अंधेरे में छिप जाती। इग्नात बड़ी चिन्ता के साथ घर में ईसाई देवी देवताओं की ओर निहारता और सोचता : क्या इस बार भी लड़की ही होगी ?

वह अपनी प्रतीक्षा को थोड़ा इधर-उधर चल, अपनी छाती पर क्रॉस का चिन्ह बना और देवी देवताओं की मूर्तियों के सामने झुक कर भंग करता; फिर बैठ जाता और शराब पीने लगता (यद्यपि उससे उसे कोई नशा नहीं चढ़ रहा था) और ऊंघने लगता। इस प्रकार उसने सांझ, रात और अगला सुबह सब गुजार दिया।

दोपहर के वक्त दाई उसके पास नीचे दौड़ी आई और अपनी पतली व मधुर आवाज में बोली :

"बधाइयाँ, पुत्र जन्म के लिये, इग्नात मात्वेइविच।"
"सच ! कहीं मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रही हो ?"
"नहीं, नहीं, मैं ऐसा क्यों करूँगी ?"

इग्नात ने गहरा सांस लिया, जिससे उसकी चौड़ी छाती भर गई और फिर घुटनों के बल झुक गया।

"हे परमात्मा, तेरी बड़ी कृपा है," उसने काँपती आवाज में कहा और अपने दोनों हाथों से अपनी छाती को भींचा—"यह साफ है कि तू मेरे वंश को मिटाना नहीं चाहता था। मेरी सन्तान मेरे किये पापों का प्रायश्चित कर लेगी। हे प्रभु! तेरा धन्यवाद!" अगले ही क्षण वह पांव पर खड़ा हो गया और बड़ी ऊँची आवाज में इधर-उधर हुक्म देने लगा: "अरे! कोई है! जाओ जरा सैण्ट निकोलस से पादरी को बुला लाओ। उससे कहो कि, इग्नात मात्वेइविच ने बुलाया है! उससे कहो कि, एक बच्चे की माँ के लिए प्रार्थना करनी है।"

इसी समय घर की नौकरानी उसके पास आई और बड़ी चिन्तापूर्ण आवाज में बोली:

"इग्नात मात्वेइविच! नतालिया फ़ोमिनिश्ना आपको बुला रही हैं। उनकी हालत खराब है।"

"खराब? वह अभी ठीक हो जायेगी," वह गरजा। उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं—"उससे कहो, मैं अभी आया। उससे कहना मैं उसके लिये बढ़िया भेंट ला रहा हूँ। ठहरो! पादरी के लिये थोड़ा खाना तैयार करो और मायाकिन जो हमारे बच्चों का धर्म पिता है, को बुला भेजो।"

आनन्द के उन्माद में उसके शरीर का ढांचा और बड़ा दिखाई देने लगा। वह कमरों में अपनी हथेलियाँ रगड़ता, ईसाई देवी देवताओं की ओर कृतज्ञतापूर्ण नजर डालता, अपनी छाती पर क्रॉस का चिह्न बनाता और बांहों को इधर-उधर घुमाता डोल रहा था। अन्त में वह अपनी पत्नी के पास पहुँचा।

सबसे पहले उसकी नजर एक छोटे लाल पुतले की ओर गई जिसे दाई चिलमची में नहला रही थी। जैसे ही उसने देखा, वह अपने हाथों को पीठ की तरफ बांध व चुपचाप अपने होठों को मखौल में भींच, उधर गया। बच्चा, नंगा, असहाय और दयनीय, पानी में मरोड़े खाता चिल्ला रहा था।

"जरा सावधानी से इसे पकड़ो। अभी इसमें हड्डियाँ तो हैं ही नहीं।" इग्नात ने दाई के कान में प्रार्थना भरे स्वर में कहा।

दाई ने पोपली हँसी हँसी और बच्चे को बड़े हल्केपन से एक हाथ से दूसरे हाथ में लेती हुई बोली :

"जाओ, तुम अपनी पत्नी के पास जाओ।"

वह आज्ञालु भाव से उधर मुड़ा।

"क्यों नतालिया ?" पत्नी की ओर जाते हुए वह बोला।

बीबी के बिस्तरे के पास पहुंच, उसने पर्दा हटा दिया।

"मैं इससे नहीं उठ सकूँगी", एक हल्की आवाज आई।

इग्नात अपनी बीबी के चेहरे की ओर निहारने लगा, जो सफेद तकियों में धँसा हुआ था जिनमें उसके बालों की लटाएँ काले साँपों की तरह बिखरी हुई थीं। उसने कठिनाई से अपनी पत्नी के निर्जीव पीले चेहरे को, जिस पर बड़े २ काले दाग पड़े हुए थे और आँखें खुली हुई थीं, पहचाना। न ही उसने उन डरावनी गतिहीन आँखों को, जो सामने की दीवार पर टिकी हुई थीं, पहचाना। उसके आनन्दपूर्ण हृदय की धड़कन आने वाली विपत्ति की आशंका से रुक गई।

"कोई बात नहीं......इसमें हमेशा ही ऐसा होता है"—उसने कहा और झुक कर अपनी पत्नी का चुम्बन किया, परन्तु वह उसकी ओर सीधा निहारती हुई फिर बोली :

"मैं इससे उठ नहीं सकूँगी।"

उसके ओठ सफेद और ठण्डे पड़ चुके थे। ज्योंही उसके ओठ अपनी पत्नी के ओठों से छुए, वह समझ गया कि मृत्यु उसके अन्दर समा चुकी है।

'हे प्रभु !" वह धीरे से गुनगुनाया। भय ने उसके दिल को जकड़ लिया, उसकी सांस रुकने लगी। वह बोला : "नतालिया, ऐसा नहीं हो सकता। इसे......तुम्हारी जरूरत है। और तुम सोच क्या रही हो ?"

'ग्फ नाच-सी

वह अपनी बीबी पर चिल्लाता रहा। दाई उसके चारों तरफ नाच-सी रही थी। वह रोते हुए बच्चे को हवा में उछाल रही थी और उसे समझाना चाहती थी कि, वह क्या कर रही है। इग्नात ने कुछ नहीं सुना। वह अपनी बीबी के भयपूर्ण चेहरे से आँखें नहीं हटा सकता था। उसके (पत्नी) ओठ हिल रहे थे, जिनके कुछ शब्द वह कभी २ पकड़ पाता था, परन्तु उन्हें समझ न सकता था। वह उसके बिस्तरे के किनारे बैठ गया और एक खोखली टटोलती-सी आवाज में बोला :

"परन्तु······यह तुम्हारे बिना कैसे रहेगा······वह तो अभी पैदा ही हुआ है। लो इसे जरा अपने हाथों में······ऐसी बात मत सोचो······इन विचारों को अपने दिमाग से निकाल दो······बिल्कुल निकाल दो······।"

वह कहता रहा, परन्तु वह जानता था कि यह सब बेकार है। उसकी आँखें भर आईं, और उसने अनुभव किया कि कोई शीशे जैसी भारी और बर्फ जैसी ठण्डी चीज उसकी छाती में घुस गई है।

"मुझे माफ करना, अब अन्तिम नमस्कार, इसका ध्यान रखना। शराब मत पीना।" नतालया धीरे २ निःशब्द रूप से फुसफुसाई।

पादरी आया और उसने उसके चेहरे पर कुछ डाल दिया। बहुत सी लम्बी आहों के बाद उसने प्रार्थना भरे शब्दों में पढ़ना शुरू किया : हे परम-पिता! इस विश्व के रक्षक! तू सब का इलाज करता है, इस अपनी विनम्र सेविका नतालया को भी स्वास्थ्य-दान करो। इसने अभी एक बच्चे को जन्म दिया है······उसे बिस्तरे से उठाओ, जिस पर वह पड़ी है······पैगम्बर दाऊद के शब्दों का ख्याल करना : 'जो परमात्मा के नियमों को भंग करते हैं, वो तेरी दृष्टि में पापी होते हैं।'

वृद्ध पादरी की आवाज टूट गई, उसका पतला चेहरा कठोर पड़ गया। उसके कपड़ों से धूप की गन्ध आ रही थी।

"······और इस नवजात-शिशु की सब बुराइयों से······सब अघातों से······सब तूफानों से······और सब पापी आत्माओं से रक्षा करो, जो दिन-रात मड़राया करती हैं······।"

इग्नात चुपचाप रोने लगा। उसके बड़े २ गरम आँसू उसकी पत्नी की नंगी बाहों पर गिरने लगे। परन्तु वह उन्हें अनुभव नहीं कर सकी, क्योंकि जब ये आँसू उस पर पड़े, न तो उसकी बाँह जरा भी हिली और न कन्धे। जब प्रार्थना खतम हो गई तो उसे फिर मूर्छा आ गई और दो दिन के बाद वह बिना किसी से कोई शब्द कहे मर गई—वह उसी प्रकार चुपचाप मर गई, जैसे चुपचाप वह हमेशा रहती थी। इग्नात ने बड़ी धूमधाम से उसका अन्तिम संस्कार किया। अपने पुत्र का नाम फ़ोमा रक्खा और फिर एक शोक के चुम्बन के साथ उसे धर्म-पिता मायाकिन के परिवार में रख दिया। मायाकिन की पत्नी ने भी इन्हीं दिनों एक बच्चे को जन्म दिया था। पत्नी की मृत्यु से इग्नात की काली दाढ़ी में बहुत से धौले बाल बढ़ गये। परन्तु, इससे उसमें कुछ परिवर्तन भी हुए : वह पहले की अपेक्षा कोमल और नम्र हो गया तथा उसकी आँखों में एक चमक आ गई।

२.

मायाकिन एक बहुत बड़े दुमंजले मकान में रहता था; जिसे नीबू के सुन्दर व पुराने पेड़ों के एक बड़े बगीचे ने घेर रक्खा था। बड़े बड़े पत्ते वाली शाखायें अपनी काली लेस जैसी छायाओं से खिड़की को ढक रही थीं। सूर्य इस पत्तों के पर्दे को बहुत धीमे से पार करता था और छोटे धुंधियाले कमरे में, जिसमें बहुत से ट्रंक औ रतरह २ का फर्निचर पड़ा था, वह सुबह के धुँधले प्रकाश के समान रहता था। मायाकिन का परिवार धार्मिक परिवार था जिसमें पश्चा-ताप की आहें और प्रार्थनाओं के टप्पे हवा में मंडराते रहते थे, और मोम, धूप की गंध और इसाई देवी देवताओं के सामने जलते तेल के दिये की गन्ध से घर का वायुमण्डल भरा रहता था। इसाई धर्म के सब तीज त्यौहार बड़े धूमधाम और आनन्द से उस घर के निवासी मनाते थे और धार्मिक पवित्रता की अति ने सारे घर को सराबोर कर रक्खा था। काले, गम्भीर, घुटे, दम घोटने वाले घर के कमरों में, काले कपड़ों वाली स्त्रियों की मूर्तियाँ इधर-उधर तैरती थीं, जिन्होंने पांव में नरम सलीपर पहने हुए थे, और जिनके चेहरों से धार्मिक पवित्रता टपकती थी।

मायाकिन के परिवार में उसकी पत्नी, उसकी बेटी तथा पांच और सम्बन्धी थे, जिनमें सबसे नौजवान ३५ वर्ष का था। ये सब सम्बन्धी भी वैसे ही धार्मिक पवित्रता से भरे हुए, नीरस थे और सब मायाकिन की पत्नी अन्तोनिना के जूते तले उसके दबाव में रहते थे। वह एक लम्बे कद, भूरी आंखों और सांवले रंग वाली स्त्री थी जिसकी कठोर भूरी आंखें बुद्धि और अधि-कार-लिप्सा में चमकती रहती थीं। मायाकिन के एक लड़का भी था जिसका

नाम तरास था, परन्तु उसका नाम परिवार में कभी नहीं लिया जाता था। शहर के लोग जानते थे कि वह उन्नीस वर्ष का था और पढ़ने के लिये मास्को गया हुआ था। वहाँ उसने पिता की इच्छा के विरुद्ध तीन वर्ष हुए, शादी कर ली थी, जिसके कारण याकोव मायाकिन ने उसे उत्तराधिकार से वंचित कर दिया था। इसके बाद इसका किसी को कुछ नहीं पता था कि उस लड़के के साथ क्या हुआ। परन्तु अफ़वाह थी कि उसे किसी अपराध में साईबेरिया को देश निष्कासन हो गया है।

याकोव मायाकिन एक छोटा, पतला और गठा हुआ व्यक्ति था। उसके चेहरे पर आग जैसे लाल रंग की बकरे की सी एक दाढ़ी थी; उसकी हरी आंखों की नज़र सबको ऐसा कहती दिखती थी :

"बहुत अच्छा मित्र ! मैं तुम्हें खूब समझता हूँ, परन्तु तुम जरा मुझसे दूर ही रहो, मैं तुम्हारे सामने झुकने वाला नहीं।"

उसका सिर अण्डाकृति था और था उसके शरीर के अनुपात में बहुत बड़ा। उसका ऊँचा माथा, जिस पर गहरी झुर्रियाँ पड़ी थीं, पीछे की गञ्जी खोपड़ी से ऐसे मिल जाता था जैसे उसके दो चेहरे हों : एक चेहरा जिसे सब देख सकते थे—जो चालाक, समझदार, आरपार देखने वाला तथा जिस पर लम्बी उपास्थियुक्त नाक थी, और दूसरा था नेत्रहीन चेहरा जिस पर केवल झुर्रियाँ थीं और जिसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता था कि, मायाकिन ने अपनी आँखें और ओठ इन झुर्रियों में तब तक के लिये छिपा लिये हैं, जब तक कोई उपयुक्त मौका न आ जाये—जबकि वह दुनियाँ को दूसरी आंखों से देख सके और दूसरी ही हँसी हंस सके।

मायाकिन एक रस्से की फैक्टरी का मालिक था तथा बन्दरगाह में उसकी दुकान थी। उसकी दुकान रस्सियों, मोटे रस्सों और सन इत्यादि से छत तक भरी हुई थी। उसमें एक छोटा कार्यालय भी था, जिसमें शोर करने वाले कब्जों पर लगे, शीशे के दरवाजों से अन्दर जाया जाता था। उसके कार्यालय में एक बड़ी पुरानी व भद्दी मेज और उसके सामने मोटी आराम

कुर्सी थी, जिसमें मायाकिन अपने दिन चाय पीते हुए और मास्कोवस्कीय वीदोम्स्ती* पढ़ते हुए व्यतीत करता था। अपने साथी व्यापारियों में मायाकिन की बड़ी इज्ज़त थी और लोग उसे बड़ा दिमाग़ी मानते थे। वह अपने पूर्वजों के बारे में शेखी बघारने का बड़ा शौक़ीन था।

"हम मायाकिन लोग कैथेरीन के जमाने से व्यापारी चले आ रहे हैं," वह अपनी पतली आवाज में कहता—"दूसरे शब्दों में मेरी नसों में अपने पुरखों का असली खून है।"

इस परिवार में इग्नात गोर्देयेव के पुत्र ने अपने जीवन के छः वर्ष गुज़ारे। छः वर्ष की आयु में फ़ोमा, जिसका माथा सुन्दर और कन्धे चौड़े थे, अपने विशाल शरीर के कारण बड़ी उम्र का दिखता था और उसकी बादामी काली आंखों से गम्भीरता टपकती थी। वह शान्त स्वभाव का लड़का था; परन्तु, साथ ही अपनी इच्छा के बारे में बड़ा आग्रही था। दिन भर वह और मायाकिन की लड़की ल्यूबा अपने खिलौनों के साथ एक मोटी, चेचक के दागों वाली सम्बन्धी वृद्धा की शान्त निगरानी में खेलते रहते। उस वृद्धा का नाम, पता नहीं किस कारण से, बूझया पड़ गया था। वह बड़ी संकोची जीव थी, यहाँ तक कि वह बच्चों के साथ भी दबी सी सांस में जवाब देती थी। वैसे याद तो उसे असंख्य प्रार्थनायें थीं, परन्तु कहनी एक भी न आती थी; फ़ोमा ने उससे एक भी कहानी नहीं सुनी थी।

फोमा और ल्यूबा आपस में प्रेम से रहते थे, परन्तु यदि वह (ल्यूबा) उसे चिढ़ाती या नाराज़ कर देती तो वह (फोमा) एकदम पीला पड़ जाता और अपनी आंखों को हँसाने वाले तरीके से तरेर, अपने नथुने फुला कर उसे मार देता। वह रोती २ अपनी माँ के पास जाती, परन्तु अन्तोनिना इवानोवना फोमा को अधिक प्यार करती थी और अपनी लड़की की शिकायतों पर ध्यान नहीं देती थी। इससे दोनों बच्चों के बीच मित्रता और भी गहरी होती गई। फोमा के दिन लम्बे और एक से ही होते थे। प्रातःकाल उठ कर मुँह हाथ धोकर वह ईसाई देवी देवताओं की मूर्तियों के सामने झुकता और बूझया द्वारा

*मास्को-समाचार, एक पुराने रूसी अखबार का नाम

प्रेरित अनन्त प्रार्थनाओं को पढ़ता । इसके बाद परिवार नाश्ते के लिये बैठ जाता, जिसमें चाय-पान होता और बन, केक और मांस के पकोड़ों की बहुत बड़ी मात्रा ख़तम की जाती । नाश्ते के बाद, गर्मियों के दिनों में, बच्चे उस पत्तों वाले बगीचे में चले जाते, जो एक तेज ढलान के पास ख़तम होता था । इसमें से एक प्रकार की डरावनी भाप-सी निकलती थी । बच्चों को इसके पास जाने की मनाही थी, और इस कारण वे और भी डरते थे । सर्दियों में यदि ठण्ड अधिक होती, तो वे घर के अन्दर खेलते ; अन्यथा पहाड़ी के ढलान पर बरफ पर फिसलने वाली छोटी-सी गाड़ी को लेकर फिसलने चले जाते ।

दोपहर के समय उनके घर में जैसा कि मायाकिन कहता था, पुराने रूसी तरीके का डिनर होता था । सबसे पहले मेज़ पर एक बड़े गोल वर्तन में बन्द गोभी की सूप (एक पेय) आती थी, जिसमें मांस की जगह बाजरे की रोटी के चौकोर टुकड़े ऊपर तैरते रहते थे । इसके बाद इसी सूप को मांस के टुकड़ों के साथ खाया जाता था । इसके बाद किसी किस्म का गोश्त, जैसे सुअर, गौ या बत्तख अथवा ज्वार या जौ के साथ बना हुआ मांस आता । इसके बाद पेयों इत्यादि के साथ सूप आती । और, तब सबके अन्त में कोई चिकनी, मीठी चीज से उसकी पालिश की जाती । इस घर में अधिकतर जूनिपर, बैरियों या रोटी से बना क्वास* होता था, जिसकी कई किस्में अन्तोनिना इवानोवना तैयार करती थी । सारा परिवार चुपचाप भोजन करता था, और समय-समय पर बड़े प्रयत्नपूर्वक थकान के साथ आहें भरता जाता था । दोनों बच्चों को भोजन अलग बर्तन में दिया जाता था, बाकी परिवार दूसरे बर्तनों में खाता था । इस भारी भोजन के बाद सोने के अलावा और कोई कार्य नहीं रह जाता था, और इसलिये भोजन के बाद दो–तीन घण्टे तक मायाकिन के घर में उनींदी आहें और खर्राटे सुनाई देते थे ।

जब परिवार पुनः जग जाता तो चाय-पान और गप्पें चलतीं, जिसमें पादरी, गिरजे के रागियों, नई शादी या उनके किसी परिचित व्यापारी के अशिष्ट व्यवहार का ज़िकर होता था ।

---

*क्वास—एक प्रकार का पेय ।

जब चाय-पान हो लेता तो मायाकिन अपनी बीबी से कहता—

"अच्छा, माँ अब बाईबिल ले आओ।"

उसका मन-पसन्द पाठ जोब की पुस्तक से होता था। अपनी बाज़ जैसी नुकीली नाक पर चाँदी की कमानीदार भारी ऐनक को लगाकर वह चारों तरफ, यह देखने के लिये कि सब उपस्थित हैं या नहीं, निहारता। उसे सब अपनी आदत के अनुसार, पुरानी जगहों पर भारी व पवित्र चेहरों में दिखाई देते।

"उज़ प्रदेश में एक मनुष्य रहता था", मायाकिन अपनी पतली, तीखी आवाज़ में पढ़ना शुरू करता। फ़ोमा जो ल्यूबा के बराबर सोफे पर बैठा होता, जानता था कि, उसका धर्म-पिता कहाँ पर रुकेगा और कब अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरेगा। उस पाठ को सुनता हुआ फ़ोमा उस देश के मनुष्य का अपने मन में चित्र बनाता। वह लम्बा था, नंगा था; उसकी आँखें बड़ी-बड़ी थीं, जैसी कि 'न्यरुकोत्वोर्नी स्पास' इकोन में ईसा मसीह को दिखाया हुआ है, और उसकी आवाज पीतल के बिगुल के समान थी, जिसे सिपाही कैम्प में बजाया करते हैं। क्षण प्रति क्षण यह मनुष्य बड़ा होता जाता, यहां तक कि वह आसमान तक पहुँच जाता; और अपने काले बालों वाले हाथ को बादलों में डालकर उन्हें तहस-नहस कर देता, फिर एक भयङ्कर आवाज में कहता:

"प्रकाश उस मनुष्य को क्यों दिया गया है, जिसका रास्ता छिपा हुआ है, और स्वयं परमात्मा ने जिसके चारों ओर बाढ़ लगा रक्खी है?"

फ़ोमा भय से कांपने लगता। अपने धर्म-पिता को अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते और मजाक में यह कहते सुनकर—"लो, यहाँ भी एक बरादुर है", उसे जरा भी नींद नहीं आती।

फ़ोमा जानता था कि, उसका धर्म-पिता उज़ के मनुष्य का ज़िकर कर रहा है और उसकी मुस्कान से उसे विश्वास हो जाता कि वह मनुष्य आसमान को अपने भयङ्कर होथों से टुकड़े २ नहीं करेगा। फ़ोमा एक बार फिर इस मनुष्य को अपनी कल्पना-शक्ति से देखता। इस बार वह जमीन पर बैठा हुआ

होता था और उसका मांस कृमि-कीटों और गर्द की परतों से ढका होता था, और जगह जगह उसकी खाल 'फटी और घृणित' दिखती थी। अब वह एक दीन हीन तथा दुनियाँ के दूसरे भिखारियों जैसा दिखाई देता था, जो गिरजे के द्वार पर खड़े रहते हैं।

"कौन गन्दगी से पवित्रता निकाल सकता है ?" वह कहता।

"यह सवाल वह परमात्मा से कर रहा था," मायाकिन व्याख्या के रूप में बतलाता—"मैं कैसे सदाचारी व धर्मपरायण हो सकता हूँ जब कि स्वयं एक स्त्री के मांस से पैदा हुआ हूँ, वह पूछता ? यह प्रश्न उसने परमात्मा से किया है।"

और, मायाकिन अपनी आँखों की विजयपूर्ण चमक के साथ प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखता।

"उस सदाचारी मनुष्य ने अपने को योग्य सिद्ध कर दिया है।" सब आहें भरते।

मायाकिन मखौल सी करता हुआ हंसता और कहता:

"बेवकूफ, जाओ, बच्चों को सुलादो।"

इग्नात गोर्देयेव प्रतिदिन मायाकिन के घर आता। वह अपने बेटे के लिये खिलौने लाता, उसे अपनी बाहों में लेकर उठाता और बड़े प्यार से उसे आलिंगन करता। कभी कभी वह उससे नाराज़ भी हो जाता।

"तू इतना गुम सुम क्यों रहता है ?" वह बड़ी चिन्ता से पूछता—"तू अधिक हंसता क्यों नहीं ?"

एक बार उसने अपने मित्र मायाकिन से कहा :

"मुझे डर है कि फ़ोमा अपनी माँ पर जा रहा है। उसकी आँखें बड़ी शोकपूर्ण दिखती हैं।"

"अभी इसकी चिन्ता की जरूरत नहीं," मायाकिन ने हंसते हुये जवाब दिया।

मायाकिन अपने धर्मपुत्र से बहुत प्यार करता था। उसे बहुत दुःख हुआ जब इग्नात ने एक दिन कहा कि वह उसे अपने घर ले जाना चाहता है।

"अभी उसे यहीं ठहरने दो," मायाकिन ने कहा—"वह हमारे घर का अभ्यस्त हो गया है। देखो वह रो रहा है।"

"वह रोना बन्द कर देगा। तुम समझते हो कि मेरा बेटा तुम्हें देने के लिये हुआ है? खास बात तो यह है कि तुम्हारे घर का वायुमण्डल बड़ा रूखा, डरावना और गिरजे की तरह नीरस है। बच्चे के लिये यह बहुत बुरा है। अब मैं भी उसके बिना अकेला हूँ। जब मैं घर आता हूँ तो मुझे वह सूना २ दिखता है। उसके कारण मैं तुम्हारे साथ आ जा नहीं सकता। मैं उसके लिये नहीं हूँ, वह मेरे लिये है। यह ऐसी ही बात है। मेरी बहन अनफीसा मेरे यहाँ रहने के लिये आ रही है, वह उसकी देखरेख कर लेगी।

इस प्रकार बच्चा अपने बाप के घर में चला गया।

उसे दरवाजे पर ही एक अजीब सी वृद्धा स्त्री मिली, जिसकी नाक लम्बी और तोते जैसी थी और जिसके चौड़े मुँह में एक भी दांत नहीं था। वह लम्बी तथा गोल कन्धों वाली थी; सिर के बाल सफेद थे, भूरी पोशाक पहन रक्खी थी और सफेद बालों वाले सिर पर एक छोटी सी काले रङ्ग की टोपी पहन रक्खी थी। पहले पहल वह लड़के को बिल्कुल पसन्द नहीं आई—बल्कि वह उससे किसी कदर डर गया था। परन्तु, जब उसने उसके झुर्रीदार चेहरे व काली आँखों से झलकती दयालु मुस्कान देखी तो उसने एकदम उसके घाघरे में अपना मुँह छुपा लिया।

"मेरा प्यारा मातृहीन बेटा।" बुढ़िया ने बड़ी काँपती व कोमल आवाज़ में रुकते हुए कहा और उसके सिर को थपथपाने लगी। फिर बोली: "देखो यह छोटा सा प्यारा मुन्ना मुझसे कैसे चिपक गया है।"

उसके प्यार में एक विशेष मिठास थी जिसे फ़ोमा ने आज तक कभी अनुभव नहीं किया था। वह उस बुढ़िया की आँखों में एक विस्मय और आशा के भाव से निहारने लगा। इस बुढ़िया ने उसे सांसारिक बातों की शिक्षा देनी थीं, जिनका उसे कुछ पता नहीं था। जब पहले दिन उसने फ़ोमा को

सोने के लिये बिस्तर पर लिटाया, वह उसके बराबर में बैठ गई और उस पर झुक कर बोली :

"क्या तुम्हें कहानी सुनाऊँ ?"

इसके बाद फ़ोमा सदा उसकी मखमली आवाज में परियों के संसार की ख्याली तस्वीरों के साथ सोता। वह बड़ी प्यास के साथ जन-कथाओं की सुन्दरता का पान करता। इस बुढ़िया स्त्री के पास इन कहानियों का अक्षय कोष था, जिसमें बहुत-सी कहानियाँ पुरानी याद की, और कुछ मनघड़न्त थीं। कई बार जब फ़ोमा ऊँघ जाता था, तो उसे वह परियों की कहानी की बाबा-यागा दिखाती थी, जो बहुत अच्छी और दयालु स्त्री थी। और दूसरे मौकों पर वह उसे सुन्दर और बुद्धिमान वैसिलिसा के रूप में देखता। बिस्तर पर लेटा-लेटा खुली आँखों और सांस रोके वह इकोन के लेम्पों के धुँधले प्रकाश में, दृश्यों से भरी तरह-तरह की छायाओं को देखता। उसे दीवारों पर और फर्श पर छायाएँ सरकती दिखतीं, जो सजीव तो थीं परन्तु बोलती न थीं। लड़का इन छायाओं को डरावनी पाता, परन्तु उन्हें देखकर उनमें रङ्ग, रूप और जीवन की कल्पना कर खुश होता और फिर अचानक अपनी पलकों को फिरा कर उन्हें नष्ट कर देता। अब उसकी काली आँखों में नये भाव थे, नई गम्भीरता थी, जो बच्चों के समान सरल थी। अन्धकार और एकान्त से उसके हृदय में एक चिन्ता और आशंका बढ़ जाती, जिससे कुतूहल पैदा हो जाता, और वह किसी अँधेरे कोने में डरावनेपन को पता लगाने के लिये कि, वहाँ क्या छिपा है, बहादुर बन जाता। उसे कुछ मिलता नहीं था। परन्तु, वह आशा नहीं छोड़ता था कि, किसी न किसी दिन तो पता लगा ही लेगा।

अपने बाप से वह डरता था, परन्तु प्यार भी करता था। इग्नात का लम्बा-चौड़ा आकार, उसकी गरजती आवाज, दाढ़ी वाला चेहरा, मोटे धौले बाल, लम्बी बलवान् बाँहें और चमकती आँखें—ये सब बातें उसे परियों की कहानियों के डाकू के समान दिखाई देती थीं।

एक दिन फ़ोमा ने, जो अब सात साल का हो चुका था, अपने बाप से

जो अभी हाल एक लम्बे सफर के बाद आया था पूछा—"आप कहाँ होकर आये हैं।"

"मैं वोलगा के नीचे गया था", उसके बाप ने उत्तर दिया।

"कहीं डाका मारने ?" फ़ोमा ने धीमी आवाज में पूछा। "क्या क··· ट···आ···?" इग्नात ने अपनी भौंहों को चढ़ाते हुए अचम्भा प्रकट किया।

"परन्तु, आप पिताजी ! आप तो डाकू हो, नहीं ? मैं जानता हूँ कि, आप हो।" फ़ोमा ने अपने बाप के भेद आसानी से जानने की खुशी में चालाकी से आंखें ततेरते हुए कहा।

"मैं एक व्यापारी हूँ", इग्नात ने कठोरता से कहा। परन्तु क्षण भर सोचने के बाद वह खुशी में हँसता हुआ बोला—"और तुम छोटे से बुद्धू हो, मैं अनाज का व्यापारी हूँ और मेरे पास अग्निबोट हैं। क्या तुमने कभी 'यरमाक' देखी है ? वह मेरा अग्निबोट है, और तुम्हारा भी।"

"क्या बहुत बड़ी है", फ़ोमा ने हल्की सांस भरते हुए पूछा।

"जब तक तुम बच्चे हो, मैं तुम्हें एक छोटी किश्ती खेलने के लिये खरीद देता हूँ, क्यों ?"

"हाँ, हाँ", फ़ोमा ने कुछ मिनट सोचने के बाद दुःख के साथ कहा—"मुझे विश्वास था कि तुम डाकू हो।"

"मैं एक व्यापारी हूँ, मैंने तुम्हें कहा", इग्नात ने अपने बेटे की ओर निराशा और नाराज़गी से देखते हुए, डर के साथ तेजी से कहा। "क्या तुम दादा फ्योदोर की तरह व्यापारी हो, जो रोटियाँ बेचता है ?" फ़ोमा ने कुछ रुक कर पूछा।

"हाँ, हाँ उसी की तरह, परन्तु मैं धनवान् हूँ। मेरे पास फ्योदोर से बहुत अधिक पैसा है।"

"बहुत पैसा ?"

"हाँ, कुछ लोगों के पास ज्यादा पैसा होता है ?"

"तुम्हारे पास कितनी पेटियाँ हैं ?"

"क्या मतलब ?"

"पैसे की ?"

"ओ, बुद्धू ! लोग पैसे को पेटियों से नहीं मापते ।"

"हाँ, वे ऐसे ही कहते हैं ।" फ़ोमा ने बड़े जोश में अपने बाप की ओर देखते हुए कहा और उसे बताने लगा—"एक बार मैक्सिम डाकू ने एक धनी मनुष्य के घर से रुपयों और चाँदी से भरी बारह पेटियाँ चुराईं, और इसके बाद उसने गिरजे में डाका डाला और एक आदमी की छाती में तलवार भोंक दी, और उसे गिरजे की छत से गिरा दिया, क्योंकि वह घण्टी बजाना चाहता था ।"

"क्या तुम्हारी बुआ ये कहानियाँ सुनाती है ?" इग्नात ने अपने लड़के के जोश को देखकर खुशी से पूछा ।

"हाँ, क्यों ?"

"कुछ नहीं", इग्नात ने हँसते हुए कहा—"अब मुझे समझ में आया कि, तुमने अपने बाप को क्यों डाकू बनाया ?"

"हो सकता है कि तुम पहले कभी डाकू रहे हो ?" फ़ोमा ने आशा-पूर्ण भाव से पूछा ।

"नहीं, मैं कभी नहीं रहा । इस ख्याल को अपने दिमाग से ही निकाल दो ।"

"कभी नहीं ?"

"बिल्कुल कभी नहीं, मैंने तुमसे कह तो दिया, तू एक छोटा-सा शैतान है ! तू ये कैसे समझता है कि एक आदमी के लिये डाकू होना अच्छा है । वे तुम्हारे सब डाकू पापी हैं । वे लोग परमात्मा में विश्वास नहीं करते और गिरजों को लूटते हैं । यही कारण है कि, गिरजा परमात्मा से उन्हें सजा देने की प्रार्थना करता है । ······हूँ ······हूँ···, मगर बेटा ! मैं तुमसे कहना चाहता था कि, अब तुम्हें पढ़ना चाहिये । अब वक्त आ गया है कि तेरा जैसा शैतान कुछ सीखें । सारी सर्दियाँ भर पढ़ो और जब बसन्त आयेगा, मछली

पकड़ने का मौसम आयेगा, मैं तुम्हें अपने साथ वोल्गा पर घुमाने ले जाऊँगा।"

"क्या मुझे स्कूल जाना पड़ेगा", फ़ोमा ने डरते हुए पूछा।

"पहले तुम अपनी बुआ से घर में ही पढ़ो।"

इस प्रकार लड़का अब हर सुबह बैठकर पढ़ने लगा और अपनी भुआ की बताई स्लावोनिक वर्णमाला को दोहराने लगा—

"आफ़···बूक···वेदी"

जब वह संयुक्त अक्षर ब्रा···व्रा···ग्रा···द्रा···पर पहुँचा तो ये अक्षर उसे बड़े अजब दीखे और उसे हँसी आ गई। उसने जल्दी ही वर्णमाला सीख ली, और उसके बाद धर्म-ग्रन्थ का पहिला पाठ पढ़ना शुरू किया।

"उन लोगों पर परमात्मा की बड़ी कृपा है, जो······।"

"बिल्कुल ठीक प्यारे, यह ठीक है फ़ोमुश्का!" उसकी भुआ ने अपने भतीजे की कामयाबी से खुश होकर कहा।

"फ़ोमा, यह तुम्हारे लिये बहुत अच्छा है", इग्नात ने गम्भीरतापूर्वक कहा, जब उसे उसके पुत्र के बारे में बताया गया—"तुम और मैं इस बसन्त में अस्त्राखान जायेंगे, और पतझड़ के दिनों में, मैं तुम्हें स्कूल में भेज दूँगा।"

बच्चे के दिन बहुत शान्ति और सुख के साथ लुढ़कते गये जैसे कि पहाड़ी से गेंद लुढ़कती है। उसकी भुआ, उसकी खेल-कूद की साथिन थी और अध्यापक भी। कभी-कभी ल्यूबा मायाकिन भी उनसे मिलने आती, और तब यह बुढ़िया स्त्री उनके साथ बच्चा बन जाती। वे आंख-मिचोनी और अन्धे आदमी का खेल खेलते। दोनों बच्चे बुढ़िया को आँख पर पट्टी बांधे और हाथ फैलाये टटोलते देख खूब हँसते, जो बहुत होशियारी रखते हुए भी कुर्सी, मेज आदि से टकराती और अपने रास्ते से दूर जाती हुई, साँस भरती हुई कहती—

"तुम छोटे बन्दरो, कहाँ छुपे हुए हो?"

इस प्राचीन शरीर पर जिसमें तरुण आत्मा बस रही थी, सूर्य बड़ी निघरता से अपनी किरणें डालता—जिससे पुराने जीवन का अन्तिम

शक्ति-कोष, बच्चों के जीवन को आल्हादित करने के लिये बाहर आ रहा था।

इग्नात सुबह ही ऐक्चेन्ज चला जाता और प्रायः शाम तक वहीं रहता। संध्या समय वह अपने मित्रों से मिलने या नगर-समिति में अथवा इधर-उधर चला जाता। कभी-कभी वह शराब के नशे में घर आता। पहले-पहल फ़ोमा उसे देखकर छिप जाता, परन्तु बाद में वह अभ्यस्त हो गया और उसे होश में देखने के बजाय शराब के नशे में देखना पसन्द करता था। शराब के नशे में वह थोड़ी सी बेहूदगी के साथ बड़ा सरल और प्रेमी हो जाता था। यदि वह कभी रात के समय नशे में घर आता तो उसकी गरजती आवाज से लड़का जग जाता।

"अन्...फ़ीसा! मुझे आने दो, अपने उत्तराधिकारी पुत्र को देखने दो! आओ, तुम बहुत अच्छी बहिन हो!" "परे हटो, जाओ सो जाओ, तू शराबी चाण्डाल", फ़ोमा की भुआ भिड़कते हुए कहती—"अभी तुम खड़े वहाँ चिल्ला रहे हो, बाल सारे सफेद हो गये हैं और ऐसी बातें...।"

"अनफीसा, तू मुझे अपने बेटे को नहीं देखने देगी—बस एक नजर?"

"परमात्मा करे तेरी आँखें गड्ढों से बाहर आ जायें!"

फ़ोमा जानता था कि, उसकी भुआ उसके बाप को देखने नहीं देगी और वह उन दोनों को लड़ता छोड़ धीरे-धीरे अपनी नींद में वापिस सो जाता।

यदि, कभी दिन के समय इग्नात शराब पीकर आता तो वह मादकता के आनन्द में भरा अपने पुत्र को अपने बड़े-बड़े पञ्जों में उठा लेता और उसे उठाये-उठाये सारे कमरों में घूमता हुआ चिल्लाता फिरता।

"फ़ोमा, मेरे बेटे! तुम क्या मांगते हो, बोलो—मिठाई? खिलौने? बोलो, तुम्हें क्या चाहिये? संसार में कोई ऐसी चीज नहीं जो मैं तेरे लिये खरीद नहीं सकता। तुम्हें पता हो कि मैं लखपति हूँ और अभी लाखों और आने हैं, और ये सब तेरा है।"

और, फिर अचानक उसकी खु बुझ जाती, जैसे कि हवा से मोमबत्ती

बुझ जाती है। उसके फूले गाल सिकुड़ने लगते, उसकी सूजी आँखें आँसुओं से भर जातीं और उसके ओठ डरावनी खीस में खिच जाते।

"अन्फीसा", वह कहता—"अगर ये मर गया तो क्या होगा ? मैं फिर क्या करूँगा ?"

इस विचार से उसे पागलपन का दौर उठ आता।

"मैं सब कुछ जला दूँगा !" वह किसी अँधेरे कोने की ओर जंगलीपन से घूरता हुआ चिल्लाता—"मैं सब कुछ बरबाद कर दूँगा ! सब के परखचे उड़ा दूँगा !"

"बस, बहुत हो लिया, परे हट यहाँ से, शैतान कहीं का ! क्या तू बच्चे को डराना चाहता है ? उसे बीमार करना चाहता है ?" अनफीसा जोर से चिल्लाती। यह इग्नात के लिये पराजित होकर वापिस जाने के लिये काफी था। जाता-जाता वह गुनगुनाता—

"अच्छा, अच्छा मैं जा रहा हूँ। चिल्ला मत, इसे डरा मत।"

जब कभी फ़ोमा बीमार पड़ जाता, उसका बाप सब कारोबार छोड़ बैठता। वह उन दिनों घर ही रहता; भयभीत आँखों से, उदासी में, एक कमरे से दूसरे कमरे में जाता, आहें भरता, सिसकता और अपनी बहिन और बेटे को मूर्खतापूर्ण प्रश्नों और सलाहों से दुःखी कर देता।

"तुम्हारे सिर पर परमात्मा का गुस्सा गिरेगा", अनफीसा कहती—"कुछ होश करो, नहीं तो तुम्हारी गुनगुनाहट उसके कानों में पहुँच जायेगी और वह तुम्हें और तुम्हारे कामों के लिये सजा देगा, जो तुम उसके लिये करोगे।"

"ओ···ह बहिन ! क्या तू नहीं समझती कि अगर इसे कुछ हो गया तो मेरा जीवन बरबाद हो जायेगा ? मेरे लिये जीवन में क्या रह जायेगा, कुछ नहीं ?"

पहिले पहिल लड़का अपने बाप के मिज़ाज के इन आकस्मिक परिवर्तनों को देखकर डर जाता, परन्तु जल्दी ही वह इसका आदी हो गया और जब कभी

खिड़की से बाहर झांकता हुआ अपने बाप को स्लेज* से कठिनता से उतरते देखता तो लापरवाही से कहता :

"लो भुआ ! आज पिताजी, फिर पी कर घर आये हैं ।

× × × ×

बसन्त आई और इग्नात ने अपने बेटे से किया हुआ वायदा पूरा किया । वह उसे अपने साथ बोट पर ले गया । अब लड़के के सामने एक-बिल्कुल नया ही जीवन खुलने लगा । सुन्दर यरमाक टग बोट, जो व्यापारी इग्नात गोर्देयव का था तेजी से नदी के बहाव पर सरकने लगा जबकि वोलगा नदी के किनारे उसकी मुलाकात के लिये आ रहे थे । बायाँ किनारा अन्तरिक्ष तक फैले एक हरे गलीचे सा फैला और जो सूर्य के प्रकाश में डूबा हुआ था, और वायाँ किनारा अपनी वृक्षाच्छादित चोटियों से आसमान में ऊपर को घुमा जा रहा था जहाँ कि उन्हें एक कठोर शान्ति ने पकड़ रक्खा था । इन दोनों के बीच विशाल-वक्ष वोलगा बड़े गौरवपूर्ण बहाव के साथ बही जा रही थी । निःशब्द मूकता, गम्भीरता और अद्रुत गति से दायें किनारे की चट्टानों की छायाओं, जलीय चरागाहों रूपी हरे और सुनहरी मखमल और बाईं ओर बालुकामय किनारे से अलंकृत वह धीरे धीरे बही जा रही थी । अब गाँव नजर आने लगे, कोई चट्टानों के ऊपर था, कोई चरागाहों में था । उनकी शीशे वाली खिड़कियों पर सूर्य छप्पर वाली छतों के किमखाब के ऊपर चमकता, पेड़ों की चोटियों में अधछिपे गिरजों के सुनहरे क्रॉसों पर चमचमाता, हवा में पवनचक्की की भूरी-भूरी बाहें धीरे धीरे हिल रही थीं; और कारखानों की चिमनियाँ आसमान में धुँए का सूत बट रही थीं । नदी की शान्ति कभी कभी लाल, नीले, सफेद ब्लाऊज पहने में बच्चों की आवाजों से भंग हो रही थी, जो किनारों पर खड़े बड़े आनन्द के साथ बराबर से गुजरते जहाज के पहियों से प्रताड़ित प्रसन्न लहरों को अपने पांव तक पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे थे ।

छोटे छोटे लड़कों का एक दल किश्ती में कूदा और बड़ी तेजी से मंझ-

---

*स्लेज—बेपहियों वाली बरफ की गाड़ी ।

धार की ओर खेने लगा ताकि वह वहाँ अग्निबोट के पीछे लहरों के बीच झूल सकें। बड़े बड़े ऊँचे पेड़ों के मस्तक पानी पर झुके हुए थे—और कई जगह उनके कुञ्ज पानी में डूबे खड़े थे, और जल प्रवाह में द्वीपों के समान खड़े थे। किनारे से हांपने के समान डरावने गीतों के टप्पों की आवाज़ आ रही थी।

"ऐ ऐ···ह ! एक, दो, और खेंचों ! यरमाक लट्ठों के बेड़े के बराबर से गुजरा और उन्हें अपनी लहरों में निमग्न कर दिया। वे बड़े पागलपन के साथ लहरों पर हिलने लगे और नीले ब्लाऊज पहिने बेड़े वाले डगमगा गये, हँसे और चिल्लाये। एक चौड़ा मोटा सुन्दर छोटा सा माल ढोने वाला जहाज़ नदी के बहाव से ऊपर की ओर तिरछा जा रहा था, जिसमें लदे हुए पीले पत्थर सूर्य की रोशनी में सोने के समान चमक रहे थे और बसन्त के गदले पानी में पड़ी उसकी परछाईं मन्द दिखाई दे रही थी। एक मुसाफिर ढोने वाला जहाज ज्यों ही टग बोट के बराबर में आया, उसने अपना भौंपू बजाया और उसकी मन्द प्रतिध्वनि बराबर की पहाड़ियों की दरारों और जङ्गलों में छुपने के लिए दौड़ गई। दोनों ज़हाज़ों से उठी लहरें मंझधार में आकर टकराईं और फिर वापिस मुड़कर टग और माल ढोने वाले जहाज को हिलाने लगीं। दायें किनारे की ओर एक ढलान पर सर्दियों के अंकुरित अनाज की हरियावल, बञ्जर भूमि की भूरी लकीर और बसन्त की फ़सल के लिये जोती हुई काली जमीन के टुकड़े चमक रहे थे। भेड़ बकरियाँ जो खिलौनों के समान दिखाई दे रही थीं, दूर मैदानों में चमक रही थीं और उनके खिलौने जैसे अपनी लाठियों पर झुके खड़े थे जो नदी की ओर निहार रहे थे।

जहाँ तक नज़र पहुँच सकती थी, वहां स्वतन्त्रता, चमक चरागाहों का हरा आनन्द, और नीले आसमान की कोमलता फैली हुई थी। पानी के प्रवाह की शान्ति में एक अवरुद्ध शक्ति अनुभव हो रही थी। ऊपर आकाश में मई मास के सूर्य का अपरिमित प्रकाश चमक रहा था। वायु सदा-हरित तरुण पत्तों की मीठी गन्ध से भारी हो रही थी। नदी के किनारे लगातार बोट से मिलने के लिये चले आ रहे थे, जो अपनी सुन्दरता से आंखों और

आत्मा को आल्हादित कर रहे थे और एक के बाद दूसरे दृश्य का उद्घाटन कर रहे थे।

प्रत्येक वस्तु—प्रकृति और मनुष्य सब मन्द गति से चल रहे थे, अपने शिथिल अलस अस्तित्व में, परन्तु फिर भी ऐसा प्रतीत होता था कि इस आलस्य और मन्द गति के पीछे एक ऐसी अदम्य शक्ति विद्यमान् है जिसे स्वयं अपना पता नहीं और न जिसने अभी तक अपने उद्देश्य और लक्ष्य को प्रगट किया है। और इस अज्ञानता से मनोहर भू प्रसार पर एक दु:खद छाया पड़ रही थी, यहाँ तक कि हवा के साथ उड़ती कोयल की पुकार में भी सधैर्य सहनशीलता और विनम्र प्रतीक्षा की ध्वनि सुनाई दे रही थी, जो एक नये जीवन की उत्साहपूर्ण उन्मत्तता की प्रतीक्षा कर रही थी। शोकार्त गीतों में सहायता की प्रार्थना थी। कभी कभी उनमें प्रमत्त, धृष्टतापूर्ण निराशा पाई जाती। नदी की ध्वनि का प्रवाह इसके साथ समवेदना प्रगट कर रहा था। वृक्ष-राजि मस्तक झुकाए ध्यान-मग्न थी। मूकता का अखण्ड राज्य था।

फ़ोमा अपना सारा समय पिता तथा कैप्टेन के साथ गुजारता। उसकी मूक, चौड़ी चौड़ी आँखें नदी के किनारों के अनन्त अन्तरिक्ष को निहार रही थीं। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह रजत राज पथ पर अद्भुत राज्य में जा रहा है, जहाँ प्राचीन शूरवीर और जादूगर रहते थे। कभी कभी वह अपने पिता से जो कुछ वह देखता उसके बारे में प्रश्न करता। इग्नात सहर्ष इच्छापूर्वक उनका उत्तर देता परन्तु फ़ोमा उसके नीरस उत्तरों से सन्तुष्ट न होता न उन्हें समझता, क्योंकि जो वह सुनना चाहता था वह उनमें नहीं था।

"बूआ अनफीसा तुमसे अच्छा जानती है," एक बार उसने आह भरी।

"वह क्या जानती है?" इग्नात हँसा।

"सब कुछ," बच्चे ने बड़े विश्वास के साथ घोषणा की।

उन्हें कोई आश्चर्यजनक देश नहीं मिला। उन्हें प्राय: ऐसे ही शहर सामने आते जिनमें फ़ोमा रहता आया था; कुछ बड़े थे, कुछ छोटे थे, परन्तु सब में लोग,

मकान और गिरजे बिल्कुल वैसे ही थे जैसे कि उसने पहले देखे हुए थे। वह अपने पिता के साथ उन्हें देखने के लिये जाता, परन्तु वे उसे पसन्द नहीं आते और वह थका, हारा और बीमार फिर बोट पर वापिस आ जाता।

"कल हम अस्त्राखान पहुँच लेंगे," इग्नात ने एक दिन कहा।

"क्या वह भी ऐसा ही शहर है ?"

"निःसन्देह, और तुम क्या उम्मीद करते हो ?"

'और, अस्त्राखान के परे क्या है ?"

"समुद्र, इसे केस्पियन सागर कहते हैं।"

"उसमें क्या है ?"

"मछलियाँ, भोले बेटे ! पानी में और क्या रह सकता है ?"

"कितेभ का शहर पानी में खड़ा है।"

"ओह, कितेभ ! परन्तु वह एक खास शहर है। कितेभ में सिर्फ धर्म-परायण और सच्चे लोग ही रहते हैं।"

"क्या समुद्र में धर्मपरायण व सच्चे शहर नहीं हैं ?"

"नहीं," इग्नात ने कहा, और फिर क्षण भर सोच कर वह बोला "समुद्र का पानी खारी होता है, तुम उसे पी नहीं सकते।"

"और, समुद्र के परे क्या और कोई देश है ?"

"निःसन्देह समुद्र का भी कहीं न कहीं अन्त होना ही चाहिये, क्यों नहीं ? यह एक कटोरे के समान है।"

"और फिर और शहर हैं ?"

"हाँ ! परन्तु हमारे शहर नहीं ईरानियों के। तुम्हें याद है तुमने मेले में ईरानियों को देखा था: 'आड़ू, खुमानियाँ, और पि—श—ता' ?"

"ओह, हाँ" फ़ोमा ने अपने स्वप्न से जागते हुए कहा।

एक दिन वह अपने पिता से बोला :

"क्या बहुत देश हैं ?"

"हाँ बेटा ! बहुत देश हैं।"

"क्या वे सब एक जैसे हैं ?"

''तुम्हारा मतलब ?''

''मेरा मतलब शहर और चीजें।''

''हाँ, सब एक जैसे हैं।''

ऐसे बहुत से वार्तालापों के बाद बच्चे की काली आँखें अब आशा के साथ सुदूर में अधिक न निहारने लगीं।

बोट पर मल्लाह उसे प्यार करते थे और बदले में वह भी इन बलवान् चुस्त, मौसम से सुरक्षित लोगों से प्यार करता, जो उससे मखौल में प्यार करते थे। उन्होंने उसके लिये मच्छी पकड़ने की बन्सी बना दी। वृक्ष की छाल से किश्तियाँ बना दीं, वे उसके साथ खेलते और जब उसका बाप कारोबार के सिलसिले में किनारे पर चला जाता, तो उसे अपने साथ किश्तियों पर घुमाने ले जाते। बच्चा प्रायः उन लोगों द्वारा अपने पिता के बारे में की हुई शिकायतें सुनता परन्तु उनकी ओर कभी ध्यान नहीं देता था। एक बार अस्त्राखान में जब कि बोट में ईंधन लादा जा रहा था, फ़ोमा ने मैकेनिक पैत्रोविच को कहते सुना—

"बेवकूफ हमें इतना लक्कड़ ढोने के लिये कह रहा है, वह जहाज को ऊपर तक डुबा देगा और फिर चिल्लायेगा—''तुम्हारा इञ्जन खराब करने से क्या मतलब ! इस प्रकार सारा तेल खतम करने से क्या फ़ायदा ?''

''यह सब इसलिये क्योंकि वह इतना कमीन व लालची है।'' धौले सिर वाले गम्भीर पायलेट ने कहा—''इसके जैसा लालची शैतान ढूंढ़े नहीं मिलेगा।''

''वह बड़ा लालची है।''

बार-बार दोहराये हुए ये शब्द फ़ोमा की स्मृति में गड़ गये। वह अगले दिन सायंकाल, जब भोजन कर रहा था, अचानक बोला—

''पिताजी !''

''हाँ ?''

"क्या आप लालची हैं ?"

जब पिता ने पूछा तो उसने सब कुछ बता दिया, जो पायलेट और

मैकेनिक ने कहा था। इग्नात का चेहरा मलिन पड़ गया और उसकी आँखें क्रोध में चमकने लगीं।

"अच्छा, यह बात है !" उसने सिर हिलाते हुए कहा—"अच्छा, तुम उनकी बातों पर ध्यान मत दो,·······उन्हें बिल्कुल मत सुनो। वे तुम्हारे जैसे लोग नहीं ; उनसे दूर रहो। भूलो मत कि तुम मालिक हो और वे तुम्हारे नौकर, हम जब चाहें उन्हें बोट से परे फेंक सकते हैं। वे सब सस्ते और आवारा कुत्ते हैं, समझे ? वे हमेशा मेरे खिलाफ कुछ न कुछ गंदी बात बकेंगे। इसका कारण यह है कि मैं उनका मालिक हूँ, मैं सम्पन्न और सफल हूँ। धनी मनुष्य से सब हिरस करते हैं। भाग्यवान् के सब शत्रु हैं।"

दो दिन के बाद बोट का नया पायलेट और नया मैकेनिक आ गए।

"पायलेट याकोब कहाँ है ?" बच्चे ने पूछा।

"मैंने उसे हटा दिया है, उससे छुटकारा पा लिया है।"

"यह क्यों ?"

"जैसा उसने कहा था उसके लिये।"

"और पैत्रोविच ?"

"हाँ, पैत्रोविच भी।"

फ़ोमा को अपने बाप की यह बात पसन्द आई, कि वह लोगों को आसानी से छुट्टी दे देता था। वह उस पर हँसा और फिर डेक से नीचे चला गया, जहाँ एक मल्लाह रस्सी खोल रहा था।

"अब हमारे यहाँ नया पायलेट आ गया है", फ़ोमा ने कहा।

"हाँ, मुझे पता है, नमस्कार, फ़ोमा इग्नाविच ! आपको नींद अच्छी आई।"

"और, नया मैकेनिक भी।"

"हाँ, मैकेनिक भी नया। तुम्हें पैत्रोविच के लिये दुःख नहीं ?"

"नहीं ? वह तो मेरे लिये बड़ा अच्छा था।"

"वह मेरे पिता के बारे में ऐसी बुरी बातें क्यों कहता था ?"

"अच्छा, यह बात थी ?"

"यही बात थी। मैंने उसे स्वयं सुना है।"

"हूँ···हूँ। और तुम्हारे पिता ने भी सुना है ?"

"नहीं, उन्हें मैंने बताया है।"

"अच्छा ! तुमने कहा है ?" मल्लाह ने धीरे से कहा, और फिर बिना कुछ कहे अपने काम में लग गया।

"पिताजी ने मुझसे कहा है कि, मैं यहाँ का मालिक हूँ; उन्होंने यह भी कहा है, जिसको मैं चाहूँ बरख़ास्त कर सकता हूँ।"

"अच्छा, ऐसी बात है ?" मल्लाह ने लड़के की ओर ऊपर से नीचे तक निहारते हुए कहा, जो अपने अधिकार और शक्ति के बारे में बड़े जोश से फड़ें मार रहा था।

इसके बाद फ़ोमा ने देखा कि, लोग उससे दूसरी तरह बरतने लगे हैं। अब उनमें से बहुत से अधिक चापलूसी और विनय से बात करने लगे और दूसरों ने हँसी-दिल्लगी छोड़ तेज आवाज अख़त्यार कर ली, अन्य सभी ने बिल्कुल ही बात करना छोड़ दिया। लड़का उन्हें डेक धोते, पोंछते, कपड़ा हाथ में लिये इधर-उधर फुर्ती से दौड़ते, पतलून के पहुंचों को ऊपर चढ़ाये पानी की बाल्टियाँ डेक पर बखेरते, एक दूसरे पर डालते, हँसते-चिल्लाते देखकर बहुत खुश होता था। चारों तरफ पानी बहता था और इसकी आवाज मनुष्यों की आवाजों की पृष्ठभित्ती बन रही थी। बच्चा कभी भी इस काम के आमोद-प्रमोद में रुकावट नहीं समझा गया था, बल्कि वह कभी २ स्वयं भी अपने आप शामिल हो जाता; उन पर पानी फैंकता और, जब कभी मल्लाह उस पर पानी फैंकने आते, वह आनन्द की चीत्कार से दौड़ पड़ता। परन्तु, याकोब और पैंत्रोविच के काम से अलग हो जाने के बाद उन्होंने उसे मित्रतापूर्ण दृष्टि से देखना बन्द कर दिया। फ़ोमा ने भी अनुभव किया कि वह अब उनके लिये अड़चन था, अब कोई उससे खेलना पसन्द नहीं करता था। दुःखी और

घबराया हुआ वह डेक से हट कर ब्रिज पर चला जाता, और वहाँ उद्विग्नता और उदासी के साथ दूर नदी के नीले किनारों और पेड़ों की टेढ़ी-जंगली पंक्तियों की ओर निहारता रहता। किश्ती में नीचे मल्लाह खुशी के साथ पानी के साथ खेलते और हँसते थे। वह भी उन्हीं के बीच उनके पास जाना चाहता था।

"तुम्हें उनसे परे रहना चाहिये", यह पिता के वाक्य थे, और उसने कहा था : "तुम उनके मालिक हो।"

उसका दिल कह रहा था कि वह उन पर हुक्म की आवाज से चिल्लाये। उसने बहुत सोचा कि वह कोई मौके वाली बात उचित रूप से कह सके, परन्तु वह कुछ नहीं कर सका। इस प्रकार दो–तीन दिन गुजर गये और अन्त में उसे विश्वास हो गया कि लोग उसे पसन्द नहीं करते। वह बोट से उदास हो गया और अधिक-अधिक नये गुलाबी प्रभावों से छिपे चेहरे से भुआ अन्फीसा के प्रेमी चेहरे की ओर देखने लगा, जिसकी मुस्कान, कहानियाँ और मधुर हँसी सदा ही उसके हृदय में उष्णता और प्रसन्नता भर देती थी। वह अभी भी परियों की कहानियों की दुनियाँ में रह रहा था, परन्तु उसके सुन्दर कल्पना-जाल को वास्तविकता के क्रूर हाथों ने भंग कर दिया था, जिससे वह प्रत्येक चीज को देखता था। पायलेट और मैकेनिक की घटना से उसे मजबूरन पड़ताल करनी पड़ी ; अब उसकी आँखें और तेज हो गई थीं। उसकी नजर में जिज्ञासा और पूछ-ताछ थी, और अब जो सवाल वह अपने पिता से करता था वह यह जानने की इच्छा से करता था, कि वह कौन से पहिये और स्प्रिंग हैं जिनसे मनुष्य ऐसा व्यवहार करते हैं।

एक दिन उसने निम्न नजारा देखा :

बोट पर मल्लाह लोग बल्लियां लाद रहे थे, उनमें से एक घुँघराले बालों वाला खुशमिजाज लड़का जिसका नाम यफीम था, डेक पर नीचे की ओर जाता हुआ बड़े गुस्से में बोला :

"बिल्कुल नहीं, यह बहुत ज्यादती है। मैंने बल्ली लादने का ठेका नहीं

लिया है। सब जानते हैं कि मल्लाह का काम क्या है? मैं बल्लियाँ नहीं लादूँगा. धन्यवाद! इसका मतलब यह है कि मेरी खाल दुबारा खेंची जाये, ऐसा समझौता मैंने नहीं किया है। यह व्यक्ति आत्मा-रहित है। यह तो आदमी को सूखा चूसना चाहता है।"

बच्चे ने उसे सुना, और समझ गया कि ये बात उसके बाप के बारे में ही हो रही है। वह जानता था कि यद्यपि यफ़ीम शिकायत कर रहा है, परन्तु और लोगों से तेज और ज्यादा काम कर रहा है। दूसरे लोगों ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया; यहाँ तक कि एक दूसरा मल्लाह तो यह शिकायत कर रहा था कि यफ़ीम ने बहुत ज्यादा बल्लियाँ लादी हैं।

"बस", उसने गुस्से में कहा—"यह कोई घोड़ा थोड़े ही है जिसे तुम लाद रहे हो।"

"चुप, अपनी जबान बन्द करो, एक बार जब तुम्हारी काठी कस दी तो तुम्हें बिना रुकावट के बोझा उठाना है। जबान मत चलाओ, चाहे वह तुम्हारा सारा खून चूस लें। इस बारे में तुम कुछ नहीं कर सकते।"

इसी समय इग्नात पता नहीं किधर से आ निकला और वह यफ़ीम की ओर गया।

"तुम अभी क्या बक रहे थे?" उसने कठोरतापूर्वक पूछा।

"मैं···मैं···मैं कह रहा था"······लड़का लड़खड़ाया, "···कह रहा था कि, हमारे समझौते में कोई ऐसी बात नहीं कि मुझे अपना मुँह बन्द रखना पड़े।"

"और वह कौन है जो लोगों का खून चूसता है?" इग्नात ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा।

जब मल्लाह ने देखा कि वह पूरी तरह पकड़ा गया है, और बचकर निकल नहीं सकता तो उसने पकड़ी हुई बल्ली फेंक दी, अपने हाथों को पतलून से पोंछा और सीधा इग्नात की आँखों को देखने लगा।

"क्यों, ? क्या मैं ठीक नहीं कह रहा?" उसने साहसपूर्वक पूछा—"क्या तुम हमारा खून नहीं चूसते?"

"मैं ?"

"हाँ, हाँ तुम।"

फ़ोमा ने देखा कि उसके बाप की बांह ऊपर को घूमी और लड़का बल्लियों के ढेर पर जोर से गिरा। मल्लाह-लड़का जल्दी उठा और बिना एक भी शब्द बोले अपने काम पर वापिस चला गया। उसका चेहरा फट गया था और बर्च के लट्ठे की सफेद छाल पर उसका खून बह गया। उसने अपनी बांहों से चेहरे को पोंछा, खून के धब्बे को देखा, आह भरी, परन्तु बोला कुछ नहीं, जब वह बल्ली उठाये फोमा के बराबर से गुजरा तो बच्चे ने देखा कि, उसकी आंखों से दो बड़ी बड़ी आंसुओं की बून्दें टपक रही थीं।

उस दिन फोमा भोजन के समय······बहुत व्यथित चित रहा। वह रुक रुक कर चोरी से अपने बाप की तरफ भयभीत नजर से देखता रहा।

"आज तुम ऐसे मलिन-मुख क्यों दिख रहे हो ?" इग्नात ने धीरे से पूछा।

"कुछ नहीं।"

"क्या तुम ठीक नहीं हो ?"

"मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

"अगर कुछ बात है, तो मुझे बतलाओ।"

अचानक लड़के ने चिन्तापूर्ण स्वर में कहा:

"पिताजी, आप बहुत बलवान हैं।"

"मैं ? हाँ, मैं काफी बलवान् हूँ, परमात्मा ने मुझे पैदा करते समय ताकत देने में कञ्जूसी नहीं दिखाई।"

"तुमने उसे खूब मुक्का लगाया।" बच्चे ने सिर झुकाते हुए धीरे से कहा।

इस विस्मय से इग्नात सैन्डविच को आधा मुँह में डालता हुआ बीच में रुक गया और अचम्भे के साथ झुके हुए सिर की तरफ देखने लग गया।

"तुम्हारा मतलब यफीम ?" उसने पूछा।

"हाँ। उसके खून बह रहा था और वह जाता हुआ रो रहा था," लड़के ने हल्की आवाज़ में कहा।

"हूँ…हूँ…हूँ," इग्नात ने सैण्डविच को खाते हुये कहा—"तुम्हें उसके बारे में बहुत अफ़सोस है ?"

"हाँ," फ़ोमा ने आंसुओं के साथ काँपती हुई आवाज़ में कहा।

"अच्छा……तुम इस प्रकार के दिल वाले बच्चे हो," इग्नात ने कहा।

उसने एक ग्लास में वोदका डाली और बिना कुछ कहे उसे पी गया, और फिर प्रभावपूर्ण आवाज़ में बोला :

"कोई कारण नहीं कि तुम इस बारे में दुःख करो। उसे उसके विचारों के लिये सजा मिल गई। मैं जानता हूँ; वह एक अच्छा लड़का है, बलवान् है, मेहनती है और उसकी खोपड़ी में अच्छा दिमाग है। परन्तु यह उसका कोई काम नहीं कि, वह मुझे अपने विचार बतलाये। मैं ही ऐसा कर सकता हूँ, क्योंकि मैं मालिक हूँ। मालिक होना कोई आसान नहीं। इस ज़रा सी चोट से उसे कुछ नहीं होता—उसे फायदा ही होगा। ओह, फ़ोमा ! अभी तुम बच्चे हो, अभी तुम कुछ नहीं समझ सकते, अभी मुझे तुम्हें सिखाना है कि जीवन में कैसे कामयाबी मिलती है। शायद अब इस संसार में मेरे दिन थोड़े ही रह गये हैं।"

अपने बेटे को शिक्षा देने से पूर्व उसने वोदका का प्याला पिया

"लोगों के प्रति दया भाव बहुत अच्छी बात है—मुझे प्रसन्नता है कि तुममें दया भाव है। परन्तु तुम्हें यह भी पता होना चाहिये कि दया कब करनी चाहिये। सबसे पहले आदमी को अच्छी तरह परखो और पता लगाओ कि वह कैसा है, और उसमें क्या गुण हैं। यदि वह सबल और योग्य है उस पर दया करो और उसकी सहायता करो। यदि वह निर्बल है और काम करने में अच्छा नहीं उस पर थूक कर बराबर से निकल जाओ। याद रक्खो जो मनुष्य हमेशा शिकायत करता रहता है, वह बेकार है। ऐसे मनुष्य के प्रति दया

करना बेकार है, क्योंकि उसका अच्छा परिणाम नहीं। इससे तुम उसे कमजोर बना दोगे। तुम्हारे धर्म पिता के घर में सब तरह की जेली मछलियाँ रहती हैं, उनमें धर्मात्मा, बुढ़ियायें, भिखारी, पिछलग्गू और गंदी है। उन्हें अपने दिमाग से निकाल दो। वे अच्छे लोग नहीं, वे खोखले हैं और किसी मतलब के नहीं। वे मक्खी, खटमल और दूसरे कीड़ों जैसे हैं। वे परमात्मा की सेवा नहीं करते; उनका कोई परमात्मा नहीं; वे उसका नाम सिर्फ लोगों की दया प्राप्त करने के लिये और अपना पेट भरने के लिये लेते हैं। वस्तुतः वे अपने पेट की सेवा करते हैं। उन्हें खाने, पीने, सोने और आहें भरने के अलावा कुछ नहीं आता। वे मनुष्य को थोथा बना देते हैं। वे हमेशा तुम्हारे पाँव पर गिरते हैं, और मनुष्य का ऐसे ही सत्यानाश कर देते हैं जैसे अच्छे सेवों में पड़ा सड़ा सेव उन्हें खराब कर देता हैं। मुश्किल यह है कि तुम, जो मैं कह रहा हूँ उसे समझने के लिये, बहुत छोटे हो। जो मनुष्य अपनी मुसीबतों को बहादुरी से झेलता है उस मनुष्य का अधिकार लेने का है। वह तुम से मदद न भी माँगे, परन्तु यदि तुम्हें दिखे कि उसे मदद की जरूरत है, उससे बिना पूछे दो। यदि उसमें इतना आत्माभिमान है कि, तुम्हारी मदद से वह अपनी अप्रतिष्ठा समझता है तो ऐसे मदद करो जिससे उसे पता न लगे। यही एक तरीका है, और देखो, में तुम्हें एक मिसाल देता हूँ: हम देखते हैं कि दो तख्ते कीचड़ में गिर पड़े हैं, उनमें से एक गला सड़ा तख्ता है, दूसरा अच्छा और मजबूत है। हमें क्या करना चाहिये ? गले तख्ते की जरा भी परवाह न करो। उसे कीचड़ में ही पड़ा रहने दो, ताकि तुम अपने पांव को सूखा रखते हुए गुजर सको। परन्तु अच्छे तख्ते को कीचड़ से निकाल उसे धूप में सूखने रख दो। किसी दिन यह काम आयेगा। यह संसार ऐसा ही है। जो मैं कह रहा हूँ, उसे याद रक्खो। यफ़ीम के प्रति सहानुभूति, और दया बेकार है—वह समझदार है, और अपना मूल्य समझता है। तुम उसके हौसलों को कोड़ों से नहीं तोड़ सकते। मैं उस पर हफ्ता दस दिन नजर रक्खूँगा और फिर ब्रिज पर लगा दूँगा। और वह तुम्हारे जानने से पहले एक पायलैट बन जायेगा। इसी प्रकार न कुछ से 'सब कुछ' बन जाते हैं; मैंने इसी प्रकार की शिक्षा दुनियाँ में ली है। मैं जब उसकी उमर का था, मैंने भी बहुत

कोड़े खाये हैं। बेटा, जीवन प्यार करने वाली माँ के समान नहीं, परन्तु कठोर काम लेने वाले मालिक के समान है।"

दो घन्टे तक इग्नात अपने बेटे को अपनी जवानी, अपनी मेहनत, मनुष्य स्वभाव, और निर्बलता में छुपी स्वाभाविक शक्ति, और किस प्रकार कुछ लोग हमेशा अपने अभाग्य का बहाना करते रहते हैं ताकि दूसरों के खर्च पर जीवन यापन कर सकें, इत्यादि के बारे में कहता रहा। और फिर उसने उसे बताया कि, किस प्रकार वह एक श्रमजीवी से एक बड़े उद्योक का स्वामी बना था।

बच्चा ज्यों ज्यों उसकी बातों को सुन रहा था, उसकी आँखें अपने पिता के चेहरे पर गढ़ी हुई थीं, जो उसके प्रत्येक शब्द का पान कर रहा था और उसके साथ बढ़ती निकटता अनुभव कर रहा था। पिता के उपदेश में उसने वह आकर्षण नहीं पाया जो भुआ अनफीसा की कहानियों में था। परन्तु, फिर भी फ़ोमा के लिये ये बिल्कुल नया और साफ़ था तथा परियों की कहानियों से ज्यादा समझ में आने वाला था और किसी कदर मनोरंजक भी था। उसका हृदय जोर से धड़कने लगा और उसने अनुभव किया कि वह अपने पिता की ओर खिचा जा रहा है। इग्नात ने भी अपने बेटे की आंखों में वही बात पढ़ी, वह एकदम उठा और लड़के को अपनी बाहों में उठा कर बहुत जोर से उसका आलिंगन किया। फ़ोमा ने भी अपनी बाहें उसकी गर्दन में डाल दीं और अपने गालों को उसके गालों से भींच कर बैठ गया।

"बेटा!" इग्नात ने भारी आवाज़ में कहा "मेरे जीवन, मेरे प्राण! जब तक मैं जीवित हूँ मुझसे सीखो, जीवन आसान नहीं है।"

इन शब्दों की फुसफुसाहट से बच्चे के हृदय में एक नई चुभन पैदा हो गई। उसके दांत भिच गये और आँखों में आंसू आ गए।

अग्नि-बोट अब वोल्गा के बहाव की ओर जा रहा था। जुलाई की एक गरम रात में जबकि आसमान मोटे काले बादलों में छिपा हुआ था और नदी भयंकर नीरवता में लिपटी पड़ी थी वे क़ाज़ान पहुंचे और उस्लोन के नज़दीक, किश्तियों के एक लम्बे काफले के अन्त में लंगर डाल दिया। फ़ोमा

जंजीरों की झंनक और मल्लाहों की चिल्लाहट से जाग गया । उसने खिड़की से बाहर झांका परन्तु दूर दिखाई देते हुए दीपकों और पानी के अलावा कुछ नहीं दिखाई दिया जो काले गाढ़े तेल के समान था । लड़के का दिल डर से सिकुड़ गया और उसने नीरवता में सुनने के लिये कानों पर जोर डाला । कहीं दूर से एक रूदार्त विलापपूर्ण गाने की ध्वनि आ रही थी । किश्तियों के काफले के चौकीदार एक दूसरे को आवाजें दे रहे थे । अग्निबोट ने अपनी भाफ छोड़ी, एक फुसकार सुनाई देने लगी । काला पानी बोट के दोनों पार्श्वों पर धीरे-धीरे वेदना के साथ थपथपाने लगा । अन्धेरे में इस प्रकार ध्यानपूर्वक निहारने से फ़ोमा की आँखें दुःख आईं और वह धुँधले प्रकाश में कुछ काली परछाईयों को देख सका । वह जानता था कि, वे माल ढोने वाली किश्तियों वाले थे, परन्तु यह पता होने ही से वह निश्चिन्त नहीं हो सकता था ; उसका दिल जोर से धड़कने लगा और उसकी कल्पना ने अनेक डरावनी कल्पाएँ कीं ।

"ऊ···ू···ू···" दूर से एक लम्बी रोने की आवाज आई, जिसके अन्त में सिसक थी । कोई डेक को पार करके गया ।

"ऊ···ू···ू···" फिर चिल्लाहट आई, और इस बार वह और समीप थी ।

"यफ़ीम !" डेक वाले आदमी ने हलकी आवाज में बुलाया ।

"अरे उठो , और बोट-हुक लाओ ।"

"ऊ···ू···ू···" इस बार आवाज बहुत पास थी, फ़ोमा खिड़की से कूद कर दूर हो गया ।

वह अजब आवाज और भी समीप आई । अब उसमें रुदन था और वह अंधेरे में मन्द पड़ती जा रही थी । डैक पर किसी ने भयभीत आवाज में गुनगुनाया :

"यफीम ! उठो ! एक मेहमान बहता जा रहा है ।"

"कहाँ ?" एकदम जवाब आया । डैक पर नंगे पाँवों की थपथपाहट सुनाई दी । दो बोट-हुक फ़ोमा की खिड़की के पास नीचे से झुकाये गये जो गाढ़े पानी में बिना किसी शब्द के गिरे ।

"मे···ह···मा···न !" कोई पास में चिल्लाया और इसके बाद पानी में डरावनी छलछलाहट हुई।

विलापपूर्ण चिल्लाहट से बच्चा डर गया। परन्तु वह खिड़की की चौखट से अपने हाथों को और पानी से अपनी आँखों को हटा नहीं सकता था।

"लैम्प जलाओ, मुझे कुछ दिखाई नहीं देता।"

उसी समय पानी पर हल्के प्रकाश का घेरा दिखाई देने लगा। फ़ोमा ने देखा कि पानी धीरे-धीरे लहरें मार रहा है, और उसकी छोटी लहरें पानी की सतह पर ऐसे चल रही थीं जैसे वह पीड़ा से काँप रही हो। "देखो······ देखो !" किसी ने डरावनी आवाज में कहा।

प्रकाश के घेरे में एक मनुष्य का डरावना चेहरा वह रहा था, जिसके बड़े-बड़े दाँत खुले हुए थे। वह लाश पानी पर डोल रही थी, और जैसे ही वह बहती हुई गुजरी—उसके दांत सीधे फ़ोमा की तरफ दिखाई दे रहे थे, जैसे कि वह कह रहे हों :

"ओ, छोटे बच्चे ! ओ, छोटे बच्चे ! यहाँ बहुत ठण्ड है।" बोट-हुक थोड़े से हिले, ऊपर को खेंचे गये और फिर पानी में गिरा दिये गये।

"इसे दूर कर दो—दूर बहाव पर डाल दो, देखना यह हमारे पैडलों के पहियों में न आ जाये।"

हुक बोट के किनारे रगड़ने लगे, जिनसे दाँतों के कटकटाने की आवाज आती थी। पाँवों की थपथपाहट फिर बोट के पिछले हिस्से में चली गई, जहाँ से फिर विलापपूर्ण आवाज आई :

"ऊ··· ··· ! एक मे—ह···मा···न !"

"पिताजी !, पिताजी," फ़ोमा चिल्लाया।

उसका बाप उठा और दौड़कर उसके पास गया।

"यह क्या है ? वे क्या कर रहे हैं ?" लड़का चिल्लाया।

इग्नात बड़े जोर से गरजा और दो-तीन डगों में केबन से बाहर हो गया : वह तुरन्त इतनी जल्दी वापिस आ गया कि, आँखें फाड़े फ़ोमा खिड़की से बाप के बिस्तर तक भी नहीं लड़खड़ा सका था।

"उन्होंने तुम्हें डरा दिया ? यह कुछ नहीं, बेटा !" इग्नात ने लड़के को अपनी बाँहों में लेते हुए कहा—"आओ, मेरे साथ बिस्तर पर चढ़ आओ ।"

"यह क्या था ?" फ़ोमा ने धीमी आवाज में पूछा ।

"कुछ नहीं बेटा ! कोई डूब गया होगा, और उसकी लाश नदी में बह रही है । बस यही है, तुम डरो मत । जिसको मरना था, वह मर गया ।"

"उन्होंने उसे दूर क्यों धकेल दिया", उसने भय से बाप से चिपटे हुए और आँखें भींचते हुए पूछा ।

"उन्हें ऐसा करना ही था, अगर वह पैडल के पहिये में आ जाता तो हमें उसका जवाब देना पड़ता । पुलिस सुबह उसे देखकर कई तरह की मुसीबतें खड़ी कर देती—कई तरह के सवाल पूछती, और हमें रोक लिया जाता । इसलिये उन्होंने उसे दूर धकेल दिया है । इससे उसे क्या फर्क पड़ता ? वह तो मर चुका है—इससे उसके शरीर या आत्मा को तो कोई कष्ट नहीं पहुँचता, परन्तु हमारे लिये वह आपत्ति खड़ा कर सकता था । चलो बेटा, सो जाओ :"

"क्या वह इस प्रकार बहता ही जायेगा ?"

"हां, कुछ समय तक । जब तक कि कोई उसकी लाश को बाहर खींचकर निकाल कर दफना न दे ।"

"क्या मछलियाँ उसे नहीं खा जायेंगी ?"

"नहीं, मछलियाँ मनुष्य का माँस नहीं खातीं । केंकड़ा खा लेता है ।"

फ़ोमा का डर थोड़ा कम हो चुका था, परन्तु अभी भी उसके विचारों में वह खुले दाँत वाला चेहरा, [जो काले पानी पर झूल रहा था, दिखाई दे रहा था ।

"यह कौन था ?"

"परमात्मा ही जानता है कि कौन था । परमात्मा उसकी आत्मा को शान्ति दे ।"

"प्यारे परमात्मा, उसकी आत्मा को शान्ति दो !" फ़ोमा गुनगुनाया ।

"अच्छा, अब तुम सो जाओ और डरो मत । अब वह बहुत दूर पहुंच

गया है, वह बह रहा है। यह तुम्हारे लिये एक पाठ है—जब तुम रेलिंग के पास जाओ, बड़े ध्यान से रहो। तुम पानी में गिर सकते हो, परमात्मा ऐसा न करे··· ···और···"

"क्या वह पानी में गिर गया था ?"

"हाँ, हो सकता है कि वह नशे में हो; हो सकता है कि वह जानबूझ कर गिर गया हो। कभी-कभी लोग ऐसा करते हैं, वे एकदम पानी में कूद पड़ते हैं, डूब जाते हैं। जीवन ऐसा ही है। कई बार मौत भी मनुष्य के लिये परमात्मा की दया होती है, और कई बार मौत सबके लिये ही अच्छी होती है।"

"पिताजी···"

"आओ बेटा ! सो जाओ।"

३.

स्कूल में पहले ही दिन फ़ोमा ने, जो स्कूल की शरारतों और खेल-कूद के जंगली शोर-शराबे से भोचक्का हो गया था, दो लड़कों को चुना, जो उसे औरों से अधिक दिलचस्प दीखे। एक उसके सामने बैठा था। वह उसकी चौड़ी कमर, मोटी गर्दन जिस पर उदारतापूर्वक धब्बे पड़े थे, उसके बड़े-बड़े कान और छोटे बारीक कटे बालों—जिनमें से कुछ चमकीले लाल रंगे थे, पर से नजर न हटा सका।

जब मास्टर ने, जो खल्वाट था और जिसका नीचे का ओठ आगे की ओर बढ़ रहा था, आवाज दी : "आफ्रिकन स्मोलिन !" लाल बालों वाला लड़का धीरे से उठा, चलकर सामने के कमरे में गया और शान्त भाव से मास्टर की ओर देखने लगा, जबकि वह सवाल पढ़ रहा था। फिर उसने चाक पकड़ी और बड़ी-बड़ी संख्याओं को ब्लैक-बोर्ड पर ढूँढ़ने लगा।

"ठीक, बस काफी है"; मास्टर ने कहा—"निकोलाई यभोव ! चलो, तुम सवाल करो।"

एक छोटा सा चंचल लड़का, जिसकी तेज काली आँखें चूहे जैसी थीं, मेज से उठा, जिस पर उसके साथ फ़ोमा भी बैठा हुआ था और प्लेटफार्म की ओर गया। वह अपना सिर दोनों ओर मरोड़ता था और रास्ते की हर चीज से टकराता था। जब वह ब्लैक-ब्रोर्ड के पास पहुँचा, उसने चाक का टुकड़ा पकड़ा और पंजे उठाकर कुछ अस्पष्ट राशियाँ बड़ी तेजी से लिखने लगा जिससे चाक टूटने लगी और बोर्ड पर उसके घिसने से आवाज आने लगी।

"इतना तेज नहीं," मास्टर ने अपने पीले चेहरे को कसते हुए कहा जैसे कि उसे बड़ी तकलीफ हो रही हो।

"उत्तर है: पहले फेरी वाले को सतरह कोपेक* का लाभ हुआ" यभ्कोव ने ऊँची आवाज में कहा।

"बस, बस, गोर्देयव ! तुम बतलाओ, दूसरे फेरी वाले को क्या लाभ हुआ ?"

फोमा इन दोनों लड़कों को, जो एक दूसरे से बहुत भिन्न थे, बहुत ध्यान से देख रहा था इसलिये वह अचानक पकड़ा गया और जवाब न दे सका।

"पता नहीं ? स्मोलिन, इसे समझाओ।"

स्मोलिन ने जो बड़े ध्यान से अपनी उँगलियों पर लगे चाक को कपड़े से पोंछ रहा था, फोमा को देखते हुए चाक रख दिया। वह अपना सवाल कर चुका था और जब यभ्कोव कूदता उछलता अपनी जगह पर आया वह उंगलियाँ पोंछ रहा था।

"क्या बात है ?" उसने अपनी जगह पर बैठते हुए पूछा और उसकी पसलियों में अपनी उंगलियाँ मारीं—"तुम सवाल क्यों नहीं कर सके ? सारा लाभ कितना हुआ ? तीस कोपेक। फेरी वाले कितने थे ? दो। उनमें से एक को सत्तरह कोपेक का लाभ हुआ तो दूसरे को कितना लाभ होगा ?"

"मैं जानता हूँ," फोमा ने शर्माते हुए कहा, जबकि स्मोलिन गम्भीरता-पूर्वक अपनी बैंच पर वापस आ रहा था। उसे स्मोलिन का चेहरा पसन्द नहीं था। वह गोल और धब्बेदार था; और उसकी दोनों आँखें चर्बी में दबी हुई थीं। यभ्कोव ने फोमा की टांग पर एक तेज चुटकी भरी।

"तुम्हारा पिता कौन है ? झक्खी ?" उसने पूछा।

"हाँ !"

***कोपेक—एक रूबल में सौ कोपेक होते हैं।**

"यह बात है। तुम चाहते हो, मैं तुम्हें सब सवाल बतला दूँ ?"

"हाँ"

"तुम मुझे इसके लिये क्या दोगे ?"

फ़ोमा कुछ देर तक सोचता रहा।

"क्या तुम सब सवाल जानते हो ?" उसने पूछा।

"मैं ? मैं सबसे अच्छा विद्यार्थी हूँ।"

"शोर बन्द करो।" मास्टर बोला—"यझोव, तुमने फिर बातें शुरू कर दी हैं ?"

यझोव उछल कर खड़ा हो गया।

"मैं नहीं हूँ, इवान आन्द्रेईविच, यह गोर्देयेव है," उसने वाचालतापूर्वक कहा।

मास्टर ने अपना चेहरा मरोड़ते हुये और नीचे के ओठों को उपहास्यास्पद तरीके से हिलाते हुए तीनों को झिड़कना शुरू किया, परन्तु यझोव बावजूद इस झिड़की के कानाफूसी करता ही रहा :

"बहुत अच्छा, स्मोलिन, इस चिल्लाहट के लिये मैं तुम्हारी मरम्मत करूँगा।"

"तुमने अपना दोष इस नये लड़के पर क्यों डाला ?" स्मोलिन ने बिना मुड़े कहा।

"मैं तुझे बता दूंगा, मैं तुझे बता दूंगा।" यझोव ने कहा।

फ़ोमा कुछ नहीं बोला। वह अपनी आँख के कोने से अपने चुलबुले पड़ोसियों को देखता चुप रहा और सोचता कि उन से, बावजूद आकर्षण के, अलग रहना ही अच्छा है। छुट्टी के समय यझोव ने उसे बताया कि, स्मोलिन भी धनवान् है—वह चमड़े के कारखाने के मालिक का लड़का है—परन्तु वह अपने आप गरीब है। उसका पिता खज़ाने में दरवान का काम करता है : उसके कपड़े भूरे मोटे कपड़े के बने हुये थे और पतलून पर घुटनों और कोहनी के पास थेगाली लगी हुई थीं, उसका चेहरा पीला और ढला हुआ था और शरीर

दुबला पतला था। वह हल्की धात्वी ध्वनि में बोलता था और अपने भाषण
को भाव भंगी और चेहरे से व्यंजित करता था, और समय समय पर ऐसे शब्द
बोलता था जिनका मतलब उसे ही पता था।

"मैं और तुम दोनों दोस्त बन जायेंगे," उसने फ़ोमा से कहा।

"तुमने मास्टर से मेरी शिकायत क्यों की ?" फ़ोमा ने अविश्वासपूर्वक उसकी ओर देखते हुये कहा।

"हट ! इसमें क्या है ? तू धनवान् है; और मास्टर धनी लड़कों का बहुत लिहाज़ करता है। वह मुझे नहीं चाहता, मैं शरारती हूँ और उसे कभी भेंट नहीं देता। अगर मैं पढ़ने में अच्छा न होता तो उसने मुझे कभी का निकाल दिया होता। अब समझे ? इस स्कूल के बाद में जमनेजिअम में जाऊँगा। जैसे ही मैं दूसरी क्लास में चढ़ता हूँ, मैं चला जाऊँगा। वहाँ का एक विद्यार्थी मुझे पढ़ाता है। वहाँ जाकर मैं ध्यान से पढ़ूंगा। तुम्हारे घर में कितने घोड़े हैं ?"

"तीन। तुम खूब क्यों पढ़ोगे ?"

"क्योंकि मैं गरीब हूँ। ग़रीब लड़कों को पढ़ने में मेहनत करनी पड़ती है। तभी तो वे धनवान बन सकते हैं—वे डाक्टर बनेंगे, अफसर बनेंगे और सरकारी नौकरी करेंगे। मैं एक घुड़सवार बनना चाहता हूं—जिसकी कमर में तलवार लगी हो, बूटों में एड़ (Spurs) लगी हो—और खटखट करता हो। तुम क्या बनना चाहते हो ?"

"मुझे नहीं पता," फ़ोमा ने अपने साथी को ध्यान से देखते हुए कहा।

"तुम्हें जरूरत भी क्या है ! तुम्हें कबूतर पसन्द है ?"

"हाँ···ा···ाँ···तू; खूब एक छोटा सा मुर्गा है। हाँ···ा···ाँ, ना···ा," यझोव फ़ोमा की आवाज़ की नकल करते हुए बोला।

"एक भी नहीं।"

"वाह ! धनी और एक भी कबूतर नहीं ? यहाँ तक कि मेरे पास तीन हैं: एक पाउटर, एक धब्बेदार कबूतरी और एक लोटन। अगर मेरा बाप मालदार

होता तो मैं सौ कबूतर रखता और उन्हें दिन भर उड़ाता। स्मोलिन के पास बहुत अच्छे चौदह कबूतर हैं। लोटन उसी ने मुझे दिया था मगर वह बड़ा कंजूस है। सब मालदार बड़े कंजूस होते हैं। तुम भी ऐसे ही हो?"

"मैं—मैं नहीं जानता," फ़ोमा ने कहा।

"आओ चलो, स्मोलिन के घर चलें, वहाँ हम तीनों कबूतरों का पीछा करेंगे।"

"बहुत अच्छा, अगर मुझे इजाजत मिली।"

"क्यों, क्या तुम्हारे पिता तुम्हें नहीं चाहते?"

"बहुत चाहते हैं।"

"फिर वह तुम्हें इजाजत दे देंगे। मगर उसे मत बतलाना, मैं भी वहीं आ जाऊँगा। हो सकता है कि, उन्हें पता लग जाये तो तुम्हें न आने दें। तुम स्मोलिन के घर जाने की ही आज्ञा मांगना, स्मोलिन के घर की।"

मोटा लड़का सामने से आ रहा था, यझोव ने सिर हिला कर उसका अभिवादन किया।

"ओ लाल सिर वाले बकवादी, आओ, इधर आओ, पत्थर, तेरे साथ कौन दोस्ती कर सकता है।"

"क्या शिकायत कर रहा है?" स्मोलिन ने बिना घबराहट के फ़ोमा पर नज़र गढ़ाते हुए कहा।

"मैं शिकायत नहीं कर रहा, सच कह रहा हूं," यझोव ने खुशी में हिलते हुए कहा—"यह और मैं इतवार के दिन गिरजे के बाद तुम्हारे घर आ रहे हैं चाहे तुम चाहो या नहीं।"

"जरूर आओ," स्मोलिन ने इशारा किया।

"हम जरूर आयेंगे। अब मिनट भर में घण्टी बजने वाली है और मैं यह पक्षी बेचना चाहता हूँ", यझोव ने एक कागज़ का थैला निकाला जिसमें कोई चीज फड़फड़ा रही थी। अगले ही क्षण उसने उसे फिर सरका दिया।

"ओ···ो···ह !" यफ़ीव की जिंदा दिली से फोमा चिल्लाया।

"बहुत जल्दी," फोमा के साथ लाल सिर वाला लड़का भी पूछती सी नजर से बोला।

"बड़ा खुश दिल है," फोमा ने कहा।

"ओ···ह" स्मोलिन ने सहमति प्रगट की। वे दोनों थोड़ी देर तक बिना बोले एक दूसरे की तरफ देखते रहे।

"तुम भी उसके साथ मेरे घर आओगे ?" लाल सिर वाले लड़के ने पूछा।

"जरूर आओ, हमारे यहाँ बहुत अच्छा है।"

फोमा ने कोई जवाब नहीं दिया।

"तुम्हारे और भी दोस्त हैं ?" स्मोलिन ने पूछा।

"कोई नहीं।"

"जब मैं स्कूल में आया था, मेरे भी कोई दोस्त न थे। मेरे भतीजे के अलावा और कोई नहीं था। तेरे अभी से दो दोस्त हैं।"

"हाँ," फ़ोमा ने कहा।

"बहुत से दोस्त होना अच्छा है। इससे पढ़ाई में मदद रहती है। तुम्हें सवाल पता लग जाते हैं।"

"तुम पढ़ने में अच्छे हो ?"

"मैं ? मैं सब बातों में अच्छा हूँ," स्मोलिन ने सन्तोषपूर्वक कहा।

स्कूल की घण्टी ऐसे बज रही थी जैसे कि वह डर से काँप रही हो।

फ़ोमा अब अपनी श्रेणी के कमरे में कुछ आराम अनुभव करने लगा। उसने अपने इन दोनों साथिओं की औरों से तुलना की। उसने फैसला किया कि वे और लड़कों की अपेक्षा वैसे ही ऊँचे है जैसे ब्लै-क बोर्ड पर पाँच और सात में फर्क है। उसे ये सोच कर बहुत खुशी हुई कि स्कूल में उसके दोस्त पढ़ने में बहुत अच्छे हैं।

स्कूल ख़तम होने पर तीनों साथ साथ घर की ओर चले। यभोव जल्दी ही एक पतली गली में मुड़ गया, परन्तु स्मोलिन सारे रास्ते फ़ोमा के साथ गया।

"वहुत अच्छी बात है, हम दोनों स्कूल से भी साथ आ सकते हैं", उसने जुदा होते हुए कहा।

फ़ोमा जब घर पहुँचा, बड़ी खुशियाँ मनाई गईं। उसके बाप ने उसे भारा चाँदी का चमचा भेंट किया, जिस पर संकेताक्षर खुदे हुए थे। उसकी भुआ ने ताजा बुना हुआ गुलूबन्द भेंट किया। जब वह अपने कपड़े उतार चुका तो भोजन करने बैठा, जिसमें सभी उसकी मन पसन्द चीजें थीं। उसकी भुआ और पिता ने उससे पूछना शुरू किया।

"अच्छा, स्कूल तुम्हें पसन्द आया?" इग्नात ने बेटे के गुलाबी गालों और चमकती आँखों को प्यारपूर्वक देखते हुए पूछा।

"ठीक है, मुझे पसन्द आया", फ़ोमा ने कहा।

"परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे", उसकी भुआ ने स्थूल-बुद्धि से कहा—"दूसरे लकड़ों को अपने पर हावी मत होने देना। अगर वे तुम्हें नुकसान पहुँचाएँ या मारें तो सीधा मास्टर से जाकर कह देना।"

"बिल्कुल नहीं।" इग्नात ने घरघराते हुए कहा—"अपनी लड़ाईयाँ अपने आप लड़ो; उन लड़कों को अपने मुक्के का मजा चखाओ। क्या वे अच्छे लड़के हैं?"

"हाँ", फ़ोमा, यभोव के बारे में मुसकराते हुए बोला—"उनमें से एक लड़का बड़ा दिलचस्प है, तुमने ऐसा कभी देखा होगा!"

"वह किसका लड़का है?"

"एक दरबान का बेटा है।"

"तुमने बताया कि वह बड़ा जिन्दा दिल है?"

"हाँ, वह खूँख्वार-सा है, वह।"

"अच्छा, अच्छा! और दूसरा?"

"दूसरा लाल सिर वाला स्मोलिन—"

"ओह, वह दिमित्री इवानोविच का बेटा होगा। उससे दोस्ती रक्खो, वह तुम्हारी किस्म का है। दिमित्री अच्छे दिमाग वाला आदमी है, अगर लड़का भी उस पर है तो अच्छी बात है। परन्तु दूसरा लड़का कैसा है······फ़ोमा ऐसा करो: उन्हें अगले इतवार को अपने घर बुलाओ। मैं उनके लिये कोई अच्छी चीज खरीद लाऊँगा। और हम उन्हें परख सकेंगे।"

"स्मोलिन ने अगले इतवार को मुझे अपने घर में बुलाया है", उसने अविश्वासपूर्वक अपने पिता की ओर देखते हुए कहा।

"अच्छा, उसने बुलाया है? जरूर जाओ। हाँ जरूर जाओ। तुम देखोगे दुनियाँ में कैसे-कैसे लोग हैं। दुनियाँ में कोई आदमी दोस्तों के बिना अकेला नहीं रह सकता। मिसाल के तौर पर मुझे ही लो; तुम्हारे धर्म-पिता से मेरी बीस साल की मित्रता है, और मैंने उससे कई नई-नई बातें सीखी हैं। तुम भी ऐसी ही करो: जो तुमसे अच्छे हों, तुमसे बुद्धिमान् हों उनसे दोस्ती करो। अच्छे आदमियों के साथ तुम रगड़ खाओगे तो चाँदी से रगड़ खाये तांबें के सिक्के की तरह, तुम भी चाँदी की तरह चमक जाओगे।"

इग्नात, जो अपनी उपमा से प्रसन्न था, हँस कर बोला:

"मगर मैं मखौल कर रहा हूँ। तुम्हें नकल नहीं असल बनना चाहिये। तुम अपने दिमाग से चलो, चाहे वह तुम्हारे पास कम ही हो; क्या तुम्हें घर पर करने के लिये बहुत काम मिला है?"

"बहुत", बच्चे ने आह भरते हुए कहा। उसकी भुआ ने आह की प्रतिध्वनि की।

"ध्यान रक्खो कि, तुम इसमें और लड़कों से पीछे न रहना। एक बात जो मैं तुम्हें बतलाना चाहता हूँ, यह है: स्कूल में तुम चाहे बीस साल भी पढ़ो, पढ़ने-लिखने और सवाल सीखने के अलावा कुछ नहीं सीखोगे। या तुम शरारत करना सीख सकते हो, परन्तु परमात्मा ऐसा न करे। तब तुम्हें मैं बहुत मारूँगा। और, यदि तुमने तम्बाकू पीया तो तुम्हारे मुँह पर थप्पड़ लगाऊँगा।"

"अपने हृदय में परमात्मा का भय रक्खो", भुआ ने कहा—"परम पिता परमात्मा को कभी मत भूलो।"

"यह ठीक है ! परमात्मा और पिता से डरो। परन्तु मैं तुम से कह रहा था कि, ये पाठ्य-पुस्तकें ही दुनियाँ में सब कुछ नहीं—वे ऐसी ही हैं जैसे तरखान के लिये आरा, बसूला इत्यादि। वे औजार हैं, औजार तुम्हें नहीं सिखा सकते कि तुम्हें क्या करना चाहिये। समझे, या इसे इस प्रकार समझो : एक तरखान को पेड़ की छाल उतारने के लिये कुल्हाड़ा दिया गया। इसके लिये हाथ और कुल्हाड़े की ही जरूरत नहीं, तरखान को यह भी जानना चाहिये कि कुल्हाड़ा किस प्रकार चलाना चाहिये ; वह पेड़ पर चोट करे न कि पैर पर। इसी प्रकार केवल मात्र किताब ही काफी नहीं, तुम्हें उसका प्रयोग भी करना चाहिये और यह ज्ञान किसी पुस्तक से बहुत कीमती है, जिसे तुम और किसी पुस्तक में नहीं पाओगे। जीवन ही तुम्हें ये सब बातें सिखा सकता है : पुस्तक तो मृत वस्तु है ; उसे तुम मोड़ो, फाड़ो, कूटो—वह चिल्लायेगी नहीं। परन्तु जीवन इससे भिन्न है : यदि तुमने एक भी ग़लत क़दम उठाया, तुम ग़लत स्थान में पहुँच जाओगे, तुम पर लोग चारों तरफ से चिल्लायेंगे और हो सकता है कि तुम पर डण्डों की चोट हों और पटखनियाँ भी खाओ।"

फ़ोमा मेज पर कोहनी टेके बैठा ध्यान से अपने पिता को कहते हुए सुनता रहा और जैसे-जैसे उसकी आवाज गरजती थी, वह पेड़ की छाल उतारने वाले तरखान की कल्पना करने लगा और फिर धीरे-धीरे अपने आप खतरनाक मैदान में हाथ बढ़ाये ; एक जीवित चीज को पकड़ने की इच्छा करने लगा, चाहे उससे उसे डर लग रहा हो।

"प्रत्येक मनुष्य को अपने काम के लिये, जो उसे करना है, अपना ध्यान रखना चाहिये। उसे ठीक-ठीक पता होना चाहिये कि उसे क्या करना चाहिये। मनुष्य जहाज के पायलेट के सामान है। जवानी, जैसे कि बाढ़ के समय नदी में उसे सीधा चलाया जा सकता है—उसे सब गजह धारायें मिल जाती हैं। सब चीजें अपने वक्त पर होती हैं। बाद में उसे सावधान होना

पड़ता है। जब पानी उतर जाता है तो उसे चट्टानों से, रेत से बचकर के जाना पड़ेगा और किश्ती को सुरक्षित पहुंचाना पड़ेगा।

"मैं अपने जहाज को सुरक्षापूर्वक ले जाऊँगा।" बच्चे ने साभिमान आत्म-विश्वास के साथ पिता की ओर देखकर कहा।

"तुम ले जाओगे ? बहुत बहादुरी की बात कही।" इग्नात ने हँसते हुए कहा। लड़के की भुआ ने उसकी ओर प्यार-पूर्वक निहारा।

वोल्गा की यात्रा के बाद फ़ोमा अधिक प्रफुल्लित, उत्साहयुक्त और अपने पिता, अपनी भुआ और मायाकिन की उपस्थिति में बड़ा बातून हो गया था। परन्तु जब वह घर से बाहर और लोगों में जाता था तो बड़ा गुम-सुम हो जाता था। अजनबी लोगों के बीच वह चोरी-चोरी झेंपता हुआ देखने लगता और अपने को विरोधी वायु मण्डल में जिसमें अनेक खतरे छिपे हों, अनुभव करता था।

कई बार वह आधी रात में जाग जाता और देर तक आँख खोले अन्धकार की नीरवता में सुनता रहता। इस समय उसके पिता के उपदेश दौड़ती कल्पना के रूप में उसकी आँखों के सामने आते। बिना कुछ अनुभव किये, वह उन्हें भुआ से सुनी परियों की कहानियों के साथ गड़बड़ा देता, जिसका परिणाम यह होता कि चमकीली रंगीन कल्पनाओं के साथ गम्भीर आवाज की असलियत का मिश्रण हो जाता या गुंथ कर एक हो जाता। ये कल्पनाएँ बड़ी महान् और भूल-भुलईयों में डालने वाली बन जातीं। फिर वह डराने वाली कल्पनाओं के प्रवाह को रोकने के लिये आँखें बन्द कर लेता। परन्तु वह सो नहीं सकता था और उसके सामने कमरे में नई-नई छायायें और मूर्तियाँ घिर आतीं। फिर वह भुआ को धीरे से आवाज देता :

"भुआ,..........भुआ !"

"क्यों ? क्या बात है ?"

"मैं तुम्हारे साथ बिस्तरे में आ जाऊँ ?" वह धीरे से कहता।

"क्यों ? जाओ सो जाओ, प्यारे सो जाओ।"

"मुझे डर लग रहा है।"

"तुम कहो परमात्मा सबसे ऊपर है, तुम्हें डर नहीं लगेगा।"

फ़ोमा ने अपनी आँखें बन्द कीं और इस प्रार्थना को बारबार दोहराया। उसने रात्रि के एकांत को एक अनन्तर खड़े काले पानी के विस्तार के रूप में देखा, जिसने सबको आवृत कर रक्खा था, जिनकी सतह पर न कोई लहर थी, न कोई गति थी, नाहीं उस पानी में गति थी, जो समुद्र जैसा गहरा था। इस मृत अन्धकारपूर्ण समुद्र में देखना और अकेले रहना बड़ा भयङ्कर था। अचानक रात के चौकीदार ने अपनी खड़खड़ाहट की। लड़के ने देखा कि पानी हिला और उसकी सतह पर एक गेंद चलती दिखाई दी और उसमें एक लहर दिखाई दी। घण्टाघर की घड़ी ने घण्टों की आवाज की, पानी में एक लहर उठी और उसके घण्टा बजने के बाद तक हिलती रही। प्रकाश का एक गोल घेरा उसके ऊपर फैलता गया और फिर छायाओं के कोनों में लुप्त हो गया। एक बार फिर अन्धकार के विस्तार की दुःखद गहनता फैल गई········।

"भुआ", फ़ोमा ने सांस रोकते हुए प्रार्थना की।

"क्या बात है ?"

"मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ।"

"आ जाओ, आ जाओ प्यारे।"

जब वह अपनी भुआ के बिस्तरे में पहुँच गया, वह उससे चिपक कर बोला :

"मुझे एक कहानी सुना दो।"

"इस रात के बीच में ?" भुआ ने ऊँघते हुए ऐतराज किया।

"हाँ, कृपा कर सुना दो।"

उसे और ज्यादा कहने की जरूरत नहीं पड़ी। बुढ़िया स्त्री ने जम्हाई ली, आँखें बन्द कीं और निद्रालु आवाज में गुनगुनाना शुरू किया :

"एक बार किसी सुदूर राज्य में एक मनुष्य और उसकी पत्नी रहते

थे। वे दोनों अत्यन्त गरीब थे। वह ऐसे गरीब थे कि उनके पास खाने के लिये भी कुछ नहीं था। प्रत्येक सुबह वह भीख मांगने जाते और जो चन्द रोटी के टुकड़े उन्हें मिलते उन्हीं पर वे गुजारा करते। कुछ समय बाद उनके बच्चा पैदा हुआ। जब बच्चा पैदा होता है तो उसका नामकरण भी होना चाहिये, परन्तु वे इतने गरीब थे कि, धर्म-माता-पिता और अथितियों के स्वागत के लिये कोई सत्कार तक नहीं कर सकते थे। उन्होंने बहुत लोगों से प्रार्थना की कि, वह धर्म पिता बन जाये, परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। अन्त में उन्होंने परमात्मा से प्रार्थना की।"

फ़ोमा ने प्रभु ईसा मसीह के नामकरण की दर्दनाक कहानी कई बार सुन रक्खी थी, और जैसे ही उसकी भुआ ने कहानी शुरू की, उसने अपनी बाल्य-कल्पनाओं में चित्रित किया कि बच्चा सफेद घोड़े पर चढ़ा और अपने धर्म माता और धर्म पिता की तलाश में जा रहा है। वह एक अन्धकार और निर्जन देश में से गुजर रहा था जहाँ उसने पीड़ा और कष्टों की प्रार्थनायें सुनीं :

"ओ मरणशील मनुष्य, प्रभु ने पूछा जब तुम परमात्मा को देखो तो उससे पूछना हमें और कितने कष्ट उठाने हैं।"

फ़ोमा को ऐसा दिखा कि वह सफेद घोड़े का घुड़सवार वही था और आहें, और प्रार्थनाएँ उसे ही सम्बोधित की जा रही थीं। उसका दिल बैठने लगा और आंखों में आँसू भर आये। उसने अपनी आँखें भींचीं, उन्हें बन्द किया और कम्बल के नीचे सरक गया, वह उन्हें खोलता हुआ डरता था।

बुढ़िया स्त्री इस दर्दनाक कहानी को सुनाते सुनाते रुक गई और बोली:
"जाओ, बच्चे सो जाओ, परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे।"

अगले दिन सुबह फ़ोमा हमेशा की तरह उठा, मुँह हाथ धोया और जल्दी से एक चाय का प्याला निगल अपनी जेबें मीठी बनों और केकों से भर स्कूल की ओर दौड़ चला, जिन्हें वह भूखे यभोव को देता था। यभोव लगातार अपने धनी और नये उदार मित्र के भरोसे भोजन करता था।

"क्या तुम मेरे लिये खाने को कुछ लाये हो ?" उसने पतली आवाज

में नाक से कहा—"लाओ, खा लें। मैं तो आज सुबह घर से बिना खाये ही आया हूँ। बहुत देर से उठा। रात में दो बजे तक मैं सवाल करता रहा। तुमने गणित के सवाल कर लिये हैं ?"

"नहीं।"

"ओ तू बुद्धू कहीं का ! लाओ, मैं अभी सब तुम्हें बता देता हूँ।"

उसने तेज दाँत बन में गाड़े, बिल्ली की तरह बैठ गया और सवाल करता हुआ फर्श को पांव से थपथपाने लगा।

"समझ में आया ? एक घण्टे में आठ बाल्टियाँ भर पानी निकल गया तो कितने घण्टे हुए ? छः। क्यों दोस्त तुम अच्छा भोजन करते हो इसलिए तुम्हें छः को आठ से गुण करना चाहिये। क्या तुम हरी प्याज की बनें पसन्द करते हो ? मैं तो उनके लिये पागल हूँ। इसलिये पहले छः घण्टों में नल से अड़तालीस बाल्टी पानी बह गया। टंकी में नब्बे बाल्टियाँ थीं। तो हमें अब क्या करना है।"

फ़ोमा, यझोव को स्मोलिन से ज्यादा पसन्द करता था परन्तु दोस्ती उसकी स्मोलिन से ही ज्यादा थी। वह यझोव की बुद्धि और चुलबुलेपन से डरता था। वह यह नहीं देख सकता था कि यह छोटा सा लड़का उससे चुस्त हो, वह इस बात से नाराज़ होता था और उससे हिरस करता था। परन्तु साथ ही वह भूखों के प्रति भरपेटों की कृपापूर्ण दृष्टि से उस पर दया भाव भी रखता था। शायद यही कारण था कि, वह उससे इतना मैत्री भाव नहीं रख सका जितना कि लाल सिर वाले मन्द स्मोलिन से। यझोव प्रायः अपने दोनों भर पेट मालदार दोस्तों की मखौल करता था।

"अबे ओ ! रोटियों की टोकरी।" वह बुलाता।

उसके मखौलों से एक दिन फ़ोमा चिढ़ गया।

"भिखारी, गरीब कहीं का !" उसने गुस्से से जवाब में कहा।

यझोव के चेहरे पर गुस्से में लाल धब्बे आ गये।

"बहुत अच्छा," यझोव ने धीरे से कहा—"अब से मैं तुम्हें सवालों में कोई मदद नहीं करूँगा और तुम्हें पता चल जायेगा कि तुम कैसे पत्थर हो।"

तीन दिन तक दोनों साथी आपस में नहीं बोले। अब मास्टर को एक परेशानी इसलिए लगी कि प्रतिष्ठित इग्नात के बेटे के बारे में उसकी सम्मति सन्तोषजनक न थी।

यभोव को आसपास का सब पता था। उसने अपने स्कूल के साथियों को बतलाया कि प्रोसिक्यूटिंग एटर्नी की नौकरानी को उससे बच्चा पैदा हो गया है और उसने उस पर गरम कोफी डाल दी। उसे पता था कि कब मच्छी पकड़ने का अच्छा समय है, पर्च मच्छी कहाँ अच्छी पकड़ी जाती है, पक्षियों को पकड़ने के लिये जाल कैसे बनाये जाते हैं। उसने अपने साथियों को बताया कि बैरक के बरामदे में उसने अपने को क्यों फांसी लगा दी। और उसे यह भी पता था कि किस लड़के के माँ–बांप ने मास्टर को कब और क्या भेंट दी है।

स्मोलिन का ज्ञान और दिलचस्पी स्थानीय व्यापारियों तक ही सीमित था। वह उनकी सम्पत्ति, उनके मकानों की और अग्निबोटों की कीमत अच्छी तरह जानता था।

उसका यभोव के प्रति व्यवहार फ़ोमा की तरह कृपालुतापूर्ण तथा मित्रतापूर्ण स्थिर था। जब कभी फ़ोमा और यभोव की लड़ाई हो जाती तो वह दोनों के बीच सुलह करवा देता।

"तुम उसके साथ हमेशा लड़ते क्यों हो ?" एक दिन उसने फोमा से पूछा जबकि वह स्कूल से वापिस आ रहे थे।

"वह बहुत घमण्डी है," फोमा ने बहुत स्वाद से कहा।

"वह इसलिये कि तुम अपना पाठ याद नहीं करते। तुम उसकी मदद लेते हो। वह हुशियार है। और यदि वह गरीब है तो इसमें उसका क्या दोष ? वह जो चाहे सब कुछ सीख सकता है, और किसी दिन वह भी धनवान हो जायेगा।"

"वह मच्छर है," फोमा ने घृणापूर्वक कहा—"वह हमेशा भिनभिनाता रहता है। किसी न किसी दिन तुम्हें काटेगा।"

परन्तु एक बात जिससे तीनों लड़के एक सम्बन्ध में बंध रहे थे और

जिसके कारण वे जाति और परिवार के भेद भाव के बावजूद कई घण्टे सा
विताते थे यह थी कि तीनों कबूतरों की उड़ान के शौकीन थे। प्रत्येक इतवार व
वे स्मोलिन के घर मिलते और कबूतरों के छत्ते पर बराबर की छत से चढ़क
पहुँच जाते और वहाँ से पक्षियों को उड़ाते।

पतले, सुन्दर, चुस्त पक्षी अपने पंखों को हिलाते और एक के बाद स
छत की मुँडेर पर बैठ जाते, बड़े प्यार से धूप में बैठे गुटर–गूँ करते औ
अपनी चोंचों से पंख सँवारते जिसे देख लड़कों को बड़ी खुशी होती।

"इन्हें उड़ाओ!" यफ्रोव अधैर्यता से चेहरा ऐंठता हुआ कहता।

स्मोलिन एक छड़ी हिलाता जिसके छोर पर कपड़ा बँधा था और तेज
सीटी बजाता।

डरे हुए पक्षी फिर हवा में उड़ जाते और पंखों की फड़फड़ाहट
उसे भरपूर कर देते। फिर बड़े शोभापूर्ण लम्बे चक्कर काटते हुए वे नीले
आसमान में ऊपर उड़ते और उनकी पूछें झिल-मिल करते सूर्य के प्रकाश
बरफ और चाँदी जैसी चमकतीं। उनमें से कुछ अन्तरिक्ष के गुम्बद तक पहुँच
जाते। बाज़ की तरह पंख फैला कर गति रहित रूप से उड़ते और कुछ हव
में कलाबाजियाँ खाते, हवा में खिलवाड़ करते, जो एक बर्फ की गेंद की
तरह नीचे गिरते और फिर तीर की तरह ऊपर उठने लगते। कभी कबूतरों क
पर्दा आकाश की विशाल पृष्ठभूमि में जाता हुआ दीखता और कभी उसमें
डूबता दिखाई देता। बच्चे बड़े आनन्द और उन्माद के साथ सिर और आँखें
आसमान की ओर ऊँचा किये, बिना एक शब्द बोले उनकी तरफ देखते
रहते, और उनकी प्रसन्न थकी आँखों में एक हिरस की चुटकी होती जो इन
पंख वाले प्राणियों को देखकर उनके दिल में होती थी कि वे किस प्रकार
आसानी से सूर्य की किरणों से परिप्लावित, पवित्र शान्त आकाश में पृथ्वी से
उड़ जाते हैं। आसमान में इन छोटे-छोटे अस्पष्ट उड़ते पक्षियों के समूह को
नीले आकाश में उड़ते देख बच्चों की कल्पना प्रज्ज्वलित हो जाती। एक दिन
यफ्रोव ने बहुत विचारपूर्वक सोचते हुए धीरे से कहा :

"क्या ही अच्छा होता जो हम भी उनकी तरह उड़ते?"

एक बार बड़ी तत्परता, खुशी और चुप्पी के साथ वह आकाश की नीली गहराई से पक्षियों के लौटने की आशा में, आपस में सट कर बैठे थे। वे संसार में ऐसे ही दूर थे जैसे कि पृथ्वी से पक्षी। उस समय वे बिल्कुल बच्चे थे, उन्हें क्रोध और ईर्षा का कुछ पता नहीं था। सब बातों से परे वे एक दूसरे के समीप थे, और बिना किसी शब्द के, केवल मात्र आँखों की चमक से वह एक दूसरे के भावों को समझ रहे थे और ऐसे ही प्रसन्न थे जैसे कि पक्षी आकाश में थे।

आखिरकार पक्षी आसमान की उड़ान से थके हुए छत्त पर वापिस आने वाले थे और उन्हें दड़बे में वापिस बन्द किया जाने वाला था।

ऐसे ही समय एक दिन इतवार को यफ़ोव, जो इन साहसिक कार्यों में उनका अगुआ था, बोला :

"आओ साथियो ! सेव तोड़ने चलें।"

उसके चेलेञ्ज ने पक्षियों के विषय में विचार के शान्त भावों को भंग कर दिया और अब वह शिकारी जानवरों की तरह, जरा-सी आवाज से चौकन्ने हो, एक पड़ोसी के बगीचे की ओर, एक कोने में सरक गये। उन्हें पकड़े जाने के डर की परवा नहीं थी, जितना कि अपने हमले की सफलता में। चोरी भी एक परिश्रम है और उसी की तरह ख़तरनाक भी है। परन्तु उसके फल कितने मीठे होते हैं ! जितनी ही ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है उतना ही मीठा उसका फल होता है। बड़ी सावधानी से लड़कों ने बाड़ को फाँदा, दौड़े, दोहरे होकर चले और बहुत चोरी-चोरी देखते हुए सेव के पेड़ों तक पहुंच गये। ज़रा से खुटके से उनका दिल धड़कने लगता था। उन्हें पहचाने जाने का उतना ही डर था, जितना कि पकड़े जाने का। और वे चाहते थे कि कोई उनका पीछा करे तो भी पहचान न सके, सिर्फ उनकी तरफ चिल्लाता ही रहे। चिल्लाने से उन्हें चारों तरफ दौड़ने का मौका मिल जायगा और बाद में मिलकर व आपस में हँसेंगे और बड़े जोश के साथ एक दूसरे को बतायेंगे कि वे खुटके के बाद कैसे भागे।

फ़ोमा ने अपने दूसरे साथियों की अपेक्षा इस डाकेजनी में, खेल-कूद की अपेक्षा अधिक दिलचस्पी दिखाई। उसने ऐसी लापरवाही और हौसले से काम शुरू किया, जिससे उसके साथियों को अचम्भा और दुःख दोनों हुए। जब वह पड़ोसियों के बगीचे में जाता तो जानबूझ कर सावधानी को परे फेंक देता, जोर से बोलता और शोर के साथ शाखाओं को तोड़ता और अगर उसे कोई गला-सड़ा सेव मिलता तो वह मालिक के घर की ओर फेंक देता। अपराध स्थल में पकड़े जाने के भय के स्थान पर उसके अन्दर नया जोश पैदा हो गया। वह दाँत भींचता, उसकी आँखें काली पड़ जातीं और उसके चेहरे पर एक अभिमान टपकने लगता।

"तुम बहुत शेखी मारते हो", एक दिन स्मोलिन ने चेहरा मरोड़ते हुए कहा।

"मैं कायर नहीं हूँ", फ़ोमा ने जवाब दिया।

"मैं जानता हूँ कि तुम नहीं हो; परन्तु अभिमान मूर्ख ही करते हैं, तुम अपना काम इसके बगैर भी कर सकते हो।"

यभ्मोव की सम्मत्ति में इससे फर्क था।

"हमें ऐसे साथी की क्या जरूरत जो जानबूझ कर पकड़ा जाना चाहता हो?" उसने कहा—"तुम मेरे दोस्त नहीं हो! तुम पकड़े जाओगे तो ज्यादा से ज्यादा वह तुम्हारे पिता के पास ले जायेंगे, तुम्हें कोई छूएगा तक नहीं; मगर मैं पकड़ा जाऊंगा तो मेरी ऐसी पिटाई होगी कि मेरी एक भी हड्डी साबुत नहीं रहेगी।"

"कायर कहीं का!" फ़ोमा ने कहा।

एक दिन फ़ोमा को एक दुबले-पतले बुड्ढे आदमी ने पकड़ लिया, जिसका नाम चुमाकोव था वह फौज का रिटायर्ड कैप्टन था। वह चुपके २ लड़के के पास सरक आया जबकि वह सेवों से अपनी कमीज भर रहा था।

"आज तू काबू में आ गया है, चोर कहीं का!" वह फ़ोमा का कन्धा पकड़ कर चिल्लाया।

फ़ोमा इस समय पन्द्रह वर्ष का हो चुका था, उसने अपने को आसानी से बुड्ढे से छुड़ा लिया। परन्तु वह दौड़ा नहीं।

"तुम जरा मुझ पर हाथ लगाने का हौसला तो करो?" फ़ोमा ने भौंहे चढ़ाते व मुक्का दिखाते हुए उसे चेतावनी दी।

"तुझे छूना? मैं तुझे अभी पुलिस को देता हूँ, अभी ले जाता हूँ! तेरा बाप कौन है?"

फ़ोमा इतना डर गया और भौचक रह गया कि उसका सब गुस्सा और शेखी उड़नछू हो गई। वह जानता था कि अगर उसे पुलिस में दे दिया गया तो उसका बाप उसे कभी माफ नहीं करेगा।

"गोर्देयेव", जरा काँपते हुए वह लड़खड़ाया।

"इग्नात मात्वेविच के बेटे हो?"

"हाँ।"

"इस बार केप्टिन को अचम्भा और परेशानी हुई, वह सीधा हुआ, छाती तानी और बड़ी शान के साथ खँखारा। परन्तु अगले ही क्षण वह झुक गया।

"क्या तुम्हें अपने किये पर लज्जा नहीं आती?" उसने बाप की तरह झिड़कते हुए कहा—"इतने नामवर और प्रतिष्ठित व्यक्ति के पुत्र होकर, मैं तुमसे कभी भी ऐसी आशा नहीं कर सकता था। तुम घर जा सकते हो, परन्तु याद रक्खो, अगर आगे मैंने तुम्हें पकड़ा तो मुझे तुम्हारे बाप को रिपोर्ट करनी पड़ेगी, जिसके प्रति मुझे नमस्कार भेजने की प्रतिष्ठा प्राप्त है।"

बुड्ढे आदमी के चेहरे के एकदम परिवर्तन से फ़ोमा समझ गया कि वह इग्नात से डरता था। फ़ोमा घर जाने की बजाय, जैसा कि उसे कहा गया था, उल्टा भेड़िये के बच्चे की तरह केप्टन को झिड़कने और घूरने लगा, जबकि वह खड़ा-खड़ा एक पाँव से दूसरे पाँव पर बोझ रखता, अपने सफ़ेद गलमुच्छों को मरोड़ता, एक मखौलपूर्ण अभिमान और महत्ता के साथ खड़ा था।

"तुम जा सकते हो", बुड्ढे आदमी ने उसके घर का रास्ता दिखाते हुए फिर कहा।

"और पुलिस के बारे में क्या रहा ?" फ़ोमा ने नाराजगी से कहा। फ़ोमा कह तो बैठा परन्तु वह इस ख्याल से भयभीत हो गया कि बुड्ढा इसका क्या जवाब देता है।

"ओह, यह तो मैंने तुम्हें सिर्फ मखौल में कहा था", केप्टन ने हँसते हुए कहा—"मैं तुम्हें सिर्फ डराना चाहता था।"

"तुम मेरे बाप से डरते हो", फ़ोमा ने कहा, और बुड्ढे आदमी से मुड़ वह बगीचे में और अन्दर चला गया।

"डर से ? हो...हो...हो...हो ! बहुत अच्छी बात कही।" उसके पीछे से केप्टन बोला। उसकी आवाज से फ़ोमा को पता चल गया कि यह बात उसे चुभ गई है। लड़के को इतनी शर्म आई कि वह सारे दिन इधर-उधर भटकता रहा। शाम के समय घर लौटने पर बाप ने उसका कठोर शब्दों में स्वागत किया।

"फ़ोमा, क्या तुम चुमाकोव के बगीचे में फाँद कर गये थे ?" उसने पूछा।

"हाँ", लड़के ने बिना किसी झिझक के अपने बाप की आँखों में सीधा देखते हुए कहा।

ऐसा प्रतीत हुआ कि इग्नात को अपने पुत्र के ऐसे जवाब की आशा नहीं थी और वह एक-दो सैकण्ड तक अपनी दाढ़ी को टटोलता रहा।

"पाजी कहीं का, तूने यह क्यों किया ? क्या तेरे अपने घर में सेवों की कमी है ?"

फ़ोमा की आँखें नीची हो गईं और वह कुछ बोल न सका।

"क्यों, तुम लज्जित हो न ? मैं समझता हूँ कि वह लड़का यझोव तुम्हें इस तरफ ले गया होगा। जिस दिन भी मुझे मिला उसी दिन मैं उसे बताऊँगा। आगे से उसके साथ खेलने की तुम्हें मनाई है।"

"नहीं, मैं अपने आप गया था", फ़ोमा ने दृढ़ता से कहा ।

"यह और भी बुरी बात है, तुमने ऐसा क्यों किया ?"

"बस क्योंकि··· ।"

"बस क्योंकि··· !" बाप ने मखौल-सी करते हुए कहा—"अगर तुम कोई काम करते हो, तो तुम्हें पता होना चाहिये कि क्यों ? इधर आओ ।"

फ़ोमा अपने बाप की तरफ गया जहाँ कि वह बैठा हुआ था । इग्नात ने उसको अपनी टाँगों के बीच में खड़ा किया, अपने दोनों हाथ उसके कन्धों पर टेके और उसकी आँखों में देखते हुए बोला :

"तुम लज्जित हो ना ?" उसने थोड़ी सी हँसी के साथ कहा ।

"ओ···हो···ह···ह", फ़ोमा ने आवाज की ।

"बेवकूफ ! तू अपने आप को और मुझे बदनाम कर रहा है !"

उसने अपने बेटे के सिर को अपनी छाती से लगाया और उसके बालों को थपथपाया ।

"तुम्हें क्या जरूरत थी कि सेब चुराने गये ?" उसने बेटे से पूछा ।

"मैं नहीं जानता ।" फ़ोमा हकलाया—"हम हमेशा एक ही खेल खेलते थे······और मैं उससे तंग आ गया था, मगर यह······ ।"

"यह बड़ी अच्छी बात है ?" बाप थोड़ा-सा हँसा ।

"हाँ ।"

"हूँ, मैं मानता हूँ कि तुम ठीक हो, परन्तु, फ़ोमा, आगे ऐसा कभी मत करना । यदि आगे तुमने किया तो तुम्हारी बहुत पिटाई होगी ।"

"नहीं, आगे मैं कभी नहीं करूँगा", लड़के ने वचन दिया ।

"मुझे खुशी है कि तुम अपने पाँव पर खड़े हो रहे हो । मुझे नहीं पता कि तुम आखिर में क्या बनोगे, यह परमात्मा ही जानता है, परन्तु अभी तक तुम ठीक हो । कोई मनुष्य जो अपने किये का जवाब देता है, अपने बिल अदा करता है, वह अच्छा आदमी है । तुम्हारी जगह यदि कोई दूसरा लड़का होता

तो वह अपना अपराध दूसरों पर मढ़ देता, परन्तु तुमने ठीक-ठीक कह दिया है और किसी दूसरे पर अपराध नहीं डाला। फ़ोमा, यही रास्ता है। तुम्हें कहीं चुमाकोव ने······मारा तो नहीं ?" इग्नात ने पूछा।

"अगर वह मारता तो मैं उसे मजा चखा देता", फ़ोमा ने तुरन्त जवाब दिया।

"हूँ···हूँ", फ़ोमा का बाप गुनगुनाया।

"मैंने उसको कहा कि वह तुमसे डरता है। यही कारण था कि उसने तुमसे आकर शिकायत की ; नहीं तो शिकायत करने नहीं आता।"

"नहीं आता ?"

"नहीं, और उसने तुम्हें अपना नमस्कार भी भेजा है।"

"अच्छा, यह बात है ?"

"हाँ !"

"कीड़ा कहीं का ! कुछ लोग बड़े दब्बू होते हैं : तुम उनके यहाँ चोरी करो तो वह झुकते हैं, बात को भुलाते हैं और नमस्कार भेजते हैं ? तुमने उसके यहां एक कोपेक की कीमत की चोरी की होगी ; परन्तु उसके लिये कोपेक वैसा ही है जैसा मेरे लिये एक रूबल। बात एक कोपेक की नहीं; बल्कि यह कि सेव उसके हैं और दूसरों का अधिकार उन पर नहीं है, जब तक कि वह दूसरों को स्वयम् ही देना न चाहे। खैर, अब ये काफी हो लिया है। मुझे बताओ, तुम दिन भर कहाँ रहे और क्या देखा ?"

लड़का अपने बाप के बराबर में बैठ गया और उसने दिन भर की बातों और अपने पर पड़े प्रभावों को बतलाया। बीच-बीच में इग्नात की भौंहें विचारपूर्वक घूमतीं, जैसे २ वह अपने बेटे के चेहरे का अध्ययन करता रहा।

"हमने वहाँ नाले की तरफ एक उल्लू को डराया", फ़ोमा ने कहा— "बड़ा मजा आया ! उल्लू उड़ा और झट सीधा पेड़ से टकराया। उसने थोड़ी चिल्लाहट भी की। मैं समझता हूँ कि उसे चोट लगी होगी। हमने उसे फिर डराया और वह फिर उड़ता और किसी चीज से टकरा जाता। उसके पंख झड़ रहे थे। वह बार-बार इधर-उधर नाले की दीवारों में टकराया और

अन्त में एक छेद पाकर छुप गया, फिर हमने उसकी परवाह नहीं की—उसे इधर-उधर टकराता देख हमें बड़ी खुशी हुई। पिताजी ! क्या उल्लू दिन के समय नहीं देख सकता ?"

"नहीं बेटा, बिल्कुल नहीं", इग्नात ने कहा—"कुछ लोग ऐसे होते हैं जो तुम्हारे उल्लू की तरह इधर-उधर फड़फड़ाते हुए टक्करें मारते हैं—और ऐसी जगह की तलाश में रहते हैं जिसमें ठीक बैठ जायें। उनके पंख इधर-उधर बिखर जाते हैं, चोटें खाते है, बीमार होते हैं और अन्त में जो पहली चीज मिलती है, उस पर संघर्ष खतम कर देते हैं। ऐसे लोगों का बहुत बुरा हाल होता है, बेटा ! बहुत बुरा होता है।"

"ये लोग ऐसे क्यों हो जाते हैं ?"

"यह कहना बड़ा मुश्किल है। कुछ अभिमान में अन्धे हो जाते हैं—उनमें बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाओं के अलावा और कुछ नहीं होता। दूसरे मूर्ख होते हैं। ओह ! इसके अनेक कारण हैं।"

इस प्रकार, धीरे-धीरे प्रतिदिन, फ़ोमा का जीवन प्रगट होने लगा। वैसे साधारणतया वह शान्त व चुपचाप था। उसमें कोई अन्तर नहीं था। कभी-कभी लड़कपन के हृदय पर पड़े प्रभावों से वह आंदोलित हो जाता, जो उसके शांत जीवन के अस्तित्व पर प्रतिरंजित होते थे; परन्तु वह चिर-स्थायी नहीं थे। उसकी आत्मा एक झील के समान थी—ऐसी झील जो जीवन के तूफानों से सुरक्षित हो और अगर कभी कोई चीज़ उसके किनारों या सतह को छूती तो कुछ समय के लिये उसकी सुप्त जलराशि में थोड़ी सी लहरों के चक्करों को बड़ा कर उसी की शान्त स्थिर, गहराई में डूब, उसे पहले की तरह रहने देती। पहले पाँच सालों में फ़ोमा ने चार कक्षायें पास कीं, (वह बहुत तेज विद्यार्थी नहीं था); उसने स्कूल छोड़ दिया। वह सुन्दर लड़का था, जिसके काले बाल, भूरा रंग, भारी भौंहें और ऊपर के ओठों पर अस्पष्ट कृष्ण रेखा थी। उसकी काली-काली बड़ी आँखों में चिन्ता और विचार की झलक थी और उसके ओठ अभी बड़े कोमल और बच्चे के समान थे। यदि

कभी वह नाराज होता तो उसकी आँखों की पलकें फैल जातीं, उसके ओठ फैल जाते, और उसका चेहरा कठोर पड़ जाता।

"फ़ोमा ! लड़कियों के लिये तो तुम शहद से भी मीठे हो, परन्तु अभी तुमने अपने दिमाग का कोई चिन्ह नहीं दिखाया", उसके धर्मपिता ने मखौल कहा।

इससे इग्नात ने एक लम्बी सांस भरी।

"अब वक्त आ गया है कि इसे दुनियाँ के चक्कर में डाला जाये, इग्नात !"

"अभी कुछ समय और ठहरो।"

"इसमें प्रतीक्षा की क्या जरूरत है। दो या तीन साल इसे वोल्गा पर भेज दो और इसके बाद विवाह-वेदी। मेरी ल्यूबा भी अब स्यानी बेटी हो रही है।"

इस समय ल्यूबा मायाकिन एक बोर्डिंग-हाउस में पाँचवीं श्रेणी में पढ़ रही थी। जब कभी फ़ोमा गली में उसके सामने से गुजरता तो वह एक कृपापूर्ण नज़र से उसे निहारती। उसके भूरे सिर पर एक छोटा हैट पहना होता था। फ़ोमा उसे चाहता था। उसके गुलाबी गाल, भूरी-भूरी प्रसन्न आँखें और लाल-लाल ओठ उस पर डाली हुई कृपा-दृष्टि की चोट को मरहम न लगा सकती। वह जिमनेजियम के कई विद्यार्थियों के साथ मित्रता रखती थी, और यद्यपि फ़ोमा का पुराना मित्र यभ्फोव भी उनमें से था, परन्तु वह उनके साथ बहुत कम मिलता था, क्योंकि वह उनके बीच अपने को अजनबी पाता था। वह अनुभव करता था कि वे सब उसके सामने अपने ज्ञान को दिखाते और उसके अज्ञान पर हँसते थे। वे कभी-कभी ल्यूबा के घर पर मिलते और जोर-जोर से किताबें पढ़ते, परन्तु इसी समय जबकि वह पढ़ रहे होते या जोर-जोर से बहस मुबाहसा कर रहे होते, वे उसे आता देख एकदम चुप हो जाते। इसे वह अपना अपमान समझता था। एक दिन जब वह मायाकिन के घर में था, ल्यूबा ने उसे बगीचे में घूमने के ये निमन्त्रण

दिया। और जब वह उसके बराबर-बराबर चल रहा था, ल्यूबा ने छोटा-सा चेहरा बना करके कहा :

"क्या बात है, तुम बहुत कम मिलनसार हो ? तुम कभी अपना मुँह ही नहीं खोलते।"

"जब कोई बात ही करने की न हो तो मैं क्या बात करूँ ?" उसने सरलता से उत्तर दिया।

"किताबें पढ़ो और सीखो।"

"मुझे यह पसन्द नहीं।"

"ये दूसरे लड़के बहुत कुछ जानते हैं, वे किसी भी बारे में बातें कर सकते हैं ; मिसाल के तौर पर यझोव।"

"ओह ! वह तो हवा का गुब्बारा है।"

"तुम उससे बस ईर्षा करते हो। वह बहुत समझदार है ; हाँ, हाँ बहुत समझदार है। जिमनेजियम ख़तम कर वह मास्को यूनिवर्सिटी ख़तम करने जा रहा है।"

"जाने दो।"

"और तुम इसी तरीके से 'कुछ न जानने वाले' बने रहोगे।"

"तुम्हें इससे क्या ?"

"क्या तुम भी बुद्धिमान् नहीं", ल्यूबा ने परिहास में कहा।

"मैं दुनियाँ में बिना पढ़े कामयाब हो जाऊँगा", फ़ोमा ने तिरस्कार-पूर्वक कहा—"और मैं तुम्हारे उन विद्वान् मित्रों से अच्छा रहूँगा। भिखमंगे पढ़ते हैं, मेरे जैसे नहीं।"

"ओफ़, तुम कैसे बेहूदे, मूर्ख और घृणित आदमी हो !" ल्यूबा चिल्लाई और उसे कमरे में अकेला छोड़कर चली गई।

उसकी भौंहें तन गईं और उसने उसकी तरफ आहत दृष्टि से देखा। और इसके बाद वह सिर नीचा करके परे हट गया।

अब वह एकांत के आनन्द और एकाग्रता का मीठा स्वाद

चखने लगा। प्रायः गर्मियों में सायंकाल जबकि संसार सूर्यास्त के रङ्गों से प्रकाशमान होता है और कल्पना को प्रज्वलित करता है, उस समय फ़ोमा का हृदय अज्ञात आकांक्षाओं से भारी हो जाता। बगीचे के एकांत कोने में या बिस्तर में लेटा वह परियों की राजकुमारी की नाना कल्पनाएँ करता। वे उसके पास कभी ल्यूबा के रूप में और कभी किसी अन्य परिचित लड़की के रूप में, संध्या की गोधूलि की छायाओं में चुपचाप उड़ती आतीं और रहस्य-पूर्ण दृष्टि से उस पर झुकतीं। कई बार इन कल्पनाओं से उसकी नसों में खून दौड़ने लगता, वह नई शक्ति से परिपूरित हो जाता, उठता, कन्धे चौड़ाता और मधुर गन्धपूर्ण वायु की लम्बी सांस भरता; दूसरे अवसरों पर वह उदास हो जाता, और उसे रुँआसी आने लगती। यद्यपि वह रोने को बड़ा लज्जाजनक समझता था, परन्तु इन कोशिशों के बावजूद भी उसके आँसू आ जाते।

धीरे-धीरे उसका बाप उसे कारोबार सिखाने लगा। वह उसे ऐक्सचेञ्ज ले जाता, आर्डर देना और कन्ट्राक्ट करना सिखाता। अपने सहयोगी व्यापा-रियों के बारे में बताता कि वे दुनियाँ में कैसे सफल हुए हैं, किसने कितनी सम्पत्ति बनाई है और उनके व्यक्तित्व का वर्णन करता। फ़ोमा ने कारोबार को जल्दी पकड़ लिया और उसमें तत्परता से लग गया।

"हमारी शलगम अब एक सुन्दर कोस्त में फलफूल रही है", मायाकिन ने इग्नात की ओर आँख मारते हुए कहा।

यद्यपि फ़ोमा अब उन्नीस वर्ष का हो गया था, फिर भी उसके चेहरे पर बचपन और भोलापन चमकता और वह दूसरे नवयुवकों से भिन्न दीखता था। वे लोग उस पर हँसते और उसे मूर्ख समझते थे। उनके इस रवैये से नाराज होने के कारण वह उनसे अलग रहता था। उसका पिता और मायाकिन, उस पर नज़र रखते थे और उसके इस अनिश्चित् स्वभाव के कारण बहुत घबराये हुए थे।

एक दिन इग्नात ने बड़े दुःख से कहा—"मैं इसे नहीं समझ सका। वह शराब नहीं पीता, स्त्रियों के पीछे नहीं जाता, तुम्हारा और मेरा आदर

करता है और हमारी बात सुनता है। वह एक पुरुष की अपेक्षा लड़की दीखता है। फिर वह बिल्कुल मूर्ख भी तो नहीं। क्यों ?"

"नहीं, खासतौर से नहीं, कहना पड़ता है।" मायाकिन ने जवाब दिया।

"ऐसा दीखता है कि वह किसी चीज की प्रतीक्षा कर रहा है, जैसे कि उसकी आँखों पर कोई पर्दा हो। उसकी माँ भी ऐसी ही थी, वह भी अपना मार्ग टटोलती दीखती थी। अफ्रीकन स्मोलिन उससे सिर्फ दो साल बड़ा है, परन्तु जरा उसे देखो। तुम कह नहीं सकते कि उसमें और उसके बाप में कौन अधिक दिमाग वाला है। वह किसी और कारखाने में काम सीखने के लिये जा रहा है। वह हमेशा अपने पिता से झगड़ता रहता है क्योंकि उसने उसे ठीक-ठीक शिक्षा नहीं दी, ऐसा है वह। परन्तु, इधर मेरा लड़का है ! मैं उसे अभी कुछ बना नहीं सका।" और इग्नात ने एक गहरा सांस भरा।

"देखो, तुम्हें यह चाहिये कि", मायाकिन ने कहा—"उसे किसी बड़े काम में डाल दो—डूबने या तैरने दो—आखिरकार सोना आग में ही परखा जाता है। तब हम देखेंगे कि उसके दिमाग में क्या है ? उसे किसी कमीशन पर अकेला कामा नदी की ओर भेज दो।"

"एक परीक्षा के तौर पर, क्यों ?"

"अगर वह कुछ गड़बड़ कर भी दे तो क्या ? तुम्हें थोड़ा-सा नुकसान ही तो होगा। परन्तु, तुम्हें पता लग जायेगा कि वह क्या बना है और क्या बन सकता है ?"

"ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा।" इग्नात ने निश्चय किया।

उसी बसन्त में इग्नात ने अनाज से लदी दो किश्तियों पर अपने बेटे को कामा नदी पर भेज दिया। इन किश्तियों को खेंचने वाले अग्निबोट का नाम प्रिलेझनी (बुद्धिमती) था, और उस पर फ़ोमा का पुराना मित्र मल्लाह यफ़ीम कमान कर रहा था (जिसे आदरपूर्वक अब यफ़ीम इलियच पुकारते थे)। वह अब एक भारी बलिष्ठ चीते की सी आँखों वाला तीस वर्ष

का नौजवान हो लिया था और बड़ा कठोर, स्थिर-बुद्धि और समझदार कैप्टन था।

वे बड़ी तेजी से और बड़े उत्साह के साथ चल पड़े। सब लोग बड़े प्रसन्न थे। फ़ोमा को अभिमान था कि उसे पहला जिम्मेदारी का बड़ा काम दिया गया है। यफ़ीम को प्रसन्नता थी कि उसका नवयुवक-स्वामी उसे जरा-जरा सी गलतियों पर गालियाँ नहीं देगा। अपने दोनों सरदारों की खुश-मिजाजी से सारे मल्लाहों पर प्रसन्नता का सूर्य चमकने लगा। वे अपना माल ढोकर एप्रिल में चल पड़े और मई के प्रारम्भ में अपनी मञ्जिल पर पहुंच गये। माल की किश्तियों ने जब किनारे के पास अपने लंगर डाल दिये तो अग्निबोट उनके बराबर में चला गया। फ़ोमा का आर्डर था कि किश्तियों को जल्दी से जल्दी अनाज से खाली कर दिया जाये और भाड़ा लेकर पेर्म के लिये चल दिया जाये, जहाँ से लोहा लादना था, जिसको कि इग्नात ने मण्डी में देने का ठेका किया था।

माल ढोने वाली किश्तियों ने एक चीड़ के जंगल के किनारे, एक छोटे से गांव के पास, लंगर डाल दिया। उनके पहुँचने के अगले प्रातःकाल बहुत से स्त्री-पुरुषों का समूह पैदल और घोड़ों पर नदी के किनारे आ पहुँचा। गाते, बजाते, शोर करते ये लोग किश्तियों के डैक पर चढ़ आये और काम एकदम पूरी रफ्तार से शुरू हो गया। स्त्रियाँ किश्तियों के तले में पहुंच गई और उन्होंने अनाज को बोरियों में भरना शुरू कर दिया जिसे पुरुषों ने अपनी कमर पर लाद कर डैक से, किनारे से मिले तख्तों पर होकर, जमीन पर पहुँचा दिया। जल्दी ही चिर-प्रतीक्षित अनाज की बोरियों से ऊपर तक लदी गाड़ियाँ मोड़ खाते हुए रास्ते से गाँव की तरफ चल पड़ीं। काम करती हुई औरतें गाने लगीं, पुरुष तरह-तरह की मखौल और खुशी में गाली गुफ्तार करने लगे, मल्लाह कानून और क्रम के संरक्षक बन बैठे। पुरुषों के आते-जाते किनारे और किश्तियों के बीच पड़े तख्तों से पानी छपछपाने लगा। घोड़े हिनहिना रहे थे, गाड़ियाँ चरचर कर रही थीं और उनके पहियों के बीच रेत के पिसने का शब्द आ रहा था।

सूर्य अभी उदय हुआ था, हवा चीड़ की तेज और उत्साहजनक गन्ध से भरी हुई थी। चमकीला पानी आसमान की नीलिमा को ऊपर वापिस प्रतिक्षिप्त कर रहा था, और किश्तियों के पार्श्वों और लंगर की जंजीरों के साथ थपथपा कर मधुर शब्द कर रहा था। काम में लगे मनुष्यों की आनन्दपूर्ण ध्वनियाँ, प्रभात के सूर्य में प्रकाशमान, बासंतिक भू-पृष्ठ की तरुण सुन्दरता—सब एक नव-स्फूर्तिदायी शक्ति से भरपूर थी, जिसने फ़ोमा के हृदय में नवीन आह्लादपूर्ण भावनाओं और इच्छाओं को जगा दिया। वह डैक पर एक चन्दोवे की छाया में, यफ़ीम और लाल सिर वाले, समीप-दृष्टि, ऐनक लगाये हुए क्लर्क के साथ चाय पी रहा था, जो जिला समिति की ओर से अनाज की डिलीवरी लेने के लिये भेजा गया था। क्लर्क के कन्धे किसी कदर घबराहट में मुड़ रहे थे; वह फटी आवाज में, किसानों में फैली भुखमरी और अकाल का ज़िकर कर रहा था, परन्तु फ़ोमा उसकी तरफ बहुत कम ध्यान दे रहा था। उसकी आँखें किश्तियों के तले में काम करते लोगों से नदी के दूसरी ओर किनारे पर चीड़ के जंगलों की ओर पहुंच रही थीं, जहाँ एक निर्जन स्थान था।

"मैं चप्पू से इस स्थान पर पहुंच जाऊँ", फ़ोमा सोच रहा था, जबकि उसके कान कभी-कभी क्लर्क की घरघराती फटी आवाज की ओर लगते थे, जैसे कि वह बहुत दूर से आ रही हो :

"तुम विश्वास नहीं कर सकते; यहाँ कितनी बुरी हालत है! जरा सुनो : ओसा में एक मूझिक*; अपनी सोलह साल की लड़की को एक शिक्षित पुरुष के पास लाया, और बोला—'श्रीमान्! मैं अपनी लड़की आपके पास लाया हूँ।' 'किसलिये?'—सभ्य पुरुष ने पूछा। 'मैं समझता हूँ कि आप अविवाहित हैं और इसे रख लेंगे', मूझिक ने कहा। 'परन्तु क्यों, किसलिये?' 'मैं सारे शहर में घूम आया हूँ, ताकि कोई इसे नौकरानी रख ले। इसलिये यदि आपके पास कोई काम नहीं, जहाँ इसे लगा सकें, तो इसे अपनी रखेल के

*मूझिक—पुराना अनपढ़ रूसी किसान।

रूप में रख लें', मूझिक ने कहा। 'जरा सोचो; अपनी लड़की को एक आदमी रखेल बनाने के लिये देवे।' वह मनुष्य बहुत नाराज हुआ और उसने मूझिक को बुरा-भला कहा। परन्तु मूझिक बड़ी समझदारी से बोला—'ऐसी मुसीबत के मौके पर मैं क्या करूँ? श्रीमान्! यह अब मेरे लिये बोझ है; वे बड़े होंगे, मेहनत करेंगे, मेरा कर्त्तव्य है कि मैं उन्हें जिन्दा रखूँ। मुझे लड़की के लिये दस रूबल दो ताकि मैं अपने लड़कों की रक्षा कर सकूँ।' बोलो इस बारे में क्या कह सकते हो? कितनी भयंकर बात है?"

"बहुत बुरा दृश्य है", यफ़ीम ने आह भरी—"भूख परी अथवा धर्म-माता नहीं, जैसे कि कहावत है। ऐसा दिखता है कि भलाई-बुराई के बारे में पेट अपने अलग ही विचार रखता है।"

किन्हीं अस्पष्ट कारणों से जिन्हें वह नहीं कह सकता था, इस लड़की के भाग्य में बड़ी दिलचस्पी रखता था।

"क्या उस सज्जन ने लड़की को खरीद लिया?" उसने तुरन्त पूछा।

"निःसंदेह, नहीं", क्लर्क ने झिड़कते हुए कहा।

"तो उस लड़की का क्या हुआ?"

"ओह! उन्हें एक अच्छा परिवार मिल गया, जिसने उसे अपने यहाँ रख लिया।"

"आह!" फ़ोमा ने लम्बा सांस भरा और कठोर आवाज में बोला—"मैं उस मूझिक को बताता कि वह क्या है, मैं उसका थूथड़ा तोड़ देता।" बँधा मुक्का दिखलाते हुए वह बोला।

"मगर क्यों?" क्लर्क अपनी नाक से ऐनक को हटाता हुआ बोला।

"एक मनुष्य को बेचना—यह कैसे सम्भव है?"

"मैं मानता हूँ, यह जंगलीपन है, परन्तु··· ।"

"और उस पर एक लड़की को? मैं उसे उसके दस रूबल झट दे देता।"

क्लर्क ने बिना जवाब दिये अपने कन्धे हिलाये, जिससे फोमा चिढ़ गया। वह उठकर रेलिंग की ओर चला गया, जहाँ से वह मजदूरों को बड़ी

तेजी के साथ किश्ती से आते-जाते देख रहा था। उसका सिर इस शोर-शराबे से चक्कर खाने लगा, और उसके हृदय में एक अस्पष्ट भावना उठी जो उसकी आत्मा में उठे भावों का अपने आप काम करने की इच्छा के रूप में, प्रस्फुटित हुई। उसके दिल में इच्छा हुई कि उसमें बड़ी भारी शक्ति हो, उसके बड़े २ कन्धे हों, जिन पर अनाज की सैकड़ों बोरियाँ एक साथ ले जाये और जिसे देख सब अचम्भे में आ जायें।

"जल्दी-जल्दी अपने हाथ-पाँव हिलाओ", उसने आज्ञा दी। एकदम कई सिर ऊपर को उठे, उसे कई चेहरों की झलक आई जिनमें से एक काली आँखों वाली स्त्री का था, जो बड़े आकर्षण और कोमलता के साथ मुस्करा रहा था। इस मुस्कान पर नज़र पड़ते ही फ़ोमा के अन्दर एक आग जल उठी, उसका खून गरम हो गया और वह उसकी नसों में पिघले लावा की तरह बह पड़ा। वह रेलिंग से हटकर मेज पर आ गया, उसे अनुभव होने लगा कि उसके गाल जल रहे हैं। क्लर्क फ़ोमा की ओर मुड़कर बोला—"देखिये, आप अपने पिता को तार भेज दें कि अनाज बिखरने के कारण जो नुकसान हुआ है, उसके लिये हमें अतिरिक्त देवें। जरा देखो, कितना अनाज खराब हो गया है; अनाज का एक-एक दाना अपने लिये सोने के बराबर है, तुम्हें यह पता होना चाहिये। परन्तु वह आपके पिता हैं,...हूँ...ह...हूँ...", क्लर्क ने खीस निपोरते हुए कहा।

"इसके लिये तुम कितना अनाज चाहते हो ?" फ़ोमा ने ऐसे ही लापरवाही से पूछा—"सौ पूद* ? दो सौ पूद ?"

"वाह वाह प्यारे ! इससे बढ़िया बात क्या होगी।" आश्चर्यचकित हो क्लर्क ने कहा—"हाँ, अगर तुम्हें अधिकार है तो......।"

"मैं मालिक हूँ", फ़ोमा तेजी से बोला—"और मैं तुमसे कहता हूँ, कि मेरे पिता की कोई बुराई न करो और परे हट जाओ।"

"मैं क्षमा चाहता हूँ। मुझे आपके अधिकार में तनिक भी सन्देह नहीं।

---

*पूद=एक रूसी भार=१६३८ किलोग्राम

मैं अन्तःकरण से······आपको और आपके पिता को······इन लोगों की ओर से धन्यवाद देता हूँ।"

यफ़ीम अपने नौजवान मालिक की ओर घबराई व पूछती नज़र से, कनखियों से देख रहा था। उसने अपसे ओठ भींचे और उन्हें थपथपाया, परन्तु नौजवान मालिक बड़े अभिमान के साथ देख रहा था जबकि क्लर्क अपने हाथों को पकड़े उस पर कृतज्ञतापूर्ण शब्दों की बौछार कर रहा था।

"दो सौ! यह तो असली रूसी उदारता है, नौजवान! मैं इन मूझिक़ों को तुम्हारे उपहार के बारे में बताता हूँ। ज़रा देखो, ये कितनी कृतज्ञता प्रगट करते हैं?" और वह नीचे की ओर मुँह करके चिल्लाया: "भाइयो! मालिक तुम्हें दो सौ पूद अनाज का उपहार दे रहे हैं।"

"तीन सौ पूद", फ़ोमा ने संशोधन किया।

"तीन सौ पूद! मैं आपका धन्यवाद करता हूँ! भाइयो, तीन सौ पूद!"

परन्तु लोगों पर वह असर नहीं पड़ा, जो क्लर्क चाहता था। किसानों ने थोड़ी देर के लिये सिर ऊपर उठाये, और फिर बिना एक भी शब्द बोले काम में लग गये। कुछ लड़खड़ाती अनिच्छापूर्ण आवाजें भी सुनाई दीं:

"धन्यवाद!"

"परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे।"

"बहुत बहुत धन्यवाद!"

और किसी ने प्रमोद परिहास में कहा: "अनाज? ऊ···ह! अगर इसके स्थान पर हममें से प्रत्येक को एक-एक ग्लास वोदका का देता तो असली कृपा होती। अनाज हम तक थोड़े ही आयेगा, यह तो कौंसिल तक ही रह जायेगा।"

"ये लोग समझते नहीं", क्लर्क बड़े दुःख से चिल्लाया—"मैं अभी नीचे जाता हूँ और इन्हें समझाता हूँ।"

और, वह नीचे चला गया। परन्तु फ़ोमा को ज़रा भी ख्याल नहीं

था कि मूभिक उसके उपहार के बारे में क्या सोचते हैं: उसने काली आँखों वाली औरत की विचित्र परिहासपूर्ण नजर को देखा। वे आँखें उसे धन्यवाद दे रही थीं, दुलार कर रही थीं और उसे बुला रही थीं। इसके अलावा उसे इन आँखों में और कुछ नहीं दिख रहा था। वह शहरी स्त्री की पोशाक में थी—काटन का ब्लाऊज पहने हुए थी, पाँव में जूते थे। उसने एक विशेष प्रकार के रूमाल से अपने काले बालों को बांध रक्खा था। वह लम्बी, छरहरी गठन की, लकड़ियों के ढेर पर बैठी बोरियों की मरम्मत कर रही थी। काम करते हुये उसकी कोहनी तक नंगी बाहें चमक रही थीं और उसके ओठ फ़ोमा की ओर मुस्करा रहे थे।

"फ़ोमा इग्नातेविच," उसने यफीम को तिरस्कारपूर्ण आवाज़ में कहते सुना, "क्या तुम किसी कदर बढ़ चढ़ कर दिखावा नहीं कर रहे हो ? देखो, पचास पूद बिल्कुल उचित है। तुम इस प्रकार खुले हाथ अनाज दान करते जा रहे हो। यदि तुमने ख्याल नहीं किया तो मैं और तुम दोनों आपत्ति में पड़ जायेंगे।"

"तुम अपने काम का ध्यान करो!" फोमा ने चटक कर कहा।

"जैसा चाहे करो। मैं अपना मुँह बन्द रक्खूँगा। परन्तु तुम अभी नौजवान हो और मुझे तुम पर नजर रखने के लिये कहा गया था। ऐसी बात के लिये मेरे जबड़े पर मुक्का लग सकता है।"

"मैं पिताजी से अपने आप कह दूँगा;" फ़ोमा ने कहा।

"यह ठीक है। तुम मालिक हो, परन्तु—"

"यफीम इस बात को भूल जाओ।"

यफीम ने चुपचाप एक गहरा सांस भरा। फोमा उस औरत की तरफ नीचे देखता और सोचता रहा :

"अगर कोई ऐसी औरत को मेरे हाथ बेच दे।"

"उसकी नाड़ी तेज चलने लगी। यद्यपि वह अभी कुंवारा था उसे कभी-कभी के वार्तालाप से स्त्री-पुरुष के बीच का अच्छा ज्ञान था, वह उसे गन्दे

ग्राम्य गीतों, गालियों और अश्लील कहानियों से मिला था, जिनसे उसे यद्यपि घृणा थी, परन्तु कुतूहल भी था। वह इसकी कल्पना करना चाहता था, परन्तु उसे कोई बात ठीक २ समझ में नहीं आती थी। अपने अंतःकरण में वह विश्वास करता था कि स्त्री-पुरुष के बीच का सम्बन्ध इतना स्थूल और वास्तविक नहीं जैसा कि अश्लील वार्तालाप में बतलाया जाता है। जब लोग उसकी अवहेलना करते और विश्वास दिलाते कि वे ऐसे ही हैं और इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता तो वह मूर्खतापूर्ण तरीके से दांत निपोरता। परन्तु, वह यही विश्वास किये जाता कि यही एक लज्जित तरीका नहीं जिसके द्वारा स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को बतलाया जा सकता है, वरन् और तरीका भी होना चाहिये जो अधिक पवित्र, संस्कृत, और मनुष्य प्रकृति के लिये कम अनादरपूर्ण हो।

परन्तु अभी वह उस काली आँखों वाली स्त्री की तरफ प्रशंसापूर्ण दृष्टि से देख रहा था और उसके प्रति स्थूल आकर्षण का अनुभव कर रहा था। वह इससे डर गया और लज्जित हो गया। यफ़ीम जो अभी उसके बराबार खड़ा था, गम्भीरतापूर्वक बोला:

"और अब यहाँ तुम उस छोकरी की तरफ क्या देख रहे हो। तुमने उसे पहले कभी नहीं देखा। परन्तु यदि वह इस तरीके से तुम्हारी तरफ तिरछी नजीरें मारती रही—तो साफ़ है कि तुम अपनी नौजवानी और इस स्वभाव से ऐसे काम कर बैठोगे, जिससे हममें से बहुतों को पैदल घर जाना पड़ेगा और यह हमारी खुश किस्मत होगी कि हमारी पतलूनें पहुंच कर साबुत रह जायें।"

"तुम क्या चाहते हो ?" फोमा ने लाल होते हुए कहा।

"मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता। परन्तु तुम मुझसे सुनना चाहते हो ? जहाँ तक औरतों से व्यवहार का सम्बन्ध है, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। यह बहुत सीधा साधा मामला है: वोदका की एक बोतल, कुछ खाने के लिये, उस पर कुछ बीअर की बोतलें, और जब ये सब खतम हो जायें तो उसे बीस कोपेक दे दो। इस दान के लिये वह तुम्हें सब आन्तरिक प्रेम दिखला देगी।"

"यह बिल्कुल झूठ है," फ़ोमा ने दम रोकते हुए कहा।

"मुझे झूठ बोलने की क्या जरूरत, जब कि मैंने यह खेल सैकड़ों बार अपने आप खेला है। देखो, यह बन्दोवस्त मैं तुम्हारे लिये कर देता हूँ। आज ही इस औरत से तुम्हारा परिचय हो जायेगा।"

"अच्छा, जैसा तुम कहते हो," फ़ोमा बोला। उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे उसे किसी ने गले से पकड़ लिया हो।

"मैं आज सायं को ही उसे तुम्हारे पास ले आऊँगा।"

बाकी सारे दिन फोमा भौचक्क इधर उधर घूमता रहा। उसे अपने प्रति किसानों की आदर और कृतज्ञतापूर्ण नजरों का कोई ख्याल नहीं था। वह डर गया था और ऐसा अनुभव करता था जैसे उसने किसी के प्रति कोई बुराई की हो। इससे वह सबसे क्षमा याचना के रूप में बड़ा नम्र और सभ्य हो गया।

उसी संध्या को मजदूर नदी के किनारे एक बड़े कैम्प की आग पर अपने सांझ का भोजन पकाने के लिये एकत्र हुये। आग का लाल पीला प्रकाश नदी में छलक रहा था और उसका प्रतिविम्ब पानी की चिकनी सतह और केबिन की खिड़की के शीशों पर नाच रहा था जहाँ फ़ोमा सोफे पर सिमटा बैठा था। उसने खिड़कियों पर पर्दे डाल दिये थे। कैम्प की आग की चमक पर्दों से अन्दर आ रही थी और एक हलका हिलता प्रकाश फैंक रही थी जो टेबल और केबिन की दीवारों पर कभी बढ़ता था, कभी घटता था। समय बड़ा शान्त था और नीरवता केवल मात्र किनारे से उठी ध्वनियों और किश्ती के पार्श्वों पर टकराते पानी की थपथपाहट से भंग हो रही थी। फ़ोमा को प्रतीत हुआ कि, कोई कैबिन की छायाओं में छिप रहा है, और सावधानी से उसे देख रहा है··· ओह वे आ रहे हैं! तख्तों पर भारी कदमों की आहट हुई······तख्ते पानी के साथ हिरस में टकराने लगे······हँसी और हल्की आवाजें उसके दरवाजे के बाहर सुनाई देने लगीं······

"परे हटो!" एक चिल्लाहट उसके ओठों पर दौड़ी। वह सोफे से खड़ा

हो गया, परन्तु उसके बोलने और कुछ करने से पहले ही उसने देखा कि एक लम्बी स्त्री उसके दरवाजे पर खड़ी है।

"हे राम ! यहाँ कितना अन्धेरा है।" वह हल्की आवाज़ में बोली—"क्या कोई घर में है ?"

'हाँ," फ़ोमा धीरे से बोला।

"अच्छा ! नमस्कार !" और स्त्री अनिश्चित कदमों से उसकी तरफ बढ़ी।

"मैं—मैं लैम्प जला देता हूँ," फोमा हकलाया, परन्तु वह सोफे पर बैठ गया और एक कोने में सिमट गया।

"ओह, यह बिल्कुल ठीक है। जब तुम्हारी आँखें अभ्यस्त हो जाएँ तो अन्धेरे में भी देख सकती हैं।"

"बैठ जाओ," फोमा ने कहा।

"धन्यवाद।"

वह एक हाथ की पहुँच पर सोफा पर बैठ गई। फोमा को उसकी आँखों की चमक और ओठों की मुस्कराहट का पता था। अब उसकी मुस्कराहट पहले से भिन्न प्रतीत हुई, जिसमें उदासी और दयनीयता थी। यह उत्साहवर्धक थी। उसकी आँखें फोमा की आँखों से मिलते ही नीची हो गईं तब वह आसानी से सांस ले सका। परन्तु उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसे क्या कहे, इसलिये वहाँ देर तक एक खिंची मूकता रही। अन्त में वह पहले बोली :

"तुम्हें यहाँ बहुत सूनापन लग रहा होगा, नहीं ?"

"ह···ाँ···ाँ," फोमा ने धीरे से कहा।

"तुम्हें हमारा नदी का हिस्सा कैसा लगता है ?"

"बहुत सुन्दर, जंगल बहुत है।"

दोनों के बीच फिर चुप्पी हो गई।

"तुम्हारी नदी वोल्गा से भी सुन्दर है," फोमा ने जोर देते हुये कहा।

"मैं वोल्गा पर भी हो आई हूँ, सिम्बिर्स्क तक।"

"सिम्बिर्स्क," फोमा किसी और चीज़ के बारे में न सोचता हुआ बोला। परन्तु, अब उसने अपने साथी को पकड़ कर एक आनन्ददायक आवाज में कहा:

"आओ मास्टर, मेरी किसी प्रकार से आव-भगत क्यों नहीं करते ?

"ओ ! हाँ," फोमा ने हाँ में हाँ भरते हुये कहा : "निःसंदेह में बड़ा मूर्ख हूँ। आओ ! जो चाहो, तैयार है। शुरू करो !"

और, वह अंधेरे में इधर उधर टटोलने लगा। कभी बोतल मेज पर रखता, कभी मेज से टकराता, कभी अपराधी के रूप में और कभी जानबूझ कर हँसता जाता था। वह उसके पास गई और उसके पास जाकर खड़ी हो गई और उसके झेंपते चेहरे और कांपते सांस को देख कर मुस्करा रही थी।

"क्या, तुम्हें शर्म आ रही है ?" वह अचानक गुनगुनाई।

उसने उसकी साँस को अपने गालों पर अनुभव किया।

"हाँ," फोमा ने जवाब दिया।

इसी समय उस स्त्री ने अपने हाथ उसके कन्धे पर डाले और धीरे से उसे अपनी छाती की ओर खींचा, और बड़े दुलार से गुनगुनाने लगी:

"यह कुछ नहीं......लज्जा की कोई बात नहीं...आखिरकार, तुम इसके बिना नहीं रह सकते,......तुम अभी नौजवान हो...सुन्दर हो...मुझे तम पर दया आती है।"

उसकी गुनगुनाहट से उसे रोना सा आने लगा। उसके हृदय को एक प्रकार के आलस्य और सुस्ती ने घेर लिया, उसने अपना सिर उसकी छाती में धँसा दिया, उसे अपनी बाहों में आलिंगन कर लिया, और कुछ अस्पष्ट रूप से गुनगुनाने लगा–जिसका अर्थ उसे अपने आप नहीं पता था।......

"हटो, जाओ," फोमा ने दीवार की ओर बड़ी बड़ी आँखों से घूरते हुये कहा।

"उसने उसके गालों को चूमा, आज्ञाकारितापूर्वक उठी, और दरवाजे से बाहर चली गई।"

"अच्छा, नमस्कार ?" वह बोली ।

फ़ोमा उसकी उपस्थिति में बहुत लज्जित था, परन्तु जैसे ही वह चली गई, वह उठा और सोफे पर पुनः बैठ गया। अभी वह बैठा ही था; उसके पाँव लड़खड़ाने लगे, और उसे किसी भारी नुकसान की भावना ने घेर लिया—जो अमूल्य थी, जिसे वह नहीं जानता था, परन्तु चली जा चुकी है। परन्तु, इसी क्षण उसका हृदय एक नये अभिमान और वीरता से भर गया। उसकी लज्जा चली गई, और लज्जा के स्थान पर उसे उस स्त्री पर दया आने लगी, जो अकेली मई की उस ठण्डी रात्रि के अन्धेरे में छली गई थी। वह तेजी से केबिन से बाहर निकल कर डैक पर पहुंचा। चन्द्र-रहित रात्रि में तारे छिटके हुए थे, उसने सर्दी अनुभव की और अन्धकार में चला गया। नदी तट पर अभी भी कैम्प की आग के लाल और सोने के रंग का अम्बर चमक रहा था। फ़ोमा कान लगा कर सुनने लगा : वायु में एक दबाने वाली नीरवता लटक रही थी, जिसे लंगर की जंज़ीरों से टकराती, पानी की थप-थप के अलावा और कुछ नहीं था। कहीं किसी के चलने की आवाज नहीं आ रही थी। वह उस स्त्री को आवाज देना चाहता था, परन्तु उसे उसका नाम ही नहीं पता था। बहुत देर तक डैक पर खड़ा बहुत उत्सुकतापूर्वक ताजी हवा का पान करता रहा और अचानक अग्निबोट के अगले भाग से तथा केबिन की दूसरी तरफ से उसे किसी के सिसकने की आवाज सुनाई दी। वह उधर चल पड़ा और धीरे-धीरे आगे बढ़ा, उसे विश्वास था कि वह वहीं मिलेगी।

वह डैक पर बैठी रस्सों के घेरे पर अपना सिर रक्खे रो रही थी। फ़ोमा उसके सफेद नंगे कन्धों के उठने और गिरने को देख सकता था और उसके विरहपूर्ण एकांत रुदन को सुन सकता था। वह अपने आप भी विरह का अनुभव कर रहा था।

"क्या बात है ?" उसने डरते हुए, उस पर झुकते हुए पूछा।

स्त्री ने बिना कुछ जवाब दिये अपना सिर हिलाया।

"क्या मैंने तुम्हें नाराज कर दिया ?"

"जाओ", स्त्री ने कहा।

"परन्तु—परन्तु क्यों ?" फ़ोमा ने उसके बालों को छूते हुए चिन्ता-पूर्वक कहा—"मुझसे नाराज न होओ; आखिरकार, तुमने अपने आप··· ।"

"मैं गुस्सा नहीं हूँ", स्त्री ने गुनगुनाया—"मैं तुमसे नाराज क्यों होऊँ ? तुम कोई पशु नहीं; तुम्हारा हृदय पवित्र है। ओह ! मेरे चलते पथिक, मेरे बराबर बैठ जाओ।" उसने फ़ोमा का हाथ पकड़ लिया और उसे अपनी तरफ को खैंच लिया जैसे कि वह बच्चा था, उसका सिर पकड़ कर अपनी छाती से दबाया और उस पर झुक कर अपने गरम ओठ उसके ओठों से छुआ दिये।

"तुम क्यों रो रही हो ?" फ़ोमा ने एक हाथ से उसके गालों को थपथपाते हुए और दूसरे से उसके कन्धे को पकड़ कर पूछा।

"अपने लिये, तुमने मुझे क्यों निकाल दिया ?" उसने प्रार्थना भाव से पूछा।

"मुझे लज्जा आ गई", फ़ोमा ने अपना सिर नीचा करते हुए जवाब दिया।

"प्यारे लड़के ! मुझे इमानदारी से कहो ! तुमने मुझे पसन्द किया या नहीं ?" स्त्री ने हँसते हुए पूछा, और उसके दो बड़े गरम-गरम आँसू फ़ोमा की छाती पर टपक पड़े।

"तुम क्या कर रही हो ?" नवयुवक ने लगभग डरते हुए कहा। और, फिर वह हार्दिक वार्तालाप करने लगा, उससे बताने लगा कि वह कितनी सुन्दर थी, कितनी कोमल थी, कितनी दयनीय थी और उसके साथ अकेले क्यों लज्जा आई। और ज्यों-ज्यों वह उनकी बात सुनती जाती थी, त्यों-त्यों उसके गाल, गर्दन, सिर और उसकी नंगी छाती को चूमती जाती थी।

फ़ोमा के कह चुकने के बाद वह बड़े कोमल और शोकार्त स्वर में कहने लगी, जैसे कि वह किसी मरे हुए के बारे में बता रही हो :

"तो मैंने भूल की", उसने कहा—"जब तुमने मुझे परे हटने के लिये कहा, मैं उठी और चल पड़ी, परन्तु तुम्हारे शब्दों ने मुझे बड़ा दुःख पहुँचाया।

एक समय था जब लोग मुझसे प्यार और दुलार करने में कभी थकते नहीं थे; मेरी एक मुस्कान के ऊपर वे सब कुछ करने को तैयार हो जाते थे। यही विचार था, जिससे मैं रो रही थी। मैं अपने अतीत-यौवन के लिये रो रही थी, अब मैं तीस बरस की हो चुकी हूं, और तुम जानते हो कि तीस वर्ष की स्त्री में क्या कुछ रह जाता है। आह, फोमा इग्नातेविच !" वह अपनी आवाज को ऊँचा करती हुई चिल्लाई और संगीतमय मधुर-स्वर को तेज करती हुई बोली, जो थप-थपाते हुए पानी की मोहक प्रतिध्वनि थी। "सुनो, जो मैं कह रही हूँ ! अपने यौवन का लाभ उठाओ। संसार में इससे बढ़कर मूल्यवान वस्तु कोई नहीं, यह सोने के समान है, जो तुम्हारी सब इच्छाएँ पूरी कर देता है। इसका उपयोग करो, ताकि बुढ़ापे में कुछ याद कर सको। यह मेरी जवानी थी। जिसका विचार आते ही मैं रोने लगी, परन्तु मैं यह याद करके प्रसन्न हो गई कि मैंने कैसे यौवन बिताया है। मेरे अन्दर फिर यौवन आ गया और मैं ऐसे ही यौवन का अनुभव करने लगी जैसे कि, मुझे जीवन अमृत के पान से माद-कता छा गई। ओह, प्यारे लड़के ! एक बार जब मैं तुम्हें पसन्द आ जाऊँगी और तुम्हारे साथ आनन्द का अनुभव करूँगी, तब मैं तन-मन को उसमें लगा दूँगी। एक बार जब मैं सुलग पड़ूँगी तो राख होने तक सुलगूँगी।"

उसने फ़ोमा को पड़क कर अपनी छाती से लगाया और उसके ओठों पर अतिशय भावुकता से चुम्बन करने लगी।

"रात के चौ···की···दा···रो" बराबर की माल ढोने वाली किश्ती से कोई चिल्लाया, और अचानक "···रो···" को तेजी से बोला। फिर उसने लकड़ी की हथौड़ी को लोहे की चद्दर पर मारा, जो घण्टे का काम दे रही थी। रात की स्तब्ध-नीरवता में घड़ियाल का कम्पन फैल गया।

× × × ×

कुछ दिनों के बाद जब माल ढोने वाली किश्तियाँ खाली हो चुकीं और पेर्म जाने के लिये अपना लंगर उठाने की तैयारियाँ कर रही थीं, यफीम यह देखकर भयभीत हो गया कि एक गाड़ी पानी के पास आ रही है, जिसमें

वही काली आँखों वाली पालेगिया अपने ट्रंकों और बन्डलों के साथ आ रही थी।

"किसी को उसका सामान लाने के लिये भेज दो", फ़ोमा ने गाड़ी की ओर देखते हुए हुक्म दिया।

यफीम ने सिर हिलाते हुए अपनी अनिच्छा प्रकट की, परन्तु उसका हुक्म पूरा किया। बाद में वह धीरे से बोला :

"अच्छा; तो वह हमारे साथ चल रही है।"

"मेरे साथ चल रही है।"

"मैंने यह तो नहीं कहा कि, हम सबके साथ चल रही हैं। हे···हो !"

"तुम ये आहें क्यों भर रहे हो ?"

"देखो, फ़ोमा इग्नातेइविच ! जहाँ हम जा रहे हैं, बड़ा शहर है; और उसके जैसी बहुत मिल जायेंगी।"

"अपनी जबान बन्द करो !" फ़ोमा ने कठोरता से कहा।

"जरूर, यह तो मैं कर लूँगा; परन्तु जो तुम कर रहे हो, वह ठीक नहीं।"

फोमा बड़े गुस्से में चिल्लाया।

"अगर मैंने तुम्हें या किसी और को कोई भद्दी बात कहते सुना, तो याद रखना मैं उसका सिर तोड़ दूँगा", फोमा ने बड़े अधिकारपूर्वक हुक्म के साथ प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

"ओ भूत-प्रेतो !" यफीम ने गुनगुनाया और अविश्वासपूर्वक अपने मालिक की तरह देखते हुए, और पीछे की ओर हट गया। इग्नात के बेटे के दाँत भेड़िये की तरह निकल आये और उसकी आँख चौड़ी हो गईं।

"तुम जरा कहने का हौसला करो !" फोमा ने गरज कर कहा—"और, मैं तुम्हें अभी मजा चखा दूँगा।"

"तुम मेरे मालिक भले ही हो" यफीम ने बावजूद भय के आत्म-प्रतिष्ठापूर्वक कहा : "परन्तु मुझे तुम पर नज़र रखने के लिये कहा गया था और यहाँ मैं कैप्टन हूँ।"

"कैप्टन ?" फोमा गुस्से में सारे शरीर से काँपता हुआ चिल्लाया—"और मैं कौन हूँ ?"

"तुम्हें चिल्लाने की जरूरत नहीं। और यह सब एक बेकार घघरी के लिये।"

फोमा के सफेद चेहरे पर लाल धब्बे आ गये, वह एक टाँग से दूसरी टाँग पर बदलने लगा; उसके हाथ जेबों में ही जकड़ गये और वह दृढ़ सम-ध्वनि में बोला :

"सुनो कैप्टन ! यदि तुमने एक शब्द भी कहा तो तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा ! तुम किश्ती छोड़कर चले जाओ। पायलेट और मैं तुम्हारे बगैर काम चला लेंगे, समझ गये ? यह बात अपने दिमाग से निकाल दो, कि तुम मुझ पर हुक्म चला सकते हो।"

यफीम हक्का-बक्का रह गया, वह खड़ा-खड़ा फोमा की ओर निहार रहा था और एक शब्द भी न कह सकता था।

"मैं कहता हूँ, तुम समझ गये ?"

ह···ा···ँ", यफीम ने सांस भरते हुए कहा : मगर यह सब झगड़ा किसलिये ? सिर्फ एक उस बद··· ।"

"चुप रहो !" फोमा की जंगली आँखों और विकृत चेहरे को देख कैप्टन समझ गया कि, भला इसी में है कि, परे हट जाये। और, वह वहाँ से हट गया।

उसे फोमा पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। वह सोच रहा था कि, उसके साथ अन्याय हुआ है। परन्तु, साथ ही उसने अपने असली मालिक के मजबूत हाथों को मान लिया। और, क्योंकि वह हुक्म मानने का आदी था, वह अपने से ऊपर, बलवान् शक्ति को भी देखना चाहता था। वह सीधा पायलेट के कैबिन में गया और उसे सब सुना दिया, जिसे उसने अस्वीकृत नहीं किया।

"तुम्हें यह बात कैसी लगी ?" उसने अपना किस्सा खतम करते हुए पूछा : "एक शिकारी कुत्ता पहले ही दिन अपनी असलियत बता देता है,

जब उसे शिकार पर ले जाओ। तुम उसे इधर-उधर चक्कर काटने वाला जानवर नहीं देखना चाहते। उसे अपना आनन्द करने दो। इससे कोई बुराई नहीं आयेगी—खासतौर से इस मिजाज से! देखो, वह कैसे मेरे पर गरजा। यह जताने में उसे जरा देर नहीं लगी कि वह कैसा है। दिखता है कि, शक्ति और अधिकार का आहार उसे बाल्टियों में भर-भर कर खिलाया गया है।"

यफीम ने जो कहा था वह ठीक ही निकला: पिछले चन्द दिनों में फोमा बिल्कुल बदल गया। उसमें पैदा हुई विषय-वासना के आवेश ने उसे उस स्त्री के आत्मा और शरीर का उसे पूर्णरूप से स्वामी बना दिया और वह अपनी प्रेमिका के प्रज्वलित माधुर्य का लालसा के साथ पान करने लगा। इसके कारण सब अयोग्यताएँ, जिनके कारण वह मन्द नवयुवक बना हुआ था, अब नष्ट हो गईं, और उसका हृदय यौवन के अभिमान और अपने व्यक्तित्व की चैतन्यता से भर गया। पुरुष के प्रति स्त्री का प्रेम सदा ही लाभदायक होता है, चाहे वह कैसा ही प्रेम हो, चाहे उसमें कष्ट ही क्यों न हों, क्योंकि कष्टों का भी लाभ होता है। बीमार आत्माओं के लिये ज़हर स्वस्थ लोगों के लिये बड़ा लाभदायक है, जैसे लोहे के लिये आग।

इस तीस वर्षीय स्त्री के प्रति फोमा का प्रेम यद्यपि उस स्त्री के विगत यौवन का हंस-गीत मात्र था, परन्तु इससे वह अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं हुआ। वह न प्रेम से ही विमुख हुआ और नहीं अपने कार्य से। एक उत्तम मदिरा की तरह उस स्त्री ने उसमें कार्यशक्ति और प्रेम को प्रोत्साहित कर दिया तथा उसके प्रेम और दुलार के प्रभाव में वह अपने आप भी तारुण्यता प्राप्त करने लगी।

पेर्म में अपने धर्म-पिता का पत्र मिला। मायाकिन ने लिखा था कि इग्नात अपने अकेलेपन को शराब द्वारा भुला रहा है, जो इस उमर में उसके लिये बहुत बुरा है। इसलिये फोमा को अपना कारोबार खतम कर, जितना जल्दी हो सके, अपने घर आ जाना चाहिये। नवयुवक ने इस पत्र में भय की आशंका देखी, परन्तु उसकी छायायें कारोबारी चिन्ताओं और पालेगिया के

प्रेम से नष्ट हो गईं। नदी की लहर की तेजी के साथ-साथ समय गुजरने लगा और प्रतिदिन नये अनुभव और नये विचार आने लगे। पालेगिया का प्रेम एक रखेल प्रेमिका का प्रज्वलित, तीव्र और चरम सीमा का प्रेम था जो सिर्फ उसकी उमर की ही स्त्री दे सकती है, जो गुजरते यौवन के अन्तिम आनन्द के शेष प्यालों का पान करती होती है। कभी-कभी वह ऐसा अनुभव करती थी और जो उसके प्रेम जितना ही प्रबल था, जिससे फोमा उसके साथ और बँधा हुआ था—यह माता के प्रेम के सामान था जो अपने बच्चे को जीवन की घातक गल्तियों से बचाना चाहती है और उसे अपने जीवन–ज्ञान के बारे में शिक्षा देना चाहती है। प्रायः वे जब दोनों रात्रि के समय डैक पर एक दूसरे के आलिंगन में बैठे हुए होते थे तो वह बड़ी कोमलता और विषाद के साथ कहती :

"तुम मुझे अपनी बड़ी बहन के रूप में समझो, मुझे जीवन का बड़ा अनुभव है। मैं लोगों को खूब समझती हूँ। मैंने अपने दिनों में क्या कुछ नहीं देखा है! अपने मित्रों को बड़ी सावधानी से चुनो, क्योंकि ये लोग बीमारियों के समान छूत वाले होते हैं। तुम पहले पहल कुछ नहीं देख सकते। प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्यों के समान ही होता है और तुम्हें पता भी नहीं चलता कि तुम्हारे शरीर पर फुन्सियाँ हो गई हैं। और तुम्हें हम स्त्रियों से भी सावधान होना चाहिये (पवित्र कुमारी तुम्हारी रक्षा करें)। तुम अभी बहुत कोमल हो; तुम्हारे हृदय पर अभी कोई मैल नहीं। तुम्हारे जैसे—बलवान्, सुन्दर, सम्पन्न पुरुष को सब स्त्रियाँ चाहती हैं। चुपचाप रहने वाली स्त्रियों से बड़े सावधान रहो; वे पुरुष को धीरे-धीरे चुपचाप जोंकों की तरह चूस जाती हैं। ऐसी स्त्रियाँ, पुरुष को तो चूस लेती हैं, परन्तु अपने आप अछूती रहती हैं। वे पुरुष का हृदय भंग कर देती हैं और उसके बदले में कुछ नहीं देतीं। मेरे जैसी प्रसन्नचित्त स्त्रियों के साथ जाओ, क्योंकि उनके दिल में लाभ और प्राप्ति का विचार नहीं होता।"

निःसन्देह पेलागिया के दिल में कोई लालच नहीं था। पेर्म में फोमा

उसके लिये कपड़े और गहने लाया, वह प्रसन्न अवश्य हुई परन्तु उन्हें देखकर चिन्तापूर्वक बोली :

"इस प्रकार पैसा बरबाद न करो। तुम्हारे पिता गुस्सा होंगे। मैं तुम्हें इस सबके बिना ही प्यार करती हूँ।

उसने पहले से ही फोमा से कह दिया था कि वह उसके साथ क़ाज़ान तक चलेगी, जहाँ उसकी एक विवाहित बहिन रहती है। फोमा को विश्वास नहीं आता था कि वह उसे छोड़ जायेगी। परन्तु काज़ान पहुँचने से पहली रात जब उसने उसे फिर कहा, तो फ़ोमा बेचैन हो गया और प्रार्थना करने लगा कि वह न जाये।

"तुम समय से पहले ही क्यों दुःख कर रहे हो", वह बोली : "अभी तो सारी रात हमारे सामने पड़ी है। जब मैं चली जाऊँगी तो मेरी अनुपस्थिति पर आँसू बहाना।"

परन्तु वह और जोर से उससे प्रार्थना करने लगा कि वह न जाये। यहाँ तक कि उसने उसे यह भी कह दिया कि वह उससे विवाह करना चाहता है।

"ऊ... ... ! अच्छा, तुम यह चाहते हो !" वह हंसी : "चाहते हो कि मैं जिन्दा पति को तुम्हारे लिये छोड़ दूँ ? परमात्मा तुम्हारा भला करे, तुम हो बड़े अजब ! शादी करना चाहते हो, खूब। तुम भी एक ही हो ? मुझ जैसियों से मर्द शादियाँ किया करते हैं ! इससे पहले तुम्हारी अनेक प्रेमिकायें रहेंगी। तब तक शादी की इन्तजार करना जब तक जीवन के माधुर्य से तुम्हारा दिल न भर जाये और तुम्हें अनाज की भूख न लग जाये। शादी का यही वक्त होगा। एक स्वस्थ मनुष्य को जवानी में शादी नहीं करनी चाहिये। उसके लिए एक बीबी काफी नहीं होती। इसलिये वह इधर-उधर चक्कर काटता फिरता है। यदि तुम सुखी रहना चाहते हो तो शादी के लिये तब तक प्रतीक्षा करो जब तक तुम्हें विश्बास हो कि तुम एक बीबी से सन्तुष्ट रह सकते हो।"

परन्तु जितना ही वह कहती गई, फ़ोमा उससे उतना ही जुदा न होना चाहता था।

"सुनो", वह शांत भाव से बोली : "यदि तुम मसाल लिये जा रहे हो जबकि उसके बगैर काफी चांदना है, तो उसे पानी में डुबो दो; ताकि न तुम्हारा हाथ जले और न धुँआ ही उठे।"

"मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम्हारा क्या मतलब है।"

"कोशिश करो। तुमने मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई और यही मैं चाहती हूँ। इसी कारण मैं तुम्हें छोड़कर जाना चाहती हूँ।"

यह कहना कठिन है कि उनका यह वाद-विवाद कहाँ समाप्त होता, अगर कुछ परिस्थितियाँ वहाँ न आतीं। काज़ान में फ़ोमा को अपने धर्म-पिता से एक तार मिला, जिसमें संक्षेप में लिखा था : "जल्दी पैसेंजर बोट से लौटो।" फ़ोमा का दिल बैठने लगा, परन्तु कुछ घण्टों बाद वह उदास, पीला चेहरा लिये एक पैसेंजर बोट के डैक पर खड़ा था; जो जमीन से दूर हट रहा था। वह निश्चेष्ट, आँखें बिना झपकाये, दोनों हाथों से रेलिंग को पकड़े खड़ा था और उस औरत के चेहरे की ओर निहार रहा था जो जमीन और नदी के किनारे में दूर तैरता दीख रहा था। पेलागिया ने उसकी ओर अपना रूमाल हिलाया और हँसी, परन्तु वह जानता था कि वह आँसुओं से भीगी हुई थी। वह दोनों अलग हो गये और उसका हृदय एक ठण्डी मलिनता तथा दुःख से भर गया। उस स्त्री का आकार लगातार छोटा-छोटा होता गया और जैसे ही फ़ोमा उसे देखा रहा था, वह इस बात को जान रहा था कि इस स्त्री के वियोग का नया दुःख उसके लिये बढ़ गया है और उसे पिता का डर खड़ा होने लगा। यह किसी के प्रति विरोध था, परन्तु वह कह नहीं सकता था कि किसके विरुद्ध।

किनारे के ऊपर खड़े लोगों की भीड़ जब एक काली अस्पष्ट रेखा के समान दिखाई देने लगी, जिसमें न कोई चेहरा था न कोई गति थी, फ़ोमा हट गया और विषाद के साथ इधर-उधर घूमने लगा।

मुसाफिर, ऊँची आवाजों में बातें करते हुए चाय के लिये बैठ गये; वेटर इधर-उधर, आगे-पीछे टेबल सजाने के लिये चहल-पहल करने लगे।

एक बच्चे के हँसने की आवाज कहीं तीसरे दर्जे से उठी, कंसर्टीना बज रहा था; रसोईये प्लेटों की खड़खड़ाहट कर रहे थे और चाकू के चपटे पासे से स्टीक* पीटी जा रही थी। बड़ा पैसेंजर बोट तेजी के साथ पानी के बहाव के विरुद्ध चलने लगा। फैन में मथी जा रही लहरों के काटने के प्रयास में वह काँप रहा था। फ़ोमा बोट के पिछले भाग में, पानी की भँवरों में झाँकने लगा और उसके हृदय में तोड़-फोड़ और नष्ट करने की एक जंगली इच्छा जाग उठी। वह भी नदी की धारा के विरुद्ध तैरने और उसे अपने छाती और कन्धों से फाड़ने की इच्छा करने लगा।

"भाग्य !" किसी ने पास खड़े शिथिल अस्पष्ट आवाज में कहा।

उसने इस शब्द को पहले सुन रक्खा था; उसकी भुआ अनफीसा उसके प्रश्नों के जवाब में प्रायः इस शब्द का प्रयोग किया करती थी, और ये चार अक्षर उसके लिये परमात्मा के समान शक्ति रखते थे। उसने देखने के लिये कि किसने कहा है, ऊपर को नजर की। उनमें से एक मनुष्य जो वृद्ध, धौले बालों वाला और दयालु चेहरे वाला था; और दूसरा उसकी अपेक्षा युवक, बड़ी-बड़ी आखों और नुकीली दाढ़ी वाला था। उसकी बड़ी चौड़ी मांसल नाक और चिपके ओठों को देख फ़ोमा को अपने धर्म-पिता की याद आ गई।

"हाँ, भाग्य", वृद्ध मनुष्य ने अपने साथी के समर्थन में दुहराया, जोकि उसने कहा था : "वह जीवन में ऊपर ऐसे ही लटक रही है जैसे कि मछुआरा जो काँटा फेंकता है, जिसे कोई भूख में पकड़ लेता है; और बाद में तुम्हें पता चलता है कि शिकार भग्न-हृदय किनारे पर अन्तिम सांस लेता हुआ छटपटा रहा होता है। मेरे मित्र ! यह ऐसा ही है।"

फ़ोमा ने अपनी आँखें ऐसे बन्द कर लीं जैसे कि उसे सूर्य की किरणें लग रही हों।

"सच !" उसने सिर हिलाते हुए, ऊँची आवाज में कहा : "ओह, कितना सच है।"

---

*स्टीक—गो मांस की काटी हुई परत।

दोनों मनुष्य उसकी ओर मुड़े और घूरने लगे—वृद्ध मनुष्य हलकी प्रशंसक मुस्कराहट के साथ और नौजवान अपनी नीची भौंहों से असहमति के साथ उसे घूरने लगे। फोमा इससे घबरा सा गया, वह लज्जित होकर दूर सरक गया, भाग्य के ऊपर विचारने लगा कि उसने किस कृपा से इस स्त्री को उसके पास भेजा और क्यों इतनी जल्दी और निर्दयता से उसे छीन लिया। और, उसने अनुभव किया कि यह विषाद की भावना, जिसका बोझ वह सिर पर उठाए हुए था, भाग्य के ही विरुद्ध थी जिसने उसके साथ यह क्रूर खेल खेला है। जीवन ने लाड़-प्यार में उसे बिगाड़ दिया था और उसे यह जहर का प्याला जरूर पीना ही पड़ेगा। सारी रात वह जागता पड़ा रहा और वृद्ध मनुष्य के कहे को सोचता रहा और भाग्य के विरुद्ध विचार पालता रहा। परन्तु इस विरोधी भावना से उसके हृदय में उदासी और हृदय के विषाद की जगह क्रोध और प्रतिहिंसा जाग उठी।

फ़ोमा को उसका धर्मपिता मिला और उसने उससे नाना प्रकार के सवाल किये।

"तुम्हारे पिता का दिमाग खराब हो गया है," वृद्ध मनुष्य ने अपनी हरी आँखों को चमकाते हुये और अपने धर्म पुत्र के साथ गाड़ी में बैठते हुये जवाब दिया।

"क्या शराब पीने लगे हैं?"

"इससे भी बुरा। वह अपने आप से बाहिर हैं।"

"कृपया परमात्मा के नाम पर मुझे बताइये, क्या बात है?"

"यह इस प्रकार है: एक स्त्री है जो उसके चारों तरफ तितली की तरह उड़ रही है।"

"अच्छा?" फ़ोमा ने एक प्रसन्नतापूर्ण चुभन के साथ पेलागिया के बारे में सोचते हुए कहा।

"वह उससे चिपक गई है और उसे सूखा चूसना चाहती है।"

"क्या वह भली है?"

"वह ? बिल्कुल एक जलते घर के समान है। वह अपनी जेब से ७५ हजार रुपये ऐसे उड़ा चुका है जैसे पंख हो।"

"वह ! कौन है वह ?"

"सोन्या मिद्यन्स्कया, आर्कीटेक्ट की पत्नी।"

"हे परमात्मा ! तुम्हारा मतलब है कि—क्या वह मेरे पिता की रखेल है ?" फ़ोमा ने सांस खेंचते हुये आश्चर्य से पूछा।

उसके धर्मपिता ने आँखें मारते हुए फिर कहा :

"तुम ऐसे ही पागल हो बेटा, जैसे कि, वह ! बिल्कुल पागल, मैं सच कहता हूँ। जरा सोचो तुम क्या कह रहे हो ! तिरसठ की उमर में एक रखेल, और इन दामों पर तुम क्या सोच रहे हो ? ठहरो मैं इग्नात को इस बारे में बताऊँगा।"

ज्यों ही वह कहकहा मार के हँसा उसकी पतली दाढ़ी बड़े भद्दे तरीके से हिलने लगी। फ़ोमा को वह बात जानने में जो वह चाहता था, काफी समय लगा। बुड्ढा अपने होश में नहीं था। वह घबराया हुआ था। उसकी वाणी जो साधारणतः प्रवाहपूर्ण होती थी इस समय असम्बद्ध थी, और बीच बीच में में गालियाँ बकता और थूकता जाता था। फ़ोमा को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है। ऐसा दिखा कि सोफिया पाव्लोव्ना मिद्यन्स्कया जो एक सम्पन्न आर्कीटेक्ट की बीबी थी, दान सम्बन्धी योजनाओं की शहर भर में अनर्थक अग्रणी थी और उसने गरीबों के लिये एक शरणगृह, सार्वजनिक पुस्तकालय और वाचनालय बनाने के लिये इग्नात को पचहत्तर हजार रूबल दान करने के लिये तैयार कर लिया था। अखबारों ने इग्नात की उदारता की आसमान तक प्रशंसा की। फ़ोमा ने इस औरत को कई बार बाहर घूमते हुए देखा था, वह बड़ी प्यारी थी और शहर में उसकी सबसे सुन्दर होने की प्रसिद्धि थी। शहर में उसके लिये अनेक भद्दी, अश्लील बातें भी कही जाती थीं।

"बस यही बात है ?" फ़ोमा अपने धर्मपिता को सुनकर बोला : "और मैं तो यहाँ कई तरह की अजब अजब आशंकाएँ करने लगा था।"

"तुम ! तुम सोचने लगे थे।" धर्म पिता ने तिरस्कारपूर्वक कहा : "तुम कुछ नहीं सोच सकते, अभी तो तुमने दूध छोड़ा है।" "आप नाराज़ किस बात से हैं ?" फ़ोमा ने आश्चर्य से पूछा।

"पचहत्तर हज़ार रूबल ! क्या यह बहुत कम हैं, या नहीं ? मुझे इसका जवाब दो।"

"निःसंदेह है", फ़ोमा ने क्षण भर सोचते हुए कहा : "परन्तु पिताजी के पास पैसा बहुत है। मैं नहीं समझता कि आप……।"

मायाकिन काँपा और नवयुवक के चेहरे की तरफ तिरस्कारपूर्वक देखने लगा।

"क्या तुम ऐसे हो ?" उसने हल्की आवाज में पूछा।

"और कौन ?"

"और, यह तुम्हारी जवानी की मूर्खता है जो कह रही है। और यह मेरे बुढ़ापे की मूर्खता है जो हज़ारों परीक्षाओं में से गुज़र चुकी है, जो कहती है कि अभी तुम पिल्ले हो, अभी तुम्हारे भौंकने में बहुत देर है।"

फ़ोमा अपने धर्म-पिता की अलंकृत भाषा से कई बार पहले चिढ़ चुका था (मायाकिन हमेशा उससे उसके पिता की अपेक्षा सख्ती और तिरस्कारपूर्वक बोलता था), परन्तु इस बार वह बहुत चिढ़ गया।

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम मुझसे ऐसा क्यों बोलते हैं; आखिर अब मैं बच्चा नहीं हूँ", उसने दृढ़ता और संयम के साथ कहा।

"तुम तो ऐसा नहीं कर रहे", मायाकिन ने अपनी भौंहें उठा, उसकी मखौल करते हुए कहा। यह फ़ोमा के लिये बहुत अधिक था। उसने अपने वृद्ध धर्म-पिता के चेहरे की ओर सीधा देखकर साफ-साफ कहा :

"हाँ, मैं कहता हूँ। मैं आपसे कह देना चाहता हूँ कि आपकी यह चिल्लाहट और तानेबाजी बहुत हो चुकी, और अब मैं इससे अधिक नहीं सुनना चाहता।"

"हूँ···हूँ···हूँ ! शी···श···श ! मैं माफी चाहता हूं।"

"वह ? बिल्कुल एक जलते घर के समान है। वह अपनी जेब से ७५ हजार रुपये ऐसे उड़ा चुका है जैसे पंख हो।"

"वह ! कौन है वह ?"

"सोन्या मिद्यन्स्कया, आर्कीटेक्ट की पत्नी।"

"हे परमात्मा ! तुम्हारा मतलब है कि—क्या वह मेरे पिता की रखेल है ?" फ़ोमा ने सांस खेंचते हुये आश्चर्य से पूछा।

उसके धर्मपिता ने आँखें मारते हुए फिर कहा :

"तुम ऐसे ही पागल हो बेटा, जैसे कि, वह ! बिल्कुल पागल, मैं सच कहता हूँ। जरा सोचो तुम क्या कह रहे हो ! तिरसठ की उमर में एक रखेल, और इन दामों पर तुम क्या सोच रहे हो ? ठहरो मैं इग्नात को इस बारे में बताऊँगा।"

ज्यों ही वह कहकहा मार के हँसा उसकी पतली दाढ़ी बड़े भद्दे तरीके से हिलने लगी। फ़ोमा को वह बात जानने में जो वह चाहता था, काफी समय लगा। बुड्ढा अपने होश में नहीं था। वह घबराया हुआ था। उसकी वाणी जो साधारणतः प्रवाहपूर्ण होती थी इस समय असम्बद्ध थी, और बीच बीच में में गालियाँ बकता और थूकता जाता था। फ़ोमा को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है। ऐसा दिखा कि सोफिया पाव्लोव्ना मिद्यन्स्कया जो एक सम्पन्न आर्कीटेक्ट की बीबी थी, दान सम्बन्धी योजनाओं की शहर भर में अनर्थक अग्रणी थी और उसने गरीबों के लिये एक शरणागृह, सार्वजनिक पुस्तकालय और वाचनालय बनाने के लिये इग्नात को पचहत्तर हजार रूबल दान करने के लिये तैयार कर लिया था। अखबारों ने इग्नात की उदारता की आसमान तक प्रशंसा की। फ़ोमा ने इस औरत को कई बार बाहर घूमते हुए देखा था, वह बड़ी प्यारी थी और शहर में उसकी सबसे सुन्दर होने की प्रसिद्धि थी। शहर में उसके लिये अनेक भद्दी, अश्लील बातें भी कही जाती थीं।

"बस यही बात है ?" फ़ोमा अपने धर्मपिता को सुनकर बोला : "और मैं तो यहाँ कई तरह की अजब अजब आशंकाएँ करने लगा था।"

"तुम ! तुम सोचने लगे थे।" धर्म पिता ने तिरस्कारपूर्वक कहा : "तुम कुछ नहीं सोच सकते, अभी तो तुमने दूध छोड़ा है।" "आप नाराज़ किस बात से हैं ?" फ़ोमा ने आश्चर्य से पूछा।

"पचहत्तर हज़ार रूबल ! क्या यह बहुत कम हैं, या नहीं ? मुझे इसका जवाब दो।"

"निःसंदेह है", फ़ोमा ने क्षण भर सोचते हुए कहा : "परन्तु पिताजी के पास पैसा बहुत है। मैं नहीं समझता कि आप······।"

मायाकिन काँपा और नवयुवक के चेहरे की तरफ तिरस्कारपूर्वक देखने लगा।

"क्या तुम ऐसे हो ?" उसने हल्की आवाज में पूछा।

"और कौन ?"

"और, यह तुम्हारी जवानी की मूर्खता है जो कह रही है। और यह मेरे बुढ़ापे की मूर्खता है जो हज़ारों परीक्षाओं में से गुज़र चुकी है, जो कहती है कि अभी तुम पिल्ले हो, अभी तुम्हारे भौंकने में बहुत देर है।"

फ़ोमा अपने धर्म-पिता की अलंकृत भाषा से कई बार पहले चिढ़ चुका था (मायाकिन हमेशा उससे उसके पिता की अपेक्षा सख्ती और तिरस्कारपूर्वक बोलता था), परन्तु इस बार वह बहुत चिढ़ गया।

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम मुझसे ऐसा क्यों बोलते हैं; आखिर अब मैं बच्चा नहीं हूँ", उसने दृढ़ता और संयम के साथ कहा।

"तुम तो ऐसा नहीं कर रहे", मायाकिन ने अपनी भौंहें उठा, उसकी मखौल करते हुए कहा। यह फ़ोमा के लिये बहुत अधिक था। उसने अपने वृद्ध धर्म-पिता के चेहरे की ओर सीधा देखकर साफ-साफ कहा :

"हाँ, मैं कहता हूँ। मैं आपसे कह देना चाहता हूँ कि आपकी यह चिल्लाहट और तानेबाजी बहुत हो चुकी, और अब मैं इससे अधिक नहीं सुनना चाहता।"

"हूँ···हूँ···हूँ ! शी···श···श ! मैं माफी चाहता हूं।"

मायाकिन ने अपनी आँखें मरोड़ीं, ओठों को चबाया, परे देखने लगा और दो–एक मिनट तक कुछ न बोल सका। गाड़ी अब पतली गली में मुड़ी। घर की छत्त नज़र आते ही फ़ोमा बिना जानेबूझे गर्दन को आगे को खेंच उसे निहारने लगा।

"फ़ोमा", उसके धर्म-पिता ने आँख झपकाते हुए कहा : "तुम अपने दाँत किस पर तेज़ करते रहे ?"

"क्यों, वे तेज़ हैं ?" फ़ोमा ने अपने धर्मपिता के कथन से प्रसन्न होकर पूछा।

"हाँ, खूब तेज़ हैं। यह अच्छी ही बात है। निःसन्देह, बहुत अच्छी बात है। तुम्हारे पिता और मुझको तो डर हो रहा था कि तुम निरे बुद्धू ही निकलोगे। क्यों, तुमने बोदका भी पीनी शुरू की है या नहीं ?"

"हाँ, मैंने कर दी है।"

"कुछ जल्दी ! क्या बहुत पीते हो ?"

"ज्यादा क्यों ?"

"पसन्द आती है ?"

"कोई ख़ास नहीं।"

"हूँ···हूँ···हूँ ! खैर इसमें कोई बुराई नहीं हैं। केवल एक बात है–तुम बहुत खुले हो और छिपाव नहीं करते हो। तुम बुड्ढे पादरी की तरह अपने पापों को हर वक्त स्वीकार करने के लिये तैयार रहते हो। बेटा ! जरा सोचो; हमेशा झटपट किसी बात को बिना छिपाव के कह देना कोई अच्छी बात नहीं। कई बार चुप रहने से पाप भुला दिया जाता है और मित्र जीत लिये जाते हैं। मनुष्य की जबान बहुत कम ठण्डी और ऊँच-नीच सोचने वाली होती है। लो, हम आ पहुँचे। तुम्हारे पिता तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं कर रहे। मुझे तो इसमें भी सन्देह है कि वे घर में हैं।"

फ़ोमा का पिता घर में ही था। खिड़की से उसकी भारी घरघराती आवाज आ रही थी। जब गाड़ी घर के सामने रुकी, उसने खिड़की से निहारा और अपने बेटे पर नज़र पड़ते ही वह बड़े उल्लास से बोला :

"क्यों ? आ गये ?" एक मिनट के बाद वह एक हाथ से फोमा को अपनी छाती से लगा रहा था और दूसरे हाथ से अपने सिर को झुका कर चमकती आँखों से उसके चेहरे की ओर देख रहा था।

"धूप से काला पड़ गया है ! वजन भी बढ़ गया है। क्या तन्दुरुस्त है।" उसने प्रसन्नतापूर्वक आश्चर्य प्रगट किया—"श्रीमती जी ! आपको मेरा बेटा कैसा पसन्द आया ?"

"बहुत अच्छा बेटा है," एक चन्दीली आवाज बोली।

अपने पिता के कन्धों के ऊपर से फोमा ने कमरे के दूरवर्ती कोने में मेज पर कोहनी टिकाए फूले बालों वाली इस छोटी सी स्त्री पर नजर मारी। उसकी काली आँखें, कोमल भौंहें और मधुर लाल लाल ओठ पीले चेहरे में जड़े हुए से थे। उसकी कुर्सी के पीछे एक बड़ा फिलोदेन्द्रन का पौधा था जिसके सुहावने पत्ते उसके सुनहरे सिर पर झुक रहे थे।

"क्या हाल है, सोफिया पावलोव्ना," मायाकिन ने एक स्निग्ध मधुर ध्वनि में उसकी तरफ जाते हुये और हाथ बढ़ाते हुए पूछा—"अभी हम जैसे गरीब भिखारियों से चन्दा बटोर रही हो, क्यों ?"

फ़ोमा ने बिना कुछ कहे, बिना उसका जवाब दिये और जो कुछ उसका पिता कह रहा था बिना सुने उसकी ओर प्रणाम किया। युवा स्त्री उसके ओठों की तरफ स्वागतपूर्ण मुस्कान के साथ निहारने लगी। उसकी लड़कियों की सी आकृति, जिस पर एक काले कपड़े की पोशाक थी, जो शराबी रंग की कुर्सियों के कपड़े से मेल खा रही थी और इस काले रंग की भीत से उसके सुनहरी बालों और पीले चेहरे को विशेष रूप से चमका रही थी, कोने में हरे पत्तों वाले पौधे के आगे बैठी वह एक फूल अथवा इकौन के समान दिख रही थी।

"सोफ़िया पावलोव्ना ! जरा देखो तो इसकी नजर तुमसे हटती ही नहीं" इग्नात ने कहा : "एक सुन्दर नौजवान घोड़ा है, क्यों, नहीं ?"

"उसकी पलकें नीची हो गईं, गालों में हलका रंग आ गया। फिर वह तनिक हंसी। इसकी आवाज छोटी २ चाँदी की घन्टियों की सी थी।

"नमस्कार," वह बोली: "अब मैं अधिक विघ्न नहीं डालना चाहती।"

फ़ोमा को उसे अपने बराबर से गुजरते हुए एक जबर्दस्त गंध का झौंका आया, और उसने देखा कि उसकी आँखें नीली हैं और उसकी भौंहे काली हैं।

"अच्छा, तो वह छोटी सी बिल्ली चली गई," मायाकिन ने उसके पीछे विद्वेष में देखते हुए कहा।

"अच्छा, अब हमें अपनी यात्रा के बारे में बताओ। तुमने बहुत पैसा खर्च कर दिया है क्या?" इग्नात अपने बेटे को उसी कुर्सी में धकेलते हुए बोला जिसमें मिद्यन्स्काया बैठी थी। फोमा ने उसे एक नज़र देखा और दूसरी कुर्सी पर बैठ गया।

"एक अच्छी छोटी सुन्दर चीज है; क्यों?" मायाकिन अपनी बर्मे जैसी आंखों को फोमा में चुभाते हुए बोला: "यदि तुम इसके सामने अपना खुला मुँह लटकाये खड़े रहो तो यह तुम्हारे अन्दर का सब कुछ चट कर जाये।"

फोमा ने अभी कहना शुरू किया था, और अब वह अपने धर्मपिता की उपेक्षा कर अपने पिता को यात्रा के बारे में बतलाने लगा। परन्तु इग्नात टोकते हुये बोला:

"जरा एक मिनट ठहरो। मैं थोड़ी कोन्याक मंगाने को कहता हूँ।"

"लोग कहते हैं कि तुम बहुत शराब पीने लग गये हो," फोमा ने अलोचनापूर्वक कहा।

इग्नात विस्मय से उसकी ओर देखने लगा।

"क्या अपने बाप से इस तरह बात करते हैं?" वह बोला।

फोमा ने आँखें नीची कर लीं।

"यह ठीक है," इग्नात ने मृदु स्वभाव से कहा और कोन्याक लाने का हुक्म दिया।

मायाकिन, कुछ देर खड़ा रहने और दोनों गोर्देयेवों की ओर एक

दो मिनट निहारकर, एक सांस भर कर उन दोनों को शाम के समय अपने बगीचे में चाय का निमन्त्रण देकर चला गया।

"बुआ अनफीसा कहाँ है ?" फ़ोमा ने विषाद के साथ पूछा, जब वह अपने पिता के पास अकेला रह गया।

"वह कोनवैन्ट में चली गई है। अच्छा, तुम मुझे तब तक सब बताओ जब तक मैं शराब पी रहा हूँ।"

कुछ मिनटों में फ़ोमा ने सब कुछ बता दिया और अन्त में बोला :

"मैंने अपने ऊपर कुछ अधिक पैसा खर्च कर दिया है।"

"कितना ?"

"लगभग······छः सौ रूबल।"

"छः हफ्तों में ! यह तो काफी बड़ी रक़म है। तुम तो बहुत मँहगे एजेन्ट हो। इस पैसे का तुमने क्या किया ?"

"मैंने तीन सौ पूद अनाज दान कर दिया।"

"यह क्या ? किसे ?"

फ़ोमा ने उसे सब बता दिया।

"बिल्कुल ठीक", उसका पिता बोला : "इस प्रकार के दान अच्छे रहते हैं। इनसे तुम अपने पिता और अपनी फर्म की प्रतिष्ठा बढ़ाते हो। इसे नुकसान नहीं कहा जा सकता। यह तो फर्म का नाम ऊँचा करने के लिये लागत है। इससे अच्छा विज्ञापन एक व्यापारी के पुत्र के लिये क्या हो सकता है। और किस बात में तुमने व्यय किया ?"

"बस इधर-उधर।"

"कहो, मुझे पैसे की पर्वाह नहीं परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुमने अपना समय कैसे खर्च किया", इग्नात ने अपने बेटे के चेहरे की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए जोर दिया।

"बस खाया पीया", फ़ोमा ने टालते हुए कहा।

"पीया ? वोदका ?"

"हाँ, वोदका भी।"

"क्या यह जल्दी नहीं ?"

"मैं शराब के नशे कभी में नहीं डूबा—आप यफीम से पूछ सकते हैं।"

"मैं यफीम से क्यों पूछूं ? मैं सब कुछ तुमसे सुनना चाहता हूँ। तुम पीने लगे हो या नहीं ?"

"मैं इसके बगैर रह सकता हूँ।"

"हाँ, मैं जानता हूँ ! आओ थोड़ी सी कोन्याक पीयें ?"

फ़ोमा ने अपने पिता की तरफ देखा और दाँत निकाल कर हँसा। उसका पिता भी उसी प्रकार जवाब में हँसा।

"परवाह न करो। अगर इच्छा हो तो जरूर पीओ, परन्तु मर्यादा में रहो। इस बारे में किया ही क्या जा सकता है ? शराब पीना भुलाया जा सकता है, परन्तु मूर्खता नहीं, इस बात को याद रक्खो, यद्यपि इससे विशेष संतोष नहीं। क्या तुमने स्त्रियों की भी कोशिश की, बोलो, साफ-साफ बोलो। यदि डरे तो बहुत बुरा होगा ?"

"हाँ, बोट पर मेरे पास एक स्त्री थी। मैं पेर्म से कज़ान तक उसे अपने साथ ले गया था।"

इग्नात ने एक गहरी साँस भरी और त्योरी चढ़ाते हुए बोला : "तुमने अपने को बहुत जल्दी ही मैला कर लिया है।"

"मैं अब बीस बरस का हूँ। आप मुझे हमेशा बताते रहे हैं कि लोग, आपके समय में लड़कों की पन्द्रह वर्ष की आयु में शादियाँ कर दिया करते थे", फ़ोमा ने जवाब में कहा।

"शादियाँ कर देते थे। हाँ, मगर बस करो। तुम स्त्री के पास गये हो इससे ज्यादा और क्या ? स्त्री चेचक की छूत के समान है, जिससे बच नहीं सकते। मैं भी कोई देवता होने का दावा नहीं कर सकता। मैंने तुम्हारी उमर से पहले ही शुरू कर दिया था। परन्तु स्त्री के साथ तुम्हें सावधान रहना चाहिये।"

इग्नात बहुत देर तक अचल भाव से, बिना बोले छाती पर सिर ढलकाये बैठा रहा।

"फ़ोमा ! जो कुछ मैं तुमसे कहना चाहता हूँ यह है कि मैं बहुत देर तक जीवित नहीं रहूँगा", उसने दृढ़ आवाज में कहा—"मैं बुड्ढा हो चुका हूँ, मेरी छाती पर किसी चीज का बड़ा बोझ है, मेरा साँस कटता-सा दीखता है। मैं जल्दी ही मर जाऊँगा। मेरे बाद सारा कारोबार तुम्हारे हाथों में आना है। शुरू में तुम्हारे धर्मपिता तुम्हें सहारा लगा देंगे और तुम्हें उनके कहे में चलना चाहिये। तुमने अच्छा प्रारम्भ किया है: जो तुम्हें कहा गया था वह तुमने सब कर दिया और बागडोर कस कर अपने हाथ में रक्खी है। परमात्मा से मैं आशा करता हूँ कि तुम ऐसे ही रहो। एक बात याद रक्खो: कारोबार एक बलवान् साहसी घोड़े के समान है—तुम्हें पता होना चाहिये कि इसे कैसे चलाते हैं, कैसे धीरे-धीरे इसे खेंचते हैं, नहीं तो यह हाथ से निकल जाता है। अपने कारोबार से ऊपर उठने की कोशिश करो ताकि तुम्हें सारी चीजों का सदा विहंगम-दृश्य पता रहे, और ध्यान रक्खो कि छोटे से छोटा पेच भी साथ जुड़ा रहे।

फ़ोमा अपने पिता की चौड़ी छाती की ओर देखता रहा, उसके हृदय से निकली आवाज सुनता रहा। वह अपने दिल में सोच रहा था: अभी इतनी जल्दी तुम्हारे मरने का कोई मौका नहीं। वह बहुत आनन्ददायक विचार था। इससे उसके हृदय में अपने पिता के प्रति प्रेम उमड़ आया।

"अपने धर्मपिता के साथ लगे रहो",–इग्नात फिर बोला: "उसके मस्तिष्क में इतनी बुद्धि है कि वह सारे शहर को मुहय्या कर सकता है। यदि वह इतना बहादुर होता जितना कि बुद्धिमान् है, तो वह बड़ा नाम कमा सकता था। खैर, जैसा कि मैं कह रहा था, मेरा समय थोड़ा रह गया है। यदि जो कुछ मैं करना चाहता हूँ, करने लगूं तो मरने की तैयारी करूंगा: सब कारोबार छोड़कर, उपवास, प्रार्थना और कुछ ऐसे काम करूँ कि बाद में लोग मेरी भलाइयाँ याद करें।"

"ओह, निःसंदेह ऐसा ही लोग करेंगे", फ़ोमा ने उसे विश्वास दिलाया।
"मुझे नहीं पता कि ऐसा होगा।"
"उन गरीबों के घर के बारे में क्या बात है ?"
इग्नात ने अपने बेटे की ओर निहारा और हँसा।
"अच्छा, मायाकिन को तुम्हें सब कुछ बताने के लिये वक्त मिल गया ? मेरा ख्याल है कि उसने मुझे बुरा-भला ही कहा होगा ?"
"हाँ, थोड़ा सा", फ़ोमा ने मुस्करा कर कहा।
"वह याकोब ! मायाकिन ही नहीं, अगर ऐसा न करे।"
"उसने तो ऐसे कहा जैसे कि आपने उसका पैसा खर्च कर दिया हो।"
इग्नात ने कुर्सी की पीठ की तरफ अपने को फेंका और पहले की अपेक्षा जोर से हँसा।
"बुड्ढा कौआ कहीं का ! तुम ठीक कहते हो, वह अपना और मेरा पैसा एक समझता है, और यही कारण है कि वह इससे नाराज था। गंजे बुड्ढे के दिमाग में एक कीड़ा है। तुम क्या समझते हो। तुम जानते हो वह क्या है ?"
"नहीं. मुझे नहीं पता", फ़ोमा ने क्षणभर सोचकर कहा।
"वह अपना और मेरा पैसा एक जगह मिला देना चाहता है।"
"कैसे ?"
"सोचो।"
फ़ोमा अपने पिता की तरफ देखने और सोचने लगा।
उसका चेहरा मलिन सा पड़ गया, वह कुर्सी पर आगे को झुका और निश्चयपूर्ण स्वर में बोला :
"मैं यह नहीं चाहता। मैं कभी उससे शादी नहीं करूँगा।"
"नहीं ? क्यों नहीं ? वह अच्छी, स्वस्थ लड़की है, और मूर्ख नहीं। वह अपने बाप का इकलौता बच्चा है।"
"और तारास का क्या होगा, जो चला गया है ?"

"जो गया सो गया और यही उसका अन्त है। उसने एक वसीयत-नामा कर दिया है, जिसमें लिखा है :

"मेरी सब चल-प्रचल सम्पत्ति मेरी पुत्री ल्यूबा को मिले। क्योंकि वह तुम्हारी धर्म-बहन है, हम उसकी उपेक्षा कर कोई रास्ता निकाल सकते हैं।"

"इसकी क्या जरूरत", फ़ोमा ने जोर देते हुए कहा : "मुझे उससे शादी ही नहीं करनी।"

"खैर, इस बारे में अभी कुछ कहना बहुत जल्दी है। मगर तुम उसके इतने खिलाफ़ क्यों हो?"

"मैं वैसी लड़कियों को पसन्द नहीं करता।"

"वाह ! खूब कही और मेरे प्यारे नौजवान तुम कैसियों को पसन्द करते हो?"

"मैं सीधी-सादी लड़की पसन्द करता हूँ। वह हमेशा अपने विद्यार्थी मित्रों......और किताबों में ही फँसी रहती है। मेरे लिये वह बहुत हुशियार है, वह मेरी मखौल करेगी", फ़ोमा ने जोश में कहा।

"यह तुम ठीक कहते हो, वह हुशियार लड़की है—बहुत हुशियार, मगर इससे क्या : यदि तुम जोर से रगड़ो तो पालिश हमेशा उतर आती है। और, तुम्हारा धर्मपिता बहुत समझदार आदमी है। उसने हमेशा बैठे रहने के अलावा कोई काम नहीं किया, और यही कारण है कि उसे सोचने के लिये बहुत बहुत समय मिल गया। बेटा! उसकी बातों पर ध्यान देना चाहिये—वह हर बात का आगा-पीछा समझता है। वह अच्छे खून का है—उसका कुल कैथरीन महान् से भी पुराना है। वह अपने कुल के बारे में बहुत जानता है। जब तरास से उसकी कुल परम्परा खतम हो गई, तो उसने तरास की जगह तुम्हें बेटा बनाने का फैसला किया। जानते हो इसका क्या मतलब है?"

"मैं उसकी मदद के बगैर दुनियाँ में अपनी जगह बना लूँगा", फ़ोमा ने दृढ़तापूर्वक कहा।

'तुममें अभी जरा-सी भी बुद्धि नहीं", इग्नात ने तिरस्कारपूर्वक कहा।

उनका वार्तालाप बुआ अनफीसा के आने से भंग हो गया।

"फ़ोमुश्का! अच्छा, तुम आ गये।" वह दरवाजे पर पहुँचने से पहले ही चिल्लाई। फ़ोमा उठा और अपने ओठों पर प्रेम-भरी मुस्कान के साथ उससे मिलने को आगे बढ़ा।

फ़ोमा का जीवन फिर नीरस और मन्द गति से बहने लगा। अब उसके बाप की आवाज बात करते समय मखौलिया होती थी, परन्तु उसका व्यवहार कठोर था। वह उससे हर छोटी-मोटी चीज का हिसाब लेता और और बार-बार दोहराता कि उसने उसे बड़े लाड़-प्यार, लिहाज और बिना किसी बन्धन या मारपीट के पाला है।

"और बाप अपने बच्चों की डण्डों से खबर लेते हैं, मगर मैंने तुम पर उँगली तक नहीं उठाई।"

"मैं समझता हूँ कि मैंने भी कोई ऐसी बात नहीं की", एक दिन फ़ोमा ने जवाब में कहा।

इग्नात इन शब्दों और उनको कहने के लापरवाही-भरे तरीके से गुस्से में भड़क उठा।

"क्या कहा?" वह चिल्लाया: "इस कोमलता और प्यार में हुए पालन-पोषण से तुम बहुत ढीठ हो गये हो, क्यों ऐसी बात नहीं? तुम्हें अभी यह भी नहीं आता कि कैसे जवाब देते है? ज़रा होश करो, नहीं तो मेरे नरम हाथ अत्यंत सख़्त हो जायेंगे। अभी तुम्हें बड़े हुए कुछ समय नहीं गुज़रा और तुम मेंढक की तरह इञ्च भर बढ़ने से पहले बदबू मारने लगे हो।"

"आप मेरे साथ इतने कठोर क्यों है", एक दिन फ़ोमा ने अपने पिता से तरीके से पूछा।

"क्योकि तुम अपने पिता की नुक्ताचीनी नहीं सह सकते। तुम हमेशा जवाब में बहस करने लगते हो।"

"परन्तु आप मेरे साथ न्याय नहीं कर रहे। मैं पहले से खराब नहीं

हूँ। आप यह नहीं सोचते कि क्या मैं अपनी उम्र के और लड़कों को नहीं देखता, जो अपने बड़ों से ऐसा व्यवहार करते हैं ?"

"कभी-कभी नुक्ताचीनी या रगड़ खाना तुम्हारे लिये हानिकारक नहीं। और, मैं यह इसलिये करता हूँ, क्योंकि तुममें कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें मैं पसन्द नहीं करता। वे क्या हैं, इन्हें मैं कह नहीं सकता; परन्तु मैं इन्हें साफ-साफ देख रहा हूँ। और इनसे तुम्हें हानि ही पहुँचेगी।"

इन शब्दों से फ़ोमा चिन्ता में पड़ गया। वह स्वयम् ही जानता था कि उसमें ऐसे खास गुण हैं जिनके कारण वह अपनी उम्र के दूसरे लड़कों से से भिन्न दीखता था, परन्तु वह नहीं कह सकता था कि ये क्या बातें हैं। वह अपने पर सन्देह के साथ नज़र रखने लगा।

वह स्टाक ऐक्चेञ्ज के शोर-शराबे के बीच बड़े-बड़े व्यापारियों से मिलना-जुलना, जो हजारों रूबलों का व्यापार कर रहे थे, पसन्द करता था। वह छोटे व्यापारियों से आदरपूर्वक 'फ़ोमा गोर्देयेव !' कहलाने और बातचीत करने में बडा अभिमान अनुभव करता था। जब तब अपने पिता की ओर से स्वतन्त्र रूप से कारोबार की बात करने अथवा उससे ठठोली में प्रशंसा प्राप्त करके वह बड़े अभिमान का अनुभव करता था। वह समझदार, कारोबारी और बड़े आदमी के रूप में देखा जाना पसन्द करता था, परन्तु बावजूद इसके वह अपनी उमर के अन्य व्यापारियों के लड़कों से सम्पर्क में आते हुए भी कभी उनसे मित्रता पैदा करने की इच्छा न रखता था। ये लोग प्रायः उसे अपनी पार्टियों में निमन्त्रित करते, परन्तु वह उनसे दूर से ही इन्कार कर देता।

वह मखौल में कहता : "मुझे डर है कि यदि तुम्हारे पिताओं को तुम्हारे कारनामों का पता लगेगा तो तुम्हारी खाल उधेड़ दी जायगी और मेरे भी कान मरोड़े जायेंगे।"

वह उन लोगों के भ्रष्ट विलासतापूर्ण जीवन को पसन्द नहीं करता था, जैसा कि वे अपने पिताओं को बिना बताये, उनसे चोरी किये हुए पैसों या बहुत ज्यादा सूद पर लम्बे म्यादी प्रोनोटों के धन को उड़ाते थे। दूसरी तरफ

वे भी उसकी अलग रहने की प्रवृत्ति के कारण नफरत करते थे क्योंकि उसमें एक अभिमान दीखता था, जिससे वे चिढ़ते थे।

फ़ोमा प्राय: पलेगिया के बारे में सोचता रहता था, और शुरू २ में उसके अन्दर इच्छा होती थी कि वह उसके साथ रहे। परन्तु जैसे-जैसे समय गुजरता गया उसकी छाया हल्की पड़ती गई और बिना उसके अनुभव किये ही उसका स्थान देवियों के चेहरे जैसी सोफ़िया पाव्लोव्ना मिद्यन्स्कया ने ले लिया। वह लगभग प्रत्येक रविवार को किसी न किसी माँग या प्रार्थना को लेकर आती, जिसका सम्बन्ध गरीब, शरणगृह के निर्माण से था। उसकी उपस्थिति में फ़ोमा अपने को भद्दा, मोटा और बेडौल अनुभव करता था। जब कभी सोफ़िया पाव्लोव्ना की बड़ी-बड़ी आँखें कोमलता से निहारतीं तो वह लज्जावश लाल पड़ जाता। उसने देखा कि जब भी वह उसकी ओर देखती, उसकी आँखे मलिन पड़ जातीं; उसका ऊपर का ओठ काँपता और धीरे से ऊपर को उठकर उसके छोटे-छोटे दाँतों को दिखाता! इससे वह डर जाता। उसके पिता ने भी देखा कि वह किस प्रकार उसकी ओर देखता था; और एक दिन उसे कहना ही पड़ा:

"तुम उस चेहरे पर देर तक अपना दृष्टि-दीपक मत दिखाओ। यह बर्च के कोयले के समान है, जो बाहर से चिकना और भला दिखता है, परन्तु अन्दर से आग से भरा हुआ है"

मिद्यन्स्कया ने उसमें कोई शारीरिक इच्छा उत्तेजित नहीं की; वह किसी भी बात में पलेगिया से नहीं मिलती थी। फ़ोमा उसे समझ ही न सका। वह जानता था कि लोग उसके बारे में भद्दे छींटे मारते हैं, फिर भी वह उन पर विश्वास नहीं करता था। परन्तु उनका व्यवहार बदल गया जबकि एक दिन उसने देखा कि वह गाड़ी में बैठी एक मोटे पुरुष के साथ जा रही है, जिसने भूरा हैट पहन रक्खा था और जिसके बाल कन्धों तक लटक रहे थे। उसका चेहरा लाल और गुब्बारे की तरह फूला हुआ था, जिस पर दाढ़ी का कोई निशान नहीं था और वह मनुष्य के कपड़ों में स्त्री के समान

दिखाई दे रहा था। फ़ोमा को बताया गया कि यह उसका पति है। इस समाचार से उसका हृदय विरोधी और मलिन भावनाओं से भर गया: वह उस व्यक्ति का अनादर करने की इच्छा करने लगा, परन्तु साथ ही उससे ईर्षा करने और सम्मान करने से भी नहीं रह सका। अब उसे सोफिया पाव्लोव्ना कम सुन्दर और सुलभ दिखने लगी। उसे उस पर दया आने लगी, फिर भी वह अपने आप कुछ सन्तोष के साथ सोचता था कि वह इसे चुम्बन-दान करने से घृणा करती होगी।

इस सबसे बढ़कर और परे, उसका हृदय कभी कभी एक शून्यता की वेदना से भर जाता जो न तो दिन भर के प्रभावों से और न अतीत की स्मृतियों से ही हटती—इस शून्यता में स्टाक ऐक्चेन्ज, कारोबार और मिद्यस्कया के प्रति विचार भरे होते थे। यह उसके लिये बड़ा दुःखदायी हो रहा था। वह सन्देह करने लगा कि, इस शून्यता की काली गहराई में एक विरोधी शक्ति छुपी हुई है जो अभी तक अनिश्चित रूप में है परन्तु जो धीरे धीरे अपना प्रभाव दिखा रही है।

इसी काल में यद्यपि बाहरी तौर पर इग्नात में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया परन्तु वह अधिक क्रोधी व चिन्तातुर हो गया, और प्रायः अपने स्वास्थ्य के बारे में शिकायत करने लगा।

"मैं बिल्कुल नहीं सो सकता," वह कहता—"एक जमाना था कि नींद में मेरी खाल भी उधेड़ दी जाये तो पता नहीं लगता था और मुझे झपकी तक नहीं आती थी। परन्तु, अब मैं सारी रात बेचैनी से करवटें बदलता रहता हूँ और सुबह के समय ही थोड़ा सा ऊंघता हूँ। मेरा हृदय भी ठीक ठीक नहीं धड़कता: कभी यह फट-फट करके दौड़ता है, कभी बन्द सा हो जाता है, और कभी दिखता है कि अगले क्षण में अन्धेरे गढ्ढे में नीचे गिरने वाला हूँ। हे राम! मुझ गरीब पापी पर दया करो।"

पश्चाताप-पूर्ण आहों के साथ वह अपनी आँखों को इधर-उधर घुमाता, जिनमें से अब जीवन की पहिले जैसी चमक नष्ट हो चुकी थी।

"मौत कोने में मेरी प्रतीक्षा कर रही है।" वह विषाद और उपेक्षा के भाव से कहता। और सच ही, उसने उसके बड़े डील-डौल वाले शरीर को जल्दी ही गिरा दिया।

यह जल्दी ही अगस्त के एक दिन सुबह हुआ। फ़ोमा ने जो अभी प्रगाढ़ निद्रा में सोया हुआ था, अनुभव किया कि कोई उसके कन्धों को हिला रहा है।

"उठो!" एक भारी आवाज़ ने उसके कानों में कहा।

उसने आँखें खोलीं और देखा कि उसका पिता उसके बिस्तर के बराबर कुर्सी पर बैठा, हल्की आवाज़ में दुहरा रहा है :

"उठो, उठो!"

सूर्य अभी अभी उदय हुआ था और उसकी किरणें इग्नात की सफ़ेद कमीज़ पर पड़ रही थीं, वे अभी गुलाबी रंग की ही थीं।

"अभी बहुत जल्दी है," फ़ोमा ने अंगड़ाते हुए कहा।

"तुम्हें बाद में सोने का समय मिल जायेगा।"

"आपको कोई चीज चाहिये?" फ़ोमा ने कम्बल के नीचे दुबकते हुए पूछा।

"उठो बेटा, कृपया उठो," इग्नात ने कहा और फिर दुःख-भरी आवाज़ में बोला—"मैं तुम्हें कभी न जगाता अगर मुझे जरूरत न होती।"

फ़ोमा ने पिता के चेहरे की ओर देखा जो सफ़ेद और थका हुआ था।

"आप बीमार हैं? क्या मैं डाक्टर को लाऊँ?"

"डाक्टर!" इग्नात ने मखौल करते हुए कहा—"मैं बच्चा नहीं हूँ। मैं नहीं चाहता कि वह मुझे बताये······"

"क्या?"

"मैं सब कुछ जानता हूँ," वृद्ध मनुष्य ने कमरे में चारों तरफ एक विचित्र हल्की नज़र डालते हुए रहस्यमय ढंग से कहा।

फ़ोमा ने कपड़े पहनने शुरू किये। "मुझे सांस लेने में दुःख होता है," उसके पिता ने अपनी छाती पर सिर झुकाते हुए धीरे से कहा। मुझे ऐसा

दिखता है कि यदि मैं गहरा सांस लूँ तो मेरा हृदय फट जायेगा······आज रविवार का दिन है; जैसे ही प्रभात की प्रार्थना समाप्त हो है तुम पादरी के पास चले जाओ।"

"पिताजी! आप क्या सोच रहे हैं," फ़ोमा ने विनयपूर्वक हँसी के साथ कहा।

"कोई खास बात नहीं। तुम मुँह हाथ धोओ और बगीचे में चलो, मैंने समवार वहीं लगाने के लिये कह दिया है। हम वहीं प्रभात की ठण्डी हवा में चाय पियेंगे······ मैं चाय चाहता हूँ—खूब गरम और तेज़ चाय।"

वृद्ध मनुष्य भारीपन से उठा और नंगे पाँव लड़खड़ाता बाहर चला गया। फ़ोमा ने जैसे ही उसे देखा, उसका हृदय एक ठण्डे भय से जकड़ गया। उसने जल्दी ही हाथ धोए और तेजी से बगीचे में चला गया।

उसने अपने पिता को सागवान की एक बड़ी आराम कुर्सी में सेव के एक विशाल पेड़ के नीचे बैठे देखा। सूर्य का प्रकाश शाखाओं के बीच धारियों के रूप में उसकी कमीज पर पड़ रहा था। बगीचे में ऐसी मूकता थी कि फ़ोमा शाखाओं की सरसराहट से विस्मय में पड़ गया जिन्हें छूता हुआ वह गुजर रहा था। एक मेज पर रखा समवार एक मोटी बिल्ली की तरह गुरगुराहट कर रहा था और वायु में थोड़ी २ भाफ फेंक रहा था। हरे बगीचे की नीरवता में, जो रात की बरसात से धुल चुका था, चमकते पीतल की यह चमचमाहट एक विघ्न के समान थी, जो समय, स्थान, और उसके उन भावों के साथ मेल नहीं खा रहा था जो उस सफेद वृद्ध रुग्ण मनुष्य को देखकर उसके हृदय में उठ रहे थे जो हरे पत्तों की छाया में एक ढेर पर बैठा था, जिनके बीच गुलाबी सेव लज्जापूर्वक छिपे हुए थे।

"बैठ जाओ," इग्नात ने कहा।

"क्या डाक्टर को बुलाने न भेजूँ," फ़ोमा ने अपने पिता के सामने कुर्सी पर बैठते हुए नम्र भाव से कहा।

"नहीं, यहाँ हवा में मैं अच्छा अनुभव कर रहा हूँ। हो सकता है चाय

के बाद और अच्छा हो जाऊँ," इग्नात ने चाय डालते हुए कहा। फोमा ने देखा कि उसके हाथों में चाय की केतली काँप रही है।

फ़ोमा ने अपना गिलास उसकी ओर कर दिया और बिना कुछ बोले उस पर झुक कर भारी हृदय से पिता की तेज और करकश सांस को सुनने लगा।

एकदन अचानक मेज पर कोई चीज बड़े जोर से टकराई जिससे तश्तरियाँ खड़खड़ा उ ीं।

फ़ोमा भौंचक्क रह गया, उसने अपना सिर उठाया और अपने पिता की आँखों में एक भय को देखा।

"सेब गिरा···है···जाय जहन्नुम में! बन्दूक की गोली की तरह से हैं?"

"आप चाय में थोड़ी सी कोन्याक डाल लें," फोमा ने सुझाया।

"नहीं, ऐसी ही ठीक है।"

सीसकिन पक्षियों का एक झुन्ड बगेचे के आर-पार अपनी आनन्द-दायक चटर-चटर से भरता हुआ उड़ा। उनके चले जाने के बाद बगीचे के परिपक्व सौंदर्य में एक गम्भीर नीरवता विचरने लगी। इग्नात की आँखों में भय समा गया।

"प्यारे प्रभु, ईसामसीह!" उसने अपनी छाती पर बड़ी तेजी से क्रॉस का चिह्न बनाते हुए कहा—"लो! यह आ···गई······यह आ···गई······जीवन की अन्तिम घड़ी आ···गई।"

"पिताजी! क्या व्यर्थ बातें करते हो," फोमा ने धीरे से कहा।

"जब हम चाय पी लें, पादरी के पास जाओ, और फिर अपने धर्म-पिता के पास।"

"मैं अभी जाता हूँ।"

"अभी एक मिनट में प्रार्थना का घण्टा बजने वाला है, तुम्हें पादरी नहीं मिलेगा······और, कोई जल्दी नहीं······हो सकता है कि यह गुजर जाये······।"

श्रौर वह पिरच से चाय चूसने लगा।

"मुझे एक-दो साल अभी श्रौर जीना चाहिये, तुम अभी नौजवान हो······मुझे तुम्हारे बारे में डर है······ईमानदार श्रौर दृढ़ बनो। दूसरों की सम्पत्ति पर नज़र न डालो, परन्तु अपनी को मजबूत हाथों से पकड़े रक्खो······।"

बोलते हुए कष्ट का अनुभव कर वह चुप हो गया श्रौर अपनी छाती रगड़ने लगा।

"दुनियाँ के लोगों पर बहुत विश्वास न करो······उनसे बहुत आशा भी न करो······हम सब देने के लिये नहीं; लेने के लिये हैं······हे प्रभु! मुझ पापी पर दया करो।"

प्रभात काल की नीरवता कहीं सुदूर में बजते घण्टों से दूर हो रही थी। इग्नात श्रौर उसके बेटे ने तीन बार अपनी छाती पर क्रॉस का चिह्न बनाया।

पहले तांबे की आवाज, उस के बाद दूसरी, फिर शीघ्र ही उसके बुलाने की आवाज सब तरफ से उठी। वह एक गम्भीर नपी-तुली घड़ियालों की आवाज थी।

"यह सब प्रार्थना के लिये बज रही है", इग्नात ने पीतल की आवाज को सुनते हुए कहा: "तुम अलग-अलग घड़ियालों की आवाज पहचानते हो?"

"नहीं", फ़ोमा ने कहा।

"इसे······सुनते हो? ······भारी आवाज वाला······इस घण्टे को प्योत्र द्मित्रेइविच व्यागिन ने सेन्ट निकोलस के गिरजे को दान दिया था। वह······भारी आवाज वाला······सेन्ट प्रास्कोविया के गिरजे का है······।"

वायु, शब्द की लहरों के संगीत से कम्पायमान था, जो स्वच्छ नीले आसमान में लुप्त हो रहा था। जैसे ही फ़ोमा ने पिता के चेहरे को निहारते हुए देखा, उसकी आँखों से भय नष्ट हो गया था श्रौर एक नया प्रकाश चमक रहा था।

किन्तु वृद्ध मनुष्य का चेहरा एकदम फक होकर लाल पड़ गया, उसकी आँखें उछल कर खुल आईं। ऐसा दीखता था कि वह अपनी गोलकों से बाहर निकल आई हों, वह हाँपने लगा जैसे कि विस्मय में हो और उसके गले एक अजब आवाज़ निकली :

"घ···घ···घ···आख !"

अगले ही मिनट उसका सिर अपने पर गिर पड़ा और उसका भारी शरीर कुर्सी से सरकने लगा, जैसे कि पृथ्वी उसे अपने में समा लेने की शक्ति का दावा कर रही हो। कुछ सैकण्ड तक फ़ोमा भय और आश्चर्य से निहरता रहा। वह बोलने और हिलने में असमर्थ रहा, फिर उसकी तरफ दौड़ा, और जमीन से सिर उठाकर उसके चेहरे को देखने लगा। उसका चेहरा मलिन और कठोर पड़ चुका था, और उसकी खुली आँखों में विषाद, पीड़ा, भय या प्रसन्नता का कोई भाव नहीं था। फ़ोमा उसकी ओर देखता रहा। बगीचा पहले की तरह खाली था और वायु-मण्डल पहले की तरह घण्टों की ध्वनि से भरपूर था। फ़ोमा के हाथ काँपे, उसने पिता का सिर नीचे को गिरा दिया, जो एक हल्की-सी धम् की आवाज के साथ नीचे को गिरा। एक पतली लेसदार खून की धारा उसके मुँह के कोने से और नीले पड़े गालों से नीचे बह आई।

फ़ोमा ने अपनी छाती को पीटा और मृत शरीर के बराबर झुकते हुए एक चीत्कार किया। भय से उसका सारा शरीर काँप उठा और वह घबराई तथा डरी आँखों से किसी को ढूँढ़ने की आशा से बगीचे में तलाश करने लगा।

———

४.

फ़ोमा अपने पिता की मृत्यु से अचेतन-सा हो गया। उसने एक अज़ब भावना का अनुभव किया जैसे कि उसकी आत्मा एक मूकता—एक भारी लंगर पड़ी मूकता से भर गया है, जिसने उसके जीवन के सब शब्दों को निगल लिया है। जो परिचित लोग उसके चारों तरफ मँडराते थे, अब आते और चले जाते। वे कुछ कहते और वह उनका जवाब देता, परन्तु उनके शब्दों से उस पर कोई असर न पड़ता; वे सब उसकी आत्मा की मूकता की अतल गहराई में बिना किसी चिह्न के डूब गये। न वह रोया, न उसने दुःख मनाया और नांही किसी बारे में सोचा। पीले, उदास और त्यौरी चढ़े चेहरे वाले फ़ोमा ने अपनी सब शक्तियाँ इस मूकता को सुनने में केन्द्रित कर दीं, जिसने उसके सब भावों पर अधिकर कर लिया था, उसके हृदय को शून्य बना दिया था और उसके दिमाग को संडासी की तरह जकड़ लिया था। मायाकिन ने जनाजे के प्रबन्ध का काम अपने हाथ में ले लिया। उसके बूटों की एड़ियाँ फर्श पर तेज टपटप के साथ सुनाई दे रही थीं, जैसे कि वह तेज़ी के साथ एक कमरे से दूसरे कमरे में जाता था और नौकरों के पीछे चिल्लाता था, जैसे कि वह उनका मालिक हो। वह अपने धर्मपुत्र की पीठ थपथपाता था और सान्त्वना देने के लिये कुछ कहता था।

"मेरे बेटे! तुम तो ऐसे हो गये हो जैसे पत्थर। तुम्हारा पिता वृद्ध था, उसका मांस लटक चुका था। मौत हम सब की प्रतीक्षा कर रही है; इससे कोई नहीं बच सकता। यह सबसे बड़ा कारण है कि हमें इस संसार में जीवित रहना चाहिये। अब दुःख या शोक से तुम उसे वापिस नहीं ला सकते,

ग्रौर उसे तुम्हारे शोक तथा संताप की भी जरूरत नहीं, क्योंकि यह लिखा जा चुका है : 'वह दिन ग्रायेगा जबकि भयङ्कर फरिश्ते तुम्हारी ग्रात्मा को निकाल लेंगे ग्रौर तब सब सगे सम्बन्धी भूल जायेंगे।' दूसरे शब्दों में, उसके लिये तुम चाहे हँसो या रोग्रो, दोनों एक जैसे हैं । ग्रब जीवित लोगों का कर्त्तव्य है कि वह जीवन की फ़िकर करें । ग्रच्छी तरह रो लो—यह भी मनुष्य के लिये ग्रच्छा है। तुम बाद में हल्कापन ग्रनुभव करोगे।"

इन शब्दों का भी फ़ोमा के हृदय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

ग्रन्तिम जनाजे के दिन ग्रपने धर्मपिता के बारबार समझाने के फलस्वरूप उसमें कुछ ज़ीवन ग्रा गया, जो लगातार ग्रपने ही ग्रजब तरीकों से लड़के की छिपी हुई भावना को जगाने का प्रयत्न कर रहा था।

ग्रगले दिन का मन्द शुभ्र प्रभात ग्राया। इग्नात गोर्देयेव के कफ़न के पीछे ग़र्द के बादल में लोगों की बड़ी भीड़ चल रही थी। पादरी का सुनहरे काम किया हुग्रा चोगा चमक रहा था ग्रौर धीरे २ चलती हुई भीड़ के पाँवों की सरसराहट गिरजे की संगीत-मण्डली के धार्मिक संगीत के साथ मिल रही थी। फ़ोमा को पीछे से, दाँये-बाँये पाँसों से, धक्के से मिल रहे थे; परन्तु जैसे-जैसे वह ग्रागे बढ़ रहा था, उसे ग्रपने पिता के घौले सिर के ग्रतिरिक्त ग्रौर कुछ ध्यान में नहीं था। शव के पीछे संगीत की ध्वनि उसके हृदय में एक शोक ग्रौर विषाद की प्रतिध्वनि पैदा कर रही थी। मायाकिन जो उसके बराबर में चल रहा था, धीरे २ उसके कान में कह रहा था :

"देखो, कितने हजारों लोग ग्राये हैं! गवर्नर भी तुम्हारे पिता की ग्रन्त्येष्टि के समय उपस्थित हुग्रा है ग्रौर मेयर, कौंन्सिल के लोग भी लगभग सब ग्राये हैं ग्रौर तुम्हारे पीछे (मुड़कर देखो) सोफ़िया पावलोव्ना भी हैं। सारा शहर इग्नात के प्रति सम्मान प्रगट करने ग्राया है।"

पहले पहल फ़ोमा ने ग्रपने धर्मपिता की कान में कही बातों को ध्यान नहीं दिया; परन्तु जब मायाकिन ने सोफ़िया पावलोव्ना का नाम लिया तो वह एकदम पीछे की ग्रोर मुड़ा ग्रौर गवर्नर को देखा। उसके हृदय में

एक प्रसन्नता की किरण आई, जैसे ही उसने इस महान् व्यक्ति को देखा, जिसके कन्धों पर चमकीले फीते पड़े हुए थे, छाती पर नाना प्रकार के तगमे लग रहे थे और जो कठोर, गम्भीर चेहरे के साथ उसके पिता के क़फन के साथ पीछे-पीछे चल रहा था।

"मार्ग पवित्र है", मायाकिन ने नाक सिकोड़ते और फ़ोमा की ओर मुड़ते हुए गाया : "पिचत्तर हज़ार रूबल—इस बड़ी रक़म के बदले तुम कम मातम करने वालों की आशा नहीं कर सकते। क्या तुमने सुना है कि जैसे ही तुम्हारे पिता का चालीसवां समाप्त होगा, सोन्या गरीबों के शरणगृह की आधार-शिला रखने वाली है ?"

एक बार फ़ोमा ने फिर मुड़कर देखा ; उसकी आँखें सोफ़िया पावलोव्ना से जा मिलीं। उसकी कोमल नज़र से फ़ोमा के हृदयतल से एक आह निकली, जिसके तुरन्त पश्चात् वह अच्छा अनुभव करने लगा जैसे कि प्रकाश की एक उष्ण किरण उसकी आत्मा में प्रवेश करके सब कुछ पिघला रही हो। परन्तु उसने यह भी अनुभव किया कि इस प्रकार पीछे देखना अशिष्ट है।

गिरजे में पहुंच फ़ोमा का हृदय अंन्त्येष्टि की गम्भीरता व शोक को देखकर टूट गया। और जब पादरी ने हृदय-विदारक शब्द उच्चारण किये : "आओ, अब इसका अन्तिम चुम्बन करो," उसके ओठों से एक विषादपूर्ण रुदन फूट पड़ा, जिससे उपस्थित मातमियों की भीड़ दुःख के बोझ से हिल गई।

फ़ोमा भी अपने पाँव पर लड़खड़ा रहा था। उसके धर्मपिता ने बांहों से थाम उसे कफन की ओर कुछ मंत्र जोर के साथ पढ़ते हुए पहुँचाया जिसमें एक प्रकार की दुस्साहसिकता थी :

"दि-वं-ग-त आत्मा का फिर चुम्बन करो (फ़ोमा इसका चुम्बन करो) इसके मृ-ता-त्मा-ओं के साथ अं-ध-का-र में रहने से पहिले !"

जब फोमा के ओठ उसके पिता के माथे से छुए तो वह भय से पीछे को उछला पड़ा।

"सावधान ! तुमने तो मुझे गिरा दिया होता," मायाकिन ने सांस

रोकते हुए कहा, और इन सरल शब्दों से जो बिना किसी भावना के कहे गये थे, फोमा को अपने धर्मपिता की बांहों से भी अधिक सहारा मिला।

हे मित्रो! और भाइयो! मेरे लिये जो प्रकाश और श्वास-प्रश्वास से वंचित तुम्हारे सामने पड़ा हूँ, रोओ!" धार्मिक संस्कार के शब्दों में इग्नात प्रार्थना कर रहा है। परन्तु उसका पुत्र अब नहीं रो रहा: वह अपने पिता के सूजे, रंग हीन चेहरे के दृश्य से भयभीत हो चुका था, और इस भय से गिरजे द्वारा अपने पुत्र के मृत शरीर पर गाये हुए शोकपूर्ण गीतों के प्रभाव से उसे बड़ा धक्का पहुँच रहा था। उसे ऐसे लोगों ने घेर रक्खा था जो शोक प्रदर्शन में दयापूर्ण शब्द कह रहे थे, वह अनुभव कर रहा था कि, वे उसके प्रति संवेदना और प्रेम जता रहे थे। परन्तु, उसके धर्मपिता ने उसके कानों में फुसफुसाया:

"जरा देखो, वे तुम्हारी कैसे खुशामद कर रहे हैं। चूहों को पनीर की बू आ गई।"

फ़ोमा ने इन शब्दों को अच्छा नहीं समझा, परन्तु उन्होंने उसे उसी प्रकार उत्तर देने में मजबूर कर दिया।

कब्रिस्तान में, जब "अनादि-विश्राम" के गीत की तान छिड़ी फ़ोमा फिर रोने लगा। उसके धर्मपिता ने उसे बाहों से पकड़ा और उसे कब्र से दूर ले आया और भावोत्तेजित हो बोला:

"लड़के! तुम बहुत कोमल हो। तुम समझते हो कि यह मेरे लिये आसान है? आखिरकार मैं ही एक ऐसा हूँ जिसे तुम्हारे पिता का असली मोल पता है। तुम तो सिर्फ उसके लड़के हो। परन्तु मैं नहीं रो रहा। वह और मैं भाइयों की तरह तीस बरस तक एक दूसरे के समीप रहे। हमने साथ २ बातचीत की! साथ २ सोचा! साथ २ रोए! तू अभी बच्चा है—तुझे दुःख का क्या पता? तुम्हारा सारा जीवन तुम्हारे सामने है ताकि तुम सब प्रकार की दोस्ती से सम्पन्न बनो। परन्तु मैं······मैं बुड्ढा हो चुका हूँ······एक भिखमंगे की तरह हूँ······और एक सच्चे मित्र को जो सदा मेरा रहा······अब······

दफ़ना···रहा······हूँ। अब मेरे लिये ऐसा दूसरा मित्र मिलना मुश्किल है।" वृद्ध मनुष्य की आवाज काँपी और चिल्लाई। उसका चेहरा हिला, ओठ फैले और काँपे, उसकी झुर्रियाँ फैलीं और उनमें से उसकी आँखों के मिचने से आंसुओं की धारा बह पड़ी। वह अपने स्वभाव के विरुद्ध और बड़ा दयनीय दिख रहा था जिसे देख फ़ोमा रुका और सबल पुरुष की निर्बलता के प्रति कोमलता से उसे अपनी छाती से लगाया।

"प्यारे धर्मपिता, रोओ मत !" वह लगभग चिल्लाया–"प्यारे धर्मपिता, रोओ मत !"

"यह ठीक है," मायाकिन ने धीरे से कहा और एक गहरा सांस भरा। अगले ही मिनट वह पहले जैसा सबल और सतल वृद्ध मनुष्य हो गया।

"इस तरह सिसकना तुम्हारे लिये ठीक नहीं," उसने विश्वासपूर्वक कहा जब वह अपने धर्मपुत्र के साथ गाड़ी में बैठा हुआ था—"तुम अब केप्टिन हो, केप्टिन अपनी फौजों का बहादुरी से नेतृत्व करता है। तुम्हारी फौज रूबलों की है और वह बहुत बड़ी है।"

फोमा अपने धर्मपिता में परिवर्तन को देख विस्मय में आ गया और जैसे ही वृद्ध मनुष्य के शब्द उसके कानों में पड़े उसे मिट्टी के उन डलों का शब्द याद आ गया, जो लोगों ने उसके पिता की क़ब्र पर डाले थे। तुम्हारे पिता ने तुम्हें कभी कहा था कि 'मैं समझदार व्यक्ति हूँ और तुम्हें मेरी बात सुननी चाहिये।'

"हाँ !"

"तो ध्यान रक्खो कि तुम मेरी बात सुनो। यदि मेरा दिमाग और तुम्हारी तरुण-शक्ति मिल जायें तो तुम्हें और मुझे बड़ी विजय प्राप्त होगी। तुम्हारा पिता बड़ा आदमी था, परन्तु उसकी नज़र बहुत छोटी थी और वह मेरी सलाह पर कम ग़ौर करता था। उसे जो सफलता मिली वह दिमाग के बजाय दिल से मिली। परन्तु तुम कुछ और ही होगे······आओ तुम हमारे यहाँ ठहरो। उस घर में तुम्हें डर ही लगेगा।"

"मेरी बुआ वहाँ है।"

"तुम्हारी बुआ ! वह बीमार औरत ! वह भी इस दुनियाँ में देर तक नहीं रहेगी।"

"ऐसा मत कहो", फोमा ने प्रार्थना की।

"मैं ऐसा ही कहूँगा। तुम मौत से क्यों डरते हो ? तुम बुढ़िया स्त्री नहीं। निर्भय रहो, जो अपना कर्त्तव्य है उसे पूरा करो। मनुष्य का कर्त्तव्य जीवन में क्रम या व्यवस्था लाना है। मनुष्य पूँजी है और रूबल की तरह वह भी छोटे-छोटे तांबे के कोपेकों से बना है; पृथ्वी की मिट्टी से बना है, जैसा धर्म-ग्रन्थों में लिखा है (सिक्के की तरह) वह फिर चलने लगता है। आँसू और पसीने की, घी और चिकनाहट से रगड़ा जाता है, फिर उसमें दिल और दिमाग के निशान पैदा होते हैं। उसका दाम भी घटता और बढ़ता है। तुम्हारे जानने से पहले जिसकी कीमत पाँच कोपेक थी, वही अब पचास कोपेक हो जाती है,और एक दिन सौ रूबल हो जाती है तथा कितनों की इससे भी अधिक। जब वह चक्कर में होता है, उस पर सूद भी मिलता है। जीवन में ही पता चलता है कि हममें से किसकी क्या कीमत है, और अपने समय से पहले वह चक्कर से वापिस नहीं आता। कोई बुद्धिमान मनुष्य ऐसी बात नहीं करेगा जो उसके लिये हानिकारक हो। क्या तुम मेरी बात ध्यान से सुन रहे हो ?"

"हाँ।"

"तुम कुछ समझे ?"

"सब कुछ।"

"मैं मानता हूं !" मायाकिन संदेह के साथ घुर्राया।

"मैं......सिर्फ......लोग मरते क्यों हैं...?" फ़ोमा बड़बड़ाया।

मायाकिन ने उसकी ओर दया-भाव से देखा।

"यह ऐसा सवाल है जिसे कोई भी समझदार आदमी अपने से नहीं पूछता", उसने ओठ चाटते हुए कहा : "समझदार आदमी एक नदी देखता है। वह जानता है कि यह कहीं से बहनी चाहिये ; यदि वह न बहे तो इससे दलदल बन जाये।"

"आप मेरी मखौल कर रहे हैं", फ़ोमा ने अप्रसन्नतापूर्वक कहा : "समुद्र तो कहीं नहीं बहता।"

"यहाँ सब नदियाँ मिलती हैं। समुद्र में बड़े २ तूफान उठते हैं। जीवन-समुद्र में भी यही होता है; उसमें भी मानवीय विकारों से तूफान उठते हैं। मृत्यु से जल ताजा हो जाता है और सड़ने से रुक जाता है। चाहे कितने ही मनुष्य मरें, परन्तु सदा उनसे ज्यादा पैदा हो जाते हैं।"

"मुझे इससे कोई सांत्वना नहीं मिल रही, मेरा बाप तो मर चुका है।"

"और किसी दिन तुम भी मर जाओगे।"

"तो मेरे लिये क्या फर्क पड़ता है जबकि हमेशा मरने वालों से पैदा होने वाले ज्यादा होंगे ?" फ़ोमा ने कड़वी हँसी में कहा।

"इससे किसी को फर्क नहीं पड़ता"; मायाकिन ने गहरा साँस लिया और फिर बोला : "मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारी पतलून कह रही है : हमारे लिये इसमें क्या फर्क कि संसार में बहुत कपड़ा है ? परन्तु तुम उन पर ध्यान नहीं देते—तुम उन्हें पहनते हो और फैंक देते हो।"

फ़ोमा ने अपने धर्मपिता की ओर लज्जा से देखा, परन्तु यह देखकर कि बुड्ढा भी हँस रहा था, वह उनके प्रति आश्चर्य और आदर से भर गया।

"क्यों, धर्मपिता जी, आप मृत्यु से वस्तुतः नहीं डरते?" उसने पूछा।

"बच्चे ! मैं जिस बात से सबसे अधिक डरता हूँ वह एक मूर्ख है", मायाकिन ने ताना मारते हुए कहा—"मैं इसे ऐसे समझता हूँ : "यदि कोई मूर्ख तुम्हें शहद भी देवे, तो थूक दो ; यदि कोई बुद्धिमान् मनुष्य विष भी देवे तो पी जाओ। सिर्फ कायर सेह ही ऐसी होती है जिसके काँटे खड़े नहीं होते।"

बुड्ढे के ओछेपन और लघुता को देखकर फ़ोमा को ठेस लगी और गुस्सा आया। उसने मुँह मोड़ लिया और बोला :

"आप हमेशा पहेलियों में बोलते हो।"

"इससे क्या", मायाकिन उबल कर बोला। उसकी आँखें चमक रही

थीं—"प्रत्येक व्यक्ति जैसा जानता है, वैसा ही बोलता है। तुमने मुझे कठोर पाया? यह बात है?"

फ़ोमा ने कोई जवाब नहीं दिया।

"तुम बहुत अच्छे हो! इसे याद रक्खो: जो प्रेम करता है, वही सिखाता है। इस बात को भूलो मत। और मौत के बारे में सोचना बन्द करो। एक जीवित मनुष्य के लिये इस से बढ़कर क्या मूर्खता हो सकती है कि वह मृत्यु के विचारों में फँस जाये। हमारे धर्माचारियों ने इसमें देर से गम्भीर विचार किया है, जिसका निचोड़ यह है कि एक जीवित कुत्ता एक मरे हुए शेर से अच्छा है।"

वे घर पहुंच लिये। घरों के सामने गाड़ियों की कतारें लगी हुई थीं और खुली खिड़कियों में से जोर-जोर से बोलने की आवाज आ रही थी। फ़ोमा ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया, उसे उसकी बांह पकड़ कर मेज की ओर ले जाया गया, जिस पर नाना प्रकार के भोज्यों और पेयों का ढेर लगा हुआ था। लोगों ने उसे खाने को आग्रह किया। कमरे में मार्केट की तरह शोर था और भीड़ तथा घुटन थी। फ़ोमा ने बिना कुछ कहे एक ग्लास वोदका का निगला, और उसके बाद दूसरा और तीसरा भी पिया। उसके चारों तरफ खड़े लोग चबा रहे थे और ओठों से चपचप कर रहे थे। उसने गले में ढलती हुई वोदका की गरगराहट की आवाज और गिलासों की खड़खड़ाहट को भी सुना। लोगों ने मछली की आलोचना की। पादरी की संगीत-मण्डली में गाने-बजाने वालों की भी आलोचना की, फिर मछली की चर्चा की और उन्होंने यह भी कहा कि अन्त्येष्टि-संस्कार के बाद मेयर एक भाषण देना चाहता था, परन्तु पादरी के अन्तिम भाषण के बाद वह झिझक गया कि कहीं भद्दा नहीं लगे।

"और ऐसे दिवंगत करता था", किसी ने मसखरेपन से कहा: "वह सेमन मछली का एक टुकड़ा काटता, उस पर खूब काली मिर्च बुरक कर और उस पर एक और मछली का टुकड़ा रखकर वोदका के ग्लास के पीछे धकेल देता।"

"आओ हम भी ऐसा ही करें", किसी ने गरजती आवाज में कहा।

फ़ोमा का हृदय क्रोध से फटने लगा, ज्योंही वह इन चिकने ओठों और बढ़िया तर भोजन को चबाते जबड़ों को देख रहा था। उसकी इच्छा हुई कि वह जोर से चिल्लाये और इन लोगों को, जिनकी सामाजिक उच्चता से वह भयभीत हो गया था, बाहर निकाल दे।

"आओ, प्रसन्न होओ और बात करो", मायाकिन ने धीरे से कहा, जो उसके बराबर में आ लिया था।

"इस प्रकार भुक्कड़पन से क्या मतलब? क्या ये लोग समझते हैं कि वे किसी सराय या शराबखाने में आये हुए हैं?" फ़ोमा ने गुस्से में ऊँची आवाज से कहा।

"श···श···श!" मायाकिन ने भय से चारों ओर तेजी से निहारते हुए और अपने ओठों पर कृतघ्नतापूर्ण मुस्कान से कहा।

परन्तु, अब बहुत देर हो चुकी थी, उसकी मुस्कान की कोई आवश्यकता नहीं थी। फ़ोमा ने जो कुछ कहा था, लोगों ने सब सुन लिया था। शोर-शराबा और बातचीत एकदम बन्द हो गये। कुछ अतिथि घबराहट से अधीर हो गये, दूसरे अपमान अनुभव करते हुए, काँटा छुरी रख कर और फ़ोमा की तरफ क्रोधपूर्ण तिरछी नज़र से देखते हुए, चल दिये। उसने मूकता के साथ बिना किसी हिचकिचाहट के गुस्से से उनकी नज़रों का मुकाबला किया।

"बैठ जाइये, बैठ जाइये", मायाकिन इधर से उधर तेजी के साथ राख में पतंगे की तरह दौड़ा: "कृपया अपने स्थानों पर बैठ जाइये। अभी पूड़े आने वाले हैं।"

फ़ोमा ने कन्धे हिलाये और बाहर चला गया, और कहता गया: "मुझे रोटी नहीं खानी।"

अपने पीछे उसने बहुत विद्वेषपूर्ण बातें सुनीं और अपने धर्मपिता को सफाई देते हुए सुना।

"यह इसका दुःख है" वह बता रहा था—"आखिर, इग्नात इसके लिये माँ और बाप दोनों था।"

फ़ोमा बगीचे में गया और उसी जगह बैठ गया, जहाँ उसका पिता मरा था। दुःख और एकांत उसकी छाती पर बोझ की तरह आ पड़े। उसने अपनी कमीज का कालर खोला ताकि आसानी से साँस ले सके, मेज पर अपनी कोहनी टेकी और सिर को दोनों हाथों में पकड़कर निश्चेष्ट भाव से बैठ गया। हल्की-हल्की फुहारें पड़ रही थीं और सेव के पेड़ों और पत्तों पर गिरती हुई बूदें दुःखद सरसराहट कर रही थीं। बहुत देर तक फ़ोमा वहीं बैठा रहा और पत्तों पर से गिरती हुई बरसात की बूँदों को देखता रहा। उसका दिमाग पी हुई वोदका से गड़गड़ा रहा था और लोगों के प्रति घृणा से उसका दिल भरा हुआ था। अस्पष्ट विचार आते और लुप्त हो जाते; उसने अपने धर्मपिता के गंजे सिर को देखा जिस पर कुछ चन्दीले बालों का ताज था। उसके भूरे चेहरे को देखा, जो किसी ईकोन के समान था। उसके निर्दन्त मुख की धूर्त्ततापूर्ण हँसी ने फ़ोमा के दिल में अविश्वास और घृणा के साथ एकांत को उत्तेजित कर दिया। उसे सोफ़िया पावलोव्ना की कोमल आँखें और उसकी छोटी, सुन्दर मूर्ति भी स्मरण हुई, तथा उसी के बराबर किसी कारण से ऊँची, सुन्दर; लाल-लाल गालों वाली ल्यूबा मायाकिन भी अपनी हँसती आँखों और भूरे बालों की वेणी के साथ आई। वायु में भयावनी आवाजें हो रही थीं। आकाश भी रोता दिखाई दे रहा था, और उसके ठण्डे आँसू पेड़ों की शाखाओं पर काँप रहे थे। फ़ोमा के हृदय में अँधेरा और ठण्ड थी। उसे एक ऐसे भयपूर्ण भाव ने घेर लिया कि वह अब इस संसार में अकेला रह गया था और उसके दिमाग में यह प्रश्न पैदा होने लगा: "अब मैं इस संसार में कैसे रहूँगा।"

वर्षा से उसके कपड़े भीग गये, तब उसे ध्यान आया कि वह ठण्ड से काँप रहा है।

× × × ×

जीवन ने उसे चारों तरफ से खेंचना शुरू किया। उसे अपने विचारों पर ध्यान करने का समय नहीं मिलता था। अपने पिता की मृत्यु के चालीसवें दिन वह बढ़िया कपड़े पहिने गाड़ी में बैठ गरीब शरणगृह की बुनियाद रखने गया। इससे एक रात पहले सोफिया पावलोव्ना ने उसे एक चिट्ठी भेजी थी, जिसमें कहा गया था कि उसे गरीब गृह-निर्माण समिति का प्रतिष्ठित सदस्य चुन लिया गया है, जिसकी वह प्रधान थी। वह इससे बहुत प्रसन्न हुआ और किसी तरह इस अवसर पर इस कार्य से उत्तेजित-सा हो गया था। रास्ते में, गाड़ी में जाते हुए उसे यही ध्यान था कि यह अवसर कैसा होगा और उसे कैसा व्यवहार करना चाहिये, जिससे वह अपने को अपमानित न करा सके।

"अरे! ज़रा रुकना!"

फ़ोमा ने मुड़कर देखा कि मायाकिन रास्ते में दौड़ा आ रहा है। उसने एक बड़ा छाता हाथ में लिया हुआ था और एक ऊँची टोपी के साथ फ्राक-कोट पहन रक्खा था, जो उसकी एड़ियों तक पहुंच रहा था।

"मुझे भी साथ ले चलो", बुड्ढे ने बन्दर की तरह फुर्ती से, गाड़ी में कूदते हुए कहा: "सच्ची बात यह है, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था। मैं सोच रहा था कि तुम्हारे आने का समय हो रहा है।"

"आप भी जा रहे हैं?" फ़ोमा ने पूछा।

"हाँ, मैं भी जा रहा हूँ! मैं जाकर देखना चाहता हूँ कि मेरे सबसे अच्छे मित्र का पैसा जमीन में कैसे गाड़ा जाता है।"

फ़ोमा ने उसकी ओर अपनी आँखों के कोने से देखा, परन्तु कुछ कहा नहीं।

"तुम मेरी तरफ ऐसे क्यों देख रहे हो? ऐसा दिखता है कि तुम भी दान के लिये जा रहे हो?"

"आप का क्या मतलब?" फ़ोमा ने उपेक्षापूर्वक कहा।

"मैंने आज के अखबारों में पढ़ा कि तुम उस शरणगृह के सदस्य

चुन लिये गये हो, और साथ ही सान्या की सोसाइटी के प्रतिष्ठित सदस्य भी हो गये हो। इस सदस्यता से तुम्हारी जेब खाली की जायेगी।" मायाकिन ने एक आह भरी।

"मैं समझता हूँ कि मैं इससे गरीब नहीं बन जाऊँगा।"

"हाँ, यह मैं नहीं कह सकता", चालाक बुड्ढे ने कहा: "परन्तु मैं यह कह सकता हूँ कि दान देना एक मूर्खता है—यह कोई कारोबार नहीं: यह एक हानिकारक बात और समय का नष्ट करना है।"

"अच्छा तो लोगों को मदद करना आप हानिकारक समझते हैं?" फ़ोमा ने धृष्टतापूर्वक पूछा।

"ओह! गोभी के सिर", मायाकिन ने चेहरा मरोड़ते हुए कहा: "तुम मेरे पास आओ और समझो, और मैं तुम्हारी आँखें इस बारे में खोल दूँगा। तुम्हें अभी बहुत उपदेश की आवश्यकता है। आओगे ना?"

"हाँ, आऊँगा।"

"बहुत अच्छा! अच्छा अभी इस उत्सव में तुम अपना सिर अभिमान से ऊँचा रखो—सब के सामने प्रकाश में रहना। यदि मैं, तुमसे ऐसा न कहता तो तुम किसी के पीछे छिपे रहते।"

"मैं क्यों छिपूँ?" फ़ोमा ने तीखेपन से कहा।

"निःसन्देह, तुम क्यों छिपो? मैं भी यही कहता हूँ। तुम्हारे पिता ने यह सब धन दान में दिया है, और उसके उत्तराधिकारी के रूप में तुम्हें सब सम्मान मिलना चाहिये। सम्मान भी धन है। जो व्यापारी प्रतिष्ठित होता है, उसकी सब जगह साख है। उसके लिये सब दरवाजे खुले हैं। इसलिये तुम्हें सामने की पंक्ति में रहना है, ताकि सब लोग तुम्हें भली-भाँति देख सकें; जिससे यदि तुम पाँच कोपेक का भी दान करो तो रूबल तुम्हें वापिस मिल सके। अपने को पीछे छिपाकर रखना बेसमझी और मूर्खता है!"

जब फ़ोमा की गाड़ी वहाँ पहुँची तो जनता की भीड़ ईंट, लकड़ी और मिट्टी के ढेरों के पास इकट्ठी हो चुकी थी। पादरी, गवर्नर, प्रसिद्ध

नागरिक और स्थानीय सरकार के सब सदस्य बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से सजी अपनी-अपनी पत्नियों के साथ एक रंग-बिरंगे दल में खड़े, राजों को ईंट और चूना तैयार करते देखने में लगे हुए थे। मायाकिन और उसका धर्मपिता भी इसी दल की ओर चल पड़े।

"शरम न करो", मायाकिन ने फ़ोमा से कहा : "सुन्दर पंखों से सुन्दर पक्षी नहीं बनता।"

उसने एक आदरपूर्ण, प्रसन्न अल्प-ध्वनि में पादरी का अभिवादन करने से पूर्व गवर्नर का स्वागत किया।

"श्रीमान्! सर्व शिरोमणि कैसे हैं?" उसने गवर्नर का अभिवादन किया और साथ ही साथ पादरी की ओर मुड़कर बोला : "शुभ-दिन है, सर्वपवित्रात्मा!"

"ओह! याकोब तरासोविच!" गवर्नर ने प्रसन्नतापूर्वक कहा; और जैसे ही उसने मायाकिन का हाथ पकड़ा और भींचा, मायाकिन ने पादरी के हाथ की ओर भी हाथ बढ़ाया : "क्या हाल है, अमर्त्य वृद्ध?"

"बहुत ठीक, धन्यवाद! श्रीमान् सर्व शिरोमणि! नमस्कार! सोफ़िया पाव्लोव्ना", मायाकिन ने भीड़ में लट्टू की तरह घूमते हुए कहा। एक मिनट में ही मायाकिन ने जज, प्रासीक्यूटिंग अटर्नी और मेयर तथा उन सब के साथ जिनके साथ वह वार्तालाप आवश्यक समझता था, अभिवादन कर लिया। उनमें से बहुत से ऐसे लोग थे जो उसकी श्रेणी में नहीं आते थे। वह हँसा, मखौलें कीं और थोड़ी ही देर में अपने ह्रस्व-व्यक्तित्व को सबके ध्यान का केन्द्र बना लिया। फ़ोमा उसके पीछे सिर लटकाये खड़ा रहा और सुनसरी जूड़ों, लेसों और अपने चारों ओर बहुमूल्य कपड़ों की तरफ चोरी-चोरी देखता रहा और अपने धर्मपिता की चुस्ती, फुर्ती और साहस से ईर्षा करता रहा, जिसके साथ वह भीड़ में इधर-उधर जा रहा था। इसी समय उसका धर्मपिता उसका हाथ पकड़ कर ले गया।

"श्रीमान् सर्वशिरोमणि! आज्ञा दें कि मैं अपने धर्मपुत्र को उपस्थित करूँ, जो दिवंगत इग्नात का इकलौत बेटा है।"

"ओह" गवर्नर ने कहा और फिर बोला : "मैं मिलकर बड़ा प्रसन्न हूँ। नवयुवक, मैं आपसे हार्दिक सहानुभूति प्रगट करता हूँ", उसने फ़ोमा का हाथ पकड़ते हुए कहा और फिर थोड़ा सा रुक कर आडम्बर और गर्व से बोला : "पिता की मृत्यु भी बहुत दुःखद होती है।"

उसने एक-दो सैकण्ड तक फ़ोमा के उत्तर की प्रतीक्षा की, परन्तु जब वह नहीं बोला तो उसने मायाकिन की ओर मुड़कर कहा :

"उस दिन कौंसिल में तुमने बहुत अच्छा भाषण दिया", वह बोला : "बहुत बढ़िया, बहुत समझदार, याकोब तरासोविच ! ये लोग अभी जनता की आवश्यकता को नहीं समझते।"

"और इसके अलावा, श्रीमान् सर्व शिरोमणि ! लोगों के पास पूँजी कहाँ ? दूसरे शब्दों में उन्हें अपना धन लगाना पड़ेगा।"

"बिल्कुल ठीक ! बिल्कुल ठीक !"

"मद्यनिषेद, बहुत प्रशंसनीय है। शराब बहुत बुरी चीज है। मैं मानता हूँ। मैं अपने आप नहीं पीता और दूसरे लोगों के भी खिलाफ हूँ, जो पीते हैं। परन्तु वाचनालय बनाने की क्या जरूरत थी जबकि आम जनता पढ़ना ही नहीं जानती ?"

गवर्नर ने सहमति-सूचक घुर्राहट में कहा।

मेरा कहना यह है : "इस पैसे को लेकर किसी टैकनिकल विकास में लगा देना चाहिये। यदि तुम छोटे पैमाने पर काम करोगे तो पैसा काफी रहेगा; और यदि नहीं भी हो तो सेन्ट पितर्सबर्ग को प्रार्थना-पत्र भेजा जा सकता है। निःसंदेह वे कुछ न कुछ देंगे। फिर शहर को अपना धन नहीं लगाना पड़ेगा, और इस धन का हम सदुपयोग कर सकेंगे।"

"बिल्कुल ठीक, परन्तु देखो, वे लिबरल तुम पर कैसे चिल्लाये !"

"उनका काम ही चिल्लाना है; श्रीमान् !"

गिरजे से आया पादरी कुछ खांसा, जो प्रतिष्ठान संस्कार के प्रारम्भ की घोषणा थी।

सोफ़िया पावलोव्ना आगे आई और उसने फ़ोमा का अभिवादन किया।

"जनाजे के दिन तुम्हारा चेहरा देखकर मेरा दिल टूटा जा रहा था", उसने हल्की शोकपूर्ण आवाज में कहा : "मैं देख रही थी कि तुम कितने दुःखी थे।"

इन शब्दों से फोमा के हृदय को बहुत ठण्डक पहुँची।

"तुम्हारे रुदन ने मेरे दिल को हिला दिया। ओ, मेरे गरीब लड़के! मैं यह कहती हूँ क्योंकि मैं अब एक बुढ़िया स्त्री हूँ।"

"आप?" फ़ोमा ने आश्चर्य में धीरे से कहा।

"तुम विश्वास नहीं करते?" उसने भोलेपन से उसके चेहरे पर निहारते हुए कहा।

फ़ोमा ने सिर नीचा कर लिया और कुछ नहीं बोला।

"तुम यकीन नहीं करते? क्या मैं बुढ़िया नहीं हूँ?"

"मैं मानता हूँ, परन्तु······यह सच नहीं" उसने हल्की आवाज में अस्वीकार किया।

"क्या सच नहीं?···कि तुम मुझ पर विश्वास करते हो?"

"नहीं, यह नहीं। परन्तु, यह कि······आप मुझे माफ करें। मैं नहीं जानता कि कैसे और क्या कहूँ", फ़ोमा ने पूरी तरह लाल होते हुए कहा : "मैं कोई शिक्षित नौजवान नहीं हूँ।"

"इसमें शरम की क्या बात", सोफ़िया पावलोव्ना ने उसे सहारा देते हुए कहा : "तुम अभी नौजवान हो,···और कोई भी तालीम ले सकता है। परन्तु कुछ लोग हैं जिन्हें इसकी जरूरत नहीं, जो तालीम से बिगड़ जाते हैं—ऐसे लोग जो हृदय से पवित्र हैं और बच्चों की तरह विश्वास करने वाले हैं। तुम भी उनमें से एक हो। क्यों, तुम ऐसे नहीं हो?"

फ़ोमा ऐसे प्रश्न का क्या उत्तर दे सकता था।

उसने केवल मात्र, "धनयवाद", ही कहा।"

यह देखकर कि इससे सोफ़िया पावलोव्ना की आँखों में एक मन्द

मुस्कान आई, उसने अपने को मूर्ख अनुभव किया और वह अपने प्रति और भी कुपित हो गया।

"तो आप जानती हैं कि मैं क्या हूँ", उसने भारी आवाज में कहा : "मैं तो जो सोचता हूँ कह देता हूँ। मुझे बहानेबाजी नहीं आती। यदि कोई बात मुझे अजब दीखती है तो मैं खूब जोर से हँस लेता हूँ। मुझमें इतनी हुशियारी नहीं कि छिपा सकूँ।"

"अब, इसके कहने की क्या जरूरत ?" महिला ने उसकी मखौल करते हुए कहा। जैसे ही वह अपने घाघरे की तहों को सँवार रही थी, उसका हाथ फ़ोमा के हाथ से छू गया जिसमें उसने अपना हैट थामा हुआ था। फ़ोमा ने अपने हाथ की ओर नीचे देखा और प्रसन्नतापूर्वक एक लज्जा-पूर्ण हास किया।

"मैं समझती हूँ कि आप दावत में आएंगे, क्या नहीं ?" उसने पूछा।

"हाँ।"

"और कल मेरे घर पर मीटिंग में भी ?"

"ज़रूर !"

"और फिर तुम कभी-कभी मुझसे मिलने ऐसे ही, बिना किसी खास बहाने के भी आया करोगे ?"

"ओह ! धन्यवाद ! जरूर आऊँगा।"

"इस वचन के लिये मैं तुम्हारा बड़ा धन्यवाद करती हूँ।"

दोनों चुप हो गये। वायु में पादरी की प्रार्थनामय पवित्र, गम्भीर ध्वनि तैरने लगी, जब कि उसने अपने हाथ गरीब शरणगृह को आशीर्वाद देने के लिये ऊपर उठा रक्खे थे...... ।"

"न हवा, न जल-प्रवाह और ना ही बीमारियाँ इस शरणगृह को हानि पहुंचायें और इसमें रहने वाले कभी आघात और कठोरता के शिकार न हों...... ।"

"हमारी प्रार्थनायें कितनी सार्थक और सुन्दर होती हैं ! आप यह नहीं मानते ?" सोफ़िया पावलोव्ना ने कहा।

"हाँ", फ़ोमा ने संक्षेप में झेंपते हुए कहा, क्योंकि वह समझा नहीं था कि उसने क्या कहा है।

"वे हमेशा हम व्यापारियों के हितों के विरुद्ध जायेंगे", मायाकिन जोर देता हुआ मेयर के कानों में कह रहा था, जो फ़ोमा के बराबर खड़ा था : "उन्हें क्या परवाह है, उन्हें तो अखबारों की प्रशंसा चाहिये। वे किसी बात की जड़ तक थोड़े ही जाते है। वे दिखावा चाहते हैं, जीवन में तरक्की नहीं। अखबार और स्वीडन, बस यही दो पैमाने हैं जिनसे वह हर चीज को मापना जानते हैं। वह कहता है कि स्वीडन में सार्वजनिक शिक्षा और सब बातें बहुत बढ़िया हैं। परन्तु जब सब बातों की जड़ में जाते हैं, तो स्वीडन क्या रह जाता है। स्वीडन के बारे में हमें जो कुछ पता है—वह दस्ताने और दियासलाई हैं, और कम से कम हम तो स्वीडन को और स्वीडन हमारे लिये आदर्श नहीं बन सकता। हमें अपने रास्ते चलना है। क्यों ऐसी बात नहीं ?"

प्रोतोद्याकोन ने अपना सिर नीचे को फेंका ; वह पढ़ रहा था :

"इसके संस्थापक को अनन्त शान्ति मिले !"

फ़ोमा अभी चलने ही वाला था कि उसके धर्मपिता ने उसको बाँह पकड़कर खेंचा।

"क्या तुम दावत में जा रहे हो ?"

एक बार फिर सोफिया पावलोव्ना का मखमली हाथ उससे छुआ।

दावत फ़ोमा के लिये दुःखद थी। अपने जीवन में उसने पहली बार अपने को उच्च समाज में पाया। वह जानता था कि ये लोग उसकी अपेक्षा अच्छा खाते व अच्छा बात करते हैं। सोफ़िया पावलोव्ना और उसके जो ठीक उसके सामने बैठी थी, बीच में एक मेज नहीं थी, परन्तु एक पहाड़ था। उसके बराबर में उस सोसाइटी का सेक्रेटरी बैठा था। वह अदालत का एक नौजवान क्लर्क था, जिसका अजब-सा नाम उखितश्चेव था, तथा अपने नाम को और बेहूदा बनाने के लिये वह ऊँची, पतली आवाज में बोल रहा था, और यह

उसके शरीर के ढाँचे के साथ (वह नाटा, मोटा, गोल चेहरे वाला थ
एक नई चमकीली गेंद के समान दीखता था ।

"हमारी सोसाइटी की सबसे बढ़िया बात जिस पर हम अभिमान
सकते है, वह हमारी पित्तरदेवी हैं", वह कह रहा था : "हमारा कर्त्त
है कि हम उसके प्रति अपनी श्रद्धा प्रगट करें, । उसकी प्रशंसा कर
जो उसे स्वीकार हो, बहुत बड़ा कार्य है । इसलिये बुद्धिमानी इसी में है
तत्परता से उसकी चुपचाप पूजा की जाये । और, सज्जनो ! आप जानते
कि हम उस सोसाइटी के सदस्य ही नहीं हैं जो······ उद्देश्य की पूर्ति
तत्पर है, परन्तु उस सोसाइटी के (टेन्टुलुअस) जो पूज्यनीय सोफ़ि
पावलोव्ना की सेवा.कर रही है ।"

फ़ोमा ने इस बकवास को सुना और अपनी संरक्षिका को देखा,
पुलिस के प्रधान के साथ गम्भीर वार्तालाप में लगी हुई थी । उसने अ
पड़ोसी की बात की उपेक्षा सी की, जैसे कि वह खाने में लगा हुआ हो अ
चाहता था कि यह सब जल्दी ही खतम हो जाये । वह अनुभव कर रहा
कि सब मेहमानों की आँखें उस पर हैं और सब उसे मूर्ख, घृणित और बेहू
समझ रहे हैं ।

मायाकिन ने एक हाथ में खाने का काँटा ऊपर उठाया हुआ था औ
उसके चेहरे की झुर्रियाँ हिल रही थीं, जबकि वह लाल चेहरे, धौले बाल
मोटी और छोटी गर्दन वाले मेयर को कोई बात समझा रहा था, जो उसक
तरफ बैल की तरह देख रहा था और अपने अँगूठे से मेज पर सहमतिसूचक
शब्द में खटखटा रहा था । मेहमानों की खुशी, बातचीत और अट्टहासों
मायाकिन की आवाज दबी जा रही थी । फ़ोमा कुछ नहीं समझ रहा थ
और खासतौर से उसके बराबर में बैठे सेक्रेटरी की पतली आवाज में उ
कुछ सुनाई नहीं दे रहा था ।

"देखो", अन्त में सेक्रेटरी बोला : "देखो, प्रोतोदियोकोन अपनी छात
फुला रहा है । एक मिनट में ही वे इग्नात मात्वेईविच की स्मृतिमें प्रार्थन
करने वाले हैं ।"

"क्या मैं जा सकता हूँ ?" फ़ोमा ने धीरे से पूछा।

"क्यों नहीं ? लोग समझ जायेंगे।"

पादरी की गरजती भारी आवाज ने कमरे के शोर-शराबे को डुबो दिया या कुचल दिया; सब व्यापारी, पादरी के बड़े खुले मुख को, जिससे साफ-साफ शब्दों में आवाज प्रतिध्वनित हो रही थी, प्रशंसापूर्वक देखने लगे। उचित समय देख फ़ोमा उठा और कमरे से बाहर निकल गया।

एक मिनट बाद वह अपनी गाड़ी की सीट के गद्दे में धँस गया और उसने सुख और शांति की सांस ली। वह सोच रहा था कि उन लोगों की सोसाइटी उसके लिये नहीं है। वह उन्हें बहुत चिकना-चुपड़ा पा रहा था, उनकी तड़क-भड़क से घृणा कर रहा था। वह उनके चेहरों, उनकी हँसियों और उनकी बातों से भी नफरत कर रहा था; परन्तु साथ ही उनकी गति, किसी विषय पर बात करने की योग्यता इत्यादि में स्वतन्त्रता और विश्वास के साथ-साथ उनके सुन्दर कपड़ों को देख उसके हृदय में एक प्रकार की प्रशंसा और ईर्षा की भावना पैदा हो रही थी। उसके दिल में चोट लग रही थी और अफसोस हो रहा था कि वह उनकी तरह देर तक, प्रवाह के साथ भी अधिक समय तक बातचीत क्यों नहीं कर सकता। उसे स्मरण आया कि ल्यूबा मायाकिन किस प्रकार इस बारे में उसकी मखौल करती थी।

फोमा, मायाकिन की लड़की को बिल्कुल पसन्द नहीं करता था और इसके तुरन्त बाद जब उसके पिता ने उसे बताया कि मायाकिन ल्यूबा की उससे शादी करना चाहता है, तो उसने उससे मिलना-जुलना भी बन्द कर दिया। परन्तु अपने पिता की मृत्यु के बाद वह प्रतिदिन मायाकिन के घर में ही रहता था।

"तुम जानते हो कि तुम ज़रा भी व्यापारी के से लड़के नहीं लगते", एक दिन ल्यूबा ने उससे कहा।

"और तुम भी व्यापारी की लड़की नहीं दिखतीं", फोमा ने संदेहपूर्वक उसकी ओर देखते हुए जवाब दिया।

वह नहीं जानता था कि ल्यूबा ने उसे छेड़ने के लिये कहा था या नहीं।

"परमात्मा का धन्यवाद !" उसने कहा और फिर एक मित्रतापूर्ण दृष्टि से मुस्कराई।

"तुम प्रसन्न क्यों हो ?" उसने पूछा।

"मैं प्रसन्न इसलिये हूँ कि हम अपने पिताओं जैसे नहीं।"

फोमा ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

"सचमुच बतलाओ", वह धीमी आवाज में बोली : "तुम मेरे पिता को पसन्द नहीं करते, क्यों ?"

"हाँ, बहुत नहीं", फोमा ने स्वीकार किया।

"मैं भी उन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं करती !"

'क्यों ?"

"ओह, बहुत से कारण हैं। जब तुम और समझदार हो जाओगे, तब तुम्हें पता लग जायेगा। तुम्हारे पिता बहुत अच्छे थे।"

"हाँ, निःसंदेह वह अच्छे थे !" फोमा ने स्वाभिमान से कहा।

इस परस्पर स्वीकृति के बाद दोनों की एक दूसरे के प्रति दिलचस्पी लगातार बढ़ती गई और अन्त में यह एक असाधारण रूप में बदलगई।

ल्यूबा और फोमा एक ही आयु के थे, परन्तु उसका (ल्यूबा) व्यवहार ऐसा था जैसा बड़ी लड़की का छोटे लड़के के साथ होता है। वह उससे अपने को वड़ा जताते हुए बात करती, कभी-कभी मखौल करती और प्रायः ऐसे शब्द प्रयोग करती, जिन्हें फोमा ने कभी सुना ही नहीं था और उनके उच्चारण में खास जोर देती तथा एक संतोष अनुभव करती। वह कभी-कभी खासतौर से अपने भाई तारास के बारे में भी जिकर छेड़ती, जिसे यद्यपि उसने कभी देखा नहीं था, परन्तु उसे बड़े रंग-बिरंगे तरीके से बखान करती, जिससे वह बुआ अनफीसा की परियों के समान वीर और उदार दीखता। अपने पिता की शिकायत करते हुए वह फोमा से कहती :

"किसी दिन तुम भी उसी के समान राक्षस हो जाओगे।"

फोमा को ऐसी बातें सुनकर खुशी नहीं होती थी। वह उन्हें याद रखता था। परन्तु कई बार ऐसे मौके आते जब वह बड़ी सरलता और प्रेम के साथ खुलकर बातें करती। ऐसे मौकों पर वह भी दिल खोलकर जवाब देता और कभी-कभी वे दोनों एक दूसरे को अपने बहुत आन्तरिक विचार भी बताते।

वे बहुत देर तक एक दूसरे के साथ सचाई व सहृदयता से बात करते, परन्तु फोमा ने अनुभव किया कि ल्यूबा के सब विचार उसे स्वीकार नहीं थे और यहाँ तक कि वे उसके लिये हानिकारक थे। साथ ही वह भी जान रहा था कि उसका रुक-रुक कर बोलना उसे बिल्कुल पसन्द नहीं था, और वह उसे समझती भी नहीं थी। अपनी इस सब बातचीत से वे दोनों एक दूसरे के प्रति, एक दूसरे से अधिक असंतुष्ट हो गये। ऐसा दिखता था कि एक दूसरे के बीच ग़लतफहमी की अदृश्य दीवार खड़ी हो गई है। दोनों में इतना साहस नहीं था कि वे इस दीवार को छू सकते या उसकी सत्ता को मानने को तैयार होते। इस प्रकार वे दोनों व्यर्थ बहस करते थे, और दोनों को एक दूसरे के उन गुणों का अस्पष्ट ध्यान था, जिससे वे एक दूसरे के अधिक समीप आ सकते थे।

दावत वाले दिन के बाद फोमा लौटकर अपने धर्मपिता के घर आया और वहाँ ल्यूबा को अकेला पाया। जैसे ही वह कमरे में आई, उसने देखा कि वह किसी बात से उद्विग्न थी और ठीक नहीं थी। उसकी आँखों में ज्वर की झलक थी और उनके नीचे काले-काले धब्बे थे।

"मैं प्रसन्न हूँ कि तुम आ गये हो", ल्यूबा ने अपने कन्धे पर ऊनी शाल को खींचते हुए, मुस्करा कर कहा : "मैं बल्कुल अकेली थी, और कहीं जाने को दिल भी नहीं कर रहा था। क्या चाय पीयोगे?"

"हाँ, क्या बात है कि तुम ठीक नहीं दिख रही हो?"

"चलो, ड्राइङ्गरूम में मैं उन्हें समवार गरम करने के लिये कह देती हूँ।" उसके प्रश्न की उपेक्षा करते हुए उसने कहा।

"वह छोटे से कमरे में गया, जहाँ दो खिड़कियाँ सामने के बगीचे में खुलती थ खिड़कियों के बीच में एक अण्डाकार मेज और पुराने ढर्रे की चमड़े से मढ़ी कुर्सियाँ थीं। दीवार पर शीशे से ढकी घड़ी लटक रही थी और एक कोने में एक चीनी और चाँदी के बर्तनों से भरी अलमारी खड़ी थी।

"क्या तुम अभी दावत से आये हो?" ल्यूवा ने कमरे में घुसते हुए पूछा।

फ़ोमा ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"क्यों, कैसा था? बहुत बढ़िया?"

"भयङ्कर", फ़ोमा ने तनिक हँसी से कहा: "मेरे तो वहाँ सुइयाँ और पिन चुभ रहे थे। सब लोग वहाँ मोरों की तरह सजे बैठे थे और मैं उनके बीच में उल्लू की तरह ताक रहा था।"

ल्यूवा बिना कुछ बोले मेज पर चाय के बर्तन रखने लगी।

"तुम इतनी दुःखी क्यों दिख रही हो?" फ़ोमा ने उसके निराश चेहरे की ओर देखते हुए पूछा।

ल्यूवा उत्तेजित भाव से उसकी ओर बढ़ी।

"ओह, फ़ोमा! अगर तुम समझ सको कि मैं अभी कैसी अद्भुत पुस्तक ढ़ रही थी?" वह एक दर्द और आनन्द के साथ बोली: "अगर तुम इसे मझ सको।"

"निःसन्देह यह पुस्तक अद्भुत होनी चाहिये, जैसा कि इसने तुम पर सर डाला है।" फ़ोमा हँसा।

"मैं सारी रात पढ़ती रही—नींद की एक भी झपकी नहीं ली। सी किताब को पढ़ते हुए प्रतीत होता है कि एक बिल्कुल नई दुनियाँ के रवाजे खुल रहे हैं। इसमें सब लोग भिन्न हैं, जो कहते हैं वह भिन्न है, और सब कुछ भिन्न है! जीवन भी इसमें भिन्न है।"

"मैं ऐसी चीजें पसन्द नहीं करता", फ़ोमा ने असहमतिपूर्वक कहा: ये सब बनावटी बातें हैं, तुम्हें बेवकूफ बनाने के लिये, जैसी नाटकों में होती

हैं। वे व्यापारियों को मूर्ख:मण्डल बतलाते हैं । क्या सचमुच ये लोग ऐसे मूर्ख हैं ? बिलकुल नहीं। मिसाल के तौर पर अपने पिताजी को ही लो : "

"फ़ोमा ! थियेटर भी तो स्कूल ही की तरह है ।" ल्यूबा ने उपदेश देते हुए कहा : "ऐसे व्यापारी हुए हैं । तुम्हें किताब बेवकूफ क्यों बनायेगी ?"

"जैसे कि परियों की कहानियाँ बनाती हैं । उनमें कोई सच्चाई तो नहीं ।"

"तुम ग़लत हो। तुमने किताबें पढ़ी ही नहीं, तुम यह कैसे कह सकते हो। दूसरी ओर, किताबें ही सब हैं। वे लोगों को बताती हैं कि कैसे रहना चाहिये ।"

"जाओ !" फ़ोमा ने हाथ हिलाते हुए कहा : 'अपनी इन किताबों को छोड़ो, ये कुछ नहीं सिखा सकतीं । अपने पिताजी को देखो, वे कभी किताबें नहीं पढ़ते, मगर जरा देखो कि वे कितने समझदार हैं ! मैं तो उन्हें देखकर ईर्ष्या करता हूँ । किस प्रकार वे लोगों में मिलते-जुलते हैं ! उन्हें पता है कि कौन सी चीज ठीक-ठीक कैसे कहनी है, कौन सी बात ठीक-ठीक करनी है, और वे सब जगह बड़े विश्वास के साथ मिलने-जुलते हैं । प्रत्येक आदमी जानता है कि जो वे चाहते हैं, हासिल कर लेते हैं ।"

"परन्तु वे क्या चाहते हैं ?" ल्यूबा ने विस्मय में पूछा : "पैसा, पैसे के अलावा और कुछ नहीं । दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं, जो इस संसार के लोगों का कल्याण—भलाई चाहते हैं, और उसके लिये वह परिश्रम करना चाहते हैं, कष्ट उठाना चाहते हैं और जीवन का बलिदान करने को भी तैयार हो जाते हैं । क्या तुम मेरे पिता की ऐसे लोगों से तुलना कर सकते हो ?"

"तुलना की क्या जरूरत, वे एक चीज चाहते हैं, तुम्हारे पिता दूसरी चीज चाहते हैं ।"

"वे कुछ नहीं चाहते !"

"वह क्या है ?"

"वे इस सब को बदल देना चाहते हैं !"

"इसका भी कोई कारण होना चाहिये", फोमा ने बुद्धिमानी से कहा : "नि:संदेह वे कुछ चाहते हैं।"

"सब लोगों की भलाई", ल्यूबा ने आवेश में कहा।

"यह मेरी समझ से बाहर है", फ़ोमा ने सिर हिलाते हुए कहा : "किसे परवाह है कि मैं खुश हूँ या नहीं। और इसके अलावा वे कैसे जान सकते हैं कि मैं किससे खुश होऊँगा, यदि मुझे अपने आप भी न पता हो? परन्तु आज तुम्हें उन दूसरे लोगों को देखना चाहिये था जो दावत में थे।"

"वे भी कोई लोग हैं!"—ल्यूबा ने ताना मारते हुए कहा।

मैं नहीं जानता कि तुम उन्हें क्या कहोगी, मगर यह बात साफ है कि उन्हें पता है कि जीवन में उनका क्या स्थान है। वे लोग बड़े रोबदार, तथा चतुर हैं और उनमें बड़ा आत्म-विश्वास है।"

"ओ, फोमा!" ल्यूबा ने निराशापूर्वक कहा : "तुम इन चीजों को बिल्कुल नही समझते। तुम्हारे लिये ये सब बराबर हैं। तुम बहुत आलसी हो।

"तुम फिर वही बात कह रही हो! बात यह है कि मैंने इन चीजों को कभी अच्छी तरह से देखा ही नहीं।"

"बात यही है, तुम्हारा दिमाग बिल्कुल खाली है, यही तुम्हारे साथ मुसीबत है!" ल्यूबा ने विश्वास के साथ कहा।

"तुम्हें क्या पता कि मेरे दिमाग में क्या है?" फोमा ने गम्भीरता से आक्षेप किया : "तुम्हें मेरे विचारों का पता नहीं।"

"तुम्हारे पास सोचने के लिये ही कुछ नहीं", ल्यूबा ने कन्धे हिलाते हुए कहा।

"हाँ, मेरे पास है। सबसे पहली बात तो यह है कि मैं दुनियाँ में अकेला हूँ, दूसरी बात यह है कि मुझे जीना है। मैं मौजूदा हालत में देर तक नहीं चल सकता, मैं इसे भली-भाँति जानता हूँ। मैं दुनियाँ में मखौल भी नहीं करवाना चाहता। मैं लोगों से बात करना भी नहीं जानता और मुझे सोचना भी नहीं आता", फ़ोमा ने तनिक मूर्खतापूर्ण हँसी के साथ अपनी बात खतम की।

"तुम्हें अध्ययन करना चाहिये", ल्यूबा ने कमरे में चलते-फिरते कहा ।

"मेरे हृदय के अन्दर गहराई में कोई चीज हिल रही है", फ़ोमा उसकी ओर बिना देखते हुए बोला, जैसे कि वह अपने आप से बात कर रहा हो : "परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि यह क्या है । मैं समझता हूँ, जो तुम्हारे पिताजी कहते हैं, वह बहुत बुद्धिमानी की बात है, परन्तु पता नहीं किस वज़ह से मुझे उसमें दिलचस्पी नहीं । मैं दूसरे लोगों को अधिक दिलचस्प पाता हूँ ।"

"उन रईसों को ?" ल्यूबा ने पूछा ।

"तो तुम उन लोगों में से हो ?" ल्यूबा ने अपने ओठों को घृणापूर्वक मरोड़ते हुए कहा । तुम्हें लज्जा नहीं आती ! तुम उन्हें लोग कहते हो ? तुम समझते हो कि उनके दिल है ?"

"तुम उनके बारेमें क्या जानती हो ? तुम उनसे कभी मिली ही नहीं ।"

"मैंने उनके बारे में पढ़ा है ।"

उनका वार्त्तालाप नौकरानी के समवार लाने से भंग हो गया । ल्यूबा ने बिना कुछ कहे चाय उबालनी शुरू की और जैसे ही फ़ोमा उसकी तरफ देख रहा था, उसके विचार सोफ़िया पावलोव्ना के बारे में उठ रहे थे । यदि वह सिर्फ उससे बात कर सके ।

"हर रोज मैं अधिक स्पष्टता से देख रही हूँ कि जीवन कितना कठिन है !" ल्यूबा ने चिन्ता-मग्न हो कहा : "उदाहरण के तौर पर मुझे ही लो; मुझे क्या करना है ? शादी ? किसके साथ ? एक व्यापारी से, जो अपना सारा समय लोगों को लूटने, शराब पीने और ताश खेलने में लगायेगा ? मैं ऐसी शादी नहीं चाहती ! मैं एक व्यक्तित्व प्राप्त करना चाहती हूँ—और मेरा एक व्यक्तित्व है, वह सिर्फ यही कि मैं जीवन को बहुत भयङ्कर देख रही हूँ । और आगे पढ़ाई ? पता नहीं मेरे पिताजी इसे चाहेंगे या नहीं ! 'घर छोड़कर भाग जाऊँ' इतना साहस मुझमें नहीं । समझ में नहीं आता क्या करूँ ?" उसने अपने दोनों हाथों को मजबूती से कसा और अपने सिरको पीछे की ओर फेंका ।

"बस, यदि तुम सिर्फ इतना जानो कि मैं इन लोगों से कितनी घृणा करती हूँ! मेरे पिता, वह व्यक्ति ही नहीं जिसमें जीवन की ज्योति हो। पिताजी ने माँ के मरने के बाद सबको घर से खदेड़ दिया। मेरी कई सहेलियाँ आगे पढ़ने के लिये चली गई हैं। उदाहरण के तौर पर लीपा। वह मुझे चिट्ठियाँ लिखती है, और लिखती मुझे किताबें पढ़ने के लिये है। ओह! मैं पढ़ती हूँ!" ल्यूबा निराशा में रोने लगी; फिर कुछ क्षण रुक कर बोली: "किताबें तुम्हे वह कुछ नहीं बतातीं जो तुम्हारा दिल जानना चाहता है, और जो वे बतलाती हैं, मेरी समझ में नहीं आता। और, कितना अकेलापन है—भयङ्कर अकेलापन है, जब तुम्हारे पास पढ़ने के अलावा और कुछ नहीं हो। मैं किसी से बात करना चाहती हूँ परन्तु कोई दीखता नहीं। मैं इस सबसे थक चुकी हूँ। मनुष्य—जीवन एक ही बार तो मिलता है, और अब वक्त है कि मैं इसे शुरू करूँ, परन्तु ठीक-ठीक पुरुष सामने आता नहीं। मैं किसके लिये जीवित रहूँ, यह जीवन जेलखाना है!"

फ़ोमा ने उसे ध्यानपूर्वक सुनते हुए उसकी उङ्गलियों को देखा, उसने ल्यूबा के गहरे दुःख को अनुभव किया, परन्तु वह समझ न सका। जब वह अपना कहना खतम कर चुकी और कष्ट से पीड़ित थी, फ़ोमा को जो कुछ शब्द सूझे, वह भर्त्सना के समान दीखे।

"अच्छा! अब मैं समझा?" वह बोला: "तुम अपने आप स्वीकार कर रही हो, किताबें कुछ सहायता नहीं दे सकतीं, और फिर भी तुम मुझे पढ़ने के लिये कह रही हो।"

ल्यूबा ने उसके चेहरे की ओर देखा और उसकी आँखों से गुस्सा टपकने लगा।

"बस, तुम्हें भी तनिक मेरे कष्टों का स्वाद मिले! बस, जब तुम्हें रातों-रात जागना पड़े और मेरी तकलीफों का स्वाद मिले जैसा कि मैं तुम्हारे बारे में सोचती हुई कष्ट उठाती हूँ! जब तुम दुनियाँ की सब चीजों से घृणा करने लगते हो—यहाँ तक कि अपने से भी, जैसा कि मैं कह रही हूँ। ओह! मैं तुम सबसे कितनी घृणा करती हूँ! मैं तुम से कितनी घृणा करती हूँ!"

उसका चेहरा लाल होकर दमक रहा था, और वह उसकी ओर ऐसी घृणा और हिरस से देख रही थी और ऐसे आवेश में बोल रही थी कि वह भी आवेश में आ गया और किसी कदर नाराज सा हो गया । अबसे पहले वह कभी भी इस तरह नहीं बोली थी ।

"क्या बात है, आज तुम्हारे साथ ?" उसने पूछा ।

"और मैं तुमसे भी नफरत करती हूँ । तुम ! तुम कौन हो ? एक रीढ़हीन बेवकूफ ! तुम जीवन में कैसे चलोगे ? तुम्हारे पास लोगों को देने के लिये क्या है ?" ल्यूवा घृणापूर्वक मुस्कराई ।

"अगर मैं उन्हें कुछ नहीं दे सकता, तो वह अपने आप ले लें ।" फ़ोमा ने जानबूझ कर आग में घी छिड़कते हुए कहा ।

ल्यूवा का निरादर इतना जोरदार था कि फ़ोमा उसे सुने बगैर नहीं रह सका । उसने अनुभव किया जो कुछ वह कह रही है, समझदारी की बात है, और वह उसके पास अपनी कुर्सी ले गया, परन्तु वह गुस्से और नाराजगी में उससे परे हट गई और उसने एक शब्द भी बोलने से इन्कार कर दिया ।

अभी घर के बाहर चाँदना था । सूर्यास्त की किरणें खिड़की के पास नीबू के पेड़ की शाखाओं पर चमक रही थीं, परन्तु कमरा छायाओं से भरा हुआ था । हर सैकण्ड घण्टे का पीतल का पैण्डुलम अपने शीशे के केस से बाहर झाँकता और फिर एक हल्की थकान और गुनगुनाहट के साथ कभी दाँये कभी बाँये छिप जाता । ल्यूवा खड़ी हुई और उसने टेबल के ऊपर लटकती लैम्प को जलाया । उसका चेहरा इस अचानक प्रकाश में पीला और खिचा-खिचा सा दीख रहा था ।

"तुमने मुझे अच्छा कोयलों पर ला फेंका है", फ़ोमा ने कुछ रुकते हुए कहा : "परन्तु मुझे निश्चय है कि मुझे पता नहीं क्यों··· ?"

"मैं तुमसे बात नहीं करना चाहती", ल्यूवा ने स्वाद लेते हुए कहा ।

"जो तुम कहती हो ठीक है, परन्तु मैंने ऐसी क्या बात की है ?"

"क्या तुम नहीं देख रहे, कि मेरा दम घुटा जा रहा है ? मेरा सांस

बन्द हो रहा है ? यह कैसी जिन्दगी है ? अपने बाप की आश्रिता। वह मुझे अपने घर की देख-रेख के लिये रख रहा है। फिर मुझसे उम्मीद करता है कि मैं शादी करूँ...और किसी दूसरे के घर की देख-रेख करूँ।"

"मगर इस सबका मुझसे क्या वास्ता ?" फ़ोमा ने पूछा।

"तुम औरों से किसी कदर अच्छे नहीं हो।"

"परन्तु तुम मुझे किस बात के लिये कोस रही हो ?"

"तुम्हें कुछ अच्छा होना चाहिये।"

"परन्तु मैं चाहता हूँ", फ़ोमा ने कहा।

वह जवाब देने वाली ही थी कि दरवाजे की घण्टी बजी, और वह अपनी कुर्सी पर वापिस बैठ गई।

"पिताजी", वह बोली।

"बहुत बुरी बात, वह जल्दी आ गये", फ़ोमा ने कहा : "मैं चाहता था कि तुमसे और सुनूँ, जो तुम कहना चाहती थीं। बहुत अजीब है।"

"ओह, मेरे बच्चो, मेरे प्यारो !" मायाकिन ने दरवाजे में घुसते ही कहा : "चाय पी रहे हो ? ल्यूवा ! मुझे भी एक ग्लास देना।"

वह फ़ोमा के बराबर बैठ गया और प्रेम के साथ मुस्कराता हुआ अपने दोनों हाथ मलने लगा :

"और तुम दोनों क्या बातें कर रहे थे ?" उसने खिलवाड़ में फ़ोमा की पसलियों में उङ्गली धँसाते हुए कहा।

"कोई खास बात नहीं", ल्यूवा ने कहा।

"मैंने तुमसे तो नहीं पूछा ?" उसके बाप ने चेहरा बनाते हुए कहा : "अपनी ज़ुबान बन्द करो और स्त्रियों के कर्त्तव्य का ध्यान रखो।"

"मैं ल्यूवा को दावत के बारे में बता रहा था", फ़ोमा ने काटते हुए कहा।

"समझा, समझा ! अच्छा, मेरी बारी है कि मैं दावत के बारे में बात करूँ। फ़ोमा ! मैं तुम पर नज़र रख रहा था, और मुझे कहना पड़ता है कि तुममें व्यावहारिक ज्ञान नहीं है।"

"यह···?" फ़ोमा ने चिढ़ते हुए कहा।

"यह बात है, तुम नहीं जानते कैसे और यह ठीक है। उदाहरण के तौर पर गर्वनर तुम से बात करना चाहता है और तुम्हारा मुँह बन्द है।"

"मैं क्या कहता ? उसने कहा कि पिता का खोना एक बदकिस्मती है। मैं इसे भलीभाँति जानता हूँ, तो मैं कहता क्या।"

"क्योंकि, प्रभु ने यह दु:ख मेरे लिये उचित समझा—सर्वश्रेष्ठ, मैं अपना क्रास चुपचाप धारण कर रहा हूँ। यह या इसके जैसा ही कुछ कहना चाहिये था। गवर्नर ऐसे लोगों को पसन्द करते हैं, समझे बेटा !"

"क्या मुझे उसकी तरफ फिर बकरी के मेमने की तरह देखना चाहिये था ?" फोमा हँसा।

"तुम्हारी नजर पहले ही काफी मेमने जैसी थी, और यही नहीं होना चाहिये। न तो तुम्हें भेड़ बनना चाहिये और नहीं भेड़िया, कुछ इन दोनों के बीच में रहना चाहिये—थोड़ा इधर या थोड़ा उधर—'श्रीमान् ! आप हमारे पिता हैं, हम आपके बच्चे हैं···' और यह कहते ही वह पिघल जाता।"

"उसे क्यों पिघलाना चाहिये था ?"

"यह कभी २ बहुत फायदेमन्द होता है। गवर्नर के परिचय का तुम बहुत अच्छा उपयोग कर सकते हो, बेटा !"

"पिताजी ! आप इसे क्या बनाना चाहते हैं ?"

"एक थूकचट !"

"बिल्कुल ग़लत, पढ़ी-लिखी मूर्ख। यह नीति है, जो मैं इसे सिखाना चाहता हूँ न कि खुशामद। यह दुनियाँ में सफलता की नीति है। परन्तु अच्छा हो कि तुम यहाँ से चली जाओ ? शैतान, जाओ मेरे पीछे की ओर और कुछ खाने के लिये लाओ। चलो, जल्दी करो।"

ल्यूबा जल्दी से उठी और पकड़े हुए तौलिये को कुर्सी की पीठ पर रख कर बाहर चली गई। उसके पिता ने उङ्गलियों से मेज को बजाया और उसे ध्यान से देखने लगा।

"और इस प्रकार, फ़ोमा, मैं तुम्हें कुछ शिक्षा देना चाहता हूँ, मैं तुम्हें सच्चा विश्वास-पात्र दर्शन विज्ञान सिखाना चाहता हूँ। और यदि तुम उसको समझ जाओगे तो संसार में भूलें किये बिना सफल होओगे।"

फ़ोमा ने धर्मपिता के माथे पर हिलती झुर्रियों को देखा, जिनसे उसे स्लाव-भाषा की लिपि के अक्षर याद आ रहे थे।

"फ़ोमा! सबसे पहले यदि तुम संसार में रहना चाहते हो तो तुम्हारा कर्त्तव्य है, अपनी आस-पास की परिस्थितियों के बारे में सोचो, क्यों? ताकि तुम अपने अज्ञान से कष्ट न उठाओ और दूसरे भी तुमसे दुःखी न हों। अब साथ ही तुम्हें यह भी पता होना चाहिये कि प्रत्येक मनुष्य जो काम करता है उसके दो पार्श्व होते हैं। एक बाहर का—जिसे हर कोई देख सकता है, और वह झूठा होता है; दूसरा छिपा होता है और वह असली होता है। उसी पार्श्व को तुम्हें देखना चाहिये और उसके अर्थ को गहराई से समझना चाहिये। उदाहरण के तौर पर, इन शरणगृहों, श्रमगृहों और दूसरी दान से चलने वाली संस्थाओं को ही लो—तुम समझ सकते हो कि वे क्यों हैं?"

"इसे समझने की क्या जरूरत?" फ़ोमा ने घबराहट में कहा: "प्रत्येक को पता है कि वे किसलिये हैं: गरीबों और अपाहिजों के लिये हैं।"

"हाँ भाई! कभी-कभी लोगों को पता होता है कि अमुक बड़ा दुष्ट है, परन्तु फिर भी लोग जैसा कि उसे बताना चाहिये, इवान या प्योत्र के के नाम से ही बुलाते हैं।"

"आपका क्या मतलब है? आप क्या सिद्ध करना चाहते हैं?"

"वही बात! तुम कहते हो कि ये संस्थाएँ गरीबों और भिखारियों के लिये हैं—दूसरे शब्दों में, ईसा मसीह की शिक्षा के प्रचार के लिये हैं। बहुत अच्छा! भिखारी क्या है? भिखारी वह है जो हमें जीवन में ईसा-मसीह की याद करवाता रहता है; वह प्रभु ईसा मसीह का भाई है, वह एक घण्टी है, जिसे प्रभु हमारी आत्माओं को जगाने के लिये बजाते हैं, ताकि हमारे सोये शरीर जागें। वह हमारी खिड़की के नीचे खड़ा होकर चिल्लाता

है : 'प्रभु के नाम पर एक रोटी का टुकड़ा दो ।' और उसकी चिल्लाहट से हमें प्रभु की इस बात का स्मरण हो आता है कि हम एक दूसरे की कैसे मदद करें। परन्तु लोगों का जीवन ऐसा हो चुका है कि उसमें ईसा मसीह के उपदेशों का पालन करना असम्भव है; हमारे जीवन में ईसा मसीह का कोई स्थान नहीं। हमने प्रभु ईसा मसीह को एक ही बार क्रॉस के तख्ते पर नहीं लटकाया, वरन् लाखों बार ! फिर भी हम उससे बच कर नहीं जा सकते, जब तक कि प्रभु के भाई बन्धु— यह भिखारी व अपाहिज उसका नाम याद करवाते हुए गुजरते हैं। परन्तु अब हमने इस मुसीबत से बचने का एक रास्ता निकाल लिया है : हमने फैसला किया है कि इन भिखारियों को एक खास घर में बन्द कर दें, ताकि वे हमारी गलियों में घूम-घूम कर हमारी आत्मा को जगा न सकें।"

"बहुत समझदारी", फ़ोमा ने आश्चर्य में अपने धर्मपिता की ओर देखते हुए कहा।

"तुम मेरे नुक्ते को समझ गये ?" मायाकिन की छोटी-छोटी आँखें विजय से चमकने लगीं।

"क्या बात है कि मेरे पिताजी इसे नहीं समझे ?" फ़ोमा ने घबराते हुए पूछा।

"ठहरो ! मुझे कहने दो। अभी तो और भी बुरी बात आनी है। हमने इन लोगों को सब तरह के घरों में, काम पर लगाने तथा उन बुड्ढों व अपाहिजों के रहन-सहन के खर्चे को कम करने की योजना बनाई है। अब हमें उन्हें भीख नहीं देनी पड़ेगी क्योंकि गलियों से हमने उनके फटे चिथड़ों को दूर कर दिया है। हम उनकी गरीबी और दुःखों को नहीं देख सकेंगे और हम अनुभव करने लगेंगे कि संसार में सब लोगों के पास काफी जूते और रोटी हैं। इस प्रकार इन शरणगृहों का असली अर्थ सच्चाई को छिपाना है। इसका मतलब है, ईसा मसीह को अपने जीवन से निकालना। अब तुम समझे ?"

"हा...ाँ...", फ़ोमा अपने धर्मपिता के चतुरतापूर्ण तर्क से दंग रह कर बोला।

"और यही नहीं, अभी हम गन्दे चौबच्चे से सारा गन्दा पानी नहीं निकाल सके।" मायाकिन ने हवा में एक हाथ हिलाते हुए कहा।

उसके चेहरे की झुर्रियाँ हिल रही थीं। उसकी बाज़ जैसी लम्बी नाक मरोड़े खा रही थी, और उसकी आवाज ईर्षापूर्ण आनन्द में काँप रही थी।

"अब आओ, हम इसका दूसरा पहलू देखें। इन शरणगृहों और दूसरी दान-संस्थाओं के लिये कौन अधिक दान देता है ? धनी व्यापारी लोग। बहुत अच्छा ! और, कौन हुकम चलाता है और कौन बताता है कि कैसे क्या कुछ होना चाहिये ? हम नहीं परन्तु ऊपर के भद्र पुरुष, अफसर और दूसरे लोग। कानून, अखबार, विज्ञान—सब चीजें उनकी हैं। पहले वे लोग जमीदार होते थे। जब जमीन इनके पाँव में से निकल गई तो ये सरकारी दफ्तरों में घुस गये। परन्तु आज सबसे मजबूत और प्रभावशाली लोग कौन हैं ? व्यापारी ही देश की असली शक्ति हैं; क्योंकि उनके हाथों में करोड़ों की पूँजी है। क्या ऐसी बात नहीं ?"

"हाँ", फ़ोमा ने स्वीकार किया और बड़ी उत्सुकता से परिणाम सुनने की प्रतीक्षा करने लगा, जो उसके धर्मपिता की आँखों में पहले ही चमक रहा था।

"इसलिये तुम मेरी बातों को ध्यान से सुनो और जो मैं कहता हूँ, उसे समझो", बुड्ढा जोर से कहता गया : "हम व्यापारी लोगों ने वर्तमान जीवन नहीं बनाया; इसके बनाने में हमारा न कोई हाथ है न कोई आवाज ही। हम उसके बारे में एक उंगली तक नहीं उठा सकते। वे ही लोग हैं जिन्होंने वर्तमान जीवन, जैसा कि यह है, बनाया है। इन्ही लोगों ने इन भिखारियों, अपाहिजों और बेकारों को पाला है। यही लोग जीवन में इस गन्द के साथ शोर शराबा करते हैं। न्याय की बात यह है कि इन्हें ही इस गन्द को साफ करना चाहिये। परन्तु इसके विपरीत इसे साफ करने के लिये हमें कहा जाता है। हमें इन गरीबों को दान देने के लिये कहा जाता है और हमें

ही इन गरीबों की फिकर करनी पड़ती है। और, हम ऐसा क्यों करें? यदि हमने किसी का कोट नहीं फाड़ा तो हम उसकी मरम्मत क्यों करें। यदि हम किसी के घर में नहीं रहते तो उसकी मरम्मत क्यों करें? क्या यह बुद्धिमानी नहीं होगी कि फ़िलहाल उन लोगों के ऊपर कीड़े-मकोड़े इकट्ठे होने दें और स्वयं एक तरफ खड़े होकर देखें? वे इसे नहीं कर सकते; उनके पास साधन ही नहीं हैं, इसीलिये वे हमारे पास मदद के लिए आते हैं। 'सज्जनो! कृपया मदद कीजिये' वे कहते हैं, और हमारा उत्तर होना चाहिये: 'हमें स्वतन्त्रता दो ताकि हम वैसा कर सकें जैसा हम ठीक समझते हैं। हमें अवसर मिलना चाहिये कि हम कह सकें कि जीवन कैसा होना चाहिये।' और ज्योंही हमें यह अवसर मिलेगा, हम इस गन्द से झटपट मुक्त हो जायेंगे। हमारे सम्राट ज़ार भी अपनी आँखों से अपने आप देख लेंगे कि उनके सच्चे सेवक कौन हैं और जो लोग अपने हाथ बन्द किये बैठे हैं, उनमें कितनी बुद्धि सञ्चित है।"

"यह देखना कोई कठिन नहीं।" फ़ोमा ने विस्मय से कहा।

जब उसका धर्मपिता, अफसरों के बारे में कह रहा था तो फ़ोमा की नज़रों के सामने दावत में उपस्थित सैक्रेटरी का प्रफुल्लित गोल चेहरा आया, और उसे विचार पैदा हुआ कि शायद उस छोटे से गोल सैक्रेटरी की सलाना आमदनी एक हजार रूबल से अधिक नहीं; दूसरी ओर फ़ोमा के पास दसियों लाख थे। बावजूद इस सबके वह सैक्रेटरी इस दुनियाँ में स्वतन्त्र और स्वच्छन्द था, और फ़ोमा सदा घबराया और अजनबी महसूस करता था। इस विरोध से उसे अपने धर्मपिता की बात का समर्थन दीखा, जो वह सब उससे कह रहा था और हृदय में विचारों का एक तूफान सा टूट पड़ा, परन्तु उसने इस अवसर को पकड़ा और अपने विचारों को निश्चित् रूप दिया।

"जब हम सब बातों की जड़ में पहुँचते हैं, नतीजा यही निकलता है कि हम पैसे के लिये काम कर रहे हैं? और उस पैसे का क्या लाभ, जब हमें उससे शक्ति ही नहीं मिलती?" वह बोला।

"अहा!" मायाकिन ने आँखें सिकोड़ते हुए विस्मय में कहा।

"तो पिताजी ने इन बातों को क्यों नहीं देखा ?" फ़ोमा ने कहा : "आपने उन्हें बताया था ?"

"मैं तो बीस साल तक कहता रहा।"

"और उन्होंने क्या कहा ?"

"मेरे शब्द उनके कानों तक नहीं पहुंचे। तुम्हारे पिता मोटी बुद्धि के थे। उनका दिल छाती के बाहर रहता था और दिमाग बहुत पीछे। हाँ, उहोंने बड़ी भारी ग़लती की। उस पैसे के बारे में यह बड़े दुःख की बात है।"

"मुझे पैसे के जाने की कोई परवाह नहीं।"

'तुम इस रक़म का दसवाँ हिस्सा कमाओ, और फिर देखूंगा, क्या कहते हो।"

"मैं अन्दर आ सकती हूँ ?" ल्यूवा ने दरवाजे में घुसते हुए पूछा।

"हाँ, तुम आ सकती हो", पिता ने कहा।

"आप भोजन के लिये तैयार हैं ?" उसने अन्दर आते हुए पूछा।

"परोस दो।"

वह अलमारी के पास गई और चीनी की प्लेटें रखने लगी। मायाकिन ने अपने ओठों को चबाया और उसे देखने लगा; फिर अचानक फ़ोमा के घुटने पर हाथ मारता हुआ बोला :

"सो यह बात है, मेरे धर्मपुत्र ! इस पर गौर करो।"

फ़ोमा जवाब में हँस दिया।

'यह बड़ा बुद्धिमान् और चतुर है। पिताजी की अपेक्षा कहीं अधिक समझदार है'—फ़ोमा ने सोचा, परन्तु इसी समय उसके दिल में से एक और आवाज आई जो कह रही थी :हाँ, यह समझदार जरूर है परन्तु तुम्हारा पिता सज्जन था।

———

५.

फ़ोमा का अपने धर्मपिता के प्रति द्वैध व्यवहार प्रतिदिन बढ़ता ही गया। वह उसे ध्यानपूर्वक सुनता जब बुड्ढा अपने विचारों को खोल-खोल कर बताता, परन्तु उसने अनुभव किया कि उसके प्रति घृणा बढ़ रही है। कई बार मायाकिन से उसे डर अनुभव होने लगता और कभी-कभी शारीरिक घृणा। ऐसा प्रायः तब होता था, जब मायाकिन किसी खास बात से प्रसन्न होकर हँसता था। जिस समय वह हँसता था, उसकी झुर्रियां लगातार हिलतीं और उसके चेहरे में बड़ा परिवर्तन पैदा कर देतीं; उसके सूखे पतले ओठ एक चौड़ी हँसी में फैल जाते और उसके काले-काले दाँतों के खूँटों को बाहर दिखाते; उसकी लाल-लाल दाढ़ी आग की तरह चकमती और उसकी हँसी का शब्द जंगलगी चूलों के समान होता। अपने आन्तरिक भावों को छुपाने में असमर्थ होने से फ़ोमा कभी-कभी मायाकिन के प्रति असभ्य भी हो जाता; बुड्ढा उसकी उपेक्षा कर देता परन्तु साथ ही उस पर कड़ी नज़र भी रखता। उसने अपनी दुकान की उपेक्षा कर दी और लगभग पूरी तरह गोर्देयेव के जहाज़ी कारोबार में अपने को लगा दिया और इसकी बदौलत फ़ोमा के पास बहुत सा समय खाली रहने लगा। शहर में मायाकिन के प्रभाव, तथा वोल्गा नदी के नीचे तक उसके कारोबारी सम्बन्धों के कारण उनका काम खूब बढ़ने लगा। परन्तु जिस तत्परता से मायाकिन उसकी निगरानी करता था, फ़ोमा का विचार दृढ़ होता गया कि उसके धर्मपिता का विचार ल्यूबा से उसकी शादी करना है और इस कारण वह बुड्ढे से और भी नफ़रत करने लगा।

वह ल्यूवा को चाहता था परन्तु उसे ख़तरनाक समझता था। वह अभी क्वारी थी, फिर भी उसके पिताने शादी का ज़िकर नहीं किया था; न कभी पार्टियाँ कीं, नांही और नवयुवकों को एकत्र किया और नांही उसे कभी बाहर जाने दिया। उसकी अन्य मित्र सहेलियों की अब तक शादियाँ हो चुकी थीं। फ़ोमा ल्यूवा की बातें सुन-सुनकर अचम्भा करता था, परन्तु वह उसकी बातों को वैसे ही सुनता, जैसे कि उसके पिता की। वह तारास के बारे में प्रेम और चाह के साथ बातें करती, और फ़ोमा समझता था कि वह शायद इसी नाम से किसी दूसरे आदमी का ज़िकर करती है, शायद उसी यझोब का, जो ल्यूवा के कथनानुसार किसी ऐसे ही या दूसरे कारण से मास्को यूनिवर्सिटी छोड़कर चला गया था। ल्यूवा में एक सादगी और दयाभाव की अधिकता थी, और कई बार उसे ल्यूवा की बातों पर दया आती थी। उसे दीखता था कि वह अर्ध-चेतनता में हिलती-जुलती है।

अपने पिता का चालीसवाँ होने के बाद दावत में फ़ोमा के व्यवहार की कहानी व्यापारियों में बड़ी तेजी से फैल गई और इससे उसकी प्रतिष्ठा को बहुत धक्का लगा। उसने देखा कि उसके स्टाक ऐक्सचेञ्ज के साथी उसके प्रति वैमनस्य-भावना रखने लगे और उसके साथ बातचीत में अजब-सी आवाज में बोलते। एक बार उसने अपने पीछे से किसी को घृणापूर्ण आवाज में कहते सुना—

"यह घमण्डी, दूध का फोया!"

उसने मुड़कर नहीं देखा कि यह किसने कहा था। वह अब इन धनी लोगों की प्रशंसा नहीं करता था, जिनकी उपस्थिति में वह कभी काँपता था। कई बार ये लोग उसके हाथों से फायदेमन्द आर्डर भी छीन कर ले गये; वह जान गया कि ये आगे भी ऐसा ही करेंगे, और कि ये लोग पैसे के इतने लालची हैं कि कभी भी एक दूसरे को धोखा दे सकते हैं।

"और तुम क्या आशा रखते हो?" उसके धर्मपिता ने उसकी सम्मति सुनकर कहा: "व्यापार, युद्ध के समान, एक साहसिक काम है। वे मुनाफ़ों के लिये लड़ रहे हैं और मुनाफा ही उनका पैगम्बर है।"

"मैं ये बातें पसन्द नहीं करता", फ़ोमा ने घोषणा की।

"कुछ चीजें ऐसी हैं जिन्हें मैं स्वयं पसन्द नहीं करता—जैसे धोखेबाज़ी। परन्तु व्यापार में तुम हमेशा खुले और ईमानदार नहीं रह सकते; तुम्हें इस मामले में राजनीतिज्ञ होना चाहिये। जब तुम व्यापारी से बात करो तो तुम्हारे बाँये हाथ में पैसा और दाँये में छुरी होनी चाहिये।"

"बहुत अप्रिय काम है", फ़ोमा ने विचारपूर्वक कहा।

"इसका अच्छा भाग तब आयेगा जब तुम्हारे हाथ में अच्छा सौदा आयगा। जीवन के नियम बड़े सीधे-साधे हैं, फ़ोमा! फ़ोमा बेटे, यदि तुम काट नहीं सकते तो मुँह नीचा किये पड़े रहो और दूसरों को अपने ऊपर से गुजर जाने दो।"

बुड्ढे ने दाँत निपोरे, और उसके तेज दांतों के खूटों को देख फ़ोमा के अन्दर विचार उठा, तुमने अपने जमाने में खूब काटा होगा।

"क्या और कोई अच्छा रास्ता नहीं? क्या यही एकमात्र रास्ता है!"

"इसका और रास्ता हो ही क्या सकता है? प्रत्येक आदमी अपने लिये अच्छी से अच्छी बात चाहता है और इस 'अच्छी से अच्छी चीज' का क्या मतलब, औरों से आगे बढ़ो, औरों से ऊँचा चढ़ो। हर एक आदमी अपने लिये अच्छी से अच्छी जगह चाहता है। कोई इस तरह से करता हैं, कोई उस तरह से; और प्रत्येक मनुष्य गिरजे के घण्टाघर की तरह ऊपर पहुंचना चाहता है, जहाँ से उसे सब देख सकें। पुरुष बना ही इसलिये है कि वह संसार में पुरुषार्थ करे और ऊपर उठे। हमारी धर्म-पुस्तक जोक में भी लिखा है: 'मनुष्य कष्टों के लिये पैदा हुआ है, जैसे कि पतंगा ऊपर चढ़ता है।' यहाँ तक कि बच्चे भी खेल में एक दूसरे से होड़ लगाते हैं और बढ़ना चाहते हैं। और हर एक खेल में जीत हो सकती है; यही तो जीवन का आनन्द है। समझे?"

"हाँ, मैं समझ गया", फ़ोमा ने कहा।

"परन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम अनुभव करो। सिर्फ समझने से कुछ लाभ नहीं। तुम्हारे अन्दर प्रबल व हार्दिक इच्छा होनी चाहिये। तभी पहाड़ टीले बन जायंगे और समुद्र पोखर बन जायेगा। ओह, मैं जब तुम्हारी उमर का था तो इस

खेल में कितना लगा हुआ था ! और एक तुम हो, अभी खेल शुरू करने के लिये अपना दिल ही पक्का कर रहे हो।"

इस प्रकार लगातार एक ही स्वर में बीन बजाने के बाद, बार बार वही दुहराने के बाद, मायाकिन को अन्त में सफलता मिली : फ़ोमा ने अपने जीवन के उद्देश्य का फैसला करना शुरू किया। वह बार-बार अपने मन में यही बात दुहराता कि तुम्हें दूसरों से अच्छा बनना है। महत्वाकांक्षा का यह बीज जो उसके धर्मपिता ने बोया था, दिल की गहराई में जा गिरा। वह गहराई में गिरा जरूर परन्तु पूरी तरह अंकुरित नहीं हुआ, क्योंकि सोफिया पावलोव्ना के साथ उसके सम्बन्ध उसी तरह हुए, जैसा होना था। वह उसकी तरफ अनिवार्य रूप से खिंचा, सदा उसके साथ रहना चाहता था, परन्तु जैसे ही वह उसके साथ होता—वह भद्दा, लज्जाशील और मूर्ख-सा बन जाता। वह इस बात को जानता था और इस कारण आन्तरिक वेदना भी अनुभव करता था। वह प्रायः उसके घर जाता, परन्तु कभी उसे अकेला न पाता। उसके यहाँ खुशबूदार, बाँके, दम्भी, छैल-छबीले नौजवान, मीठे के ढेर पर मक्खियों की तरह, मँडराते। वे गाते, हँसते और उसके साथ फ्रांसीसी भाषा में बात करते, और फ़ोमा चुपचाप बैठा उन्हें घृणा और ईर्ष्या से भरा ताक़ता रहता। घण्टों तक वह उसके बड़े सजे-धजे ड्राइंगरूम के कोने में, टांगों को अपने नीचे समेटे, नाराज़गी के साथ बैठा रहता।

और, वह अपने प्रशंसकों से घिरी—प्रशंसक जो उसकी सुनहरी काम की हुई मेजों, कुर्सियों, पर्दों और नाना प्रकार की नाज़ुक चीजों के बीच साँपों की तरह बड़ी सफाई से गुजरते, जो कि कलापूर्ण लापरवाही के साथ इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, वैसे ही खतरे पें थीं जैसे फ़ोमा नरम गलीचे के ऊपर निःशब्द भाव से आगे-पीछे, आती-जाती मधुर मुस्कान उस पर डालता। जब फ़ोमा कमरे में अन्दर आता तो उसके पांव से नरम गलीचे पर भी शब्द की आवाज आती और कमरे में रक्खी हुई नाना प्रकार की सजावटी चीजें उसके कोट से अटक कर आ गिरतीं। पियानो के पास कांसे की बनी एक

मल्लाह की मूर्ति थी वह बारीक तारों के रस्से के साथ सजा हुआ—जीवन-रक्षा करने वाला—घेरा फेंकने की क्रिया में था। यह जो हमेशा फ़ोमा के बालों में उलझ जाती। इससे सोफिया पावलोव्ना और उसके साथी हँस पड़ते और फ़ोमा को लज्जित और कुपित कर देते।

वह उसके साथ अकेला होता हुआ भी बेफिक्र और घबराहट से रहित नहीं होता था। बात करने से पहले वह मधुर मुस्कान के साथ उसका स्वागत करती और फिर बिल्ली की तरह सोफे पर सिमट कर बैठ जाती तथा शंकापूर्ण आखों से उसकी तरफ निहारती, जिसमें एक भूख की झलक होती थी।

"मैं तुमसे बहुत बात करना चाहती हूँ", एक बार अपने संगीतमय शब्दों को बाहर निकालते हुए वह बिल्ली की तरह हल्का-सा घुर्राई : "मैं इन दूसरे लोगों से ऊब चुकी हूँ, ये सब लोग बहुत ही मूर्ख, साधारण और अड़ियल हैं। तुम ताजे हो और सच्चे हो। तुम भी उन्हें पसन्द नहीं करते, क्यों ?"

"मैं उन्हें सहन नहीं कर सकता", फ़ोमा ने कहा।

"और मुझे ?" उसने पूछा।

फ़ोमा मुड़कर दूसरी तरफ देखने लगा।

"तुम हमेशा ही मुझसे यही पूछती रहती हो", उसने एक आह के साथ कहा।

"और तुम्हारे लिये इसका जवाब देना बहुत मुश्किल है ?"

"मुश्किल नहीं, परन्तु इसकी क्या जरूरत।"

"मैं जानना चाहती हूँ।"

"तुम मुझसे सिर्फ खिलवाड़ कर रही हो", फ़ोमा ने निराशा से कहा।

"तुमसे खिलवाड़ ! इसका क्या मतलब ?" उसने अपनी आँखें चौड़ी फाड़कर, आश्चर्यध्वनि में पूछा। इस समय उसका चेहरा ऐसा दैवी, व दिखाई दे रहा था कि वह उसकी सच्चाई में अविश्वास न कर सका।

"मैं तुमको दिल से प्रेम करता हूँ ! तुमसे प्रेम न करना असम्भव

उसने हार्दिक सच्चाई से कहा ; और फिर धीरे से शोकपूर्वक बोला : "परन्तु तुम्हारे लिये इसका कोई मतलब नहीं ।"

"तुमने फिर यही बात कही", सोफ़िया पावलोव्ना ने बड़े संतोष के साथ कहा और उससे किनारे हट कर बोली : "जिस तरीके से तुम कहते हो मुझे बहुत अच्छा लगता है ; इसमें पूर्ण यौवन है, भावुकता है । क्या तुम मेरा हाथ चूमना चाहते हो ?"

बिना एक शब्द कहे फ़ोमा ने उसके कोमल सफेद हाथ को पकड़ा और झुक कर उसे देर तक दिल से चूमा । फिर हँसते हुए उसने बड़े गौरव के साथ, उसकी सच्चाई और प्रेम से अछूते, अपने हाथ को खींच लिया । वह बैठी-बैठी उसकी ओर देखती रही जैसे कि वह कोई कौतूहलपूर्ण वस्तु हो । उसकी आँखे ऐसी विचित्रता से चमक रही थीं कि जिन्हें देखकर फ़ोमा हमेशा ही चिन्तापूर्ण हो जाता था ।

"तुम कितने बलवान्, स्वस्थ और निर्मल हो !" उसने विस्मय में कहा : "क्यों, तुम व्यापारी एक अलग ही कौम हो, एक ऐसी कौम जो बिगड़ी नहीं है, जिसकी अपनी अद्वितीय रूढ़ियाँ हैं और जिसमें शारीरिक मानसिक स्वस्थता बहुत है । उदाहरण के तौर पर मैं तुम्हें ही लेती हूँ : तुम एक हीरे हो ! सिर्फ तुममें पौलिश करने की जरूरत है··· ।"

जब कभी वह, 'तुम', 'तुम्हारा', 'तुम व्यापारी', इत्यादि शब्द कहती तो फ़ोमा अनुभव करता कि वह उससे दूर हटने के लिये कह रही है । इससे उसे बहुत चोट लगती और वह उदास हो जाता । वह बिना कुछ कहे—बस बैठा बैठ उस, कन्या समान कोमल, एक मधुर सुगन्धमय फूल के समान अल्प-आकृति की ओर निहारता, जो सदा ही एक असाधारण रुचि के साथ वस्त्र धारण किये होती थी । कभी २ उसे एक जंगली व देहाती इच्छा घेर लेती कि उसे पकड़ कर चूम ले, परन्तु उसकी सुन्दरता और कोमलता से वह डर जाता कि कहीं उसे आघात न पहुंचा दे, इसी दौरान में उसकी स्पष्ट मधुर आवाज और स्वाधीनतापूर्ण नज़र से उसकी यह नज़र दब जाती ।

उसे प्रतीत होता था कि वह उसकी अन्तरात्मा की गहराई और उसके प्रत्येक विचार को देख और समझ रही है। उसके मानसिक विकारों का विस्फोट कम ही होता था, क्योंकि सोफिया पावलोव्ना के प्रति उसके भाव भक्तिपूर्ण थे; और वह उसकी सुन्दरता, उसका बोलना, उसके कपड़ों और उसकी प्रत्येक बात पर विस्मय करता था। उसमें भक्ति-भावना के साथ-साथ एक आन्तरिक स्वीकृति का भी भाव था जो कि उन दोनों के बीच एक बहुत बड़ी खाड़ी है, और वह उससे श्रेष्ठ है।

उनके आपसी सम्बन्ध बहुत तेजी से बढ़ने लगे। दो-तीन मुलाकातों में ही सोफिया पावलोव्ना ने उस पर पूर्ण अधिकार कर लिया। उसके बाद वह उसे धीरे-धीरे पीड़ित करने लगी। यह स्पष्ट था कि वह इस सबल, स्वस्थ नवयुवक पर अपनी शक्ति के प्रयोग में, उसकी वासनाओं को और उसके अन्दर की पशुता को अपनी वाणी और नजर से झुकाने में बड़ा आनन्द लेती थी। इस खेल में उसे बड़ी प्रसन्नता होती थी, क्योंकि उसे अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास था। जब वह वहाँ से चला आता तो उत्तेजना, उसके द्वारा किये अपमान और अपने किये रोष से आधा बीमार हो जाता; और दो दिन के बाद फिर वही सजा पाने के लिये वहीं जाता।

एक दिन वह लजाता हुआ उससे बोला : "सोफ़िया पावलोव्ना, क्या कभी तु···म्हा···रे कोई बच्चे हुए हे ?"

"नहीं।"

"मैं भी यही सोचता था !" उसने खुशी में कहा।

उसने उसकी ओर बड़े अबोध बच्चे की तरह देखा और फिर बोली :

"तुमने ऐसा क्यों सोचा ? और तुम यह क्यों जानना चाहते हो कि मेरे बच्चे हुए हैं या नहीं ?"

"फ़ोमा शरमा गया और उसने आँखें नीची कर लीं; उसकी आवाज भारी पड़ गई और बोलते हुए ऐसा दीखने लगा कि उसके प्रत्येक शब्द में एक-एक पूद का भार है, जिसे वह जमीन में से खोदकर बाहर निकाल रहा हो।"

"क्योंकि एक बार जब······औरत के······मतलब यह कि बच्चे हो लेते हैं······उ···स···की···आँखें···तुम्हारी तरह नहीं होतीं।"

"वे नहीं होतीं ? तो फिर कैसी होती हैं ?"

"उनमें······निर्लज्जता होती है"—फ़ोमा ने बकबास की।

सोफ़िया पावलोव्ना ने एक चन्दीली हँसी, हँसी और फ़ोमा भी उसकी ओर देखकर हँसा।

"क्षमा करिये !" वह बोला : "शायद मैं कुछ······असभ्य बात······ कह गया हूँ।"

"ओह, नहीं ! तुम कोई असभ्य बात कह ही नहीं सकते। तुम एक निर्मल और प्यारे लड़के हो ! और, मेरी आँखों में भी निर्लज्जता नहीं है ?"

"तुम्हारी आँखें तो देवियों के समान हैं !" फ़ोमा ने आनन्दपूर्ण उच्छ्वास लिया और उसकी आँखें चमकने लगीं।

और अब सोफ़िया पावलोव्ना ने उसकी ओर ऐसी नज़र से देखा जैसा पहिले कभी नहीं देखा था और जैसे कि एक माँ देखती हो, जिसके हृदय में उसके प्रति दुःख, प्रेम और भय मिश्रित हों।

"अब प्यारे तुम जाओ ! मैं थक गई हूँ और आराम करना चाहती हूँ।" उसने उसकी नज़र बचा कर उठते हुए कहा।

वह आज्ञाकारितापूर्वक उठकर चला गया।

इस घटना के कुछ समय बाद तक वह फ़ोमा के प्रति किसी क़दर संकोच करने और अधिक ईमानदारी से व्यवहार करने लगी जैसे कि वह उस पर रहम खाती हो। पर फिर जल्दी ही वह उसके साथ चूहा–बिल्ली खेलने लगी।

फ़ोमा अपने धर्मपिता से सोफ़या पावलोव्ना के साथ वाले सम्बन्ध छिपा न सका।

"फ़ोमा !" एक दिन बुड्ढा उसकी ओर धूर्त्तता के साथ देखता हुआ बोला "तुम्हें कभी २ पड़ताल कर लेनी चाहिये कि तुम्हारा सिर है या नहीं।"

"आपके विचार में क्या है ?"—फ़ोमा ने पूछा।

"सोन्या ! तुम उसके साथ बहुत समय बिताते हो।"

"आपका इससे क्या वास्ता ?" फ़ोमा ने असभ्यतापूर्वक पूछा : "और आपको क्या अधिकार है कि उसे सोन्या कह कर पुकारें ?"

"मेरा इससे कोई वास्ता नहीं, और मुझे ज़रा भी चोट नहीं लगेगी अगर वह तुम्हें निगल जाये। रही उसे सोन्या कह कर पुकारने की बात—तो सब उसे इसी नाम से बुलाते हैं, और सब लोग जानते हैं कि वह अपने गन्दे काम औरों से करवाना चाहती है।"

"वह बड़ी बुद्धिमान् स्त्री है", फ़ोमा ने भौंहें चढ़ाते और अपने हाथ जेबों में डालते हुए कहा : "वह बड़ी शिक्षित है।"

"हाँ, वह बुद्धिमान् है, इससे इन्कार नहीं करता। वह शिक्षित भी है। वह तुम्हें अच्छी शिक्षा देगी, और जो दूसरे लफंगे उसके यहाँ आते हैं और उसके चारों तरफ चक्कर काटते हैं वे भी।"

"वे लफंगे नहीं, वे भी समझदार हैं"—फ़ोमा ने जवाब दिया। गुस्से में फ़ोमा उन लोगों के विचारों से भी इन्कार कर गया और बोला : "मैं उनसे भी कुछ बातें सीखूंगा। मुझे अभी कुछ भी नहीं पता, न शब्द न सुर। मुझे कभी किसी ने सिखाया नहीं। उसके घर में सब तरह, सब विषयों पर वाद-विवाद होते हैं; और हर एक की अलग २ सम्मति है। मैं अपने को कुछ बनाना चाहता हूँ आप रुकावट डालने की कोशिश न करें।"

"छिः ! छिः ! छिः ! ज़रा देखो तो, कैसे बात कर रहा है ! ऐसा चिड़चिड़ा रहा है जैसे छत्त पर ओले पड़ रहे हों ! बहुत अच्छा, अपने को कुछ बनाओ, परन्तु इससे अच्छा है कि तुम शराबखानों के चक्कर काटना शुरू करो; कम से कम वहाँ सोन्या के घर की बजाय तो अच्छे लोग मिलेंगे। नौजवान ! तुम्हें आदमियों की परख सीखनी चाहिये कि कौन क्या है ? उदाहरण के तौर पर सोन्या को ही लो, वह नौजवान औरत क्या है ? बस, नगर को सजाने वाला एक कीड़ा—न कम न ज्यादा।

फ़ोमा आपे से बाहर हो गया, और अपने दाँत भींचकर, जेब में हाथ डाल कर बाहर निकल गया।

कुछ दिनों बाद जल्दी ही बुड्ढे ने सोफ़िया पावलोव्ना का ज़िकर किया। वे दोनों एक बड़ी आरामदेह बरफ-गाड़ी में प्रसन्नतापूर्वक कारोबार की बातचीत करते हुए अपने अग्निबोटों का निरीक्षण करने जा रहे थे, जो खाड़ी में सर्दियाँ गुजार रहे थे। मार्च का महीना था। बर्फ-गाड़ी के नीचे की पत्तियों से, पानी और लगभग पिघली हुई बरफ पिचकारी की तरह, दाँये, बाँये निकल रही थी और स्वच्छ आकाश में से सूर्य अपनी ऊष्णता बखेर रहा था।

मायाकिन अचानक अपने कारोबारी वार्तालाप को बन्द कर एकदम बोला :

"मैं समझता हूँ कि तुम यहाँ से लौटकर तुरन्त अपनी महिला-मित्र के पास पहुँचोगे, क्यों नहीं ?"

"जरूर", फ़ोमा ने अप्रिय आश्चर्य के साथ कहा।

"हूँ...हूँ ! तुम उसे कभी-कभी उपहार भी देते हो ?"—मायाकिन ने सौजन्यता से पूछा।

"उपहार ! मुझे क्या जरूरत है ?"—फ़ोमा ने आश्चर्य से पूछा।

"कोई उपहार नहीं ? ज़रा सोचो तो ! तुम कहना चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ बिना कुछ लिये रह लेगी, सिर्फ प्रेम के लिये ?"

फ़ोमा लज्जा और गुस्से से लाल पड़ गया।

"आप वृद्ध हैं परन्तु इस प्रकार निर्लज्जता, निरादर और कलंक की बात करते हैं, जिसे सुनना मुश्किल है।" उसने बड़ी तेज़ी के साथ अपने धर्मपिता को झिड़का : "जैसे कि वह ऐसी बातें कर सकती है। जैसे कि वह ऐसी बातें करती है।"

मायाकिन ने अपने ओठों को चपचपाया।

"बेवकूफों के बेवकूफ ! मूर्ख ! निर्बुद्धि ! वाह !" वह गुस्से में, आवेश

में थूकता हुआ बोला : "सारे सुअर उस नाद में डुबकियाँ लगा चुके, और जब उसमें उनके गन्द के अलावा और कुछ नहीं रहा, यह बेवकूफ जाकर उसकी पूजा कर रहा है। ओ ! मूर्खों के मूर्ख ! जाओ, उससे सीधा कहो– 'मैं तुमसे प्रेम करना चाहता हूँ, मैं अभी नौजवान हूँ, मेरी जेब से बहुत सा खर्च करो'।"

"धर्मपिता जी !" फ़ोमा ने गुस्से में डराते हुए, गुस्से में स्याह पड़ते हुए कहा : "मैं ये बातें नहीं सुनूंगा। यदि और कोई होता तो···।"

"और मेरे अलावा तुम्हारी मदद पर कौन आ सकता है ? ओह !" मायाकिन हवा में हाथ मारता हुआ चिल्लाया : "सर्दियों भर, वह तुम्हारे इस प्रकार नकेल डालती रही है। क्या नाक, और क्या राक्षसी !"

बुड्ढा बहुत नाराज हो गया। उसकी आवाज़ में क्रोध, तीव्र निराशा और आँसू भी थे। फोमा ने उसे कभी ऐसी हालत में नहीं देखा था, और इसलिये वह बावजूद अपने गुस्से के चुप हो गया।

"ओह ! यह प्राचीन कुलटा तुम्हें बरबाद कर देगी।"

मायाकिन की आँखें तेजी से झपकीं, उसके ओठ काँपे और उसने गुस्से में चिल्लाते हुए सोफिया पावलोव्ना के खिलाफ अश्लील बातें और गालियाँ बकनी शुरू कीं।

फोमा समझ गया कि बुड्ढा जो कह रहा है- सच-सच कह रहा है। उसके दिल पर भारी बोझ पड़ गया।

"बहुत अच्छा, धर्मपिता जी ! यह काफी हो लिया", फोमा बहुत दुःख के साथ मुँह मोड़ता हुआ गुनगुनाया।

"तुम्हें अब जल्दी से जल्दी शादी कर लेनी चाहिये", बुड्ढा चिल्लाकर बोला।

"परमात्मा के नाम पर, अब बस करिये", फोमा ने प्रार्थना की।

मायाकिन ने अपने धर्मपुत्र की ओर देखा और कुछ नहीं बोला। फोमा का चेहरा थक चुका था और उसके फटे ओठों से अकथनीय पीड़ा तथा दृष्टि से दुःख झलक रहा था।

दाय-बाँये फैले हुए मैदानों में, खंड अपनी सर्दी की फटी पोशाक में खड़े थे। पिघली हुई बरफ व छोटे नाले जमीन पर तेजी के साथ दौड़ रहे थे। पुरानी बरफ-गाड़ी के नीचे पत्तियों में पानी गर-गर कर रहा था और मैली गन्दी बरफ घोड़ों के सुमों के नीचे से दाँये-बाँये उड़ रही थी।

"जवानी में मनुष्य क्या गधा होता है ?" मायाकिन ने सांस रोकते हुए कहा :"देखता है लक्कड़ को, समझता है उसे सुअर। ओह ! ओह !"

"पहेलियों में बात मत करिये", फ़ोमा ने असभ्य कर्कशता से कहा।

"इसमें पहेली में कहने की क्या बात है ? बिल्कुल साफ बात है : लड़कियाँ मलाई हैं, स्त्रियाँ बिलोई हुई छाछ हैं ; स्त्रियों को तुम पकड़ सकते हो, लड़कियाँ तुम्हारे हाथ से फिसल जाती हैं। दूसरे शब्दों में, अगर तुम उसके बगैर नही रह सकते तो सोन्या के पास जाओ और उससे सीधा कहो कि तुम यह···यह, और यह चाहते हो। तुम अन्दर ही अन्दर क्यों उदास हो। बुद्धू लड़के ? तुमने गुस्से में अपना मुँह क्यों सुजाया हुआ है ?"

"आप कुछ समझते नहीं", फोमा ने धीरे से कहा।

"मैं क्या नहीं समझता ? मैं सब कुछ समझता हूँ।"

"हृदय, हर मनुष्य का हृदय होता है।" मायाकिन ने आँखें तरेरीं :

"अगर हृदय होता है तो दिमाग नहीं होता", उसने जवाब दिया।

६

घर पहुँचने पर फ़ोमा के हृदय पर वेदना, क्रोध एवं विद्वेष की भावना ने अधिकार कर लिया। सोफिया पावलोव्ना का अपमान करने और उसे नीचा दिखाने की उसे प्रबल इच्छा हुई। वह जेबों में हाथ डालकर क्रोधपूर्ण आकृति में अकड़ते हुए, दाँत भींचकर घण्टों तक अपने खाली कमरों में चहल कदमी करने लगता। क्रोधावेग में ऐसा लगता मानो हृदय फट पड़ेगा। धीमे क्रम से फर्श के ऊपर पाँवों को धमधम पटकता हुआ वह चलता, मानो उसके हथौड़े सदृश पाँव गुस्से को गड़ रहे हों।

"कलंकित, कुलटा······सज्जा देवियों जैसी।"

कभी-कभी आशा का एक क्षीण स्वर सुनाई देता : "कहीं यह झूठी निन्दा तो नहीं ?"

परन्तु अपने धर्मपिता द्वारा कहे गये विश्वासप्रद, प्रभावी एवं साहसी शब्दों के स्मरण मात्र से उसके दाँत भिंच जाते और सीना अधिक तन जाता।

सोफिया पावलोव्ना के ऊपर कीचड़ उछालकर मायाकिन ने उसे अपने धर्मपुत्र की पहुँच के भीतर कर दिया, और फ़ोमा भी इस बात की दाद देने लगा। जहाज़रानी खुलने वाली थी—कितने ही दिनों तक वह उससे सम्बन्धित कार्यों में व्यस्त रहा और इससे उसका मिज़ाज ठण्डा रहा। उसमें स्त्रीत्व के प्रति घृणा, इस अफसोस से कि—कमजोरी मनुष्य का स्वभाव है, कुछ कम हो गई। सोफिया पावलोव्ना के पास अब आसानी से पहुँचा जा सकता है, यह विचार करते ही उससे मिलने की इच्छा और भी प्रबल हो उठी। धीरे-धीरे अज्ञात रूप से वह इस परिणाम पर पहुँचा कि उसे सोफिया

"अच्छा तो पिचल रही है," वह अपनी छोटी उंगली की अँगूठी को देखती हुई बोली।

"हाँ, हर जगह छोटे छोटे नाले हो गए हैं।" फ़ोमा ने अपने जूतों की नोंक को निहारा।

"यह बहुत अच्छी बात है। इसका मतलब है कि बसन्त आ रहा है।"

"काफी आ चुका है।"

"बसन्त आ रहा है," सोफ़िया पावलोव्ना ने धीरे से दुहराया मानो वह अपने शब्दों की आवाज को परख रही हो।

"लोगों के प्रेम व्यापार का समय आ गया है," अपने दोनों हाथों को तेजी से रगड़ते हुए फ़ोमा हँसा।

"क्या तुम प्रेम में फँसने वाले हो ?" सोफिया पावलोव्ना ने रूखेपन से पूछा।

"ओह, नहीं, मैं तो बहुत पहिले ही प्रेम में फँस चुका हूँ। जीवन भर के लिये फंस चुका।"

तीक्ष्ण दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए वह बोली :

"तुम कितने सौभाग्यशाली हो जो अभी जीवन प्रारम्भ कर रहे हो," उसने कुछ सोचा, फिर तारों को छेड़ती हुई बोली "एक सबल हृदय जिसमें किसी का प्रतिविम्ब नहीं।"

"सोफ़िया पावलोव्ना !" फ़ोमा धीरे से बोला।

उसने फ़ोमा को अपनी कोमल भाव भंगिमा से रोका।

"ठहरो, मेरे प्यारे बच्चे। आज मैं तुम्हें कुछ बात बतलाना चाहती हूँ। अच्छी, बहुत अच्छी।

"जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं कि अपने जीवन में कितने ही उतार चढ़ाव देख चुकने वाला मनुष्य जब अपने हृदय को टटोलता है तो अंतःकरण के किसी कोने में वर्षों से संचित, छिपी एवं विस्मृत किंतु उस लम्बी अवधि में भी यौवन की सुगन्धि से पूर्ववत् सुगन्धित ऐसी वस्तुएं मिल जाती हैं जिनकी

प्राप्ति की कोई आशा नहीं होती। और जब स्मृति उन्हें प्रकाशित करती है तब ऐसा लगता है मानो कि व्यक्ति ने प्रातःकाल की ताजी हवा—जीवन के प्रभात का पान किया है।"

उसकी उंगलियों के नीचे मन्दोलिन के तार सिसकियाँ भर रहे थे। उनसे पैदा हुई ध्वनि और उसकी आवाज का उसके भावों पर प्रभाव होने लगा। वह एक भी शब्द न समझते हुए उसके शब्दों को धैर्य से सुनने लगा।

"कहे जाओ, तुम कहे जाओ परन्तु जो कुछ भी तुम कह रही हो उस पर अब मैं विश्वास नहीं कर रहा," उसने अपने निश्चय को दृढ़ रखते हुए सोचा।

इससे वह और भी भड़क उठा। उसे दुःख था कि वह पहले की तरह विश्वास के साथ उसकी बातें नहीं सुन सकेगा।

'तुम कभी सोचते हो कि तुम्हें कैसे रहना चाहिये ?" सोफिया पावलोव्ना ने पूछा।

"हाँ, कभी २ सोचता हूँ। परन्तु देर तक नहीं। मेरे पास समय ही नहीं है," फ़ोमा तनिक हँसी के साथ बोला : "और इसमें सोचने की क्या जरूरत है जब तुम इसमें जा ही रहे हो ? तुम अपनी ही तरफ देखो और दूसरों को देखो कि वे कैसे रहते हैं तथा उन्हीं के अनुसार आचरण करो।"

"ओह, ऐसा कभी मत करो ! अपने ऊपर दया करो। तुम एक ऐसे—ऐसे अच्छे आदमी हो। तुम औरों ने भिन्न हो। मुझे नहीं मालुम कि कैसे भिन्न हो, परन्तु अनुभव करती हूँ। मुझे डर है कि तुम्हें इस संसार में अपना जीवन ऐसा प्रतीत होने लगेगा। मुझे इसमें भी विश्वास है कि तुम अपनी श्रेणी के लोगों के सामान्य रास्ते पर नहीं चलोगे। तुम्हारे लिये यह भी असम्भव है कि तुम पैसा पैदा करने से ही संतुष्ट रहो। ओह, बिल्कुल नहीं, तुम इसके अलावा कुछ और चाहते हो; क्या ऐसी बात नहीं है ?"

वह तेजी से कहती चली गई। उसकी आँखों में भय का चिह्न था।

"यह क्या कहना चाहती है ?" फोमा ने उसकी ओर देखते हुए सोचा।

वह और उसके नज़दीक खिसक आई और उसके चेहरे को देख लगी।

"तुम अपना जीवन दूसरे तरीके पर ढालो," उसने गम्भीरता से कहा "तुम नौजवान, बलवान और बहुत अच्छे हो।"

"यदि मैं अच्छा हूँ, तो औरों को भी मेरे साथ अच्छा होना चाहिये,' फ़ोमा अपने दिल की धड़कन और उत्तेजना को अनुभव करते हुए बोला।

"इस संसार में बुरों की बजाय अच्छे लोगों के साथ दुर्व्यवहार अधिक होता है", सोफिया पावलोव्ना उदास होकर बोली।

उसकी उङ्गलियों के नीचे से तारों की झंकारें फिर काँपने लगीं। फ़ोमा जानता था कि यदि उसने अपने दिल की बात अब नहीं कही तो वह बाद में फिर कभी भी न कह सकेगा।

"परमात्मा, मेरी मदद करो!" उसने मन ही मन कहा और फिर अपनी छाती में एक खिचाव का अनुभव करते हुए वह साहस करके बोला:

"सोफिया पावलोव्ना! बहुत हो चुका! मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता था। खास तौर से कहना चाहता हूँ: मेरे तुम्हारे बीच बहुत हो चुका! तुम्हें मेरे साथ सच्चा और ईमानदार होना चाहिये—सच्चा और ईमानदार। पहले तुमने हर बात में कोशिश की कि मैं तुम्हें चाहूँ, और अब तुम मुझसे किनारा करना चाहती हो। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आतीं, मेरी बुद्धि मन्द है। परन्तु फिर भी इतना जानता हूँ कि तुम मुझसे छिपाव कर रही हो, और मैं यह भी देख रहा हूँ कि तुम जानती हो कि मैं किसलिये आया हूँ।"

उसकी आँखें चमक रही थीं और प्रत्येक शब्द के साथ उसकी आवाज तेज और अधिक सच्ची दीख रही थी।

"ओह! ऐसा मत कहो", अकस्मात् आगे की ओर बढ़कर, भयभीत स्वर में वह बोली।

"ओह, नहीं! अब जब मैंने शुरू ही कर दिया तो उसे पूरी तरह कहूँगा।"

"मैं जानती हूँ कि तुम क्या कहने वाले हो।"

"तुम कुछ नहीं जानतीं", फ़ोमा उठकर डराता हुआ बोला : "परन्तु मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ पता है ! सब कुछ !"

"अच्छा ! तो मेरे लिये यह और भी अच्छी बात है", सोफिया पावलोव्ना बिना अशान्त हुए बोली।

वह भी खड़ी हो गई जैसे कि चलने वाली हो, परन्तु एक क्षरण सोच-कर वह फिर बैठ गई। उसका चेहरा गम्भीर हो गया, ओठ भिंच गये और आँखें नीची हो गई, जिससे फ़ोमा उनके भावों को न समझ सका। उसने सोचा था कि उसके कहने से कि : "मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूँ !" वह भयभीत और लज्जित हो जायेगी, और घबरा कर उसके साथ खिलवाड के कारण क्षमा याचना करेगी। और उस समय वह उसे अपनी बाँहों में आलिंगन कर लेगा और क्षमा कर देगा। परन्तु यह नहीं हुआ। इसके विपरीत उसकी अविचल और अडिग दृष्टि के आगे वह अपने आप घबरा गया और उसके चेहरे की ओर खडा घूरने लगा तथा उन शब्दों को तलाश करने लगा, जिन्हें वह ढूँढ़ नहीं सकता था।

"तो यह और भी अच्छा है", सोफिया पावलोव्ना ने दृढ़तापूर्वक रूखेपन से दोहराया : "अर्थात् तुम सब कुछ जानते हो, क्यों ? स्वभावतः तुम मेरे बारे में बुरा ही सोचते हो, आशा भी यही थी। मैं समझती हूँ। मैंने तुम्हारे साथ बुरा किया—परन्तु—नहीं, मैं इसके लिये बहानेबाजी नहीं करूँगी।"

वह चुप हो गई, फिर अचानक अपने माथे को पकड़ा, और अपने बालों की पिनें और अन्दर घुसा दीं।

फ़ोमा ने गहरी साँस ली। सोफिया पावलोव्ना के अन्तिम शब्दों ने उसके हृदय में उठी आशा को समाप्त कर दिया। वह आशा मर गई जिसका उसे समाप्त होने के बाद पता लगा। सिर हिला कर उसने कटुता से कहा :

"कितनी बार मैंने तुम्हें देखा है और मन ही मन सोचा है कि तुम कपोती की तरह सुन्दर और कोमल हो। और अब तुम यहाँ मेरे सामने

वह ग्रौर उसके नज़दीक खिसक ग्राई ग्रौर उसके चेहरे को देखने लगी।

"तुम ग्रपना जीवन दूसरे तरीके पर ढालो," उसने गम्भीरता से कहा: "तुम नौजवान, बलवान ग्रौर बहुत ग्रच्छे हो।"

"यदि मैं ग्रच्छा हूँ, तो ग्रौरों को भी मेरे साथ ग्रच्छा होना चाहिये," फ़ोमा ग्रपने दिल की धड़कन ग्रौर उत्तेजना को ग्रनुभव करते हुए बोला।

"इस संसार में बुरों की बजाय ग्रच्छे लोगों के साथ दुर्व्यवहार ग्रधिक होता है", सोफिया पावलोव्ना उदास होकर बोली।

उसकी उङ्गलियों के नीचे से तारों की झंकारें फिर काँपने लगीं। फ़ोमा जानता था कि यदि उसने ग्रपने दिल की बात ग्रब नहीं कही तो वह बाद में फिर कभी भी न कह सकेगा।

"परमात्मा, मेरी मदद करो!" उसने मन ही मन कहा ग्रौर फिर ग्रपनी छाती में एक खिचाव का ग्रनुभव करते हुए वह साहस करके बोला:

"सोफिया पावलोव्ना! बहुत हो चुका! मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता था। खास तौर से कहना चाहता हूँ: मेरे तुम्हारे बीच बहुत हो चुका! तुम्हें मेरे साथ सच्चा ग्रौर ईमानदार होना चाहिये—सच्चा ग्रौर ईमानदार। पहले तुमने हर बात में कोशिश की कि मैं तुम्हें चाहूँ, ग्रौर ग्रब तुम मुझसे किनारा करना चाहती हो। तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं ग्रातीं, मेरी बुद्धि मन्द है। परन्तु फिर भी इतना जानता हूँ कि तुम मुझसे छिपाव कर रही हो, ग्रौर मैं यह भी देख रहा हूँ कि तुम जानती हो कि मैं किसलिये ग्राया हूँ।"

उसकी ग्राँखें चमक रही थीं ग्रौर प्रत्येक शब्द के साथ उसकी ग्रावाज तेज ग्रौर ग्रधिक सच्ची दीख रही थी।

"ग्रोह! ऐसा मत कहो", ग्रकस्मात् ग्रागे की ग्रोर बढ़कर, भयभीत स्वर में वह बोली।

"ग्रोह, नहीं! ग्रब जब मैंने शुरू ही कर दिया तो उसे पूरी तरह कहूँगा।"

"मैं जानती हूँ कि तुम क्या कहने वाले हो।"

"तुम कुछ नहीं जानतीं", फ़ोमा उठकर डराता हुआ बोला : "परन्तु मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ पता है ! सब कुछ !"

"अच्छा ! तो मेरे लिये यह और भी अच्छी बात है", सोफिया पावलोव्ना बिना अशान्त हुए बोली।

वह भी खड़ी हो गई जैसे कि चलने वाली हो, परन्तु एक क्षण सोचकर वह फिर बैठ गई। उसका चेहरा गम्भीर हो गया, ओठ भिंच गये और आँखें नीची हो गईं, जिससे फ़ोमा उनके भावों को न समझ सका। उसने सोचा था कि उसके कहने से कि : "मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानता हूँ !" वह भयभीत और लज्जित हो जायेगी, और घबरा कर उसके साथ खिलवाड के कारण क्षमा याचना करेगी। और उस समय वह उसे अपनी बाँहों में आलिंगन कर लेगा और क्षमा कर देगा। परन्तु यह नहीं हुआ। इसके विपरीत उसकी अविचल और अडिग दृष्टि के आगे वह अपने आप घबरा गया और उसके चेहरे की ओर खड़ा घूरने लगा तथा उन शब्दों को तलाश करने लगा, जिन्हें वह ढूँढ़ नहीं सकता था।

"तो यह और भी अच्छा है", सोफिया पावलोव्ना ने दृढ़तापूर्वक रूखेपन से दोहराया : "अर्थात् तुम सब कुछ जानते हो, क्यों ? स्वभावतः तुम मेरे बारे में बुरा ही सोचते हो, आशा भी यही थी। मैं समझती हूँ। मैंने तुम्हारे साथ बुरा किया—परन्तु—नहीं, मैं इसके लिये बहानेबाजी नहीं करूँगी।"

वह चुप हो गई, फिर अचानक अपने माथे को पकड़ा, और अपने बालों की पिनें और अन्दर घुसा दीं।

फ़ोमा ने गहरी साँस ली। सोफिया पावलोव्ना के अन्तिम शब्दों ने उसके हृदय में उठी आशा को समाप्त कर दिया। वह आशा मर गई जिसका उसे समाप्त होने के बाद पता लगा। सिर हिला कर उसने कटुता से कहा :

"कितनी बार मैंने तुम्हें देखा है और मन ही मन सोचा है कि तुम कपोती की तरह सुन्दर और कोमल हो। और अब तुम यहाँ मेरे सामने

स्वीकार कर रही हो कि तुमने मेरे साथ बुरा किया है, ओफ !" वह अचानक रुक गया।

"तुम कितने सुन्दर हो, और कितने मनोरंजक !" स्त्री ने हल्की मुस्कान से कहा।

फ़ोमा ने अनुभव किया कि वह उसके शब्दों की मधुरता और उसकी मुस्कान की आर्द्रता से निरस्त्र हो गया है। उसके हृदय के बरफानी ठण्डे भाव अब सोफिया पावलोव्ना की उष्ण दृष्टि से पिघलने लगे। वह एक छोटे अबोध अशरण बच्चे के समान दिखाई देने लगी। वह हँसती रही और अपनी मधुर अनुरोधपूर्ण हृदयग्राही शैली में बोलती रही। परन्तु फ़ोमा उसकी बातों को नहीं सुन रहा था।

"मैं निश्चय करके आया था कि तुम पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा", वह बोला : "मैंने अपने हृदय में सोचा कि जो मैं सोचता हूँ, कह दूँगा। परन्तु मैंने अभी कुछ भी नहीं कहा है और मैं कहना भी नहीं चाहता। अब मुझमें साहस नहीं। तुम मुझ पर कोई मोहक मन्त्र फेंक देती हो। ओह, मेरी तुमसे मुलाकात ही क्यों हुई ! तुम मेरी कौन होती हो ! मैं जानता हूँ कि मुझे तुमसे दूर होना पड़ेगा।"

"ठहरो, अभी मत जाओ", स्त्री ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए जल्दी में कहा : "क्या कारण है कि तुम मेरे साथ इतने-इतने कठोर हो। मुझसे नाराज न होओ। मैं तुम्हारे लायक नहीं हूँ। तुम्हें और प्रकार की औरत चाहिये—जो तुम्हारी ही तरह सीधी-सादी और स्वस्थ हो। एक ऐसी स्त्री जो आनन्दप्रिय और साहसी हो। मेरी अवस्था काफी खिच चुकी है, मेरा काम बैठने और ऊँघने के अलावा रह ही क्या गया है—मेरा जीवन नीरस और रिक्त है-भयङ्कर रूप से रिक्त है। यह बात उस मनुष्य के लिये बड़ी भयानक है जो आमोद-प्रमोद का पूर्ण अभ्यासी हो चुका हो और उसे पता चले कि अब उसे कोई चीज आनन्दित नहीं कर सकती। फिर वह जीवन पर नहीं हँसता परन्तु जीवन उस पर हँसता है। और, लोगों के बारे में यह

है""""ओह, तुम मेरी बातों को ऐसे सुनो जैसे कि मैं तुम्हारी माँ हूँ ! मैं तुम्हें सावधान करती हूँ, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम अपने हृदय की बात के अलावा और किसी बात को न मानना ! जैसे तुम्हारा दिल कहता है वैसे ही जीवन बिताओ। लोगों को कुछ नहीं पता, वे तुम्हें कोई सच्ची सलाह नहीं दे सकते। उन पर ध्यान मत दो।"

अपने कथन को यथासम्भव स्पष्ट करने के इस प्रयत्न में उसके शब्द एक असम्बद्ध तेज धारा के रूप में निकलने लगे। परन्तु इस बीच उसकी करुण मुस्कान उसके ओठों पर छाई रही।

"जीवन कठोर है : वह मजबूर करता है कि लोग उसकी माँगों के आगे झुकें। केवल बलवान् मनुष्य ही उसका सामना करने और उसके दण्ड से बचने में समर्थ हैं। और क्या वह भी बच सकते हैं ? ओह ! अगर तुम जानते कि इस संसार में जीना कितना कठिन है। एक मनुष्य अपने से डरने के लिये भी मजबूर हो जाता है। उसमें न्यायाधीश और अपराधी का दुहरा व्यक्तित्व आ जाता है। वह सदा अपने को दोषी ठहराता है और अपनी पैरवी करता है। तथा स्वयं एकांत से बचने के लिये दिन-रात उन लोगों में बिताना चाहता है, जिनसे कि वह घृणा करता और जिन्हें दूषित समझता है।"

सिर उठाकर आश्चर्य एवं अविश्वास से फ़ोमा ने कहा :

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम ऐसी बातें क्यों करती हो ! ल्यूवा भी ऐसी ही बातें करती है।"

"ल्यूवा कौन ? वह क्या कहती है ?"

'वह मेरी धर्म-बहिन है। वह भी ऐसी ही बातें—जीवन के बारे में शिकायतें करती रहती है। कहती है कि जीता रहना असम्भव है।"

"कितने आनन्द की बात है कि वह भी यही बातें करती है !"

"आनन्द ? बहुत अच्छा आनन्द, जो एक व्यक्ति को सिसकने और शिकायतें करने को कहे !"

"जो वह कहती है उसे ध्यान से सुनो। शिकायतों में बड़ी बुद्धिमानी है। बुद्धिमता......पीड़ा है।"

बातें करते हुए फ़ोमा ने अपने चारों तरफ घबराहट से देखा। आज वही चिर-परिचित कमरा पहले से भिन्न दिखाई दे रहा था, यद्यपि उसमें पहले की ही तरह प्रचुर फर्नीचर पड़ा हुआ था। वही तस्वीरें टँगी हुई थीं और वही आलमारियाँ, उन्हीं चमकीली सुन्दर चीजों से सजी हुई थीं। लैम्प का लाल प्रकाश धुँधला, मलिन और उद्वेग-कारक हो रहा था। प्रत्येक चीज, कहीं इधर-उधर सुनहरी चौखटों और चीनी के बर्तनों को छोड़कर अँधकार से आवृत्त थी। दरवाजों पर भारी गतिहीन पर्दे लटक रहे थे। फ़ोमा इस सबसे उदास हो गया और उसे लगा कि वह एक भूल-भुलइयाँ में पड़ गया है। उसे इस स्त्री पर दया आती, परन्तु साथ ही वह उसे क्षुब्ध कर रही थी।

"क्या तुम मेरी बातें सुन रहे हो? मैं तुम्हारी बहिन या माँ बनना पसन्द करूँ हूँ। मैंने कभी ऐसा करुणामय और दया का भाव किसी के साथ नहीं रखा, जैसा तुम्हारे साथ है। फिर भी तुम मुझे विद्वेष से देखते हो। तुम्हें मुझ पर विश्वास है, या नहीं?"

"मैं नहीं जानता", फ़ोमा ने एक आह भरते हुए कहा: "एक समय था जब मैं तुम पर विश्वास करता था।"

"और अब?" उसने तुरन्त पूछा।

"अब", वह बोला: "यही अच्छा है कि मैं चला जाऊँ। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। मैं स्वयं भी नहीं समझ पा रहा। यहाँ आने से पहले मैं जानता था कि मुझे क्या कहना है? परन्तु अब सब राख में मिल गया है। तुमने मुझे झकझोर दिया है—व्याकुल कर दिया है। और, अब तुम कहती हो कि तुम मेरी माँ बनना चाहती हो। दूसरे शब्दों में इसका मतलब है, चले जाओ।"

"परन्तु क्या तुम नहीं देखते कि मुझे तुम पर दया आती है।" स्त्री ने धीरे से कहा।

उसके साथ-साथ फ़ोमा की व्याकुलता बढ़ने लगी, और जितना ही वह बोलता गया उतना ही उपहासास्पद बनता गया। वह अपने कन्धों को हिलाता रहा जैसे कि वह अदृश्य बन्धनों को काट कर फेंक रहा हो।

"दया ? मैं नहीं चाहता कि तुम मुझ पर दया करो। बस यदि मुझे आता कि मैं अपने दिल की बात कैसे कह सकूँ, तो मैं तुम्हें बतला देता कि मैं क्या सोच रहा था। तुमने मेरे साथ अच्छा नहीं किया। तुमने मेरे भावों को क्यों उभारा ? तुम समझती हो कि मैं एक खिलौना हूँ ?"

"मैं चाहती थी कि तुम मेरे नजदीक रहो", स्त्री ने अपराध स्वीकार करते हुए सरलता से कहा। किंतु वह उसकी बातें नहीं सुन रहा था।

"जब सब बातें चरम सीमा तक पहुँच गईं, तुम डर गई और हम दोनों के बीच एक दीवार खड़ी कर दी। तुम दुःखी होने लगीं; कहने लगीं कि इसमें जीवन का दोष है। तुम जीवन को क्यों दोषी ठहराती हो ? जीवन क्या है ? लोग—वही तो जीवन है। उनके अलावा जीवन में है ही क्या ? परन्तु तुम खुद बच निकलने और सिर्फ दूसरों को ही ठगने के लिये एक विभीषिका खोज रही हो। तुम अपना आनन्द ले लेती हो, और फिर तरह-तरह की प्रवंचनाओं में उलझ आहें भरने लगती हो। जीवन बुरा है, क्रूर है ! जीवन को बुरा किसने बनाया, तुमने नहीं तो किसने ? और अपने दोषों को, इन शिकायतों के पीछे छिपा-छिपा कर तुम दूसरों को विमूढ़ बनाती हो। तुम मुझे ग़लत रास्ते की तरफ क्यों ले जाने की कोशिश करती हो ? क्योंकि तुम—बदला—या और कुछ लेना चाहती हो ? 'यदि मुझे कष्ट है तो तुम्हें भी होना चाहिये।' क्या यह ऐसा ही है ? कितनी लज्जा की बात है ! परमात्मा ने तुम्हें देवियों जैसा सुन्दर बनाया है, परन्तु तुम्हारा दिल…?"

वह उसके सामने एड़ी से चोटी तक उसे अपराधी बनाने की नजर से निहारता और काँपता रहा। अब उसके मुँह से शब्द स्वतन्त्रतापूर्वक बाहर निकल रहे थे; वह धीरे २ परन्तु बलपूर्वक बोल रहा था और इसमें उसे आनन्द आ रहा था। स्त्री ने अपना सिर ऊँचा कर, फटी आँखों

से निहारा। उसके ओठ फड़क रहे थे और उससे उसके मुँह के दोनों ओर गहरी रेखाएँ बन रही थीं।

"यदि कोई मनुष्य सुन्दर है, तो उसे सुन्दरता से रहना चाहिये, परन्तु तुम्हारे बारे में लोग क्या कहते हैं...... ।" उसने हाथ हिलाया और चुप हो गया। फिर यकायक बोला : "नमस्कार।"

"नमस्कार", सोफिया पावलोव्ना ने धीरे से कहा।

वह उससे हाथ मिलाये बगैर मुड़ा और चल पड़ा। परन्तु ज्योंही वह दरवाजे तक पहुंचा, एक करुणा की चुभन ने उसे मुड़ कर देखने के लिये मजबूर किया। वह कोने में अकेली खड़ी थी, उसका सिर ढुलक रहा था और हाथ थकान से लटक गये थे।

उसने अनुभव किया कि वह इस प्रकार उससे बिना कुछ कहे नहीं जा सकता, और फिर वह झुके बिना घबराहट से बोला :

"यदि तुम्हारे भावों को मुझसे ठेस पहुँची हो तो मुझे क्षमा करना। आखिर मैं...मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ।" उसने एक आह भरी और वह स्त्री हँस दी। उसकी मुस्कराहट में अनोखापन था।

"नहीं, तुमने मेरे भावों को कोई ठेस नहीं पहुँचाई", वह बोली।

"अच्छा, फिर नमस्कार!" फ़ोमा और नम्रता से बोला।

"नमस्कार!" स्त्री गुनगुनाई।

फ़ोमा ने मनकों की लड़ियों को हटाया; वे आपस में खड़खड़ाईं और उनके गालों से टकरा गईं। वह उनके शीत स्पर्श से उचक पड़ा और भारी हृदय लिये चला गया, जो एक अनिवार्य जाल में फँसा हुआ फड़फड़ा रहा था।

अब रात हो चुकी थी। चन्द्रमा चमक रहा था और सर्दी से मार्ग की कीचड़ बर्फ की चन्दीली पपड़ी से ढक चुकी थी। जैसे ही वह पैदल मार्ग पर गया, फ़ोमा ने अपनी छड़ी बरफ पर मारी, जिससे एक दुखद कर्र-कर्र की आवाज निकली। सड़क पर घरों की वर्गाकार काली परछाई पड़ रही थी। नमूने ही अजब बन रहे थे, मानो कि पतली उँगलियाँ पृथ्वी को पकड़ रही हों।

पत्नी खोजने के लिये कह दूँ तो एक महीने के अन्दर वह मेरे साथ घर में रहने लगेगी। रहेगी और दिन-रात मेरे पास होगी। मैं कहूँगा : "चलो, घूमने चलें", तो वह चल देगी। मैं कहूँगा : "सो जाओ", तो वह सो जायगी। यदि वह चुम्बन करना चाहेगी, तो चाहे मैं न चाहता होऊँ तो भी व मेरा चुम्बन ले लेगी। यदि मैं कहूँगा : "जाओ, मैं तुम्हारा चुम्बन नहीं चाहता", तो वह दुःखी हो जायगी। मैं उससे क्या बातें करूँगा। उसने अपनी सब परिचित लड़कियों को मन ही मन स्मरण किया। उनमें से कुछ सुन्दर थीं, और सब उससे बड़ी प्रसन्नता से शादी कर लेतीं। परन्तु वह उनमें से किसी को भी अपनी पत्नी नहीं बनाना चाहता था······ नवयुवक और नवयुवती शादी के बाद सुहागरात के बिस्तर पर एकान्त में क्या बातें करते हैं ? फ़ोमा ने कल्पना की कि वह क्या कहेगा; किन्तु न सोच पाया और घबराहट में केवल मात्र हँस पड़ा। उसने ल्यूवा मायाकिन के बारे में सोचा : "निःसंदेह वह घबरायेगी नहीं, परन्तु उसके शब्द झूँठे और उधार लिये होंगे। उसका ख्याल था कि ल्यूवा के सब विचार उधार लिये हुए थे, और वह उन्हें उसकी आयु, रूप और शिक्षा वाली लड़कियों के लिये अनुचित समझता था। इसी समय वह ल्यूवा द्वारा की हुई शिकायतों को सोचने के लिये रुका। उसके कदम थोड़े से रुके और उसे इस तथ्य पर आश्चर्य हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति जिसके साथ वह अपने रहस्य का आदान—प्रदान कर सकता था, लगभग सब किसी न किसी रूप में, जीवन के बारे में बातचीत करते थे। उसका पिता, उसकी बुआ, उसका धर्मपिता, ल्यूवा, सोफिया पावलोव्ना—सब या तो जीवन की शिकायत करते थे और या उसे समझाने और उसे शिक्षा देने की कोशिश करते थे। उसे याद आया कि किस प्रकार जहाज पर उसने एक बुड्ढे को भाग्य के बारे में कहते सुना था, और उसके दिमाग में दूसरी आलोचना, टीका-टिप्पणियाँ और कटु शिकायतें आईं, जो उसने सुनी थीं।

"मुझे अचम्भा है कि, क्यों ?" उसने सोचा यदि लोग नहीं, तो जीवन क्या है ? परन्तु मैं सदा लोगों को कहते सुनता हूँ कि कोई एक ऐसी

पत्नी खोजने के लिये कह दूँ तो एक महीने के अन्दर वह मेरे साथ घर में रहने लगेगी। रहेगी और दिन-रात मेरे पास होगी। मैं कहूँगा: "चलो, घूमने चलें", तो वह चल देगी। मैं कहूँगा: "सो जाओ", तो वह सो जायगी। यदि वह चुम्बन करना चाहेगी, तो चाहे मैं न चाहता होऊँ तो भी व मेरा चुम्बन ले लेगी। यदि मैं कहूँगा: "जाओ, मैं तुम्हारा चुम्बन नहीं चाहता", तो वह दुःखी हो जायगी। मैं उससे क्या बातें करूँगा। उसने अपनी सब परिचित लड़कियों को मन ही मन स्मरण किया। उनमें से कुछ सुन्दर थीं, और सब उससे बड़ी प्रसन्नता से शादी कर लेतीं। परन्तु वह उनमें से किसी को भी अपनी पत्नी नहीं बनाना चाहता था...... नवयुवक और नवयुवती शादी के बाद सुहागरात के बिस्तर पर एकान्त में क्या बातें करते हैं? फ़ोमा ने कल्पना की कि वह क्या कहेगा; किन्तु न सोच पाया और घबराहट में केवल मात्र हँस पड़ा। उसने ल्यूवा मायाकिन के बारे में सोचा: "निःसंदेह वह घबरायेगी नहीं, परन्तु उसके शब्द झूँठे और उधार लिये होंगे। उसका ख्याल था कि ल्यूवा के सब विचार उधार लिये हुए थे, और वह उन्हें उसकी आयु, रूप और शिक्षा वाली लड़कियों के लिये अनुचित समझता था। इसी समय वह ल्यूवा द्वारा की हुई शिकायतों को सोचने के लिये रुका। उसके कदम थोड़े से रुके और उसे इस तथ्य पर आश्चर्य हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति जिसके साथ वह अपने रहस्य का आदान—प्रदान कर सकता था, लगभग सब किसी न किसी रूप में, जीवन के बारे में बातचीत करते थे। उसका पिता, उसकी बुआ, उसका धर्मपिता, ल्यूवा, सोफिया पावलोव्ना—सब या तो जीवन की शिकायत करते थे और या उसे समझाने और उसे शिक्षा देने की कोशिश करते थे। उसे याद आया कि किस प्रकार जहाज पर उसने एक बुड्ढे को भाग्य के बारे में कहते सुना था, और उसके दिमाग में दूसरी आलोचना, टीका-टिप्पणियाँ और कटु शिकायतें आईं, जो उसने सुनी थीं।

"मुझे अचम्भा है कि, क्यों?" उसने सोचा यदि लोग नहीं, तो जीवन क्या है? परन्तु मैं सदा लोगों को कहते सुनता हूँ कि कोई एक ऐसी

चीज है, जो उनसे बाहर है और उनके जीवनों को बरबाद करती रहती है।"

उसके हृदय को एक ठण्डे भय ने जकड़ लिया; वह काँपा और चारों तरफ देखने लगा। सड़क नीरव और निर्जन थी; घरों की काली खिड़कियाँ रात्रि के अन्धकार में घूर २ रही थीं, और फ़ोमा की छाया चोरी-चोरी उसके पीछे और बाड़ों से सरक रही थी।

"इज़वोश्चिक!" अपने क़दम तेज करते हुए उसने आवाज दी। उसकी काली परछाँई डरती हुई सी उसकी एड़ियों के पीछे निःशब्द चलती रही।

७

सोफिया पाव्लोव्ना की बातचीत के बाद एक सप्ताह तक उसकी मूर्ति दिन-रात उसके विचारों में मँडराने लगी, जिससे उसे अकथनीय हार्दिक वेदना होने लगी। वह बहुत चाहता था कि उसके पास जाये और मिले, वह उसके निकट होने की इच्छा से आक्रांत हो गया; परन्तु उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह इस इच्छा के सामने आत्मसमर्पण नहीं करेगा। उसने दाँत भींचे और अपने दिल और दिमाग से कारोबार में लग गया। यद्यपि वह मन ही मन उसके खिलाफ विरोध की आग को हवा देता रहा। वह सोचता था कि यदि अब वह उसके पास जाये तो शायद वह उसे बदला हुआ पाये, शायद उसकी बातचीत के बाद उसका दिल कुछ फिरा हो, और वह उसके प्रति पहले जैसा कोमल व्यवहार नहीं करे। उसकी मुस्कराहट में पहले की भाँति प्रसन्नता नहीं होगी—वह मुस्कान जो उसमें आश्चर्यजनक विचार और स्वप्न उत्पन्न करती थी। बस, यही भय था जो उसे अपनी इच्छा को रोकने और अपनी आन्तरिक वेदना को सहन करने में मजबूर कर रहा था। उसके कारोबार, तथा स्त्री के प्रति उसकी प्रबल कामना ने उसे जीवन पर विचार नहीं करने दिया। उसने इस पहेली को सुलझाने की, जो उसे लगातार चिन्ता-मग्न रखती थी, कोई कोशिश नहीं की—वह इसके लिये अयोग्य था। परन्तु वह दूसरे लोगों की वे बातें, जो वे जीवन के सम्बन्ध में कहते ध्यान से सुनने लगा। इसके बजाय कि वह सब बातों को साफ-साफ समझने की कोशिश करता, उसकी विमूढ़ता लगातार बढ़ती गई तथा इस कारण वह और सन्देही बनता गया। वह देखता था कि लोग

धूर्त, चतुर और चालाक हैं। उसे उनसे चौकन्ना रहना चाहिये। वह यह भी समझ गया कि जरूरी बातों में लोग अपने विचारों को कभी नहीं बतलाते और जितना उसने लोगों का अध्ययन किया, उतना ही वह उनके रोने, आहों और शिकायतों पर कम विश्वास करने लगा। वह धीरे-धीरे, परन्तु शंकित होकर, अपने आसपास की चीजों को समझता और धीरे २ एक छोटी किंतु अच्छी रेखा उसके मस्तिष्क पर उभर आई।

एक दिन प्रातः उसके धर्मपिता ने उससे स्टाक ऐक्सचेञ्ज में कहा :

"श्चुरोव यहाँ शहर में आया हुआ है। वह तुमसे मिलकर बातें करना चाहता है। आज रात को जाकर उससे मिलो परन्तु ध्यान रहे कि जबान पर काबू रहे—कारोबार का भेद जानने के लिये वह तुम्हारी जबान को बार २ खुलवाना चाहेगा। अनानी, बड़ी चालाक लोमड़ी है। वह एक ओर आसमान की तरफ आँखें मटकाता रहता है और चुपके से अपना पञ्जा डालकर, तुम्हारी सामने की जेब से तुम्हारा बटुआ चुरा लेता है। चौकस रहना।"

"क्या हम पर उसका कुछ कर्जा है ?" फ़ोमा ने पूछा।

"हाँ, हमने अभी माल ढोने वाली किश्ती का पैसा नहीं दिया है, और इसके अलावा कुछ सौ मन जलाने वाली लकड़ी भी आई थी। परन्तु वह तुमसे सारी रक़म एक साथ देने के लिये कहे, तो मत देना। पैसा एक चिपकने वाली चीज है; जितना ही देर तक यह तुम्हारे पास रहेगा, यह दूसरे पैसों को इकट्ठा करेगा।"

"परन्तु यदि वह माँगता है, तो हम इंकार कैसे कर सकते हैं ?"

"उसे रोने और माँगने देना, तुम भी सिसक सकते हो; मगर अपनी जेब बन्द रखना।"

अनानी साविच श्चुरोव, एक सम्पन्न लकड़ी का व्यापारी था। वह एक बड़ी आरा-मिल का मालिक था, माल ढोने वाली किश्तियाँ बनाता और ऊपर से बहाव में लकड़ियों के बेड़े भेजता। इग्नात के साथ उसका

लेन देन था, इसलिये फ़ोमा उससे बहुत बार मिल चुका था। वह देवदार की तरह एक लम्बा वृद्ध मनुष्य था। उसकी बाँहें लम्बी तथा दाढ़ी सफेद थी। उसका सुन्दर स्वस्थ शरीर, चौड़ा चेहरा और साफ़ नजर फ़ोमा के हृदय में सदा ही भय और आदर पैदा करते थे, यद्यपि उसने लोगों से सुन रखा था कि इस लकड़ी के व्यापारी ने अपनी सारी सम्पत्ति सच्चाई और ईमानदारी से पैदा नहीं की और यह कि वह दूर जङ्गल के एक गाँव में संदिग्ध जीवन व्यतीत करता था। फ़ोमा ने अपने पिता से यह भी सुना था कि श्चुरोव एक गरीब किसान था और वह एक फरार अभियुक्त को अपने गुसलखाने में छिपाकर रखता था जो उसके लिये जाली सिक्के बनाता था। इस प्रकार अपना जीवन शुरू करने में उसे सहायता मिली। एक दिन जब गुसलखाने में आग लग गई तो उसकी राख में मनुष्य का झुलसा हुआ शरीर मिला जिसकी खोपड़ी तोड़ी हुई थी। गाँव में यह भी अफवाह थी कि श्चुरोव ने अपने किसी मजदूर को मार कर उसका शरीर जला दिया था। इस प्रकार की बातें शहर के और बहुत से धनी लोगों के बारे में कही जाती थीं— जिन सबसे दिखलाई देता था कि उन्होंने अपनी लाखों की सम्पत्ति घात, चोरी और प्राय: जाली सिक्के बना कर अर्जित की है। फ़ोमा ने अपने बचपन के शुरू से ही ऐसी बातें सुनी हुई थीं परन्तु कभी इस बात पर गौर नहीं किया था कि वे सच्ची हैं या नहीं।

उसने यह भी सुना हुआ था कि श्चुरोव की दो पत्नियाँ मर चुकी हैं, उनमें से एक तो सुहागरात के आलिंगन में ही मर गई थी। इसके बाद उसने अपने बेटे की पत्नी को घर में रख लिया। उसका बेटा इस दु:ख में शराब के नशे में मरने लगा, परन्तु वह इर्गिस नदी पर एकान्तवास के द्वारा बच गया। जब यह स्त्री भी मर गई तो श्चुरोव एक बहरी, गूँगी, भिखारी लड़की के साथ रहने लगा; वह अभी भी उसके साथ रहता था, जिससे उसे मरा हुआ बच्चा पैदा हो चुका था। फ़ोमा उस रात श्चुरोव से मिलने के लिये उसके होटल की तरफ जाते हुए अपने पिता और दूसरे लोगों द्वारा कही गई बातें

सोच रहा था, और उनसे इस बुड्ढे के प्रति उसके दिल में अजब आकर्षण पैदा हो रहा था।

फ़ोमा ने होटल के छोटे से कमरे का दरवाजा खोला, जिसकी एक खिड़की पड़ौस के मकान की जङ्ग लगी छत की तरफ खुल रही थी। उसने देखा कि श्चुरोव अभी सो कर उठा है और वह बिस्तर पर एक पाटी को पकड़े हुए आगे को ऐसा झुका हुआ बैठा था कि उसकी सफेद दाढ़ी घुटनों तक लटक रही थी। इस प्रकार दुहरा होते हुए भी उसका डील-डौल विशाल था।

"कौन है ?" श्चुरोव ने बिना ऊपर देखे नाराज़गी से पूछा।

"मैं हूँ। अनानी सोविच, आपका स्वास्थ्य कैसा है ?"

वृद्ध मनुष्य ने धीरे से अपना सिर ऊपर को उठाया और अपनी आँखें सिकोड़ते हुए फ़ोमा की ओर देखा।

"अच्छा, इग्नात का बेटा ?"

"हाँ।"

"आओ, यहाँ खिड़की के पास बैठ जाओ। देखूँ तुम कैसे हो। कुछ चाय पिओगे ?"

"मुझे एतराज नहीं।"

"लड़के !" श्चुरोव ने पुकारा। फिर अपनी दाढ़ी को हाथ में थाम वह ध्यानपूर्वक फ़ोमा को देखने लगा, जिसने उसकी नजर का अडिग भाव से जवाब दिया।

वृद्ध मनुष्य के ऊँचे माथे में गहरी झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं; घुंघराले बालों के गुच्छे कनपटी और नुकीले कानों पर पड़ रहे थे; दोनों शान्त नीली आँखों से टपकती हुई बुद्धिमत्ता और कुलीनता ने उसके चेहरे के ऊपरी भाग को सँजो रखा था, परन्तु उसके ओठ मोटे और लाल थे और चेहरे की दूसरी चीजों के साथ जँचते भी नहीं थे। उसकी लम्बी पतली नाक आगे से ढलवाँ मुड़ी हुई थी, जैसे कि वह सफेद मूंछों में छिपना चाहती हो, और जब बुड्ढे के ओठ ऊपर को उठते थे तो उसके तेज पीले दाँतों की झलक मिलती थी। उसने एक गुलाबी सूती ब्लाऊज़ पहिन रखा था, जो कमर पर एक सफेद रेशम

की पट्टी से बँधा हुआ था और उसका चौड़ा काला पाजामा उसके ऊँचे जूतों में टंका हुआ था। वृद्ध मनुष्य के ओठों पर दृष्टि पड़ते ही फ़ोमा को विश्वास हो गया कि वह वैसा ही है जैसा कि लोग उसके बारे में कहते हैं।

"बचपन में तुम अपने पिता के समान अधिक लगते थे," श्चुरोव अचानक बोला और फिर कहने लगा : "अपने पिता को याद करते हो ? तुम उसके लिये प्रार्थना करते हो ? जरूर उसके लिये प्रार्थना करो" जब फ़ोमा ने उसे अपना संक्षिप्त उत्तर दे दिया, उसने आग्रहपूर्वक कहा: "इग्नात बड़ा पापी था, मरने से पूर्व प्रायश्चित भी न कर सका ; बहुत बड़ा पापी था।"

"औरों की अपेक्षा अधिक पापी नहीं था," फ़ोमा, अपने पिता के बारे में इस प्रकार कहने से नाराज़ होकर, बोला।

"उदाहरण के तौर पर कौन ?" श्चुरोव ने कठोरता से पूछा।

"बहुत से पापी हैं।"

"संसार में सिर्फ एक ही आदमी है, जो तुम्हारे दिवंगत पिता इग्नात से अधिक पापी है, और वह मक्कार तुम्हारा धर्मपिता याकोव है।" श्चुरोव ने बलपूर्वक कहा।

"आपको इसका पूरा विश्वास है," फ़ोमा तिरस्कारपूर्ण ठठोली में बोला।

"मैं जानता हूँ," श्चुरोव ने जरा सिर हिलाते हुए और स्याह पड़ते हुए कहा—"मेरे सिर पर परमात्मा के न्यायालय में जाते हुए अपने आप बड़ा बोझ है—पापों का बड़ा बोझ है। शैतान ने मुझ पर भी अपना असर डाला है। परन्तु मैं परमात्मा की दया में विश्वास करता हूँ। और याकोव स्वर्ग, नरक, भूत, प्रेत किसी में विश्वास नहीं करता; वह परमात्मा में भी विश्वास नहीं करता, हा याकोव नहीं करता। और इसलिए उसे इस जन्म में ही दंड मिलेगा।"

"और आपको विश्वास है कि ऐसा ही होगा ?"

"हाँ, मैं ऐसा ही सोचता हूँ, मैं देख रहा हूँ। तुम मुझ पर हंस रहे

हो—"तुम शायद अपने को पैगम्बर समझते हो। परन्तु, मेरे जैसा आदमी जिसने इतने पाप किये हों, बहुत कुछ सीख चुका है। पाप बहुत अच्छा शिक्षक है, यही कारण है कि याकोव मायाकिन हम सबसे अधिक बुद्धिमान् है।"

जैसे ही फ़ोमा ने उसकी खुरदरी और आत्मीयतापूर्ण आवाज को सुना वह सोचने लगा कि, "इसे पिताजी की मृत्यु का पहले ही पता लग गया है।"

होटल का लड़का, जो एक छोटा, मलिन मुख और पीले चेहरे वाला प्राणी था, समवार अन्दर लाया और कमरे में तेजी से काम करने लगा। इचुरोव खिड़की की चौखट के साथ पड़े हुए पैकटों में लग गया।

"तुम बहुत ढीठ हो," उसने फ़ोमा की ओर बिना देखे ही कहा, "तुम लोगों को कलुषित व मलिन दृष्टि से देखते हो। एक जमाना था जब लोगों की नज़रें प्रकाशपूर्ण थीं। उनकी आत्मायें भी हलकी और प्रकाशित थीं। उस जमाने में सब चीजें सीधी-सादी थीं—लोग भी सीधे-सादे थे और उनके पाप भी सीधे-सादे थे। आज कल हर एक चीज बड़ी पेचीदा हो गई है।"

उसने चाय बनाई और फ़ोमा के सामने मेज पर बैठ गया।

"तुम्हारा पिता (पानी का पंप चलाने वाला था, वह प्रारंभिक दिनों में एक माल ढोने वाली किश्ती पर था जिसने हमारे गाँव के पास लंगर डाला हुआ था)—तुम्हारी उमर में, मैं बताता हूँ, स्फटिक के समान स्वच्छ था—एक नज़र में ही कोई बता सकता था कि वह कैसा आदमी है। परन्तु जब मैं तुम्हें देखता हूँ, तो कह नहीं सकता कि तुम कौन हो और किसके समान हो, और तुम्हें अपने आप भी नहीं पता। यही तुम्हारी बरबादी का कारण होगा। आजकल के लोगों की बरबादी का कारण यही है कि उन्हें अपना ही पता नहीं। जीवन एक जङ्गल है, और इसमें तुम्हें अपना रास्ता तलाश करना है। लोग इस जंगल में अपना रास्ता खो बैठते हैं, जिससे शैतान को खुशी होती है। क्या तुम्हारा विवाह हो चुका है?"

"नहीं, अभी नहीं," फ़ोमा ने कहा।

"देखते हो ? तुम विवाहित नहीं, किन्तु शायद बहुत पहले ही भ्रष्ट हो चुके हो। क्या तुम कारोबार में भी अपना समय लगाते हो ?"

"मुझे करना पड़ता है। अभी मैं अपने धर्म-पिता के साथ काम कर रहा हूँ।"

"काम कर रहे हो। आजकल क्या काम रह गया है।" वृद्ध मनुष्य ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। कभी उसकी आँखों में एक चमक आती और बुझ जाती। वह बोला : "यह कोई काम नहीं ! पहले जमाने में व्यापारी देहातों में अपने घोड़ों पर सामान ले जाते थे। बर्फानी तूफान, अँधेरी रातें-कोई उन्हें नहीं रोक सकता था। रास्तों में उन्हें मारने की घात में डाकू लगे रहते थे। वे शहीदों की तरह मरते और अपने खून से अपने पापों का प्रायश्चित करते। आजकल वे रेल गाड़ियों में चलते हैं, और अपने दलालों को भेज देते हैं। और तुमने नई बात सुनी है ? एक आदमी अपने दफ़्तर में बैठा है, वर्स्त* पर उसकी बात सुनी जाती है। इसमें शैतान का हाथ है, कोई संदेह की बात नहीं। खाली बैठे रहने और ऊँघने से ही तो मनुष्य पाप करता है। आजकल मशीनें मनुष्य का काम करती हैं। वह आलसी बैठा रहता है, और आलस्य ही मनुष्य का विनाश है। वह मशीन के साथ लग जाता है, और बड़ा खुश होता है। परन्तु मशीनें ही तो शैतान का जाल हैं। जब मनुष्य काम में लगा होता है, तो वह कोई पाप नहीं करता। परन्तु मशीनों के साथ वह जैसा चाहे, करने में स्वतन्त्र है। स्वतन्त्रता मनुष्य को निश्चित् वैसे ही मार देती है, जैसे सूरज जमीन के अन्दर रहने वाले कीड़ों को। स्वतन्त्रता ही मनुष्य के विनाश का कारण है।"

अपने शब्दों को साफ-साफ कहने के बाद बुड्ढे श्चुरोव ने अपनी उङ्गलियों से मेज को चार बार खटखटाया, विजय की क्रूरता से उसका मुख दीप्त हो उठा, वक्ष फूल गया, छाती पर उसके चांदी की भाँति सफेद बाल हिलने लगे। उसको सुनते हुए फ़ोमा डरने लगा। उसके शब्द अडिग विश्वास के साथ उसके कानों में बजने लगे, जिससे कि वह नवयुवक व्याकुल सा हो

*वर्स्त — डेढ़ वर्स्त का एक मील।

गया। वह उसके बारे में सुनी गपशप को भी भूल गया, जिसे वह सच मान बैठा था।

श्चुरोव ने उसकी तरफ अजब तरीके से घूरा जैसे कि उससे परे कोई और बैठा हो, जो उसके शब्दों से भयभीत और दुःखी हो रहा हो, और जिसके भय और दुःख से उसे आनन्द आ रहा हो।

"और आजकल के तुम लोग अपनी स्वतन्त्रता से नष्ट हो जाओगे। तुम्हें शैतान ने पकड़ लिया है। उसने तुम्हारी मेहनत छीन ली है, और उसकी जगह मशीन और दलाल लगा दिये हैं। क्या कारण है, बाप के मुकाबले में बेटा खराब होता है ? बस स्वतन्त्रता। इस स्वतन्त्रता के कारण ही लोग शराब और चरित्र-भ्रष्टता की ओर चले जाते हैं।"

"ओह, परन्तु आजकल लोग बिल्कुल वैसे ही पीते हैं, वैसे ही चरित्र-हीन हैं जैसे कि पहले होते थे।" फ़ोमा ने धीरे से कहा।

"अपनी जबान बन्द करो !" श्चुरोव अपनी आँखों को भयङ्कर रूप से चमकाते हुए बोला : "उस जमाने में लोग बलवान् होते थे। वे अपनी शक्ति के अनुसार काम करते थे। उस समय लोग देवदार के समान शक्तिशाली होते थे। और परमात्मा उनका न्याय भी उनकी शक्ति के अनुसार करता था। उनके शरीर तोले जायेंगे और देवदूत उनके खून का अंश ले लेंगे। देवदूत इस बात का ध्यान रक्खेंगे कि पाप उनके शरीर और खून से न बढ़ जाएँ। परमात्मा मेमनों को निगलने से लिये भेड़िये को अपराधी नहीं ठहरायेगा, परन्तु यदि कोई क्षुद्र चूहा मेमने पर दाँत गाड़े तो परमात्मा उस चूहे को दण्ड देगा।"

"हम कैसे जानें कि परमात्मा के यहाँ हमारा न्याय होगा ?" फ़ोमा ने विचारपूर्वक कहा : "हमें एक न्यायालय की जरूरत है, यह सब जानते हैं...।"

"वे कैसे जानते हैं ?"

"ताकि वे समझ जायें।"

"और, परमात्मा के अलावा मेरा न्याय और कौन कर सकता है ?"

बुड्ढे की ओर एक ही बार देखकर फ़ोमा ने अपना सिर नीचा कर लिया और कुछ नहीं बोला। वह भगोड़े और फरार, श्चुरोव के बारे में सोचने लगा जिसके बारे में कहा जाता है कि किसी का घात कर उसे उसने अपने गुसलखाने में जला दिया था और इसका विश्वास इस कहानी की सच्चाई में फिर होने लगा और वह स्त्रियाँ—उसकी पत्नियाँ और रखेलें—निःसन्देह बुड्ढे ने अपने चुम्बन से उनका गला घोट दिया होगा, उन्हें अपनी भारी हड्डियों वाली भारी छाती के नीचे कुचल दिया होगा, और उनका खून अपने मोटे २ ओठों से पी लिया होगा जो अभी भी लाल थे जैसे कि उसकी मज़बूत बलिष्ठ बाँहों में मरी स्त्रियों का खून उन ओठों से न सूखा हो, और अब अपनी निकट-वर्ती मृत्यु की आशंका से वह अपने पापों का हिसाब कर रहा था, दूसरों के बारे में न्याय दे रहा था और कहता था कि परमात्मा के अलावा और कोई उसका न्याय नहीं कर सकता था।

"मुझे सन्देह है वह किसी से डरता भी है ?" फ़ोमा ने बुड्ढे को नीची नज़र से देखते हुए सोचा।

"नौजवान! जरा सोचो," श्चुरोव ने अपना सिर हिलाते हुए कहा—"जरा सोचो तुम्हें कैसे रहना चाहिये। मुझे इस संसार में रहते बहुत समय हो गया है—ओह कितना लम्बा अरसा! पेड़ उगे और कट गये; घर बने; पुराने हुए और ढचरा हो गये, और मैंने यह सब कुछ देखा और अभी भी जी रहा हूँ। मैं जब कभी अपने जीवन में पीछे की ओर देखता हूँ तो सोचता हूँ कि क्या एक मनुष्य के लिये जीवन में इतना काम करना सम्भव है। क्या सचमुच मैं इन सबसे गुजरता हुआ जीवित रह सका हूँ ? बुड्ढे ने फ़ोमा की तरफ कठोरता से देखा, अपना सिर हिलाया और फिर स्वप्नों में खो गया।

कमरे में नीरवता थी। छत पर कोई चीज तोड़ी जा रही थी। गाड़ियों के पहिये की खड़खड़ाहट और गली से आने वाली मिश्रित ध्वनियाँ कमरे में पहुँच रही थीं; मेज पर पड़ा समवार निराशापूर्ण आवाज कर रहा था।

श्चुरोव चाय के गिलासों को घूरता और अपनी दाढ़ी को थपथपाता बैठा था और जब वह सांस लेता तो फ़ोमा को लगता कि उसकी छाती में कुछ उबाल उठ रहा है।

"पिता के मरने के बाद जरूर तुम्हें कई दिक्कतें होंगी!" श्चुरोव अन्त में बोला।

"मैं उनका आदी हो रहा हूँ," फ़ोमा ने कहा!

"तुम धनी हो; जब याकोव मर जायेगा, तुम और धनी हो जाओगे। वह सब कुछ तुम्हारे लिये छोड़ जायेगा। उसके इकलौती लड़की है, और अच्छा हो कि तुम उससे शादी कर लो। इसकी परवाह न करो कि वह तुम्हारी धर्म-बहिन है या दूध-बहिन है। अब समय है कि तुम शादी कर लो—बिना शादी किये तुम कैसे रह सकते हो? कहीं तुम दुष्ट स्त्रियों के पास तो नहीं जाते?"

"नहीं।"

"मैं मानता हूँ," बुड्ढे ने ताना मारा—"ओह, व्यापारी-वर्ग आज-कल मर रहा है। एक लकड़ी के व्यापारी ने एक बार मुझसे कहा था—पता नहीं यह सच है या नहीं—कि सब कुत्ते पहले भेड़िये थे और बाद में वे भ्रष्ट होकर कुत्ते हो गये। यही बात हम सब लोगों के साथ दिखती है। हम भी जल्दी ही भ्रष्ट हो कुत्तों में बदल जायेंगे। अब हमने सिर पर तरह तरह की टोपियाँ डालना सीख लिया है, हम सब ऐसी बातें करते हैं जिनसे हम दूसरे लोगों के समान दिखने लगें। शीघ्र ही आने वाले जमाने में व्यापारी और दूसरे लोगों में भेद नहीं रहेगा। अब स्कूल, कालिजों में बच्चों को भेजने का रिवाज़ हो गया है। वहाँ उन सबको एक रंग में रंग दिया जायेगा—व्यापारियों के बच्चे, सरदारों के बच्चे और कारीगरों के बच्चे—सब एक हो जायेंगे। उन सबको खाकी पोशाक पहनाओ और एक जैसी बातें सिखाओ। लोगों को पेड़ों की तरह उगाओ। पता नहीं क्यों ऐसा हो रहा है? कोई नहीं जानता। तुम एक लकड़ी और दूसरी लकड़ी का फर्क उनकी गाँठों से बतला सकते हो परन्तु वे सब पर एक समान रंदा कर देना चाहते हैं। बस हम बुड्ढे लोगों के तो दिन अब

खत्म हो रहे हैं। शायद पचास साल बाद कोई विश्वास नहीं करेगा कि मैं इस पृथ्वी पर रहता था-मैं अनानी, सावा का बेटा, जिसके गोत्र का नाम श्चुरोव था—या यह कि मैं अनानी, परमात्मा के अलावा किसी से नहीं डरता था। और यह कि मैं अपनी जवानी में एक किसान था, जिसके पास सिर्फ सवा, दो देस्यातीन* जमीन थी और जब मैं अपनी बड़ी उमर तक पहुँचा मेरे पास ग्यारह हजार देस्यातीन जमीन थी, जो सारी जङ्गल से ढकी हुई थी। और जिसके पास इसके अलावा बीस लाख रूबल थे।"

"पैसा, पैसा— सब लोग पैसे की ही बात करते हैं," फ़ोमा ने चिढ़ते हुए कहा : "पैसे से मनुष्य को क्या प्रसन्नता मिलती है ?"

"हूँ–हूँ," श्चुरोव गुनगुनाया—"यदि तुम पैसे की शक्ति नहीं जानते तो तुम बड़े गरीब व्यापारी बनोगे।"

"इसे कौन जानता है ?" फ़ोमा ने पूछा।

"मैं जानता हूँ," श्चुरोव ने बड़े विश्वास के साथ कहा—"कोई भी समझदार आदमी यह जानता है। पैसा ! नौजवान, पैसा सब कुछ है। इसे अपने सामने फैला कर देखो कि इसकी क्या शक्ति है। तब तुम्हें पैसे की शक्ति पता लगेगी। पैसा ही दिमाग़ है। हजारों लोगों ने उस पैसे में जो आज तुम्हारे पास है, जीवन डाला है; और तुम चाहो तो चूल्हे में डाल कर इसे जलता देख सकते हो। और यदि तुम ऐसा करो तो तुम पैसे की शक्ति अनुभव कर सकते हो, ठीक।"

"परन्तु कोई ऐसा नहीं करता।"

"क्योंकि पैसा कभी वेबकूफों के पल्ले नहीं पड़ता। पैसा काम पर लगाया जाता है। इस काम से लोगों को रोटी मिलती है और तुम इन लोगों के मालिक होते हो। परमात्मा ने लोगों को क्यों बनाया है ? इसलिये कि वे उसकी प्रार्थना करें। प्रारम्भ में परमात्मा ही अपने आप था, और वह अकेला था। वह शक्ति चाहने लगा। और क्योंकि धर्मग्रन्थों में लिखा है कि

---

*देस्यातीन—रूसी भूमि का माप

मनुष्य परमात्मा की उसकी जैसी मूर्ति ही होगा। और मनुष्य ने भी शक्ति की कामना की। और इसके अलावा पैसा उन्हें दे ही क्या सकता है? यह ऐसी ही बात है, नौजवान......अच्छा तुम मेरा पैसा लाये हो या नहीं?"

"नहीं।" फ़ोमा ने कहा—बुड्ढे की बातें सुनकर उसका सिर भारी हो उठा था और चक्कर खाने लगा था। अब कारोबार का प्रसंग छिड़ने से उसे प्रसन्नता ही हुई।

"नहीं क्यों?" श्चुरोव ने त्यौरी चढ़ाते हुए कहा: "म्याद गुजर चुकी है, अब अदायगी का समय आ गया है।"

"कल मैं तुम्हें आधी रक़म दे दूँगा।"

"आधी? मुझे पूरी रक़म चाहिये।"

"आजकल हमें पैसे की बहुत जरूरत है।"

"और पैसा तुम्हारे पास है नहीं? परन्तु मुझे तो जरूरत है।"

"तुम्हें थोड़ा इन्तजार करना पड़ेगा।"

"ओ! नहीं, मेरे दोस्त, नहीं। तुम अपने पिता जैसे नहीं। तुम नौजवान छैल छबीलों का कोई भरोसा नहीं। तुम एक महीने में कारोबार को मिट्टी में मिला सकते हो, और मुझे नुकसान उठाना पड़ेगा। यदि कल तक तुमने सारी रक़म अदा नहीं की तो मुझे तुम्हारे प्रोनोट पर दावा करना पड़ेगा। इस बारे में, मैं दुबारा नहीं सोचूँगा।"

फ़ोमा इस आदमी को देखकर अचम्भा करने लगा। क्या यह वही आदमी है, जो अभी थोड़ी देर पहले एक सन्त की शकल में एक शैतान का बखान कर रहा था। उस समय इसका चेहरा भिन्न था, और वैसी ही उसकी आँखें थीं। अब उसकी नज़र में कठोरता और क्रूरता थी, और उसके नथुने की दोनों रगें लोलुपता से काँप रही थीं। फ़ोमा ने अनुभव किया कि यदि प्रोनोट की रक़म न दी गई तो श्चुरोव बिना किसी हिचकिचाहट के अदालत में उसकी फर्म का अपमान करेगा।

"सो, कारोबार का हाल ठीक नहीं?" श्चुरोव ने शिकायत की: "अच्छा इन बातों को जाने दो—तुमने अपना पैसा कहाँ बर्बाद कर दिया?"

अचानक फ़ोमा की इच्छा हुई कि इस मनुष्य की परीक्षा ली जाये। वह चिड़चिड़ाते हुए बोला : "आजकल हालत खराब है। आर्डर नहीं; एडवांस मिलता नहीं, और इसीलिये पैसे की भी छूट नहीं।"

"और तुम चाहते हो, मैं तुम्हारी मदद करूँ?"

"अगर तुम प्रोनोट की अवधि ज़रा बढ़ा दो.........", फ़ोमा ने नम्रतापूर्वक आँखें नीची करते हुए कहा।

"हाँ—हाँ! शायद तुम्हारे पिता के लिए? आएँ? अच्छा, शायद मैं कर दूँ।"

"कितने समय के लिये?" फ़ोमा ने पूछा।

"छः महीने के लिये।"

"मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ।"

"इसके बदले में कुछ नहीं? तुम्हें मुझे ग्यारह हजार छः सौ रूबल देने हैं। हम ऐसा करेंगे : तुम मुझे पन्द्रह हजार का नया प्रोनोट लिख दो, और इस पर जमानत के रूप में सूद अलग अगाऊ दे दो। तुम्हारी माल ढोने वाली किश्तियों को रहन रख लूँगा।"

फ़ोमा खड़ा हो गया और हँसता हुआ बोला : "कल मेरे पास अपना प्रोनोट भेज दीजिये, मैं आपकी सारी रक़म अदा कर दूँगा।"

फ़ोमा की परिहासपूर्ण दृष्टि को, श्चुरोव स्थिर हो देखता रहा। पावों पर जोर देकर वह खड़ा हुआ और उसने अपनी छाती खुजाई।

"यह और भी अच्छा है", वह बोला।

"आपकी कृपा के लिये बड़ा धन्यवाद।"

"मैं तुम पर कृपा करना चाहता था, परन्तु तुम करने ही नहीं देते", बुड्ढे ने चिड़चिड़ाते हुए कहा।

"परमात्मा उसकी रक्षा करे, जो एक बार तुम्हारे पंजे में फँस जाये।"

"मैं उसके लिये बहुत सहूलियतें दूँगा।"

"तुम उसके लिये बड़ी मुसीबतें कर दोगे।"

"बस, नवयुवक ! बहुत हो लिया !" श्चुरोव ने कठोरतापूर्वक कहा : "अभी बहुत जल्दी है कि तुम अपनी पीठ ठोको। हमारा खेल बराबर बराबर रहा। अभी बहुत समय है कि तुम अपनी जीत पर नाच सको। नमस्कार ! कल पैसा तैयार रखना।"

"निश्चय ! अच्छा, विदा !"

फ़ोमा ने दरवाजा बन्द करते ही सुना कि बुड्ढे ने लम्बी जम्हाई ली और एक गहरी, भारी आवाज में कहने लगा :

"हे पवित्र कुमारी, परमात्मा की माँ, स्वर्ग के द्वार खोल दो······।"

फ़ोमा के हृदय में दो भिन्न भावनायें उठीं—वह इस आदमी को चाहता भी था, परन्तु साथ ही नफरत भी करता था।

यह याद आते ही कि श्चुरोव ने पाप और परमात्मा की दया में अपने विश्वास की प्रचुरता का ज़िक्र किया था, वह उसका मान करने लगा।

"वह भी जीवन का ही ज़िक्र करता है, वह बिना रोये और शिकायत किये अपने पापों को स्वीकार करता है : 'मैंने पाप किये हैं और मैं उनका परिणाम भोगने को तैयार हूँ।' परन्तु वह······" सोफिया पावलोव्ना का विचार आते ही फ़ोमा दुःखी हो गया। "वह प्रायश्चित् करती है······और यह कहना बड़ा कठिन है कि वह सचमुच करती है या बहाना बनाती है।"

फ़ोमा एक तरफ इस मनुष्य से लगभग ईर्ष्या-सी करने लगा, परन्तु जब उसे याद आया कि वह उसे कैसे ठगना चाहता था, वह उससे घृणा करने लगा। इन दोनों विरोधी भावनाओं के बीच मेल करने में असमर्थ हो, वह मूर्खों की भाँति हँस दिया।

"मैं आज श्चुरोव से मिलने गया था।" उसने मायाकिन के घर में डाईनिंग रूम में बैठते ही कहा।

गिनती का चौखटा हाथ में लिये तथा ग्रीज के धब्बों से युक्त ड्रेसिंग गाऊन पहिने मायाकिन चमड़े से कसी आराम कुर्सी पर बैठा बड़ी अधीरता से मरोड़े खा रहा था।

"ल्यूबा ! इसके लिये चाय बनाओ। फ़ोमा ! मुझे बताओ कि तुम क्या कर आये ?" उसने उत्सुकता से कहा : "और ज़रा जल्दी कहो क्योंकि मुझे ९ बजे काउन्सिल में जाना है।"

फ़ोमा ने हँसते हुए कहा : "श्चुरोव कोशिश करना चाहता था कि मैं दूसरा प्रोनोट लिख दूँ।"

"छि:, छि: !" मायाकिन ने निराशा से सिर हिलाते हुए कहा : "तुमने इस बार सब कुछ खराब कर दिया, बेटा ! क्या कभी कोई कारोबारी आदमी इतनी जल्दी मान सकता है। ओह ! मैंने तुम्हें भेजा ही क्यों ? तुम्हारी जगह मुझे स्वयं ही जाना चाहिये था, मैं उसे अपनी उगली पर लपेट लेता !"

"मुझे इसका विश्वास है। वह कहता है, मैं देवदार जैसा बलवान् हूँ।"

"देवदार ! तो मैं आरा हूँ। देवदार एक बहुत अच्छा पेड़ है, परन्तु इसके फल तो सूअर ही खाते हैं। और इसमें ठोस लकड़ी ही तो होती है, देवदार !"

"परन्तु, हमें आखिरकार रक़म तो देनी ही है।"

"समझदार लोग कभी इन बातों में जल्दी नहीं करते। परन्तु तुम ऐसे नहीं—तुम सदा ही पैसा लिये आगे दौड़ते हो। अच्छे व्यापारी हो !"

मायाकिन अपने धर्मपुत्र से बहुत नाराज हो गया। उसके चेहरे की झुर्रियाँ उभरीं। फिर वह अपनी लड़की की ओर मुड़ा जो चाय ढाल रही थी।

"चीनी-दानी मेरी तरफ करना", उसने चिड़चिड़ाते हुए कहा : "क्या तुम देख नहीं रहीं कि यह मेरी पहुँच के बाहर है ?"

ल्यूबा पीली पड़ गई, उसकी आँखें मन्द पड़ गईं और हाथ धीमे तथा भद्दे तरीके से चलने लगे।

फ़ोमा ने सोचा, जब यह अपने पिता के साथ होती है तो मेमने की तरह दब्बू हो जाती है।

"और उसने तुमसे क्या बातें कीं", मायाकिन ने पूछा।

"पापों के बारे में।"

'ओह, हाँ! लोग अपनी विशेषताओं के बारे में बहुत बातें करते हैं। वह पापों की एक फैक्टरी चला रहा है। बहुत दिन पहले से ही वह जेलों में सड़ता होता। और नरक में भी उसको आवाजें पड़ रही हैं। जब तक वह वहाँ पहुँच नहीं जायगा, वे बन्द नहीं होंगी।"

"उसकी कही गई बातों में वजन है", अपनी चाय हिलाते हुए फ़ोमा ने सोचकर कहा।

"उसने मेरी भी मखौल की होगी?" मायाकिन ने धूर्त्ततापूर्ण हँसी में पूछा।

"हाँ, की।"

"और तुम?"

"मैं सुनता रहा।"

"हूँ, वह क्या बोला?"

"कि, बलवानों के पापों को माफ कर दिया जायेगा, परन्तु निर्बलों को नहीं किया जायेगा।"

"वाह! इतनी बात तो एक मक्खी भी जानती है!"

फ़ोमा श्चुरोव के प्रति अपने धर्मपिता की घृणा से किसी कदर नाराज सा हो गया।

"वह तुमसे प्रेम नहीं करता", मायाकिन की ओर सीधा देखता हुआ वह हँसा।

"मुझसे कोई प्यार नहीं करता", मायाकिन ने अभिमान से कहा और कोई कारण नहीं कि लोग मुझे प्यार करें, मैं कोई सुन्दर स्त्री तो हूँ नहीं, जो लोग प्यार करें। सब मेरा मान करते हैं। और लोग मान उसी का करते हैं, जिससे डरते हैं।" बुड्ढे ने गर्व से अपने धर्मपुत्र की ओर आँख मारी।

"श्चुरोव जो कहता है, उसमें वजन है", फ़ोमा ने दोहराया। "वह शिकायत कर रहा था कि व्यापारी वर्ग मर रहा है, सब लोगों को एक

जैसी तालीम दी जा रही है, जल्दी ही लोगों में भेद नष्ट हो जायेगा—और वे एक जैसे हो जायेंगे।"

"और वह इन सब बातों को पसन्द नहीं करता? मूर्ख कहीं का।" मायाकिन ने जलते हुए कहा।

"आप पसन्द करते हैं?" फ़ोमा ने अपने धर्मपिता की ओर दुविधा से देखते हुए पूछा।

"भिन्न-भिन्न लोगों को एक साथ एक जगह पर इकट्ठा करके उनके अन्दर एक ही भावना पैदा करना बहुत बुद्धिमत्ता की बात है, क्योंकि राज्य की दृष्टि में एक आदमी क्या है? एक ईंट जैसा, मामूली ईंट जैसा, और सब ईंटें एक आकार और एक तरह की होनी चाहियें। जब लोग एक आकार और एक तरह के हो जायेंगे, तब उनका चाहे, जो कुछ भी, बनाया जा सकता है।"

"आप अपने को एक ईंट की शक्ल में देखकर खुश तो नहीं होंगे?" फोमा ने नाराज़गी से कहा।

"मैं खुश न होऊँ, परन्तु यह व्यावहारिक तो है। तुम सबका चेहरा नहीं उड़ाया जा सकता, परन्तु सख़्त हथौड़े की चोट उनमें से कुछ को सोने में बदल सकती है। और जो हथौड़े की चोट के नीचे टूट जाते हैं, उनका क्या इलाज—इसका यही मतलब है कि वे शुरू से ही कमजोर थे।"

"और वह काम के बारे में भी शिकायत कर रहा था—कहता था कि आजकल के लोग निठल्ले और खराब हो रहे हैं; मशीनें उनका काम कर रही हैं।"

"वह इस तरह हमेशा ही अपनी नाक की तलाश में दूर-दूर, इधर-उधर चक्कर काटता है", मायाकिन निरादरपूर्वक हाथ हिला कर बोला: "मगर आश्चर्य तो यह है कि तुम ये सब बेहूदी बातें कैसे बटोर लाते हो। मशीनें! क्या उस बुड्ढे खुर्राट ने कभी सोचा है कि मशीनें किसकी बनी हैं? लोहे की! दूसरे शब्दों में तुम्हें उनसे बकझक नहीं करनी पड़ती—उन्हें

घुमाना शुरू करो और बिना किसी रगड़े-झगड़े के या सोचे समझे वे रूबल निकालना शुरू कर देती हैं—जरा बटन दबाओ और देखो उनके पहिये कैसे चलते हैं ? परन्तु मजदूर, वह हमेशा ही दुःखी है, असन्तुष्ट है—कभी कभी तो बहुत ही दुःखी हो जाता है—रोता है, सिसकता है, कराहता है, आहें भरता है और मदहोश होने तक शराब पीता है। मजदूर में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनसे मैं उनके बिना ही रहना चाहता हूँ। परन्तु, मशीन एक गज के समान है—यह वैसी ही रहती है जैसी होनी चाहिये, न कम, न ज्यादा······परन्तु, अब मेरा समय हो गया, मुझे कपड़े पहन कर जाना चाहिए।"

वह उठा और पैर में पड़ी हुई चप्पलों से फर्श पर आवाज करता हुआ बाहर चला गया।

"शैतान भी इनकी बातों का सिर पैर नहीं समझ सकता," उसे जाता देख फ़ोमा चिढ़कर गुनगुनाया। "एक कुछ कहता है दूसरा कुछ—"

"यही किताबों के साथ बात है," ल्यूबा धीरे बोली।

सज्जनता से उसकी ओर देखकर फ़ोमा मुस्कराया। ल्यूबा ने भी हिचकिचाते हुए उसकी मुस्कान का जवाब दिया। उसकी नजर में एक प्रकार की थकान और विषाद था।

"पहले की ही तरह पढ़ रही हो ?" फ़ोमा ने पूछा।

"हाँ," वह बिना किसी खुशी के बोली।

"वैसे ही ऊँघ रही हो, स्वप्न ले रही हो ?"

"बहुत बुरी तरह। क्योंकि, मैं अकेली हूँ। मेरे पास कोई नहीं, जिससे मैं बात कर सकूँ।"

"तुम्हारी बहुत बुरी हालत है।"

वह कुछ न बोली, और अपना सिर नीचा कर तौलिये की जाली पर उंगलियाँ फेरने लगी।

"तुम्हें शादी कर लेनी चाहिये," फ़ोमा ने उसके प्रति हार्दिक सच्ची सहानुभूति से कहा।

"ओह, बन्द भी करो इसे !" वह अपनी भौंहों को बड़े भद्दे तरीके से झपका कर बोली।

"बन्द क्या ? किसी न किसी दिन तो तुम्हारी शादी होनी ही है।"

"हाँ, शायद," ल्यूबा ने आह भरी। "मैं भी सोचती हूँ करलूँ, परन्तु, कैसे ? मैं अनुभव करती हूँ कि, मेरे और अन्य लोगों के बीच एक गहरे धुन्ध की दीवाल खड़ी हुई है।"

"किताबों के ही कारण यह हुआ है।" फ़ोमा ने विश्वास से कहा।

"ठहरो। अब मेरी समझ में कुछ नहीं आता। यह सब घृणित हो रहा है। कोई बात ऐसी नहीं हो रही जैसी होनी चाहिये। मैं यह सब देख रही हूँ, परन्तु तुम्हें बता नहीं सकती कि क्या खराबी है, और क्यों है।"

"वैसी नहीं जैसी होनी चाहिये," फ़ोमा गुनगुनाया। "मैं कहता हूँ कि, यह किताबों के ही कारण हैं। किन्तु मुझे भी ऐसा लगता है कि जैसा होना चाहिये वैसा कुछ भी नहीं होता। शायद इसलिये हमारी अवस्था अभी उन सब के योग्य नहीं।"

"पहिले पहिल मैं सोचती थी कि, किताबें मुझे बातों के समझने में मदद करेंगीं," ल्यूबा उसकी बातों की उपेक्षा करती हुई बोली।

"तुम अपनी इन किताबों को बिल्कुल भुलादो।" तिरस्कार से फ़ोमा ने कहा।

"क्या बात कह रहे हो ? जैसे इन्हें भुलाया भी जा सकता है ! तुम्हें विश्वास नहीं होगा कि संसार में अनेकों भिन्न विचार हैं। इनमें से कुछ बड़े उग्र हैं। उदाहरणार्थ एक किताब में लिखा है कि संसार की प्रत्येक चीज का कोई मूल भूत आधार अवश्य होता है।"

"हर चीज़ का ?"

"हर चीज का ! और दूसरी किताब में बिल्कुल इसका उलटा कहा हुआ है।"

"देखा, क्या तुम इस बेहूदगी को स्वयं नहीं देख सकती ?"

"तुम लोग क्या बातें कर रहे हो ?" दरवाजे की ओर से मयाकिन की आवाज आई जहाँ वह लम्बा फ्राक कोट पहने अपनी गर्दन और छाती पर तमंगे लटकाये खड़ा था।

"कोई खास बात नहीं," ल्यूबा ने अप्रसन्न होकर कहा।

"किताबों के बारे में।" फ़ोमा बोला।

"कैसी किताबें ?"

"वही जो यह पढ़ती है। उनमें से एक किताब में लिखा है कि, पृथ्वी की हर चीज का मूलभूत आधार होता है।"

"अच्छा तो फिर ?"

"और मैं कहता हूँ कि यह सब झूठ है।"

"हूँ।" मयाकिन ने अपनी आँखें तरेरीं, दाढ़ी पकड़ी और कुछ देर तक इस बारे में सोचता रहा।

"यह किस किताब में लिखा है ?" उसने कुछ रुक कर अपनी लड़की से पूछा।

"उसी छोटी सी पीली किताब में।" वह अनिच्छा पूर्वक बोली।

"उसे मेरी मेज पर रख दो। लोग ऐसी बातें व्यर्थ ही नहीं लिखते। हूँ......हर वस्तु का मूलभूत आधार है। किसी बहुत बुद्धिमान ने यह बात सोची है। बहुत अच्छा कहा है और बेवकूफों के लिये यह बात नहीं कि वे इसमें विश्वास करें। परन्तु, यह देखते हुए कि बेवकूफ हर जगह माफ़िक नहीं बैठते यह बिल्कुल असम्भव है कि हर चीज का आधार है। अच्छा ! फ़ोमा नमस्कार ! आज तुम यहाँ ही ठहर रहे हो या मैं तुम्हें घर छोड़ता जाऊँ ?"

"मैं थोड़ी देर रुकूँगा।"

फ़ोमा और ल्यूबा दोनों एक बार फिर अकेले रह गये।

"अजब पक्षी है," फोमा ने अपने धर्मपिता के पीछे सिर हिलाते हुए कहा।

"क्यों ?"

"ओह, बन्द भी करो इसे !" वह अपनी भौंहों को बड़े भद्दे तरीके से झपका कर बोली ।

"बन्द क्या ? किसी न किसी दिन तो तुम्हारी शादी होनी ही है ।"

"हाँ, शायद," ल्यूबा ने आह भरी । "मैं भी सोचती हूँ करलूँ, परन्तु, कैसे ? मैं अनुभव करती हूँ कि, मेरे और अन्य लोगों के बीच एक गहरे धुन्ध की दीवाल खड़ी हुई है ।"

"किताबों के ही कारण यह हुआ है ।" फ़ोमा ने विश्वास से कहा ।

"ठहरो । अब मेरी समझ में कुछ नहीं आता । यह सब घृणित हो रहा है । कोई बात ऐसी नहीं हो रही जैसी होनी चाहिये । मैं यह सब देख रही हूँ, परन्तु तुम्हें बता नहीं सकती कि क्या खराबी है, और क्यों है ।"

"वैसी नहीं जैसी होनी चाहिये," फ़ोमा गुनगुनाया । "मैं कहता हूँ कि, यह किताबों के ही कारण हैं । किन्तु मुझे भी ऐसा लगता है कि जैसा होना चाहिये वैसा कुछ भी नहीं होता । शायद इसलिये हमारी अवस्था अभी उन सब के योग्य नहीं ।"

"पहिले पहिल मैं सोचती थी कि, किताबें मुझे बातों के समझने में मदद करेंगीं," ल्यूबा उसकी बातों की उपेक्षा करती हुई बोली ।

"तुम अपनी इन किताबों को बिल्कुल भुलादो ।" तिरस्कार से फ़ोमा ने कहा ।

"क्या बात कह रहे हो ? जैसे इन्हें भुलाया भी जा सकता है ! तुम्हें विश्वास नहीं होगा कि संसार में अनेकों भिन्न विचार हैं । इनमें से कुछ बड़े उग्र हैं । उदाहरणार्थ एक किताब में लिखा है कि संसार की प्रत्येक चीज का कोई मूल भूत आधार अवश्य होता है ।"

"हर चीज़ का ?"

"हर चीज का ! और दूसरी किताब में बिल्कुल इसका उलटा कहा हुआ है ।"

"देखा, क्या तुम इस बेहूदगी को स्वयं नहीं देख सकती ?"

"तुम लोग क्या बातें कर रहे हो ?" दरवाजे की ओर से मयाकिन की आवाज आई जहाँ वह लम्बा फ्राक कोट पहने अपनी गर्दन और छाती पर तमंगे लटकाये खड़ा था।

"कोई खास बात नहीं," ल्यूबा ने अप्रसन्न होकर कहा।

"किताबों के बारे में।" फ़ोमा बोला।

"कैसी किताबें ?"

"वही जो यह पढ़ती है। उनमें से एक किताब में लिखा है कि, पृथ्वी की हर चीज का मूलभूत आधार होता है।"

"अच्छा तो फिर ?"

"और मैं कहता हूँ कि यह सब झूठ है।"

"हूँ।" मयाकिन ने अपनी आँखें तरेरीं, दाढ़ी पकड़ी और कुछ देर तक इस बारे में सोचता रहा।

"यह किस किताब में लिखा है ?" उसने कुछ रुक कर अपनी लड़की से पूछा।

"उसी छोटी सी पीली किताब में।" वह अनिच्छा पूर्वक बोली।

"उसे मेरी मेज पर रख दो। लोग ऐसी बातें व्यर्थ ही नहीं लिखते। हूँ......हर वस्तु का मूलभूत आधार है। किसी बहुत बुद्धिमान ने यह बात सोची है। बहुत अच्छा कहा है और बेवकूफों के लिये यह बात नहीं कि वे इसमें विश्वास करें। परन्तु, यह देखते हुए कि बेवकूफ हर जगह माफ़िक नहीं बैठते यह बिल्कुल असम्भव है कि हर चीज का आधार है। अच्छा ! फ़ोमा नमस्कार ! आज तुम यहाँ ही ठहर रहे हो या मैं तुम्हें घर छोड़ता जाऊँ ?"

"मैं थोड़ी देर रुकूँगा।"

फ़ोमा और ल्यूबा दोनों एक बार फिर अकेले रह गये।

"अजब पक्षी है," फोमा ने अपने धर्मपिता के पीछे सिर हिलाते हुए कहा।

"क्यों ?"

"इनकी हर बात में अपनी अलग राय रहती है; हर बात में ये अपना नाम जड़ना चाहते हैं।"

"हाँ, पिताजी बड़े बुद्धिमान् हैं, परन्तु, वह मेरे दुःख का कारण नहीं समझते," ल्यूबा ने चिंतित होकर कहा।

'मेरी भी समझ में नहीं आता। तुम बहुत बढ़ा चढ़ा कर बातें करती हो।"

"मिसाल के तौर पर क्या ?" लड़की ने नाराजी से कहा।

"ओह ! हर बात में। ये तुम्हारे विचार थोड़े ही हैं—यह तो औरों के हैं।"

"और लोगों के ! और लोगों के !"

वह कुछ जली कटी बात कहने वाली थी परन्तु रुक गई। उसकी तरफ देखते ही फ़ोमा उसकी तुलना सोफ़िया पावलोव्ना से किये वगैर न रह सका।

उदास होकर वह सोचने लगा कि लोग एक दूसरे से कितने भिन्न हैं ? औरतें भी ऐसी ही हैं और प्रत्येक के सम्पर्क में अनुभव भी भिन्न ही होता है।

कमरे के अन्दर और बाहर अँधेरा बढ़ता जा रहा था। नीबू के पेड़ (Lime Trees) की शाखाओं के बीच हवा बह रही थी। जिससे कि डालियाँ घर की दीवार से हिल कर टकरा रहीं थीं, मानो उन्हें ठण्ड लग रही हो और वे अन्दर आना चाहती हों।

"ल्यूबा।" फ़ोमा ने धीरे से कहा।

उसने अपना सिर उठाया और उसकी ओर देखने लगी।

"तुम जानती हो कि सोफ़िया पावलोव्ना से मेरी लड़ाई हो गई है।"

"क्यों ?" ल्यूवा ने प्रसन्न होकर पूछा।

"कोई खास बात नहीं। मेरे साथ उसका व्यवहार ठीक नहीं था।"

"बहुत अच्छा, मुझे खुशी है कि तुम उससे लड़ आये हो।" वह तुम्हें कन्नी उंगली पर नचाती। वह बड़ी लम्पट स्त्री है। काश ! वे बातें; जो मैं उसके बारे में जानती हूँ तुम भी जानते होते।"

"वह स्त्री पतित और लम्पट नहीं," फ़ोमा ने गुस्से में कहा। "और तुम्हें उसके बारे में कुछ नहीं पता। ये सब झूँठ है।"

"ओह, नहीं, यह सब सच है!"

"सुनो ल्यूबा," फ़ोमा ने धीरे से वकालत की, "उसके खिलाफ़ मुझसे ऐसी बातें न करो। मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि उसके बारे में मैं सब जानता हूँ। उसने मुझसे सब कुछ कह दिया है।"

"उसने कहा है!" ल्यूबा ने विस्मय से कहा। "वह बड़ी अजब है। उसने तुमसे क्या कहा?"

"उसने मुझे बतलाया है कि, वह—अपराधी है," वक्रता से मुस्कराते हुए फ़ोमा बोला।

"बस यही कहा?" इस प्रश्न में निराशा के भाव ने फ़ोमा की आशाओं को बढ़ा दिया।

"यह तो कुछ भी नहीं कहा? क्यों?" वह बोला।

"क्या तुम उसे बहुत प्यार करते हो?"

मौन हो फ़ोमा एक मिनट तक खिड़की से बाहर झाँकता रहा।

"मैं नहीं जानता मैं नहीं जानता," अन्त में वह बोला। "कई बार मैं सोचता हूँ कि, मैं उसे पहिले से अधिक प्यार करता हूँ।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम ऐसी औरत से कैसे प्रेम करते हो।" कन्धे उचकाते हुए ल्यूबा बोली।

"ओह, यह कोई मुश्किल नहीं!"

"मेरी समझ में नहीं आता। यह इसीलिये है कि तुम उससे अधिक अच्छी स्त्रियों से मिले-जुले नहीं।"

"निःसन्देह, मैं नहीं मिला।" फ़ोमा ने स्वीकार किया; फिर क्षणमात्र रुक कर वह बोला: "हो सकता है कि, उससे अच्छी हों ही नहीं। मैं उसे बहुत चाहता हूँ," वह सोचता हुआ बोला; "मैं उससे बहुत डरता हूँ—मतलब यह कि मैं अपने बारे में उसकी बुरी राय नहीं चाहता। कई बार मैं

बिल्कुल उकता जाता हूँ और चाहता हूँ कि मैं शराब पीऊँ और इतनी पीऊँ कि मेरे कान फट जाँये। परन्तु, ज्योंही मुझे उसका ख्याल आता है मैं ऐसा नहीं कर पाता। यही बात और चीजों के बारे में भी है। जब कभी मुझे ख्याल आता है कि वह मुझसे क्या कहेगी, मैं कातर हो उठता हूँ।

"तो तुम सचमुच उसे प्यार करते हो," ल्यूबा ने सोचते हुए कहा। "यदि मैं किसी को प्यार करूँ तो मैं भी ऐसा ही करूँ। मैं हमेशा उसके बारे में सोचती रहूँगी कि वह क्या कहेगा।"

"उसकी सब बातें अलग है," फ़ोमा ने कहा। "वह प्रत्येक से भिन्न तरीके से बातें करती है और हे भगवान! कितनी सुन्दर है! कितनी स्वल्प है। बिल्कुल शिशु समान।"

"तुम दोनों में अनबन क्यों हो गई?" ल्यूबा ने पूछा।

अपनी कुर्सी को उसके पास खींचकर फ़ोमा झुका और हल्की आवाज़ में बोला—"उसने उसे सब कुछ बता दिया और वे शब्द भी उसने दोहराये जो सोफ़िया पावलोव्ना से कहे थे और जिन भावनाओं से प्रेरित होकर कहे गये थे।"

मैंने उससे कहा—"कितनी शरम की बात है। कि तुम मुझसे खिलवाड़ करतीं रहीं?"

उसकी आवाज में क्रोध और प्रतिवाद था। ल्यूबा अपनी उत्तेजना से पीली पड़ गई और उसने सिर हिलाकर अपनी सहमति प्रगट की।

"तुमने बहुत अच्छा किया। वह इस पर क्या बोली?"

"कुछ नहीं," फ़ोमा ने बड़े दुःख से कन्धे हिलाते हुए कहा। "उसने इधर-उधर की दो एक बातें कहीं; परन्तु उनसे फर्क क्या पड़ता है?"

वह चुप हो गया। ल्यूबा भी कुछ न बोली और वहीं बैठी हुई अपनी वेणी के साथ खिलवाड़ करती रही। समवार ठण्डा पड़ चुका था। कमरे में अन्धकार बढ़ता जा रहा था और खिड़कियाँ अर्द्ध पारदर्शक धब्बे सी दिखलाई दे रहीं थीं।

"लैम्प क्यों नहीं जला देती ?" फ़ोमा ने कहा।

"तुम और मैं, हम दोनों कितने दु खी हैं !" ल्यूवा ने आह भरी।

फ़ोमा को यह बात पसन्द न आई

"मैं दु खी नहीं हूँ," उसने दृढ़तापूर्वक प्रतिवाद किया। "मैं अभी ऐसे जीवन का आदी नहीं हूँ।"

"मनुष्य तभी दु:खी होता है जब उसे यह न पता हो कि कल उसे क्या करना चाहिये,,' ल्यूवा ने विषाद से कहा। मैं भी नहीं जानती और तुम भी नहीं जानते। मेरे दिल में शान्ति नहीं; यह भी हमेशा किसी अज्ञात इच्छा से क्षुब्ध और व्याकुल रहता है।"

"ओह ! मेरा भी यही हाल है," फ़ोमा ने कहा। "अच्छा अब मैं क्लब जा रहा हूँ।"

"मत जाओ," ल्यूवा ने कहा।

"मुझे जरूर जाना है ; एक साथी वहाँ मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। नमस्कार।"

"नमस्कार।" ल्यूवा ने उसे अपना हाथ दिया और फिर विषादपूर्वक उसकी आँखों में देखती रही।

"क्या तुम सोने जा रही हो ?" फ़ोमा ने उसके हाथ को जोर से दबाते हुए पूछा।

"पहिले मैं थोड़ा सा पढ़ूँगी।"

"किताबें तुम्हारे लिये वहीं हैं जो शराबी के लिये वोदका," उसने असहमतिपूर्वक कहा।

"क्या तुम कोई और अच्छी बात नहीं सुझा सकते ?"

जैसे वह गली की तरफ चला, उसने खिड़की की ओर देखा और ल्यूवा के चेहरे की झांकी देखी जो वैसे ही अस्पष्ट थी जैसे उसके विचार और उसकी कामनायें। उसने मन ही मन सोचते हुए ल्यूवा की ओर सिर हिलाया : यह भी वैसी ही उलझन में है जैसी दूसरी।

इस विचार से उसके कदम तेज हो गये और सिर हिलने लगा, जैसे कि वह सोफिया पावलोव्ना के विचारों को अपने दिमाग़ से निकाल देना चाहता था। सड़क पर ठण्डी हवा के झोंके ऊपर और नीचे चल रहे थे, जो राहियों की आँखों में गर्द फेंक रहे थे। लोग इस अँधेरे में बड़ी तेजी से आ जा रहे थे। फ़ोमा ने अपना चेहरा सिकोड़ा और आँखें आधी मींच कर चलता रहा। उसने सोचा :

"यदि रास्ते में कोई स्त्री पहले मिलेगी तो इसका मतलब है कि सोफिया पावलोव्ना पहले की तरह मेरा कृपापूर्वक स्वागत करेगी, तो मैं कल उससे मिलने अवश्य जाऊँगा—परन्तु यदि कोई पुरुष मिलता है तो इसका मतलब होगा कि मैं कल न जाऊँ और इन्तजार करूँ।"

रास्ते में सबसे पहले उसे कुत्ता मिला जिससे वह इतना नाराज हुआ और उसके दिल में आया कि उसमें कस कर लात लगाये।

क्लब की मद्य-शाला में उसे प्रसन्न चित्त उख्तिश्चेव मिला जो दरवाजे के पास खड़ा हुआ गल-मुच्छों वाले एक मोटे व्यक्ति से बात कर रहा था। फ़ोमा को देखते ही वह उसकी ओर आया।

"हलो, विनम्र-लखपति!" उसने मुस्कराते हुए कहा।

फ़ोमा उसके हँसोड़पन और खुश-मिज़ाज़ी के कारण उसे बहुत चाहता था और हमेशा ही उससे मिलकर प्रसन्न होता था। उसने बड़े स्वागत से हाथ मिलाया।

"तुम मुझे विनम्र क्यों समझते हो?" फ़ोमा ने पूछा।

"प्रत्येक यही समझेगा। तुम एक तपस्वी की तरह रहते हो, न पीते हो, न ताश खेलते हो और न स्त्रियों के ही पीछे भागते हो—ओह! क्या तुम्हें पता है कि हमारी अनुपम संरक्षिका कल विदेश जा रही है, और सारी गर्मियाँ वहीं बितायेंगी?"

"सोफिया पावलोव्ना!" फ़ोमा ने धीरे से पूछा।

"हाँ, मेरे जीवन का सूर्य (और शायद तुम्हारा भी) अस्त होने वाला है।"

"श्रीमान् !" उख्तिश्चेव ने सांस रोकते हुए प्रतिवाद किया।

"मैने चौंचलेबाज़ कहा है।" गलमुच्छों वाले पुरुष ने इस शब्द पर अपने ओठों से प्यार और स्वाद के साथ बोलते हुए कहा : "यदि आपको इसका अर्थ नहीं पता तो मैं इसकी व्याख्या कर सकता हूँ।"

"हाँ", फ़ोमा ने गहरी सांस लेते हुए और उस पुरुष को अपनी आँखों में पकड़ते हुए कहा, "कृपया बताइए।"

उख्तिश्चेव ने अपनी आँखें मोड़ीं और एक सुरक्षित दूरी पर हट गया।

"चौंचलेबाज़, आपकी शिक्षा के लिये मैं बतलाता हूँ, एक चरित्र-भ्रष्ट स्त्री होती है", गलमुच्छों वाले पुरुष ने सांस रोक कर फ़ोमा पर अपना मोटा चेहरा धँसाते हुए कहा।

फ़ोमा हलका सा घुर्राया और इससे पहले कि दूसरे को पता लगे कि क्या हो गया, उसने उसके आधे धौले घुँघराले बालों को पकड़ा और यह कहते हुए, "दूसरों को......उनके पीछे..... गालियाँ नहीं दिया करते। जो कहना हो......उनके सामने कहो। सामने...... मुँह पर कहो", आवेश में उसे झकझोर दिया।

उसे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसके मोटे हाथ हवा में लटक गये, घुटने झुक गये और पाँव फर्श पर घिसटने लगे। उस पुरुष की सोने की घड़ी जेब से बाहर निकल आई और सुनहरी जंजीर सहित उसके पेट को छूती हुई झूलने लगी। फ़ोमा की प्रसन्नता में उन्माद था। वह अपनी ताकत के नशे में चूर था और उसे इस बदले तथा इस बात से कि उसने एक प्रतिष्ठित नागरिक को नीचा दिखाया है बहुत प्रसन्नता हो रही थी। वह खुशी में गर्जा और उसे आगे-पीछे जमीन पर घसीटा। अन्त में उसने अनुभव किया कि उसके हृदय पर से, जिसने उसे बहुत दिनों से उदास और चिंतित कर रखा था, एक भारी बोझ हट गया है। कुछ लोगों ने उसकी कमर और कन्धों को थामा, कुछेकों ने उसकी उङ्गलियों को। किसी ने उसके पांव पर

पाँव रख दिया परन्तु उसकी खून उतरी आँखों ने अपने सामने एक भारी काले ढेर के अलावा, जो उसके पञ्जों में पड़ा तड़फ और चिल्ला रहा था, कुछ नहीं देखा। अन्त में उसे अपने प्रतिद्वन्दी से अलग कर मज़बूती से पकड़ लिया गया और उसने लाल धुन्ध के अन्दर देखा कि जिसके साथ उसने शक्ति प्रयोग की थी—वह मनुष्य उसके पाँव पर लेटा हुआ है। वह टूटा-फूटा, असहाय, बिखरे बालों वाला व्यक्ति तनिक हरकत और कोशिश कर अपने पाँवों पर खड़ा हुआ। दो काले कपड़े पहने पुरुषों ने उसे थाम रखा था। उसकी बाँहें डैनों के समान लटक रही थीं और वह फ़ोमा की ओर रुंधे हुए गले से चिल्ला रहा था :

"तुम मुझे नहीं छू सकते ! तुम नहीं छू सकते। मैं सरकार का पदक प्राप्त हूँ। बदमाश कहीं का ! बदमाश ! मेरे बच्चे हैं ! सब तुझे जानते हैं, मैं कौन हूँ ! लुच्चा ! आदम खोर ! एक द्वन्द युद्ध !"

"इधर आ जाओ—परमात्मा के नाम पर इधर आ जाओ", उख्तिश्चेव ने फ़ोमा के कान में कहा।

"एक मिनट ठहरो ! मैं अभी इसका मुँह तोड़े देता हूँ", फ़ोमा ने कहा। परन्तु उसे दूर खींच लिया गया। उसका सिर चक्कर खा रहा था, दिल धड़क रहा था, परन्तु फिर भी उसका हृदय हल्का और वह प्रसन्न हो गया ; जब वे क्लब के दरवाजे पर पहुँचे तो उसने गहरी सांस ली।

"वह इसे जल्दी ही नहीं भूलेगा। भूल जायेगा ?" उसने उख़्तिश्चेव से हल्की मुस्कान से कहा।

"तुम पागल हो !" प्रसन्नचित ठिगने सेक्रेटरी ने सांस रोकते हुए कहा—मैंने अपने जीवन में कभी ऐसी बात नहीं देखी, तुमने ऐसा क्यों किया ?"

"परन्तु मेरे मित्र", फोमा ने प्रसन्नता से कहा, "क्या इसे इस तरह झटका देने और सजा देने की जरूरत नहीं थी ? क्या वह अशिक्षित और असभ्य नहीं ? वह ऐसी बात उसके पीठ पीछे कहे ? कहनी है तो सीधा जाये और उसके सामने कहे।"

"श्रीमान् !" उख्तिश्चेव ने सांस रोकते हुए प्रतिवाद किया।

"मैंने चौंचलेबाज़ कहा है।" गलमुच्छों वाले पुरुष ने इस शब्द पर अपने ओठों से प्यार और स्वाद के साथ बोलते हुए कहा : "यदि आपको इसका अर्थ नहीं पता तो मैं इसकी व्याख्या कर सकता हूँ।"

"हाँ", फ़ोमा ने गहरी सांस लेते हुए और उस पुरुष को अपनी आँखों में पकड़ते हुए कहा, "कृपया बताइए।"

उख्तिश्चेव ने अपनी आँखें मोड़ीं और एक सुरक्षित दूरी पर हट गया।

"चौंचलेबाज़, आपकी शिक्षा के लिये मैं बतलाता हूँ, एक चरित्र-भ्रष्ट स्त्री होती है", गलमुच्छों वाले पुरुष ने सांस रोक कर फ़ोमा पर अपना मोटा चेहरा धँसाते हुए कहा।

फ़ोमा हल्का सा घुर्राया और इससे पहले कि दूसरे को पता लगे कि क्या हो गया, उसने उसके आधे धौले घुँघराले बालों को पकड़ा और यह कहते हुए, "दूसरों को······उनके पीछे····· गालियाँ नहीं दिया करते। जो कहना हो······उनके सामने कहो। सामने······ मुँह पर कहो", आवेश में उसे झकझोर दिया।

उसे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसके मोटे हाथ हवा में लटक गये, घुटने झुक गये और पाँव फर्श पर घिसटने लगे। उस पुरुष की सोने की घड़ी जेब से बाहर निकल आई और सुनहरी जंजीर सहित उसके पेट को छूती हुई झूलने लगी। फ़ोमा की प्रसन्नता में उन्माद था। वह अपनी ताकत के नशे में चूर था और उसे इस बदले तथा इस बात से कि उसने एक प्रतिष्ठित नागरिक को नीचा दिखाया है बहुत प्रसन्नता हो रही थी। वह खुशी में गर्जा और उसे आगे-पीछे जमीन पर घसीटा। अन्त में उसने अनुभव किया कि उसके हृदय पर से, जिसने उसे बहुत दिनों से उदास और चिंतित कर रखा था, एक भारी बोझ हट गया है। कुछ लोगों ने उसकी कमर और कन्धों को थामा, कुछेकों ने उसकी उङ्गलियों को। किसी ने उसके पांव पर

पाँव रख दिया परन्तु उसकी खून उतरी आँखों ने अपने सामने एक भारी काले ढेर के अलावा, जो उसके पञ्जों में पड़ा तड़फ और चिल्ला रहा था, कुछ नहीं देखा। अन्त में उसे अपने प्रतिद्वन्दी से अलग कर मज़बूती से पकड़ लिया गया और उसने लाल धुन्ध के अन्दर देखा कि जिसके साथ उसने शक्ति प्रयोग की थी—वह मनुष्य उसके पाँव पर लेटा हुआ है। वह टूटा-फूटा, असहाय, बिखरे बालों वाला व्यक्ति तनिक हरकत और कोशिश कर अपने पाँवों पर खड़ा हुआ। दो काले कपड़े पहने पुरुषों ने उसे थाम रखा था। उसकी बाँहें डैनों के समान लटक रही थीं और वह फ़ोमा की ओर रुंधे हुए गले से चिल्ला रहा था :

"तुम मुझे नहीं छू सकते ! तुम नहीं छू सकते। मैं सरकार का पदक प्राप्त हूँ। बदमाश कहीं का ! बदमाश ! मेरे बच्चे हैं ! सब तुझे जानते हैं, मैं कौन हूँ ! लुच्चा ! आदम खोर ! एक द्वन्द युद्ध !"

"इधर आ जाओ—परमात्मा के नाम पर इधर आ जाओ", उख्तिश्चेव ने फ़ोमा के कान में कहा।

"एक मिनट ठहरो ! मैं अभी इसका मुँह तोड़े देता हूँ", फ़ोमा ने कहा। परन्तु उसे दूर खींच लिया गया। उसका सिर चक्कर खा रहा था, दिल धड़क रहा था, परन्तु फिर भी उसका हृदय हल्का और वह प्रसन्न हो गया ; जब वे क्लब के दरवाजे पर पहुँचे तो उसने गहरी सांस ली।

"वह इसे जल्दी ही नहीं भूलेगा। भूल जायेगा ?" उसने उख़्तिश्चेव से हल्की मुस्कान से कहा।

"तुम पागल हो !" प्रसन्नचित ठिंगने सेक्रेटरी ने सांस रोकते हुए कहा—मैंने अपने जीवन में कभी ऐसी बात नहीं देखी, तुमने ऐसा क्यों किया ?"

"परन्तु मेरे मित्र", फोमा ने प्रसन्नता से कहा, "क्या इसे इस तरह झटका देने और सजा देने की जरूरत नहीं थी ? क्या वह अशिक्षित और असभ्य नहीं ? वह ऐसी बात उसके पीठ पीछे कहे ? कहनी है तो सीधा जाये और उसके सामने कहे।"

"मगर क्या अजब बात है, तुमने यह सब उसके लिये किया ?"

"तुम्हारा क्या मतलब कि उसके लिये ? और किसके लिये ?"

"मुझे क्या पता ? तुम्हारी उससे कोई पुरानी दुश्मनी होगी, जिसका तुमने इस प्रकार बदला लिया है ? हे भगवान् ! क्या नज़ारा था ! मैं इसे आखिरी दम तक न भूलूँगा !"

"वह था कौन ?" फोमा ने पूछा, और ठहाका मारकर हँसा : "गधा कहीं का ! तुमने देखा, वह कैसे चिल्ला रहा था !"

उख्तिश्चेव ने क्षणभर उसकी ओर ध्यानपूर्वक देखा और फिर पूछा : "सुनो, क्या तुम सचमुच नहीं जानते कि वह कौन है ? और वाकई क्या यह सब झगड़ा और नजारा तुमने सोफिया पावलोव्ना के लिये किया ?"

"ईमानदारी से सब उसी के लिये किया", फ़ोमा ने कहा।

"कितनी सख्त बेवकूफी !" उख्तिश्चेव रुका, उसने अपने कन्धे ऊँचे किये और अविश्वासपूर्वक हाथ हिलाकर पैदल रास्ते की ओर चल पड़ा। "फ़ोमा इग्नातेविच ! तुम्हें इसका नतीजा बुरा उठाना पड़ेगा", उसने आँखों के कोनों से फ़ोमा की ओर देखते हुए कहा।

"वह क्या करेगा, मुझे अदालत में ले जायेगा ?"

"यदि वह इतना ही करता है, तो तुम बड़े खुश किस्मत होगे। वह वाइस गवर्नर का दामाद है।"

"क्···य···ा ?" फ़ोमा ने हक्का-बक्का होकर कहा। उसका चेहरा ढुलक गया।

"सच है। मैं सच कहता हूँ कि वह बड़ा शैतान और धोखेबाज़ है; इसलिये हर कोई यही कहेगा कि उसकी मरम्मत होनी ही चाहिये। परन्तु यह सोचते हुए कि जिस महिला के मान की रक्षा के निमित्ति तुम बीच में पड़े, वह भी······।"

"सुनो", फ़ोमा ने उख्तिश्चेव के कन्धे पर हाथ रख दृढ़ता से कहा : "मैं तुम्हें हमेशा से चाहता हूँ। और तुम उन लोगों को छोड़कर मेरे साथ

आ गये हो—मैं इसे समझना हूँ; और इसकी तारीफ करता हूँ। परन्तु मुझे तुमसे एक बात कहनी है कि मेरे सामने उसकी बुराई तुम मत करो। तुम्हारे लिये वह कैसी भी हो, परन्तु मेरे लिये तो वहुत प्रिय है। मेरे लिये तो वह एक ही स्त्री है। और मैं तुम्हारे मुँह पर साफ-साफ कहता हूँ, "एक बार तुम मेरे साथ आ लिये हो, उसे छोड़ो। मुझे वह अच्छी लगती है; बस, बात खतम हुई।

फ़ोमा ने यह इतनी भावुकता से कहा कि उख्तिश्चेव अचम्भे में उसकी ओर देखता रहा।

"खैर, मैं मानता हूँ कि तुम बहुत ही दिलचस्प आदमी हो और कोई संदेह नहीं", उसने कहा।

"मैं एक सीधा-सादा आदमी हूँ। मेरा ख्याल कुल जंगली है। मैंने उस शख्स से सारा फर्श रगड़ दिया और अब बड़ा आनन्द अनुभव कर रहा हूँ। अब मुझे ज़रा भी परवाह नहीं कि क्या होगा।"

"और मुझे डर है कि बहुत कुछ हो सकता है। सच बात यही है कि मैं तुम्हे बहुत चाहता हूँ। यद्यपि मैं…अ…हे…तुम्हें वहुत खतरनाक पाता हूँ। कोई बता नहीं सकता कि कब तुम्हें वीरता का उबाल उठे और तुम मुझे भी फर्श पर रगड़ मारो।"

"ओह, ! मैं ऐसी बात कोई हर रोज थोड़े ही करता हूँ। सच तो यह है, मैंने कभी भी ऐसा नहीं किया", फ़ोमा ने बेचैनी से कहा। उख्तिश्चेव हँस पड़ा।

"यह वड़ी क्रूरता की बात थी ! परन्तु सुनो, लड़ना जंगलीपन है: यदि तुम मुझे यह कहने के लिये माफ करो, लड़ना बहुत निकम्मा काम है। फिर भी मैं मानता हूँ कि इस मामले में तुमने शिकार बहुत अच्छा चुना। वह बड़ा कमीन, व्यभिचारी और पापी आदमी है, जिसने अपने भतीजे तक की कमीज चुराली और साफ बच गया।"

"यह सुनकर मुझे वहुत खुशी हुई", फ़ोमा ने मज़ा लेते हुए कहा, "कम से कम मैंने उसे कुछ सजा तो जरूर दे दी।"

"कुछ ? बहुत दे दी, फिर भी हम यही मानते हैं कि कम दी। परन्तु मेरे बच्चे ! ज़रा सुनो—एक अदालत के क्लर्क के दो शब्दों की राय सुनो : इसमें सन्देह नहीं कि वह बहुत बदमाश है, परन्तु तुम भी किसी को इस प्रकार फर्श पर नहीं पटक सकते, क्योंकि उसकी भी सामाजिक सत्ता होती है और कानूनी रक्षा सब को प्राप्त है। तुम उन्हें तब तक नहीं छू सकते जब तक कि वह हमारी कानूनी धाराओं की लकीर को पार न करें, और वह भी तुम नहीं, परन्तु हम और हमारे अफसर जज़ वग़ैरह इस बात का फ़ैसला करेंगे कि उसे क्या सज़ा मिलनी चाहिये। इसलिये अगर तुम नाराज़ न हो, तो ज़रा धीरज रखने का प्रयत्न करो।"

"क्या वह तुम्हारे पंजे में अभी देर से फँसेगा ?" फ़ोमा ने भोलेपन से पूछा।

"अब यही तो प्रश्न है। क्योंकि यह सज्जन जिनका ज़िकर हो रहा है, मूर्ख नहीं है, सम्भावना ऐसी हैं कि वह हमारे हाथ कभी नहीं पड़ेगा और अन्त तक कानून उसे एक भद्र नागरिक ही मानेगा, जैसे कि तुम्हें और मुझे। ओह, मेरे भगवान् ! मैं क्या कह रहा हूँ ?" उख्तिश्चेव ने परिहास करते हुए आह भरी।

"क्या कुछ भेद की बात कह दी ?" फ़ोमा हँसा।

"नहीं, भेद की बात कुछ नहीं, परन्तु मुझे इतने हलकेपन से बातें नहीं करनी चाहिये। मगर, कोई परवाह नहीं ! इस मामले ने मुझे हिला दिया है। ऐसा दीखता है कि शनि अपना काम घोड़े की तरह दुलत्ती मार कर भी करता है।"

फ़ोमा एकदम चलते-चलते रुक गया, जैसे कि उसके रास्ते में कोई रोड़ा आ गया हो।

"और यह सब बात इससे शुरू हुई थी कि तुमने कहा था, सोफिया पावलोव्ना जा रही है", वह धीरे से भारी आवाज में बोला।

"वह जा रही है। इससे क्या ?"

फ़ोमा के सामने खड़े होकर उसने नेत्र मिलाये। उसकी आँखों में एक चमक थी। फ़ोमा भी अपना सिर लटका पत्थरों की दरारों को अपनी छड़ी से कुरेदता हुआ चुपचाप खड़ा हो गया।

"चलो आओ।"

फ़ोमा चल दिया। "चलो जाने भी दो उसे।" वह उदासीनता से बोला।

उख्तिश्चेव ने अपनी छड़ी हिलाई और अपने साथी को आँखों के किनारों से देखता हुआ मुँह से सीटी बजाने लगा।

"जैसे कि उसके बगैर मैं रह ही नहीं सकता।" फ़ोमा ने अपने सामने किसी बिन्दु पर नजर गड़ाते हुए कहा और फिर रुक कर धीरे से अनिश्चय-पूर्वक बोला : 'निःसन्देह मैं रह सकता हूँ।"

"सुनो", मैं तुम्हें अच्छी सलाह देना चाहता हूँ : "तुम अपने आपे में रहो।" उख्तिश्चेव ने कहा। "हर व्यक्ति को अपने आपे में रहना चाहिये। तुम्हारा स्वभाव तो बहुत ही भावुक है, इसे कवित्वमय भी कह सकते हैं; यह तुम्हारे वर्ग का स्वभाव नहीं।"

"जब तुम मुझसे बात करो, सीधे-सादे शब्दों में किया करो; मेरे मित्र !" फ़ोमा ने, जो उसे समझाने की कोशिश कर रहा था, कहा।

"बहुत अच्छा, मैं यह कहना चाहता था : तुम उस महिला को छोड़ दो। तुम जैसों के लिये वह विष है।"

"सचमुच वह ऐसी ही है।" फ़ोमा ने दुःख से कहा।

"ऐसी ही है ? हूँ...... । चलो, कुछ खाने-पीने के लिये चलें ?"

"चलो।" फोमा ने स्वीकृति देते हुए कहा : ''और अगर हम जायेंगे तो बहुत बढ़िया तरीके से जायेंगे।" वह जंगलीपन से हवा में मुक्का दिखलाते हुए बोला। "क्या आज भी हम इस सबके बाद मज़ा न उड़ायें और मनमानी न करें ! ज़रा अपने बालों को पकड़ के रखना।"

"परन्तु इसकी क्या जरूरत है ? हमें तो सीधा-सादा भोजन करना चाहिये।"

"यह क्या बात है, मुझे बताओ ?" फ़ोमा ने उसका कन्धा पकड़ते हुये निराशा में कहा—"क्या मैं दूसरे लोगों से गया गुजरा हूँ ? सब लोग जीवन का मजा ले रहे हैं—वे हमेशा इधर-उधर आते जाते हैं, कोई किसी के पीछे कोई किसी के पीछे। परन्तु, मैं जीवन से ऊब चुका हूँ। सब अपने आप में प्रसन्न दिखते हैं, और जो लोग जीवन के बारे में शिकायतें करते हैं, वे बहाने हैं। दोगले कहीं के। वे लम्बी लम्बी हाँकते है, घमण्ड की बातें करते हैं। परन्तु, मुझे यह सब नहीं आता। मैं बहुत सीधा-सादा हूँ, मैं बात को दूर तक सोच और समझ ही नहीं सकता। यह बहुत दुःख की बात है। एक कुछ कहता है, दूसरा कुछ······और सोफ़िया पावलोव्ना के बारे में—ओह, बस अगर तुम जानते होते ! मैंने उससे बड़ी बड़ी आशाएँ लगाई थीं। मैंने आशा की थी······कि······मैंने क्या आशा की थी ? मुझे इसका भी पता नहीं। परन्तु, मैं नहीं जानता कि, कोई भी उसकी तुलना में पूरी उतर सकती है और मैं आशा करता था कि, एक दिन वह मुझसे कुछ कहेगी—कोई खास बात कहेगी। उसकी आँखें इतनी अद्भुत हैं, हे राम ! आदमी तो उनकी ओर देखता हुआ भी डरता है। मैं उससे सिर्फ प्यार ही नहीं करता। मैंने उसे अपना दिल दिमाग सब दे दिया है और मेरा ख्याल है कि, उस जैसी सुन्दर स्त्री के पास रह कर मनुष्य बन जाऊँगा।

उखितश्चेव उसके टूटे फूटे असम्बद्ध शब्दों को जो उसके मुँह से निकल रहे थे सुनता रहा, उसने देखा कि, उसके चेहरे की पेशियाँ विचारों को प्रगट करने के प्रयत्न में फड़क रही थीं, और साथ ही इन शब्दों की गड़बड़ी के पीछे उसने एक गहरा दुःख भी उसके चेहरे पर देखा। इस सबल स्वस्थ्य, जङ्गली नौजवान में उसने एक दिल में गहरी चुभने वाली असहायता देखी, जो उसके साथ बड़े बड़े आसमानी डग भरता हुआ चल रहा था। उखितश्चेव ने जो अपनी छोटी छोटी टांगों से उसके पीछे चल रहा था अपना कर्त्तव्य समझा कि, उसे किसी न किसी तरह सांत्वना दे। फ़ोमा ने उस सांझ को, जो कुछ किया था उससे उसके हृदय में एक दिलचस्पी पैदा हो गई थी। और उसे इस बात की भी प्रसन्नता हुई थी कि उसने धनवान गोर्देयेव के हृदय में स्थान प्राप्त कर

लिया है। इन विश्वासों के बोझ से वह दबा जा रहा था और उन विश्वासों की भारी शक्ति के नीचे उसे कुछ भी नहीं सूझ पड़ रहा था, और यद्यपि वह अभी नौजवान था, उसने जीवन की सब अवस्थाओं में प्रयोग हो सकने वाले मुहावरे तैयार कर लिये थे। किंतु वर्तमान घटना को स्मरण करने में उसे कठिनाई हुई।

"मेरे प्यारे मित्र !" वह फ़ोमा की बाहों में बाहें देकर प्रेम से बोला—"भगवान के नाम पर ! तुम ऐसे कब तक चल सकते हो। तुम तो जीवन में प्रवेश करने से पहले ही दर्शन की बातें करने लगे हो। तुम जानते हो कि, तुम ऐसा नहीं कर सकते। जीवन हमें रहने के लिये दिया गया है। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है : हम जियें और दूसरों को भी जीने दें। यही सारी फिलोसफी है। और जहाँ तक उस औरत की बात है—छिः, न तो उसमें सूर्य उदय होता है और न अस्त ही। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें ऐसे घघरे से परिचय कराऊँ, जो इतनी ज़हरीली हो कि तुम उस पर अपनी नज़र डालते ही यह सब फिलासफी भूल जाओ ! बहुत ही मनोहर स्त्री है ! वह तुम्हारे जीवन का अच्छा उपयोग करेगी ! तुम्हारी तरह उसका भी भावुक स्वभाव है ! वह परम सुन्दर है (बिल्कुल हैलन* है)। तुम्हारे लिये बिल्कुल ठीक है। बड़ा सुन्दर विचार ! मैं उससे जरूर तुम्हारा परिचय कराऊँगा। विष की दवाई विष ही है।"

"नहीं, मेरे भी दिल है," फ़ोमा ने निराशा से कहा। जब तक सोफ़िया पावलोव्ना जीवित है, मैं दूसरी स्त्री की तरफ देख भी नहीं सकता।"

"क्या ? तुम्हारे सदृश्य एक स्वस्थ सुन्दर नवयुवक ? ओ······हो······हो !" और उख्तिश्चेव ने मद्यपान द्वारा अपने हृदय के भावों को हवा देने की आवश्यकता के बारे में उपदेश देना शुरू किया।

हैलन*—प्राचीन ग्रीस की एक परम सुन्दरी जिसके ऊपर होमर ने ओडिसी नामक महाकाव्य लिखा है जो भारत में रामायण की सीता के समान है।

"तुम मेरी बात सुनो, तुम्हें बस इसकी ही जरूरत है। रही तुम्हारे दिल की बात—मुझे क्षमा करना, परन्तु तुम बिल्कुल गलत रास्ते पर हो; यह तुम्हारा दिल नहीं जिसने तुम्हें पीछे किया हुआ है, परन्तु तुम्हारी लज्जालुता है। तुम लोगों में मिलने जुलने के अभ्यासी नहीं हो इसीलिये तुम उनकी उपस्थित में अपने को अलग पाते हो और उनसे अलग अलग रहते हो। तुम इसे अस्पष्ट तौर से अनुभव करते हो; और इसे अपने दिल की आवाज समझते हो। परन्तु इसमें दिल की क्या बात है—हमारे दिल को इसमें क्या ऐतराज जब कि आनन्द की ओर बढ़ना ही मनुष्य का स्वभाव है; जबकि यह उसका अधिकार और उसकी आवश्यकता भी है।"

फ़ोमा ने अपने साथी के कदम से कदम मिलाते हुए एकदम उसकी ओर घूरा। सड़क अपने दोनों तरफ इमारतों की कतारों के अन्धकार से भरी हुई एक बड़े नाले के समान दिखाई दे रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि इसका कोई अन्त नहीं है और इसके बीच में धीरे धीरे एक काली, गला घोटने वाली अक्षय धारा बही जा रही है। उख्तिश्चेव की कोमल, आकर्षक वाणी उसी भाँति चलती रही; और फोमा उसके शब्दों को यद्यपि नहीं सुन रहा था फिर भी वह उनकी चुभन को पहचान रहा था, और वे उसकी स्मृति में उसके न चाहते हुए भी बैठते जा रहे थे। वह जानता था कि उसे फुसलाया जा रहा है परन्तु उसमें किसी प्रकार के विरोध करने की शक्ति नहीं थी। थकान के कारण वह सोचने में असमर्थ था और उख्तिश्चेव का विरोध भी नहीं करना चाहता था—और करता भी क्यों।

"हम एक बार ही इस दुनियाँ में रहते हैं," उख्तिश्चेव अपनी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा के भाव से बोला—"और हमें समय नष्ट नहीं करना चाहिये। तुम मेरी बात मानो। परन्तु इसके लिए बेकार शब्दों की ही क्या जरूरत है। तुम मुझे आज्ञा दो कि मैं तुम्हें इससे निकाल दूँ। तुम मेरे साथ एक घर चलो जहाँ दो बहिनें रहती हैं—और कैसे ढङ्ग से रहती हैं! अवश्य चलो; चलोगे ना?"

"क्यों नहीं ?" फोमा ने उदासीन भाव से जम्हाई लेते हुए कहा। "परन्तु अधिक देर तो नहीं हो गई ?" उसने बादलों से घिरे आसमान को देखते हुए कहा ।

"उनके पास जाने और मिलने में कभी देर नहीं है।" उख्तिश्चेव ने प्रसन्नतापूर्वक कहा ।

८
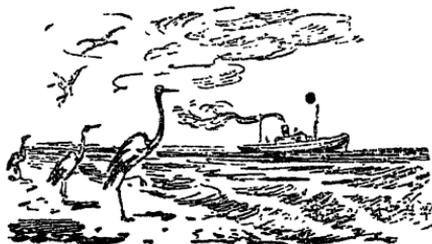
क्लब में हुई इस घटना के तीन दिन बाद नगर से सात वर्स्त बाहर व्यापारी ज्वेन्त्सेव के लकड़ी के डौक में चार स्त्रियों, उख्तिश्वेव, ज्वेन्त्सेव के पुत्र और एक प्रभावशाली लाल नाक और गलमुच्छों वाले खल्वाट भद्र पुरुष के साथ फ़ोमा ने अपने को पाया। नवयुवक ज्वेन्त्सेव पीला और पतला था, उसने प्रिन्सेज़ ऐनक पहन रक्खी थी; उसकी पिंडलियों की पेशियाँ, जब वह खड़ा होता था तो, ऐसे हिलतीं थी जैसे कि वह इस दुबली पतली आकृति को, जिसके सिर पर एक मखोलियों की सी जौकी टोपी थी और शरीर पर एक लम्बा नकाब वाला धारीदार कोट था, उठाना पसन्द न करती थी। गलमुच्छों वाला पुरुष अपने भीन नाम को ऐसे उच्चारण करता था जैसे कि उसे पुराना जुकाम हो। भीन की साथिन एक लम्बी पूर्ण-वक्ष लड़की थी और ऐसी दिखती थी कि, उसे दोनों तरफ से पीटा हुआ है: उसका नीचा माथा तेजी से पीछे को ढला हुआ था और उसकी लम्बी नाक पक्षियों जैसी दिख रही थी। इस कुरूप चेहरे में दो छोटी ठण्डी, गोल आँखों के अलावा कुछ नहीं दिखाई देता था जो लगातार एक धूर्त्ततापूर्ण हँसी के साथ खुलतीं और मिचती थीं। उख्तिश्वेव की साथिन का नाम वेरा था। वह ऊंची और पीले चेहरे वाली थी और उसके सिर पर बड़े मोटे मोटे लाल भूरे पीले से बाल ऐसे दिखते थे, जैसे कि उसने बहुत बड़ा हैट पहिन रखा हो जो बार बार उसके कानों, और ऊँचे माथे पर ढुलक आता हो, उसकी दोनों आँखें नीली और बड़ी थीं, जो बड़ी अलसाई नज़र से देखती थीं।

गलमुच्छों वाला भद्रपुरुष एक मोटी भरी हुई, देखने में ताजी नौजवान

लड़की के साथ बैठा था, जो जरा जरा सी बात पर, जो उसके कन्धों पर झुक कर वह उसके कानों में कहता था, खिलखिलाती थी।

फ़ोमा की साथिन के बालों का रंग काला था। उसका शरीर और आकृति बड़ी सुन्दर थी, और उसने काली पोशाक पहिन रक्खी थी। अपने काले लहरदार सिर को वह बहुत ऊँचा रखे हुए थी और आस पास सब चीजों को ऐसे गौरव और अभिमान से देख रही थी, जिससे यह आसानी से समझा जा सकता था कि वह अपने साथियों से अपने को बहुत ऊँचा समझती है।

इस पार्टी ने लकड़ी के बेड़ों की आखिरी लड़ी पर अपना स्थान जमाया जो खाली नदी में दूर तक फैले हुए थे। बेड़े को तख्तों से जोड़ दिया गया था। इसके बीच में एक भारी खुरदरी सी मेज थी। इस पर भोजन की छत्रड़ियाँ, खाली बोतलें, मिठाइयों के कागज़, नारंगियों के छिलके इत्यादि बिखरे पड़े थे। बेड़े के एक कोने में मिट्टी इकट्ठी की हुई थी जिसके ऊपर आग सुलग रही थी, और उस पर बकरी की खाल पहने एक किसान झुका हुआ अपने हाथ गरम कर रहा था और इन अपने से अच्छे लोगों की ओर कनखियों से देख रहा था। इन अच्छे लोगों ने अभी मछली की सूप ही खतम की थी, और उनके सामने की मेज शराब और फलों से लदी हुई थी।

दो दिन के व्यभिचारपूर्ण जीवन के अलावा इस डिनर से भी वे बहुत निढाल पड़े हुए थे। वे नदी की ओर निहारते हुए लगातार बातें कर रहे थे। तरुण बसन्त का दिन बड़ा स्वच्छ था और ऐसा उन्मादक तथा उत्तेजक था, जैसे कि पूर्ण विकसित बसन्त के दिन होते हैं। स्वच्छ शीतल आकाश बड़े प्रभूत, और गौरव से गँदली आप्लावित नदी के ऊपर फैला हुआ था। सुदूर तटवर्ती पहाड़ियाँ सन्ध्याकाल के नीले धुन्ध में ढँकी हुई थीं और उनकी चोटियों पर गिरजों के प्रकाश बड़े बड़े तारों के समान चमक रहे थे। सुदूर तट की पहाड़ियों पर बहुत चहल पहल थी : नदी के ऊपर और नीचे स्टीम बोट आ जा रहे थे, उनकी 'छप छप' की भारी आह खलिहानों की तरफ आ रही थी, जिधर पानी के प्रशान्त प्रवाह में लहरों की थपथपाहट की ध्वनि से वायु

भरी हुई थी। माल ढोने वाली बड़ी किश्तियों की पंक्तियाँ, जो पानी के बहाव की ओर जा रही थीं, विशाल दैत्याकार सूअरों के समान दिखलाई दे रहीं थीं जो अपनी थूथनी से पानी को मथ रही थीं। चिमनियों से काला धुँआ बड़े उन्माद के साथ ऊपर उमड़ रहा था और स्वच्छ वायुमण्डल में विलीन हो रहा था। थोड़ी थोड़ी देर पर जहाजों से बजने वाले घुत्तुओं की आवाज़ का शब्द ऐसा प्रतीत होता था कि कोई दैत्याकार प्राणी काम पर लगाने के खिलाफ़ बड़े जोर जोर से चिल्लाहट कर रहा है। पानी के पास की चरागाहों में सब शान्त और स्तब्ध था। पेड़ जो बाढ़ के बीच इधर-उधर पानी से ऊपर निकले हुए थे अपने सघन पत्तों की हरियाली सहित चमक रहे थे। पानी ने उनके तनों को छिपा रखा था और उनकी शाखाओं को वह अपने दर्पण में प्रतिविम्बित कर रहा था जिससे बड़ी व विचित्र सुन्दरता वाली हरियाली के वे गोले दिखाई दे रहे थे, जो जरा सी हवा में पानी की चिकनी सतह पर लुढ़कने लगेंगे।

भूरे लाल बालों वाली स्त्री ने और सुदूर में निहारते हुए धीरे २ एक निराश गीत छेड़ा।

नदिया की लहरों पे—नैयाऽमेरी
सरपट भागी जायेऽरे···

काले बालों वाली स्त्री ने अपनी बड़ी बड़ी आँखों को तिरस्कारपूर्वक घुमाया।

"इसके बिना ही यहाँ बहुत डरावना हो रहा है," वह मुँह मोड़ती हुई बोली।

"इसे रोको मत, गाने दो," फ़ोमा ने अपनी साथिन के चेहरे की ओर प्रसन्नतापूर्वक देखते हुए कहा। वह बहुत पीला हो रहा था। उसकी आँखों में आग सुलग रही थी; एक अनिश्चित अलसाई मुस्कान उसके ओठों पर घूम रही थी।

"आओ हम सब गायें," गलमुच्छों वाले सभ्य पुरुष ने प्रस्ताव किया।

"नहीं, इन दो को ही गाने दो," उख्तिश्चेव ने तुरन्त कहा—"वेरा!

शक्तिशाली प्रतिवाद सहित वायु में गूँज रही थी। गीत का प्रत्येक शब्द स्पष्ट मोटी धारा में बह रहा था और प्रत्येक शब्द में बदले की भावना की धमकी थी।

और करेगा वही अदा

वासा ने अपनी आँखें मींचते हुए रुदन किया जब कि, दूसरी ओर साशा एक दृढ़ निश्चय के साथ प्रत्येक शब्द को हवा में उछालते हुए चुनौती गा रही थी।

उसको झुलसा दूंगी
मैं दूँगी उसे जला

अचानक उसने लय और तराना बदला और प्रसन्नता से अपनी बहिन की भाँति लम्बी आवाज़ में एक अभिशाप उड़ेलने लगी।

मरुस्थल की सी खुश्क हवायें।
सूखी कहीं दरांती घासें।
जिन्हें दरांती ने काटा, जिन्हें सूर्य ने झुलसाया…

फ़ोमा, मेज के ऊपर कोहनी टेके लड़की के चेहरे को और उसकी काली अर्द्ध-निमीलित आँखों को निहारने लगा। वे शून्य आकाश में घूर रही थीं और उनकी चमक इतनी प्रतिहिंसापूर्ण थी कि, उसके गले से निकलने वाली वह मखमली आवाज़ उसकी आँखों जैसी काली और चमकीली दिखलाई दी। जैसे ही उसने उस स्त्री द्वारा किये दुलार और प्रेम का स्मरण किया, वह अपने प्रति सोचने लगा। किस कारण यह ऐसी है? इसमें कुछ न कुछ बात बहुत डरावनी है।

उख्तिश्चेव लड़की के पास आ लिया था और अपने चेहरे पर आनन्द के साथ उस गीत को सुन रहा था। ज्वेन्त्सेव और गलमुच्छों वाला सभ्य पुरुष दोनों शराब पी रहे थे और आपस में कानाफूसी कर रहे थे। भूरी लाल बालों वाली लड़की ने उख्तिश्चेव का हाथ पकड़ रखा था और वह उसे बड़े ध्यान से देख रही थी। खिलखिला कर हँसने वाली लड़की के चेहरे पर एक

शक्तिशाली प्रतिवाद सहित वायु में गूँज रही थी। गीत का प्रत्येक शब्द स्पष्ट मोटी धारा में बह रहा था और प्रत्येक शब्द में बदले की भावना की धमकी थी।

और करेगा वही अदा

वासा ने अपनी आँखें मींचते हुए रुदन किया जब कि, दूसरी ओर साशा एक दृढ़ निश्चय के साथ प्रत्येक शब्द को हवा में उछालते हुए चुनौती गा रही थी।

उसको झुलसा दूंगी
मैं दूँगी उसे जला

अचानक उसने लय और तराना बदला और प्रसन्नता से अपनी बहिन की भाँति लम्बी आवाज़ में एक अभिशाप उड़ेलने लगी।

मरुस्थल की सी खुश्क हवायें।
सूखी कहीं दरांती घासें।
जिन्हें दरांती ने काटा, जिन्हें सूर्य ने झुलसाया···

फ़ोमा, मेज के ऊपर कोहनी टेके लड़की के चेहरे को और उसकी काली अर्द्ध-निमीलित आँखों को निहारने लगा। वे शून्य आकाश में घूर रही थीं और उनकी चमक इतनी प्रतिहिंसापूर्ण थी कि, उसके गले से निकलने वाली वह मखमली आवाज़ उसकी आँखों जैसी काली और चमकीली दिखलाई दी। जैसे ही उसने उस स्त्री द्वारा किये दुलार और प्रेम का स्मरण किया, वह अपने प्रति सोचने लगा। किस कारण यह ऐसी है? इसमें कुछ न कुछ बात बहुत डरावनी है।

उख्तिश्चेव लड़की के पास आ लिया था और अपने चेहरे पर आनन्द के साथ उस गीत को सुन रहा था। ज्वेन्त्सेव और गलमुच्छों वाला सभ्य पुरुष दोनों शराब पी रहे थे और आपस में कानाफूसी कर रहे थे। भूरी लाल बालों वाली लड़की ने उख्तिश्चेव का हाथ पकड़ रखा था और वह उसे बड़े ध्यान से देख रही थी। खिलखिला कर हँसने वाली लड़की के चेहरे पर एक

"अभी यह कहना कठिन है। मैं झूँठ नहीं बोलूँगी। मैं तुमसे साफ-साफ कहती हूँ कि मैं पैसे या भेंट के लिये ही प्यार करती हूँ। मैं जानती हूँ कि मनुष्य बिना पैसे के भी प्यार करते हैं। परन्तु यह बहुत जल्दी है। हाँ, जब मैं तुम्हें अच्छी तरह जान जाऊँगी, तब तुमसे बिना कुछ लिये भी प्यार कर सकूँगी। तुम मुझे कठोर नज़र से मत देखो। मनुष्य को जीवन में पैसों की बहुत जरूरत पड़ती है।"

फ़ोमा उसे निहारकर हँसा, और फिर उसके स्पर्श से काँप गया। वह ज्वेन्त्सेव की ऊँची फटी आवाज को भी अनुभव कर रहा था, जिससे उसे चिढ़ पैदा हो रही थी :

"मेरे समझ में नहीं आता कि लोग रूसी गीतों की सुन्दरता के पीछे इतने पागल क्यों हैं। इनमें सुन्दरता की क्या बात है। ऐसा दीखता है कि भूखे-जंगली भेड़ियों का रोना है। और यह कहना और भी ठीक होगा कि कुत्तों के झुण्डों का रोना है। इनमें न आनन्द है न सुन्दरता! तुम ज़रा फ्राँसीसियों को गाते सुनो या इटालियनों को!"

"ओ इवान् निकोलायेविच! जाने भी दो", उख्तिश्चेव ने नराज़ हो प्रतिवाद किया।

गलमुछों वाले भद्र पुरुष ने अपने मदिरापान को भंग करते हुए कहा :

"मैं इससे सहमत हूँ कि रूसी गाने भद्दे और नीरस होते हैं।"

सूरज छिप रहा था। पानी की चरागाहों से परे, एक स्थान पर, काले पानी पर छिपते हुए सूर्य की गुलाबी सुनहरी आभा तरंगित हो रही थी। फ़ोमा नदी की चिकनी सतह पर रंगों की तरंगित आभा को देख रहा था और उसे बातचीत तथा गानों के सुनाई पड़ते टप्पे इधर-उधर निरुद्देश्य हवा में तीर की तरह उड़ते भुनगों के समान प्रतीत हो रहे थे। साशा ने अपना सिर उसके कन्धों पर रक्खा और उसके कानों में कुछ बोली, जिससे वह झेंप गया और उसे बहुत प्रेम के साथ अपनी बाँहों में लेकर चुम्बन करना चाहा। सारी पार्टी में अकेली वही ऐसी थी, जिसमें उसे कुछ दिलचस्पी थी। ज्वेन्त्सेव और दूसरे गलमुच्छों वाले पुरुष से उसे नफरत हो रही थी।

"अभी यह कहना कठिन है। मैं झूठ नहीं बोलूंगी। मैं तुमसे साफ-साफ कहती हूँ कि मैं पैसे या भेंट के लिये ही प्यार करती हूँ। मैं जानती हूँ कि मनुष्य बिना पैसे के भी प्यार करते हैं। परन्तु यह बहुत जल्दी है। हाँ, जब मैं तुम्हें अच्छी तरह जान जाऊँगी, तब तुमसे बिना कुछ लिये भी प्यार कर सकूंगी। तुम मुझे कठोर नज़र से मत देखो। मनुष्य को जीवन में पैसों की बहुत जरूरत पड़ती है।"

फ़ोमा उसे निहारकर हँसा, और फिर उसके स्पर्श से काँप गया। वह ज्वेन्त्सेव की ऊँची फटी आवाज को भी अनुभव कर रहा था, जिससे उसे चिढ़ पैदा हो रही थी :

"मेरे समझ में नहीं आता कि लोग रूसी गीतों की सुन्दरता के पीछे इतने पागल क्यों हैं। इनमें सुन्दरता की क्या बात है। ऐसा दीखता है कि भूखे-जंगली भेड़ियों का रोना है। और यह कहना और भी ठीक होगा कि कुत्तों के झुण्डों का रोना है। इनमें न आनन्द है न सुन्दरता ! तुम ज़रा फ्राँसीसियों को गाते सुनो या इटालियनों को !"

"ओ इवान् निकोलायेविच ! जाने भी दो", उख्तिश्चेव ने नराज़ हो प्रतिवाद किया।

गलमुछों वाले भद्र पुरुष ने अपने मदिरापान को भंग करते हुए कहा :

"मैं इससे सहमत हूँ कि रूसी गाने भद्दे और नीरस होते हैं।"

सूरज छिप रहा था। पानी की चरागाहों से परे, एक स्थान पर, काले पानी पर छिपते हुए सूर्य की गुलाबी सुनहरी आभा तरंगित हो रही थी। फ़ोमा नदी की चिकनी सतह पर रंगों की तरंगित आभा को देख रहा था और उसे बातचीत तथा गानों के सुनाई पड़ते टप्पे इधर-उधर निरुद्देश्य हवा में तीर की तरह उड़ते भुनगों के समान प्रतीत हो रहे थे। साशा ने अपना सिर उसके कन्धों पर रक्खा और उसके कानों में कुछ बोली, जिससे वह झेंप गया और उसे बहुत प्रेम के साथ अपनी बाँहों में लेकर चुम्बन करना चाहा। सारी पार्टी में अकेली वही ऐसी थी, जिसमें उसे कुछ दिलचस्पी थी। ज्वेन्त्सेव और दूसरे गलमुच्छों वाले पुरुष से उसे नफरत हो रही थी।

"अरे तुम किधर घूर रहे हो ?" अचानक उख्तिश्चेव चिल्लाया।

वह मूभिक को देखकर चिल्लाया था। उसने अपना हैट सिर से उतारा, उसे घुटनों से बजाया और मुस्करा कर बोला :

"मै···मैं इन श्रीमती का गाना सुनना चाहता हूँ।"

"तुम्हें पसन्द आया ?"

"पसन्द किसे नहीं आयेगा !" वह बड़ी प्रसन्नता से साशा की ओर देखते हुए बोला : "इनके वक्ष में बड़ी शक्ति है।"

उसके शब्दों से सब स्त्रियाँ हँस पड़ीं और मर्दों ने संकेतपूर्ण आलोचनाएँ कीं।

"क्या तुम गाते हो ?" साशा ने मूभिक से पूछा।

"हाँ, यदि इसे आप गाना कहें", उसने तिरस्कार भाव से कहा।

"तुम्हें कौन-कौन से गाने आते हैं ?"

"ओह, सब तरह के। मैं तो गाने के बारे में पागल हूँ।" उसने क्षमा-याचनापूर्वक एक अल्प हास्य किया।

"आओ, तुम और मैं···मिलकर गायें।"

"श्रीमती जी, मेरा और आपका क्या साथ ?"

"तुम शुरू करो।"

"कितनी अच्छी बात है !" ज्वेन्त्सेव ने नाक भौंह चढ़ाते हुए कहा।

"अगर तुम्हें पसन्द नहीं तो पानी में डूब मरो", और साशा की आँखें उसकी ओर निहारते हुए चमकीं।

ज्वेन्त्सेव ने आँख मारी और बोला :

"पानी बहुत ठण्डा है।"

"समय आ गया है : नदी में बाढ़ भी है—तुम्हारे गन्दे शरीर से नदी का पानी जहरीला भी नहीं होगा।"

"हूँ···ह, कुछ मखौल नहीं बनी", और नौजवान ने साथ ही तिरस्कार से कहा : "रूस में कुलटायें भी भद्दी व गँवार होती हैं।"

उसके साथी ने उसकी तरफ मुँह मोड़ा और एक मतवाली हँसी से हँसा। उख्तिश्चेव भी शराब के नशे में था, उसकी चुन्धी, चपटी आँखें लड़की के चेहरे पर गड़ी हुई थीं, ज्यों ही वह अपनी असम्बद्ध बातें गुनगुना रहा था।

पक्षी जैसे चेहरे वाली लड़की अपने सामने पड़े चोकलेट के डिब्बे पर चोंच मार रही थी, जिसे उसने अपनी नाक के नीचे पकड़ा हुआ था। पावलेन्का बेड़े के किनारे खड़ी, पानी में नारंगी के छिलके फेंक रही थी।

"मैं अपने जीवन में ऐसी रम (शराब)–पार्टी में कभी नहीं आया," ज्वेन्त्सेव ने अपने साथी से शिकायत की।

फ़ोमा ने उपहासपूर्ण मुस्कान से उसकी ओर देखा। उसे खुशी थी कि वह ऊब चुका था और साशा ने उसे अपने दिल की बात बतला दी थी। वह साशा की ओर प्रेम-भरी दृष्टि से निहार रहा था—वह उसकी फुर्ती, चुस्ती और सगर्व चाल से बड़ा प्रसन्न था जैसे कि वह एक सभ्य महिला हो।

"कुमारी जी," मूझिक ने कहा, जो उसके पास ही खड़ा था—"कृपया मुझे थोड़ी सी शराब दीजिये ताकि मैं जोश में आ जाऊँ।"

"फ़ोमा इसे एक ग्लास दो।"

मूझिक उसे एक ही घूंट में पी गया और अपने ओठ पोंछे।

"अब शुरू करो", साशा ने आज्ञा दी।

अपने मुँह के एक कोने को खींच उस पुरुष ने ऊँची टेनर ध्वनि में गाना शुरू किया :

आह ! खा सकूँ न मैं,
न पी सकूँ शराब ही।

और लड़की ने उस गीत को पकड़ा।

आत्मा मेरी भरी,
शराब से ही ऊबती।

मूझिक बड़े आनन्द से हँसा, सिर हिलाया, आँखें भींचीं और एक काँपती हुई ध्वनि की धारा बहाई।

आ गई है वह घड़ी,
भरी विछोह छोह से ।

लड़की के गाने में रुदन था ।

आज जा रहा हूँ मैं,
दूर राग मोह से ।

मूफ्फिक ने अपनी आवाज़ हल्की करते हुए एक दुःख के आवेग में आधा गाया, आधा कहा :

तुरन्त ले बहो मुझे,
दूर दूर तुम कहीं…

जैसे ही दोनों की आवाज़ संध्या की शीतल शान्ति में सिसकने लगीं उन्हें अपने चारों तरफ, गरम और दयालुतापूर्ण वातावरण दिखाई दिया ।

ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सब चीजें इस गरीब आत्मा के प्रति दया भाव से मुस्करा रही हैं, जिसे काली भयंकर शक्तियाँ अपने घर बार से दूर खींच कर परदेश में ले जा रही हैं, जहाँ वह कठोर श्रम में अपना जीवन खपा देगा । न किसी शब्द न किसी गीत में, बल्कि मनुष्य के घायल हृदय से निकलते हुए आँसुओं में इस शिकायत ने अपना रोना रोया । मानो हवा उनके आँसुओं से द्रवित हो गई हो । जहाँ कि सुदूर शून्य आकाश में, जहाँ कि गूँज भी नहीं थी इन भद्दे शब्दों वाले अस्पष्ट दुख-भरे गीत में संघर्ष से नष्ट हुई एक आत्मा की दुख कथा और आवश्यकता के लौह करों द्वारा किये गये घावों का दर्द अभिव्यक्त किया गया था ।

फ़ोमा गवैयों के पास से हट गया और उन्हें एक भयभीत भाव से निहारने लगा । इस गीत ने पानी के प्रवाह की तरह उसके हृदय को दुःख की भयङ्कर शक्ति से भरपूर कर दिया । उसे प्रतीत हुआ कि उसका हृदय फटने वाला है । उसका गला भिंचने लगा और उसके चेहरे की पेशियाँ फड़कने लगीं । उसकी आँखें साशा की काली आँखों की धुंधली नजर से मिलीं । वे आँखें स्थिर और बड़ी थीं, और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह हर क्षण बड़ी होती जा

रहीं हैं। उसने कल्पना की कि उसके सामने ये दो स्त्री पुरुष ही नहीं परन्तु सब चीजे गा रही थीं और दुःख की पीड़ाओं में सब चीजें सिसक काँप और गा रही थीं। और सब चीजें निराशा में एक दूसरे से चिमट रही थीं।

जब गाना खतम हुआ, उसे एक उत्तेजनापूर्ण कम्पन हुआ। वह उन दोनों गाने वालों की ओर देख कर मुस्कराया। उसका चेहरा आँसुओं से तर था।

"क्या इस गीत ने तुम्हें इतना विचलित कर दिया?" साशा ने पूछा। वह भी थकान से पीली पड़ रही थी और उसका सांस जल्दी जल्दी चल रहा था। फ़ोमा ने मूझिक की ओर देखा; वह अपनी भौंहों से पसीना पोंछ रहा था और विस्मय से चारों तरफ देख रहा था, जैसे कि उसकी समझ में कुछ न आ रहा हो कि क्या हुआ है।

कोई शब्द सुनाई नहीं दे रहा था। सब चुपचाप और अचल बैठे थे।

"हे परमात्मा!" फ़ोमा ने एक गहरी सांस ली और पाँव पर खड़ा हुआ; फिर लगभग चिल्लाते हुए बोला: "साशा! और, तुम मूझिक! आखिर-कार तुम हो कौन?"

"स्तेपान," मूझिक ने क्षमा याचना के ढंग से मुस्कराते हुए कहा।

"तुम कैसे गाते हो!" फ़ोमा उत्तेजना में एक टाँग से दूसरी टांग पर बोझ डाल रहा था।

"ओह, श्रीमान्!" मूझिक ने आह भरी, "यह कष्ट है—ऐसा कष्ट जो एक बैल को बुलबुल बना सकता है। हमसे गवाता है। परन्तु, ये युवती महिला—परमात्मा ही जानता है कि कि यह ऐसा क्यों गाती हैं। कोई भी मनुष्य एक बार इनका गाना सुन कर इनके पाँवों पर ही लोट लोट कर मर जाना पसन्द करेगा। ये एक रत्न हैं।

"हाँ, एक बहुत अच्छा गाना हुआ," उख्तिश्चेव ने शराब के नशे में सिर हिलाते हुए कहा।

"जाय, जहन्नुम में यह सब!" ज्वेन्त्सेव ने गुस्से में मेज से उछलते और आँसुओं से भरते हुए कहा: "मैं यहाँ आनन्द प्रसन्नता के लिये समय बिताने

आया था न कि शोक-गीत या मर्सिया सुनने। मैं इसे दारुण अत्याचार कहता हूँ। मै इससे ऊब गया हूँ। मैं जा रहा हूँ!"

"फ़ीन, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा", गलमुच्छों वाले भद्र पुरुष ने कहा।

"वासा!" ज्वेन्त्सेव चिल्लाया, "चलो, अपने कपड़े पहिनो।"

"ठीक है, चलने का समय हो गया। भूरे लाल-रंगीन बालों वाली लकड़ी ने शान्त भाव से उख्तिश्चेव से कहा: "अब ठण्ड हो रही है, और जल्दी ही अँधेरा होने वाला है।"

"स्तेपान! सब चीजें समेटो"; वासा ने हुक्म दिया।

सब लोग चलने की तैयारियाँ और बातचीतें करने लगे। फ़ोमा उनको बिना कुछ समझे बूझे देखने लगा, वह अभी भी काँप रहा था। वे सब बेड़े पर इधर-उधर पीले, थके, लड़खड़ाते आपस में मूर्खतापूर्ण असम्बद्ध बातें करते चल रहे थे। साशा ने बिना किसी शिष्टाचार के अपनी चीजें समेटते हुए उन्हें एक तरफ धकेल दिया।

"स्तेपान! गाड़ीवानों को बुलाओ!"

"मैं एक और कोन्याक पीने लगा हूँ। कौन मेरे साथ शामिल होना चाहता है", गलमुच्छों वाले भद्र पुरुष ने धीमी आवाज में बोतल को हवा में घुमाते हुए कहा।

वासा ने ज्वेन्त्सेव की गर्दन से गुलूबन्द लपेटा। वह उसके सामने एक नाराज बच्चे की तरह उदासीन और सिमटा सा खड़ा था और उसकी पिंडलियों के पठ्ठे हिल रहे थे। उसे देखकर फ़ोमा का हृदय घृणा से भर गया और वह दूसरे बेड़े पर चला गया। उसे आश्चर्य हो रहा था कि ये लोग ऐसे व्यवहार क्यों कर रहे थे जैसे कि उन्होंने यह गीत सुना ही न हो। उसके हृदय में उस गीत की ध्वनि अभी भी गूँज रही थी और उसमें बड़ी बेचैनी के साथ कुछ कहने और करने की इच्छा प्रज्वलित कर रही थी।

सूर्य अब अस्त हो चुका था और अन्तरिक्ष में नीले धुंध के परदे के

पीछे छिप गया था। फ़ोमा ने इसे देख मुँह मोड़ लिया। वह इन लोगों के साथ शहर वापिस नहीं जाना चाहता था। वे डगमगाती चाल से असम्बद्ध बातें बकते हुए बेड़े पर अभी चल रहे थे। स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक होश में थीं, परन्तु भूरे-लाल बालों वाली लड़की को अपने पाँव पर सधने में समय लगा।

"ओह! मुझे नशा चढ़ गया है", वह सीधी खड़ी होते हुए बोली।

फ़ोमा कुल्हाड़े से काटने वाले तने के ऊपर बैठ गया। उसने मूझिक का कुल्हाड़ा उठा लिया जिससे उसने लकड़ी काटी थी और उसे हवा में उछाल-उछाल कर पकड़ने लगा।

"कितना गँवार है!" ज्वेन्त्सेव ने पीड़ित होकर कहा।

फ़ोमा इस आदमी से बहुत नफरत करता था—साशा के अलावा उससे और दूसरे लोगों से भी घृणा करता था, जिसे देख उसका हृदय भय से भर जाता था कि कहीं साशा कोई अप्रत्याशित कांड न कर गुज़रे।

"तुम गन्दे आदमी!" ज्वेन्त्सेव पतली आवाज में चिल्लाया और फ़ोमा ने देखा कि उसने मूझिक को धक्का दिया। मूझिक ने अपने सिर से टोपी हटाई और लज्जित होकर परे हट गया।

"बेवकूफ!" ज्वेन्त्सेव बड़े गुस्से में भरा हुआ, उसके पीछे जाता हुआ, चिल्लाया।

"चुप! खबरदार! अगर तुमने उसे छुआ!" फ़ोमा ने उसे सावधान किया।

"क्या?" ज्वेन्त्सेव मुड़कर चिल्लाया।

फ़ोमा अपनी छाती तान उसकी तरफ बढ़ा। उसे अचानक एक नई बात सूझी। एक बड़ी आनन्दपूर्ण मुस्कान से उसने मूझिक के कान में कहा:

"क्या बेड़ा तीन जगह से बँध रहा है?"

"हाँ, बँधा है।"

"रस्सों को काट दो।"

"परन्तु···इन लोगों का ?"

"शश···श···श। मैं कहता हूँ रस्सों को काट दो।"

"परन्तु, यदि······ ।"

"काट दो ! और यह काम चालाकी से करना ताकि तुम्हें कोई देख न ले।"

मूझिक ने कुल्हाड़ा पकड़ा और धीरे से बिना जल्दी के, बेड़े के किनारे की तरफ चला गया जहाँ रस्से बँधे हुए थे। उसने रस्सों पर कुछ चोटें कीं और उन्हें काट कर फ़ोमा के पास वापिस आ गया।

"मैं इसका उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहता, श्रीमान् !" वह बोला।

"डरो मत ।"

"यह तो बहने लगा है", मूझिक ने भय से हाँफते हुए कहा और वह तेजी से पार कर गया। फ़ोमा मन ही मन हँसा, परन्तु साथ ही उसे अपने पेट में एक भय का दर्द सा उठा जो चुभन और जलन जैसा था, जिसने उसके दिल में एक ऐसा डर पैदा कर दिया जैसा उसने पहिले कभी नहीं देखा था, परन्तु साथ ही उसे यह बड़ा मीठा और अच्छा भी लगा।

लोग अभी भी बेड़े पर एक दूसरे से टकराते हुए, एक दूसरे को कोट पहनाने में मदद करते-करते, हँसते, बातचीत करते चल रहे थे, जबकि बेड़ा धीरे-धीरे रुकता हुआ दूसरे बेड़े से अलग होने लगा।

"अगर ये लोग माल ढोने वाली किश्तियों में कतर में सिर के बल गिरें तो चकनाचूर हो जायेंगे।" मूझिक ने कानाफूसी की।

"अपनी जबान बन्द रक्खो ! एक किश्ती पकड़ो और इनके पीछे चले जाओ।"

"हां, हाँ ! आखिरकार वे भी मनुष्य हैं।"

मूझिक प्रसन्नतापूर्वक मुस्कराता हुआ एक बेड़े से दूसरे बेड़े पर उछलता हुआ किनारे तक पहुँच गया। फ़ोमा पानी के पास उसे निहारने और चिल्लाने की इच्छा से खड़ा रहा, परन्तु उसकी इच्छा थी कि वह तब तक न

चिल्लाये जब तक कि उसके शराब के नशे में मदहोश साथियों की दूरी काफी न हो जाये ताकि वे आत्म-रक्षा के लिये कूद भी न सकें। वह बेड़े की हल्की-हल्की हिलन को देखकर बड़ी प्रसन्नता और शान्ति का अनुभव कर रहा था, जो उसे धीरे-धीरे दूर ले जा रही थी। उसे ऐसा दीख रहा था कि जिन काले और बुरे विचारों का बोझ उस पर पड़ा था वे इस बेड़े के बहाव के साथ बहे चले जा रहे हैं। उसने ताज़ी—स्वस्थ वायु का गहरा सांस भरा, जिससे उसका दिमाग साफ हो गया। साशा उसकी तरफ पीठ किए हुये बहते बेड़े के बिल्कुल किनारे पर खड़ी थी। उसकी सुन्दर आकृति और शरीर के दृश्य से उसे सोफिया पावलोव्ना का स्मरण हो रहा था। सोफिया पावलोव्ना उससे किसी क़दर ठिगनी मात्र थी...... ।

इस स्मृति की चुभन से वह मखौली आवाज भरी में चिल्लाया :

"अन्तिम नमस्कार ! यात्रा शुभ हो !"

एकदम, अचानक और एक साथ काली-काली मूर्तियाँ उसकी तरफ चलीं और वे सब बेड़े के बीच में आ गईं। परन्तु अब तक फ़ोमा और उनके बीच ६ फुट चौड़ी ठण्डे पानी की धारा चमक रही थी। अगले कुछ क्षणों तक कोई कुछ न बोल सका।

और इसके बाद रोना, चिल्लाना और भयङ्कर रुदन का तूफान सा उठ पड़ा, जिसमें जीवन का भय भरा हुआ था। सबसे बढ़कर पतली और घृणापूर्ण आवाज ज्वेन्त्सेव की थी जो बकबास-भरी चिल्लाहट कर रहा था :

"अ...रे ! ब...चा...ओ !"

"वह हमें डुबो रहा है, वह जिन्दा मनुष्यों को डुबो रहा है।" एक भारी आवाज गरजी, जो गलमुच्छों वाले भद्र पुरुष की होनी चाहिये थी।

"तुम अपने को लोग कहते हो ?" फ़ोमा कीड़ों से काटे जाने के बाद होने वाली चिरमिराहट के साथ चिल्लाया।

लोग बेड़े के बीच एक दूसरे से भय में रगड़ खा रहे थे; बेड़ा अब तेजी से हिल और बह रहा था। बेड़े पर पानी की उछाल और उसके नीचे

पानी की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। वायुमण्डल चीत्कारों से भर गया; लोग इधर-उधर बाँहें फेंकते हुए उछलने लगे। सिर्फ साशा ही अचल, मूक भाव से जहाँ की तहाँ खड़ी रही।

"केकड़ों को नमस्कार!" फ़ोमा चिल्लाया। जितनी ही दूर बेड़ा बहता, उतना ही उसका दिल हल्कापन अनुभव करता।

"फोमा इग्नातेविच", उख्तिश्चेव गम्भीर और काँपती आवाज में चिल्लाया: "जरा सोचो, तुम क्या कर रहे हो, वह बड़ा ख़तरनाक है, मैं तुम्हारी शिकायक करूँगा।"

"जब तुम मर लोगे? जाओ अपनी शिकायतें करो!" फ़ोमा हँसा।

"हत्या!" उवेन्त्सेव रोया। परन्तु इसी क्षण उछलने की एक आवाज आई, जो ऐसी थी जैसे कि आश्चर्य या भय में पानी हाँफ रहा हो। फ़ोमा ज़रा आगे को बढ़ा परन्तु वहीं ठिठक कर खड़ा हो गया। स्त्रियाँ बड़ी भयातुर हो रो रही थीं, पुरुष भी भय में चिल्ला रहे थे और सब उसी स्थिति में खड़े थे जिसमें पानी की उछाल उन पर गिरी। फ़ोमा भौंचक्का था और पानी की ओर देख रहा था। उसने देखा कि एक काली सी चीज पानी को मथती हुई उसकी ओर आ रही है। फ़ोमा ने आन्तरिक स्वाभाविक प्रवृत्ति से अपने को बेड़े की तरफ झुकाया और पानी की तरफ दूर तक हाथ फैलाया। अगले कुछ क्षण अनन्तकाल के समान थे। अन्त में उसके हाथों को ठण्डी, भीगी उङ्गलियों ने पकड़ लिया और उसे काली-काली आँखों की झलक दिखाई दी।

उसके हृदय में जो भय भरा हुआ था, उसमें अब प्रसन्नता ने उसका स्थान ले लिया। उसने लड़की को पकड़ लिया; उसे पानी से बाहर खींचा, छाती से लगाया और बड़े आश्चर्य के साथ उसकी आँखों को निहारने लगा। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या कहे। वह उसकी तरफ बड़ी कोमलता से मुस्करा रही थी।

"ठण्ड है" वह अन्त में सारे शरीर के कम्पन के साथ बोली।

उसकी आवाज से फ़ोमा प्रसन्नतापूर्वक हँसा। उसने अपनी बाँहों में उसे उठा लिया और लगभग दौड़ता हुआ बेड़े से किनारे की तरफ गया। वह मछली की तरह भीगी और ठण्डी थी परन्तु उसका सांस उष्ण था, जिससे उसके गाल गरम हो गये और हृदय परम प्रसन्नता से भर गया।

"अच्छा, तो तुम मुझे डुबोना चाहते थे?" वह उससे चिपकती हुई बोली।

"तुमने बहुत अच्छा किया कि तुम कूद आईं", फ़ोमा ने दौड़ते हुए उससे कहा।

"तुमने भी बड़ी चालाकी की। किसी को ख्याल तक नहीं था कि तुम ऐसा कर सकते हो?"

"सुन रही हो! वे अभी भी चिल्ला रहे हैं।"

"सब जाँय जहन्नुम में। यदि ये डूब जायेंगे तो मैं और तुम साईबेरिया भेज दिये जायेंगे।" वह बोली। फ़ोमा ने इसे अनुभव किया और तेजी से दौड़ा।

उनके पीछे नदी की ओर से रोने-धोने और चिल्लाहटों की आवाजें आ रही थीं। नदी के शांत चिकने पानी पर संध्या के प्रकाश में एक छोटा सा टापू, किनारे से दूर, नदी की मुख्य धारा की ओर बहा जा रहा था जिस पर मनुष्यों की मूर्तियाँ आपस में टकरा रही थीं।

रात घिरती आ रही थी।

६.

एक दिन रविवार को दोपहर में याकोब मायाकिन अपने बगीचे में चाय-पान कर रहा था। वह चैरी की हरी शाखाओं के चन्दोवे के नीचे बैठा था, उसकी कमीज का कालर खुला था, गले से तौलिया बंधा हुआ था और बड़ी तेजी से चेहरा बनाता हुआ अभिराम भाव से जबान खड़खड़ा रहा था।

"जो अपने दिमाग पर पेट का हुक्म चलने देता है, वह मूर्ख और बदमाश होता है।"

वृद्ध पुरुष की आँखों में क्रोध की चमक थी, उसके ओठ घृणा से फड़फड़ा रहे थे और चेहरे के निचले भाग में झुर्रियाँ खिलवाड़ कर रही थीं।

"यदि फ़ोमा मेरा सगा खून का लड़का होता तो मैं उसे एक-दो बातें सिखाता!"

ल्यूबा बबूल की शाखा से सुस्ती में खिलवाड़ कर रही थी और पिता के कम्पित चेहरे का, बिना कुछ बोले, कौतूहल से अध्ययन कर रही थी। यद्यपि उसे पता नहीं था क्यों, परन्तु उसका व्यवहार उसके प्रति समय के साथ कम उदासीन और कम अविश्वासी होता जा रहा था। वह अपनी सब समझ, बुद्धिमत्ता और अनथक क्रियाशीलता के बावजूद अकेला अनुभव कर रहा था। ल्यूबा ने अपने पिता के अकेलेपन को अनुभव किया; और वह समझ गई कि इसे सहन करना उसके लिये कितना कठिन है। कभी-कभी वह उससे तर्क-वितर्क भी करती थी। वह हमेशा ही उसके उठाये आक्षेपों से घृणा करता और उनकी मखौल उड़ाया करता था। और फिर भी तर्क-वितर्क के समय वह बहुत ही शान्त और सहनशील हो सुनता था।

"यदि दिवंगत इग्नात उन अखबारों को पढ़ सकता जिनमें उसके बेटे के बारे में लिखा है, तो वह उसे जान से मार डालता ।" मायाकिन ने मेज पर घूँसा मारते हुए कहा : "जो बातें छपी हैं, वे अत्यन्त लज्जास्पद हैं।"

"परन्तु वह इसी योग्य था", ल्यूबा ने कहा ।

"मैं कब कहता हूँ कि नहीं ! आग के बिना कभी धुँआ होता है ? परन्तु यह उत्तम लेख लिखा किसने है ?"

"इससे फर्क क्या पड़ता है ?" ल्यूबा ने पूछा ।

"दिलचस्प है ! किसी दोगले ने फ़ोमा के व्यवहार के बारे में बहुत अच्छा लेख लिखा है । दिखता है वह इस पार्टी में शामिल था । उसने यह सूअरों का स्नान अपनी आँखों से देखा होगा ।"

"वह कभी फ़ोमा का साथी नहीं होगा", अपने पिता की तीक्ष्ण दृष्टि से लज्जित हो, ल्यूबा ने निश्चय भाव से कहा ।

"हूँ···हूँ ! ल्यूबा तुम्हारे अच्छे दोस्त हैं !" मायाकिन तीखी आवाज में बोला : "अच्छा, किसने लिखा है ?"

वह उसे बताना नहीं चाहती थी, परन्तु वह लगातार रूखेपन से जोर देने लगा ।

"आप वायदा करें कि उसे नुकसान नहीं पहुँचायेंगे ।" अन्त में वह बोली ।

"नुकसान ? मैं उसका सिर काट लूँगा ? तू बड़ी मूर्ख है । मैं उसे क्या नुकसान पहुँचा सकता हूँ । ये लेखक लोग मूर्ख नहीं होते । इनकी एक सत्ता होती है, इनका बुरा हो । मैं कोई गवर्नर तो हूँ नहीं । और, अगर होता भी तो मैं न उसकी जबान तोड़ सकता था और न बाँध ही सकता था । ये लोग चूहे जैसे हैं, जिनकी दाँतों की कटकटाहट को कोई नहीं रोक सकता । अब बतलाओ, यह किसने लिखा है ?"

"आपको याद है, जिमनाजियम का एक विद्यार्थी जो, जब मैं स्कूल में पढ़ती थी, कभी-कभी मुझसे मिलने आया करता था ? उनका नाम यझोव था—एक काले बालों वाला लड़का ।"

"हाँ, हाँ, मुझे याद है। क्या यह वही है ? चूहा कहीं का ! उन दिनों ही कहा जा सकता था कि यह किसी काम का लड़का नहीं होगा। मुझे उसे अपने हाथ में रखना चाहिए था, हो सकता था कि मैं उसे मनुष्य बना सकता।"

ल्यूबा ने अपने पिता की ओर देखते हुए कन्धे हिलाये और धृष्टतापूर्वक पूछने लगी :

"क्या जो लोग अखबारों में लिखते हैं, वे मनुष्य नहीं हैं ?"

मायाकिन ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया। वह मेज को उंगलिओं से वजाता रहा और पीतल के चमकीले पौलिश किये समवार में अपनी परछांई देखता रहा।

"नहीं, वे मनुष्य नहीं ; वे फोड़े है।" अन्त में उसने आँखें भींचते और सिर उठाते हुए घोषणा की। "रूस का खून खराब हो गया है, और इस गन्दे खून में ही ये पुस्तक और समाचार पत्रों के लेखक—और सब तरह के खूँख्वार, मक्कार लोग पैदा हो रहे हैं। ये उसके सारे शरीर पर फूट पड़े हैं, और उसका ज़हर फैलता जा रहा है। और रूस का खून खराब क्यों हुआ ? क्योंकि वह बहुत धीरे २ चल रहा है। इसकी दलदलों में मच्छर पैदा होते हैं और खड़े पानी में ही सब कीड़े होते हैं। यही बात जीवन के बारे में सच है कि जब वह स्थिर हो जाता है तब सड़ने लगता है।"

"पिताजी, मैं नहीं समझती कि आप ठीक हैं," ल्यूबा ने कोमलता से कहा।

"क्या कहा ?"

"मैं नहीं समझती कि आप ठीक हैं। लेखक संसार से बहुत विरक्त होते हैं। उनके कहे और लिखे पर ध्यान देना चाहिये। वे अपने लिये कुछ नहीं चाहते। न्याय और सचाई के अलावा कुछ नहीं चाहते। वे मच्छर या कीड़े नहीं हैं। वे…"

ल्यूबा अपने आवेश को रोक न सकी और उसने उन लोगों का यशोगान शुरू किया जिनकी वह दिल से प्रशंसा करती थी। आवेश में उसके गाल लाल पड़ गये और वह अपने पिता की ओर प्रार्थना–भाव से कहने लगी कि

उसे उस पर विश्वास करना चाहिये। यद्यपि, वह शब्दों से उसे मनाने में असमर्थ थी।

वृद्ध पुरुष ने उसे टोका।

"मैं, ओ मेरी प्यारी !" उसने आह भरी। "ल्यूवा, तुम बहुत पढ़ती हो। आखिरकार मुझे बताओ कि वह कौन है। इस यभोव को ही लो—वह क्या है ? परमात्मा की आँखों में एक फुर्सी, तुम कहती हो उन्हें सचाई के अलावा और कुछ नहीं चाहिये। जरा इसे सुनो तो ! कितने विनम्र हैं ? परन्तु क्या संसार में सच ही सब से प्यारी चीज़ है ? और, इससे क्या, यदि प्रत्येक मनुष्य अपना रास्ता खोज रहा हो। तुम सच मानो—संसार में निस्वार्थ व्यक्ति जैसी कोई चीज नहीं। कोई आदमी दूसरों की चीज के लिये लड़ने के लिये तैयार नहीं या कम से कम जो निपट मूर्ख न हों, और इसका नतीजा न उनके लिये और न दूसरों के लिये ही अच्छा होगा। सफलता प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य को यह पता होना चाहिये कि अपने अधिकारों या अपनी चीज़ के लिये कैसे लड़ना चाहिये। और सचाई ? लगभग चालीस साल से मैं एक ही अखबार पढ़ता हूँ, और इससे मैंने सीखा है। तुम मेरे इस मग को देखो जो सीधा तुम्हारी तरफ देख रहा है, और फिर यही इस समवार में है—वही मग परन्तु भिन्न रूप में। इस समवार मग को ही अखबार तुम्हें बतलाता है। वे असली मग को नहीं देखते। और तुम उसे असली चीज समझे बैठी हो। और जहाँ तक मैं हूँ, मैं जानता हूँ कि, मेरा मग समावार में तोड़-मरोड़ दिया जाता है।"

"परन्तु पिताजी ! पुस्तकें और समाचार पत्र सर्व साधारण के हितों के लिये लड़ते हैं, सबके हितों की रक्षा करते हैं," ल्यूवा ने दुख से प्रतिवाद किया।

मुझे बताओ कि किस अखबार में लिखा है कि तुम जिन्दगी में अकेली हो और ऊब गई हो और तुम्हें अब से बहुत समय पहले ही शादी कर लेनी चाहिए थी। वे तुम्हारे हितों की रक्षा करते हैं ? वे मेरे हितों की भी कोई रक्षा नहीं

करते, और करें भी तो कैसे ? कौन जानता है कि मैं क्या चाहता हूँ ? मेरे अलावा किस को पता है कि मेरे क्या हित हैं।"

"ओह, परन्तु पिताजी यह..सब गलत है ! मैं नहीं जानती कि इसे क्या कहा जाए, परन्तु मैं अनुभव करती हूँ कि यह सब गलत है।" ल्यूबा ने निराशा से प्रतिवाद किया।

"यह सब ठीक है," वृद्ध पुरुष ने निश्चयपूर्वक कहा। "रूस अपना दिमाग खो चुका है। इसमें कुछ भी मजबूती नहीं, यह सब चक्कर खा रहा है। लोग एकतरफा जीवन व्यतीत कर रहे हैं और टेढ़ा चलते हैं, और हर एक चीज सीधी रेखा से दूर मुड़ी तुड़ी है। कई तरह की अलग अलग आवाजें उठ रही हैं, परन्तु किसी को पता नहीं कि दूसरा क्या चाहता है। सबके ऊपर धुन्ध फैला हुआ है। लोग इस धुन्ध में ही सांस ले रहे हैं, जिससे उनका खून खराब हो रहा है। इसी से तो फोड़े फुन्सी बढ़ते हैं। मनुष्यों को आज़ादी दी जाती है कि वे जैसा चाहे सोचें, परन्तु उन्हें करने कुछ नहीं दिया जाता, और इस प्रकार भरपूर जीवन बिताने की बजाय वह सड़ता है और बदबू देता है।"

"तो इस बारे में क्या किया जाये ?" ल्यूबा ने मेज पर कोहनी टेकते हुए और अपने पिता की तरफ झुकते हुए पूछा।

"क्या किया जाए ? सब कुछ किया जा सकता है। वृद्ध पुरुष बोला। "हममें से प्रत्येक, जिसके जो कुछ लायक हो, कर सकता है। परन्तु सबसे पहले लोगों की तुम्हें लगाम छोड़नी होगी। यदि ऐसा समय आ जाये कि हर एक क्षुद्र मूर्ख यह समझने लगे कि वह आश्चर्य पैदा कर सकता है और लोगों को मनमाना हुक़्म देने के लिये ही पैदा किया गया है और उसे इसकी पूरी छुट्टी मिलनी चाहिये तो यह असम्भव है। जाओ, कुत्ते के बच्चे ! पहले यह बताओ कि तुम क्या कर सकते हो ! तभी तो प्रहसन शुरू होगा। जब वह देखता है कि उस पर कोई अंकुश नहीं है तो वह अपने सिर से ऊपर उछल, घमण्ड में भरा, अपने को अद्भुत मनुष्य समझ कर इधर-उधर कूदता फिरता है।"

मायाकिन कुछ क्षण रुका, फिर धूर्त्ततापूर्ण हँसी और हल्की आवाज में आगे बोला :

"परन्तु तुम्हारे अद्भुत मनुष्य में तो छोटे से चूहे जैसा दम है। वह एक या दो दिन ही फूला फूला चल सकता है। जिस दिन वह देखेगा कि उसकी हवा निकल गई, उस दिन बेचारा क्या करेगा ? वह तो जड़ से ही गला हुआ है। और, फिर एक मौका आता है, जब उसे असली, योग्य लोग पकड़ लेते हैं, जिनका लोगों पर अधिकार है कि जैसा चाहे हुकुम चलायें और जो उन पर कलम और केन (बेंत) से नहीं, परन्तु दिल और दिमाग से शासन करेंगे। क्या वह पूछेंगे, "क्या अब गर्मी तुम्हें असह्य हो गई है ?" इस अवसर पर वृद्ध पुरुष ने एक ऊँची और दर्प-पूर्ण ध्वनि में कहना शुरू किया : 'और फिर, तुम अमुक अपनी जबान बन्द करो। तुम एक बार भी नज़र न आओ ! यदि ऐसा नहीं होगा तो हम तुम्हें पृथ्वी तल से ऐसे नष्ट कर देंगे जैसे दरवाजे की चौखट से चीटियाँ। एक बार भी नजर न आओ।' ल्यूबा ! ऐसा ही होगा ह···ह···ह···!"

वृद्ध पुरुष बड़ा मजा ले रहा था। उसके चेहरे की सब झुर्रियाँ हिल रही थीं और अपनी बात कहते हुए उसका सारा शरीर फड़क रहा था। उसने अपनी आँख बन्द की और ओठों को ऐसे छुआ जैसे कि वह किसी चीज़ का स्वाद ले रहा हो···।

"और फिर वही लोग जिन्होंने अव्यवस्था के समय बागडोर अपने हाथ में सँभाली होगी, जीवन का निर्माण करेंगे। फिर यह गड़बड़ अधिक दिन नहीं रहेगी; जीवन व्यवस्थित रूप से चलेगा जैसा कि ताल और लयपूर्ण संगीत। परन्तु, दुःख है कि मैं उस समय तक जीवित नहीं रहूँगा।"

ल्यूबा के लिये अपने पिता का प्रत्येक शब्द एक मजबूत जाल के धागे के समान था जिसमें वह फंसती जा रही थी। स्वयं मुक्त होने में असमर्थ होने के कारण वह अचेतन चुप्पी से उसकी बातों को सुन रही थी, ध्यानपूर्वक उसके चेहरे की ओर देख रही थी, और उसके शब्दों में आत्मिक समर्थन तलाश कर रही थी, और कुछ कुछ वही चीजें पा रही थी जिन्हें उसने किताबों में पढ़ा था और जिन्हें वह सत्य समझ रही थी। परन्तु अपने पिता की रुँधती हँसी से उसका दिल छिल गया और छोटे २ काले कीड़ों के समान

उसके चेहरों पर चलती झुर्रियों को देख वह डर गई। उसने अनुभव किया कि उसका पिता उसे उसके उद्देश्यों से विचलित करना चाहता है जो उसे अपने स्वप्नों में बहुत सरल और प्रकाशमान लगे थे।

"पिताजी," वह आवेग में बोली, "आप क्या समझते हैं? तरास कैसा है?"

मायाकिन ने फिर शुरू किया। उसकी भौंहें अप्रसन्नता से हिलीं, और अपनी लड़की की ओर कठोर लौह दृष्टि से देखता हुआ रुक्षता से बोला,

"तुमने ऐसी बात क्यों पूछी?"

"क्यों, उसके बारे में जिकर नहीं करना चाहिये?" ल्यूबा ने कोमलता से पूछा।

"मैं उसके बारे में कहना नहीं चाहता, और न ही मैं तुझे इसकी सलाह दूँगा।" वृद्ध पुरुष ने अपनी लड़की की ओर उंगली उठाई और तिरछी नजर से देखते हुए सिर नीचा कर लिया। परन्तु जब उसने यह कहा कि वह अपने बेटे के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता, उसने अपने को गलत समझा क्योंकि एक ही मिनट बाद वह फिर गुस्से में बोला :

"तरास भी ऐसे ही फोड़ों में से एक है। तुम चंचल नौजवानों की नाक में जीवन की सब गन्धें आती हैं और क्योंकि तुम्हें अच्छी बुरी का पता नहीं, तुम सबको सूंघ लेते हो जिससे तुम्हारा दिमाग धुँधला पड़ जाता है। तरास भी थूथनी वाला सूअर का बच्चा है,......वह अब तीस बरस का होगा...... मगर मेरे लिये......वह......मर चुका है।"

"क्यों, उसने क्या किया?" ल्यूबा ने अपने पिता के प्रत्येक शब्द का उत्सुकता से पान करते कहा।

"कौन जानता है? मैं नहीं समझता कि वह अपने को भी पहचानता है। अब यदि उसे कुछ बुद्धि आ गयी है तो शायद समझ जाये। वह एक बुद्धिमान बाप का बेटा है और जीवन में से भी काफी गुजर लिया है। लोग इन निहलिष्टों के साथ बहुत रिआयत करते हैं। अगर मेरा बस चले तो मैं

इन्हें दिखा दूँ ! इन्हें जंगलों और रेगिस्तानों में···मार्च करवा दूँ । जाओ बेटी, अब तुम्हें मौका है कि तुम अपनी तबियत के अनुसार जीवन बिताओ ! हमें दिखाओ कि तुम क्या कर सकते हो ! और मैं उन पर कुछ मजबूत मूझिक भी तैनात कर दूँगा । आओ, बताओ कि तुमने क्या सीखा है ? हमने तुम्हें खिलाया, पिलाया, पहनाया और सिखाया—अब बतलाओ कि तुम क्या सीखे हो ? समय आ गया कि तुम हमारी फिक्रों का कर्ज अदा करो । ऐसे लोगों पर एक कोपेक भी खर्च करना बेकार है, और मैं उनके मांस से रस की एक-एक बूंद निकाल लूँगा—और उनसे पूरा कर्ज चुकता करवा लूँगा । तुम मनुष्य को ऐसे ही नहीं फेंक सकते—उन्हें सिर्फ जेलों में नहीं ठूंस सकते । तुमने अच्छा कानून पढ़ा है ! तुम भद्र पुरुषों की तरह रहते हो ? ओह, नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकते । हम तुमसे काम लेंगे ! हम सिट्टे का एक भी दाना व्यर्थ नहीं फेंक सकते, और क्या एक मनुष्य को उससे पूरा लाभ उठाये बगैर फेंक सकते हैं । एक कुशल बढ़ई छोटे छोटे लकड़ी के टुकड़ों को भी काम में ले आता है, और इसी प्रकार हमें प्रत्येक मनुष्य का काम करना चाहिये । एक गन्दे से गन्दे कीड़े का भी जीवन में स्थान होता है । और मनुष्य की हम कीड़े से तुलना नहीं कर सकते; परन्तु यह कितने दुःख की बात है यदि मनुष्य में मस्तिष्क रहित मांस हो । उदाहरण के लिये फ़ोमा को ही लो······और यह कौन आ रहा है ? देखना जरा ल्यूबा ।"

ल्यूबा मुड़ी और देखा कि, यमीक का केप्टिन यफीम रास्ते पर चला आ रहा है और हाथ में टोपी पकड़े आदर भाव से झुक रहा है । उसके चेहरे पर निराशा और अपराध की झलक थी, जिससे वह बिल्कुल दबा और परास्त प्रतीत हो रहा था ।

"क्या बात है ?" मायाकिन ने उसे देख कर पूछा ।

"मैंने आपके पास आने का निश्चय किया था," यफीम ने झुकते हुए कहा ।

"यह तो मैं पहले ही देख रहा हूँ । अब क्या आपत्ति है ? नाव कहाँ है ?"

"नाव तो वहीं है," यफीम ने अनिश्चित दिशा की ओर अपना हाथ हिलाते और एक पाँव से दूसरे पाँव पर भारी सन्तुलन रखते हुए कहा।

"कहाँ है ? बोलो ! क्या हुआ" वृद्ध पुरुष गुस्से में चिल्लाया।

यफीम ने कहने से पहले गहरा सांस भरा और बोला :

"माल ढोने वाली किश्ती नं० ६ टूट गई है। एक मनुष्य घायल हो गया है और एक बिल्कुल लापता है—मुझे डर है, डूब गया है।"

"हूँ···हूँ", मायाकिन ने अपनी क्रूर दृष्टि से कैप्टेन की परीक्षा लेते हुए कहा : "यफीम, मैं इसके लिये तुम्हारी खाल उतार लूँगा।"

"इसमें मेरा दोष नहीं", यफीम तुरन्त बोला।

"तुम्हारा नहीं ?" बुड्ढा काँपता हुआ चिल्लाया : "तो फिर किसका दोष है ?"

"मालिक का अपना।"

"फ़ोमा का ? और तुम्हारा ? क्यों, तुम्हारा नहीं ?"

"मैं···मैं तो नीचे लेटा हुआ था।"

"लेटे हुए थे, तुम ?"

"मैं बँधा हुआ था !"

"क्···या"; बुड्ढा चिल्लाया।

"देखिये, मैं आपको सब ठीक-ठीक बताता हूँ : मालिक ने शराब बहुत पी ली थी और वह चिल्ला रहे थे : 'हटो, मैं अपने आप जहाज को चलाऊँगा', और मैंने कहा : 'मैं ऐसा नहीं करने दे सकता।' मैं बोला : 'ऐसा कैसे हो सकता है जब मैं कैप्टेन हूँ ?' 'इसके हाथ-पाँव बाँध दो !' उन्होंने कहा और लोगों ने मुझे बाँधकर जहाज के पेंदे में पहुँचा दिया और एक मल्लाह मेरे ऊपर तैनात कर दिया, क्योंकि उन्होंने शराब किसी क़दर ज्यादा पी हुई थी, वह मखौल करना चाहते होंगे। जब उन्होंने देखा कि माल ढोने वाली छः किश्तियों के काफले को चेर्नोगोरेत्स खींचे ला रहा है तो उन्होंने अपने बोट को उसके ठीक सामने भिड़ा दिया। उन्होंने भोंपू बजाये, कई बार बजाये, यह कहना ठीक होगा कि उन्होंने भोंपू दिये।"

"फिर ?"

"फिर वे कुछ न कर सके। सामने की दोनों किश्तियाँ हमारी बाईं ओर टकराईं और हमें बिल्कुल तोड़ फोड़ दिया। उनका भी नुकसान हुआ परन्तु हमारा बहुत ज्यादा।"

मायाकिन अपनी कुर्सी में भयङ्कर अट्टहास करता हुआ उछलने लगा। यफ़ीम के कन्धे झुक गये।

"उनका बड़ा कठोर स्वभाव है। जब वह नशे में नहीं होते तो किसी से बात नहीं करते, ऐसे घूमते हैं जैसे उनके दिल पर बड़ा बोझ हो। परन्तु ज्यों ही अपनी कमानियों में शराब का तेल देते हैं, वे छत से टकराने लगते हैं। फिर वे अपने या अपने कारोबार के मालिक नहीं रहते। और मुझे यह कहने के लिये क्षमा करें कि सबसे बढ़कर वे अपने आप अपने दुश्मन हैं। याकोव तरासोविच ! मैं काम छोड़ना चाहता हूँ। जब तक कि कोई असली मालिक न हो, मैं नहीं चल सकता। मैं इन बातों का आदी नहीं हो सकता।"

"बहुत हो लिया," मायाकिन कठोरता से बोला। "फ़ोमा अब कहाँ है ?"

"वहीं, जहाँ यह घटना हुई है। इससे तुरन्त उनके होश ठिकाने आ गये और उन्होंने तुरन्त मजदूरों को बुलाने भेजा। वे किश्ती को उठाने की तैयारियाँ कर रहे हैं। उन्होंने काम शुरू कर दिया होगा।"

"क्या वह वहाँ अकेला है ?" मायाकिन ने सिर लटकाते हुए पूछा।

"न–हीं," यफ़ीम ने ल्यूबा की तरफ तिरछी नज़र मारते हुए कहा। "उनके साथ एक काले बालों वाली युवती भी है। वह, अगर आप मुझसे पूछें, बहुत अच्छा गाती है और सारे समय गाती रहती है। यह भी बड़ा आकर्षण है।" यफ़ीम ने सांस भरते हुए कहा।

"मैंने तुमसे उस स्त्री के बारे में तो नहीं पूछा" मायाकिन आपे से बाहर होकर चिल्लाया। उसके चेहरे की झुर्रियाँ गहरी पड़ गईं जैसे कि उसे बड़ी पीड़ा हो रही हो। ल्यूबा को भय हुआ कि कहीं वह रोने न लगे।

"पिताजी ! शान्त रहिये", वह धीरे से बोली : "हो सकता है कि कोई बहुत बड़ा नुकसान न हुआ हो।"

"बहुत बड़ा नहीं ?" मायाकिन चिल्लाया : "तू बेवकूफ क्या समझे ? तू समझती है कि किश्ती ही नष्ट हुई ? नहीं, यहाँ एक मनुष्य नष्ट हो गया है और वह मनुष्य जिसकी मुझे जरूरत है ! जिसकी मुझे जरूरत है !! समझी बेवकूफ !"

बड़े गुस्से के साथ सिर हिलाता हुआ मायाकिन घर की ओर चला गया।

जब यह सब कुछ हो रहा था, फ़ोमा चार सौ वर्स्त दूर. वोल्गा के किनारे एक गाँव की झोंपड़ी में था। वह अभी उठा ही था और फर्श के बीच में ताजी पूलियों के ढेर पर लेटा हुआ खिड़की से फटे भूरे-भूरे बादलों को उदासीनता से देख रहा था।

वह अपने सिर को बिना हिलाये लेटा पड़ा था, जो शराब के नशे से भारी था, और कल्पना कर रहा था कि एक प्रकार के भूरे बादल उसकी छाती में उड़ रहे हैं और उनसे एक प्रकार की चुभती सर्दी और सील टपक रही थी। उन धीरे-धीरे हिलते बादलों में एक प्रकार की निर्बलता और कायरता थी, जो वह अपने अन्दर अनुभव कर रहा था। पिछले कुछ महीनों की स्मृतियाँ उसके दिमाग में आ रही थीं, परन्तु वह उन पर कोई विचार नहीं कर रहा था।

यह ऐसा था जैसे कि वह एक गरम गँदली नदी में गिर गया हो और उसे काले पानी ने पकड़ लिया हो। यह धारायें आसमान में बादलों की तरह चल रही थीं तथा उसे दूर-दूर बहाये ले जा रही थीं। इस शोर और अन्धकार में वह अस्पष्ट रूप से देख रहा था कि वह अकेला नहीं है, इसके अलावा दूसरे लोगों को भी वह पानी बहाये ले जा रहा था, और ये लोग दिन प्रति दिन पलटते जा रहे थे और बड़े दयनीन तथा घृणित दिखाई दे रहे थे। शराब के नशे में मदहोश, शोर-शराबा करते, लड़ते-

झगड़ते लालची लोग उसके चारों तरफ चक्कर काट रहे थे। उसके खर्च पर एय्याशी करते, उसे गालियाँ देते, आपस में लड़ते झगड़ते चिल्लाते या रोते थे। उसने उन पर चोट की। उसे याद आया कि उसने एक आदमी के मुँह पर मुक्का मारा, दूसरे का कोट खींचा और उसे पानी में फेंक दिया था। किसी ने अपने मेंढक जैसे ठण्डे चिपचिपे ओठों से उसका हाथ चूमा; आँसू-भरी आँखों से प्रार्थना की कि वह उसे न मारे। उसके दिमाग़ में से चेहरे, शब्द, और आवाजों के टुकड़े गुजरते चले गये। पीले रंग का ब्लाउज, जो वक्ष पर से खुला हुआ था, पहिने एक स्त्री ऊँची सिसकती आवाज में गा रही थी।

आज तो हँसी खुशी, तू जी ले जिंदगी;
फिकर भविष्य की नहीं······

सब लोग उन्हीं काली लहरों में जकड़े हुए थे और लहरों में उसी तरह बहे जा रहे थे जैसे कि वे बिल्कुल कूड़ा करकट हों। उनमें से कोई भी सामने देखने अथवा यह देखने का कि यह भयंकर धारा उन्हें कहाँ ले जा रही है हौसला नहीं करता था, और इसलिये अपने भय को शराब में डुबो कर वे शोर-शराबा, उछल-कूद, नाच-रङ्ग और मसखरियाँ कर रहे थे। उन्हें यह नहीं पता था कि सच्ची प्रसन्नता का क्या अर्थ होता है? वह भी वैसा ही कर रहा था, जैसा कि वे। और, अब उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह जीवन की दुःखद दीर्घता को जल्दी खतम करने के लिये ऐसा कर रहा था। अकेली साशा ही इस व्यभिचार की मद मस्त घुमर-घेरियाँ में पागल और शान्त थी, जब कि दूसरे लोग जीवन के प्रबल आवेशों में बहे चले जा रहे थे और भूलने की इच्छा की सनक से पागल हो रहे थे। वह कभी भी शराब के नशे में मदहोश नहीं हुई; सदा ही मजबूत और हाकिमाना आवाज में बोलती थी। उसकी सब हरकतों में विश्वास था, मानो कि वह इस भयंकर धारा में स्वयं न फँस कर इसे संचालित करती थी। फ़ोमा ने उसे अपने इर्द-गिर्द के लोगों में समझदार पाया जो सब प्रकार के शोर शराबे और मद्यपान के आनन्द के उत्सव की शौकीन थी। वह अपने आस पास सब लोगों पर हुकम चलाती, आमोद-प्रमोद का कोई नया रास्ता ढूँढ़ती, सब से एक सा ही व्यवहार करती और सबसे एक ही आवाज,

उन्होंने अपना समय एक नदी-बोट के बोर्ड पर, जहाँ बाजा बज रहा था, गुजारा। उन दोनों ने शेम्पेन पी और मदमस्त हो गये। साशा ने एक गीत गाया जो बहुत शोकपूर्ण था जिसे सुनकर फ़ोमा बच्चों की तरह रोने लगा। इसके बाद फ़ोमा और उसने एक रूसी नाच किया और जब वह थक चुका तब किश्ती से कूद पड़ा और लगभग डूबते से बचा।

अब जब कि वह अपने दिमाग में बहती इन स्मृतियों के साथ फर्श पर बैठा था, उसे अपने प्रति लज्जा और साशा के प्रति अप्रसन्नता हुई। उसने उसके सुन्दर शरीर की तरफ देखा, यहाँ तक कि उसके श्वास-प्रश्वास को सुना, और समझने लगा कि वह न तो उसे प्यार ही करता था और न उसे उसकी आवश्यकता ही थी। उसके मलिन मस्तिष्क में मूर्खता और दुराचारपूर्ण दुःखद विचार रूप धारण करने लगे। यह ऐसा था जैसे कि उसके पिछले दिनों का कुछ जीवन कठोर, भीगे, ऊन के गोले की शक्ल में हो गया था जो उसके अन्दर लुढ़क रहा था, और जो धीरे धीरे खुलता हुआ उसे अपने पतले भूरे धागे में उलझा रहा था।

"मुझे क्या हो गया है ?" उसने सोचा, "मैं कौन हूँ ?"

इस प्रश्न से वह भौंचक्क रह गया और सोचने लगा। वह यह जानने की कोशिश करने लगा कि वह दूसरों की तरह शान्ति और सन्तोष से क्यों नहीं रह सकता। इस विचार से वह और लज्जित हो गया। वह पूलियों पर पड़ा करवटें बदलने लगा, और बड़ी अधीरता से उसने साशा को कोहनी मारी।

"होश में रहो," वह आधी नींद में बोली।

"कोई बात नहीं, सब ठीक है। तुम कोई भद्र महिला तो हो ही नहीं," उसने जवाब दिया।

"क्या ?"

"कुछ नहीं।"

उसकी ओर पीठ कर वह जम्हाई लेने लगी।

"मुझे स्वप्न आया कि मैं फिर बाँसुरी बजा रही हूँ।" वह निद्रा

उन्होंने अपना समय एक नदी-बोट के बोर्ड पर, जहाँ बाजा बज रहा था, गुजारा। उन दोनों ने शेम्पेन पी और मदमस्त हो गये। साशा ने एक गीत गाया जो बहुत शोकपूर्ण था जिसे सुनकर फ़ोमा बच्चों की तरह रोने लगा। इसके बाद फ़ोमा और उसने एक रूसी नाच किया और जब वह थक चुका तब किश्ती से कूद पड़ा और लगभग डूबते से बचा।

अब जब कि वह अपने दिमाग में बहती इन स्मृतियों के साथ फर्श पर बैठा था, उसे अपने प्रति लज्जा और साशा के प्रति अप्रसन्नता हुई। उसने उसके सुन्दर शरीर की तरफ देखा, यहाँ तक कि उसके श्वास-प्रश्वास को सुना, और समझने लगा कि वह न तो उसे प्यार ही करता था और न उसे उसकी आवश्यकता ही थी। उसके मलिन मस्तिष्क में मूर्खता और दुराचारपूर्ण दुःखद विचार रूप धारण करने लगे। यह ऐसा था जैसे कि उसके पिछले दिनों का कुछ जीवन कठोर, भीगे, ऊन के गोले की शक्ल में हो गया था जो उसके अन्दर लुढ़क रहा था, और जो धीरे धीरे खुलता हुआ उसे अपने पतले भूरे धागे में उलझा रहा था।

"मुझे क्या हो गया है ?" उसने सोचा, "मैं कौन हूँ ?"

इस प्रश्न से वह भौंचक्क रह गया और सोचने लगा। वह यह जानने की कोशिश करने लगा कि वह दूसरों की तरह शान्ति और सन्तोष से क्यों नहीं रह सकता। इस विचार से वह और लज्जित हो गया। वह पूलियों पर पड़ा करवटें बदलने लगा, और बड़ी अधीरता से उसने साशा को कोहनी मारी।

"होश में रहो," वह आधी नींद में बोली।

"कोई बात नहीं, सब ठीक है। तुम कोई भद्र महिला तो हो ही नहीं," उसने जवाब दिया।

"क्या ?"

"कुछ नहीं।"

उसकी ओर पीठ कर वह जम्हाई लेने लगी।

"मुझे स्वप्न आया कि मैं फिर बाँसुरी बजा रही हूँ।" वह निद्रा

भिभूत अवस्था में बोली : "मैं सोलो बजाती हुई गा रही हूँ। मेरे सामने दाँत निकाले एक मैला कुत्ता बैठा है, जो मुझे खतम कर देना चाहता है। मैं भय-भीत हो गई हूँ। मैं जानती हूँ कि जब मैं गाना खतम करूँगी उसके बाद वह किसी क्षण मुझ पर उछल पड़ेगा। और इसलिये मैं गाती जा रही हूँ जब तक कि मेरी आवाज़ जवाब न दे दे। कितनी भयङ्कर बात है वह दांत किटकिटाता मेरे सामने खड़ा था। तुम इस स्वप्न का क्या मतलब समझते हो ?"

"एक मिनट ठहरो, बक़वास बन्द करो," फ़ोमा ने खोखली आवाज में कहा। "पहले तुम मुझे यह बताओ, तुम मेरे बारे में क्या जानती हो ?"

"यह कि तुम अभी जागे हो।" वह उसकी ओर बिना मुड़े बोली।

"हाँ, मैं अभी जागा हूँ," फ़ोमा ने अपना हाथ सिर के पीछे रखते हुए सोच में कहा : "संक्षेप में, मैं तुमसे यही जानना चाहता हूँ कि तुम मुझे कैसा आदमी सोचती हो।"

"तुम शराब में झूम रहे हो," साशा ने जम्हाई लेते हुये उत्तर दिया।

"सुनो अलक्साश्र !" फ़ोमा ने प्रार्थना-भाव से कहा, "ये बेवक़ूफियाँ बन्द करो, और मुझे सच सच बताओ कि तुम मेरे बारे में क्या क्या समझता हो।"

"मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं सोचती," उसने रुखाई से उत्तर दिया।

"उसने एक गहरी साँस ली और चुप हो गया। दोनों एक मिनट तक ऐसे ही बिना बोले पड़े रहे, फिर :

"बहुत बढ़िया बात है !" साशा ने लापरवाही से कहा। "तुम आशा रखते हो कि मैं सब तरह के लोगों के बारे में अपना दिमाग खराब करूँ ! मेरे पास अपने बारे में ही सोचने को समय नहीं, या हो सकता है कि मैं चाहती ही नहीं।"

फ़ोमा निरानन्द हँसा और बोला : "मैं भी बस ऐसे ही न सोचना चाहता तो !"

•

लड़की ने एक क्षण के लिये उसके चेहरे को देखने के लिये तकिये से अपना सिर उठाया।

"तुम बहुत ध्यानमग्न हो," वह बोली। "सावधान रहो, इसका कुछ अच्छा परिणाम नहीं। मैं तुम्हें तुम्हारे बारे में कुछ नहीं बता सकती। बस एक बात मैं कह सकती हूँ कि तुम औरों के मुकाबले में अच्छे हो। परन्तु इससे तुम्हें क्या ?"

"औरों से अच्छा क्यों ?" फ़ोमा ने सोचते हुए पूछा।

"ओह, यह मैं नहीं जानती। यदि मैं कोई शोक-गीत गाती हूँ, तुम रो पड़ते हो; यदि कोई नीच प्रकृति का व्यक्ति मिलता है तो तुम उसे मारते हो। स्त्रियों के प्रति तुम बहुत सभ्य हो—तुम उनसे फायदा नहीं उठाना चाहते और तुम वीर भी हो सकते हो।"

इन में से किसी बात ने फ़ोमा को सन्तुष्ट नहीं किया।

"तुमने मुझे नहीं समझा," वह फौरन बोला।

"मैं कैसे जान सकती हूँ कि तुम क्या चाहते हो। वे लोग माल ढोने वाली किश्ती को उठा रहे हैं। हमें इसमें क्या करना चाहिये ?"

"हमें क्या करना चाहिये ?" फ़ोमा ने पूछा।

"क्या निझनि नोवोगोरद या काज़ान हो आयें ?"

"क्यों ?"

"नाच रङ्ग, आनन्द और मदिरा पान के लिये।"

"यह तो हमने काफी कर लिया है।"

काफी देर तक दोनों आपस में बिना बोले एक दूसरे को बिना देखे पड़े रहे।

"तुम एक कठोर पुरुष हो, जिसके साथ गुजारा नहीं हो सकता", अन्त में साशा बोली : "बहुत ही नीरस हो।"

ही तरह जीवन व्यतीत करेगा ? आत्मा में आग होती है, उसमें लज्जा होती है !"

वह बेंच पर बैठी अपनी जुराबें चढ़ा रही थी, परन्तु इन शब्दों को सुनकर, सिर उठाकर कठोर दृष्टि से उसे घूरने लगी ।

"तुम क्या घूर रही हो ?" फ़ोमा बोला ।

"तुमने यह बात क्यों कही ?" उसने अपलक दृष्टि से कहा ।

उसके सवाल में एक धमकी थी और फ़ोमा सिमट कर रह गया ।

"क्यों न कहूँ ?" उसने ऐसी आवाज में कहा जिसमें से दर्प निकल रहा था ।

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो ?" वह कपड़ा पहिनते हुए बोली ।

"मुझ में ऐसी कौन सी अच्छी बात है ?"

"ओह, कोई खास बात नहीं । ऐसा दीखता है जैसे कि तुम दो बापों से पैदा हुए हो । तुम्हें पता है कि मैंने लोगों के बारे में क्या ज्ञान अर्जन किया है ?"

"क्या ?"

"यदि कोई व्यक्ति अपने किये का जवाब नहीं दे सकता, वह अपने से डरता है तो इसका मतलब हैं कि वह निरर्थक है ।"

"क्या मुझे लक्ष्य कर कह रही हो ?" उसने कुछ रुक कर पूछा ।

साशा ने एक चिकना गुलाबी रंग का ड्रेसिंग-गाउन अपने कन्धों पर से फेंक दिया और अपने पाँव पर लेटे आदमी की ओर खड़े होकर देखने लगी ।

"तुम मेरी आत्मा में झाँकने का साहस मत करो", वह उसी समय एक भारी कोमल आवाज में बोली । "तुम्हारा इससे कोई वास्ता नहीं । अकेली मैं ही इस बारे में कुछ कह सकती हूँ । यदि मैं चाहूँ तो अपना दिल खोलकर सभी के बारे में क्या नहीं कह सकती ! मेरे पास तुम्हारे लिये भी, बहुत से शब्द हैं, जो भारी हथौड़े के समान हैं । यदि मैं उन्हें तुम्हारे सिर

ही तरह जीवन व्यतीत करेगा ? आत्मा में आग होती है, उसमें लज्जा होती है !"

वह बेंच पर बैठी अपनी जुराबें चढ़ा रही थी, परन्तु इन शब्दों को सुनकर, सिर उठाकर कठोर दृष्टि से उसे घूरने लगी।

"तुम क्या घूर रही हो ?" फ़ोमा बोला।

"तुमने यह बात क्यों कही ?" उसने अपलक दृष्टि से कहा।

उसके सवाल में एक धमकी थी और फ़ोमा सिमट कर रह गया।

"क्यों न कहूँ ?" उसने ऐसी आवाज में कहा जिसमें से दर्प निकल रहा था।

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो ?" वह कपड़ा पहिनते हुए बोली।

"मुझ में ऐसी कौन सी अच्छी बात है ?"

"ओह, कोई खास बात नहीं। ऐसा दीखता है जैसे कि तुम दो बापों से पैदा हुए हो। तुम्हें पता है कि मैंने लोगों के बारे में क्या ज्ञान अर्जन किया है ?"

"क्या ?"

"यदि कोई व्यक्ति अपने किये का जवाब नहीं दे सकता, वह अपने से डरता है तो इसका मतलब है कि वह निरर्थक है।"

"क्या मुझे लक्ष्य कर कह रही हो ?" उसने कुछ रुक कर पूछा।

साशा ने एक चिकना गुलाबी रंग का ड्रेसिंग-गाउन अपने कन्धों पर से फेंक दिया और अपने पाँव पर लेटे आदमी की ओर खड़े होकर देखने लगी।

"तुम मेरी आत्मा में झाँकने का साहस मत करो", वह उसी समय एक भारी कोमल आवाज में बोली। "तुम्हारा इससे कोई वास्ता नहीं। अकेली मैं ही इस बारे में कुछ कह सकती हूँ। यदि मैं चाहूँ तो अपना दिल खोलकर सभी के बारे में क्या नहीं कह सकती ! मेरे पास तुम्हारे लिये भी बहुत से शब्द हैं, जो भारी हथौड़े के समान हैं। यदि मैं उन्हें तुम्हारे सिर

पर मारूँ, तो तुम पागल हो जाओगे। परन्तु निरे शब्द ही तुम्हारा इलाज नहीं कर सकते। जरूरत है तुम्हें खालिस जलाया जाये, जैसा कि पवित्र सोमवार के दिन तवों को आग पर जलाया जाता है।"

एक आवेशपूर्ण भाव-भंगी के साथ उसने अपना हाथ सिर पर ले जाकर बालों को नीचे ढुलका दिया, जो काली भारी लटाओं के रूप में उसके कन्धे पर आ गिरे।

"इसे मत देखो कि मैं आवारा स्त्री हूँ।" वह अपने सिर को घृणा-पूर्वक पीछे को फेंकती हुई बोली।

"कुछ लोग अपने गन्द में भी उन लोगों से अधिक स्वच्छ होते हैं, जो रेशम के सूट या बढ़िया कपड़े पहते हैं। तुम्हें पता नहीं कि तुम जैसे छैल-छबीलों के बारे में—जिनके हृदय में मेरे प्रति घृणा का गोदाम भरा पड़ा है, मैं क्या समझती हूँ! परन्तु यह घृणा ही मुझे मुँह बन्द रखने के लिये मजबूर करती है, क्योंकि मुझे डर है कि मैं अपना दिल खोलकर न कह दूँ। इससे मैं खाली हो जाऊँगी और……जीवन में कुछ न रहेगा।"

अब उसे वह फिर से चाहने लगा: साशा के शब्द उसकी मनोवस्था के ही सदृश थे। वह थोड़ा सा हँसा और उसके चेहरे तथा आवाज़ से सन्तोष झलक रहा था। वह बोला:

"मैं भी अनुभव करता हूँ कि कोई बात मेरे दिल और दिमाग में आ रही है और जब समय आयेगा और मेरी समझ में आयेगी, तो कुछ शब्द मैं भी कहूँगा।"

'किसके खिलाफ ?"

"हर एक के खिलाफ ?" फ़ोमा ने विस्मय में अपने पाँव पर खड़े होते हुए कहा: "मैं छल और कपट के खिलाफ कहूँगा! मैं पूछता हूँ…।"

"जाओ, ज़रा पूछो समवार उबल गया है या नहीं ?" साशा उसे ठण्डे दिल से टोकते हुए बोली।

फ़ोमा ने उसकी तरफ तेजी से देखा।

ही तरह जीवन व्यतीत करेगा ? आत्मा में आग होती है, उसमें लज्जा होती है !"

वह बेंच पर बैठी अपनी जुराबें चढ़ा रही थी, परन्तु इन शब्दों को सुनकर, सिर उठाकर कठोर दृष्टि से उसे घूरने लगी।

"तुम क्या घूर रही हो ?" फ़ोमा बोला।

"तुमने यह बात क्यों कही ?" उसने अपलक दृष्टि से कहा।

उसके सवाल में एक धमकी थी और फ़ोमा सिमट कर रह गया।

"क्यों न कहूँ ?" उसने ऐसी आवाज में कहा जिसमें से दर्प निकल रहा था।

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो ?" वह कपड़ा पहिनते हुए बोली।

"मुझ में ऐसी कौन सी अच्छी बात है ?"

"ओह, कोई खास बात नहीं। ऐसा दीखता है जैसे कि तुम दो बापों से पैदा हुए हो। तुम्हें पता है कि मैंने लोगों के बारे में क्या ज्ञान अर्जन किया है ?"

"क्या ?"

"यदि कोई व्यक्ति अपने किये का जवाब नहीं दे सकता, वह अपने से डरता है तो इसका मतलब है कि वह निरर्थक है।"

"क्या मुझे लक्ष्य कर कह रही हो ?" उसने कुछ रुक कर पूछा।

साशा ने एक चिकना गुलाबी रंग का ड्रेसिंग-गाउन अपने कन्धों पर से फेंक दिया और अपने पाँव पर लेटे आदमी की ओर खड़े होकर देखने लगी।

"तुम मेरी आत्मा में झाँकने का साहस मत करो", वह उसी समय एक भारी कोमल आवाज में बोली। "तुम्हारा इससे कोई वास्ता नहीं। अकेली मैं ही इस बारे में कुछ कह सकती हूँ। यदि मैं चाहूँ तो अपना दिल खोलकर सभी के बारे में क्या नहीं कह सकती ! मेरे पास तुम्हारे लिये भी बहुत से शब्द हैं, जो भारी हथौड़े के समान हैं। यदि मैं उन्हें तुम्हारे सिर

पर मारूँ, तो तुम पागल हो जाओगे। परन्तु निरे शब्द ही तुम्हारा इलाज नहीं कर सकते। जरूरत है तुम्हें खालिस जलाया जाये, जैसा कि पवित्र सोमवार के दिन तबों को आग पर जलाया जाता है।"

एक आवेशपूर्ण भाव-भंगी के साथ उसने अपना हाथ सिर पर ले जाकर बालों को नीचे ढुलका दिया, जो काली भारी लटाओं के रूप में उसके कन्धे पर आ गिरे।

"इसे मत देखो कि मैं आवारा स्त्री हूँ।" वह अपने सिर को घृणा-पूर्वक पीछे को फेंकती हुई बोली।

"कुछ लोग अपने गन्द में भी उन लोगों से अधिक स्वच्छ होते हैं, जो रेशम के सूट या बढ़िया कपड़े पहते हैं। तुम्हें पता नहीं कि तुम जैसे छैल-छबीलों के बारे में—जिनके हृदय में मेरे प्रति घृणा का गोदाम भरा पड़ा है, मैं क्या समझती हूँ! परन्तु यह घृणा ही मुझे मुँह बन्द रखने के लिये मजबूर करती है, क्योंकि मुझे डर है कि मैं अपना दिल खोलकर न कह दूँ। इससे मैं खाली हो जाऊँगी और······जीवन में कुछ न रहेगा।"

अब उसे वह फिर से चाहने लगा: साशा के शब्द उसकी मनोवस्था के ही सदृश थे। वह थोड़ा सा हँसा और उसके चेहरे तथा आवाज से सन्तोष झलक रहा था। वह बोला:

"मैं भी अनुभव करता हूँ कि कोई बात मेरे दिल और दिमाग में आ रही है और जब समय आयेगा और मेरी समझ में आयेगी, तो कुछ शब्द मैं भी कहूँगा।"

'किसके खिलाफ ?"

"हर एक के खिलाफ ?" फ़ोमा ने विस्मय में अपने पाँव पर खड़े होते हुए कहा: "मैं छल और कपट के खिलाफ कहूँगा! मैं पूछता हूँ···।"

"जाओ, जरा पूछो समवार उबल गया है या नहीं ?" साशा उसे ठण्डे दिल से टोकते हुए बोली।

फ़ोमा ने उसकी तरफ तेजी से देखा।

"जाओ जहन्नुम में !" वह चिल्लाया : "जाओ, खुद जाकर पूछो।"

"चिंघाड़ किस पर रहे हो ?" और वह झोंपड़ी से बाहर चली गई।

वायु बड़ी तेजी के साथ नदी के नीचे की ओर बह रही थी । लहरों की चोटियाँ गुस्से में सांस भरतीं, उभरतीं, आपस में टकरातीं और फेनें उगल रही थीं। भूमि पर सरपत की डण्डियाँ हवा के झोकों से काँप रही थीं। हवा चीत्कार और रुदन से भरी हुई थी, और उसमें से ऐसी आवाज आ रही थी जैसे कि दर्जनों मनुष्यों के गले से हाँफने की आती है।

"लो, वह आई ! लो, वह आई ! यह आई ! एक, दो—खींच लो ! एक, दो—खींच लो !!"

दो खाली माल ढोने वाली किश्तियाँ नदी के ऊपर वाले भाग में लंगर डाले खड़ी थीं। उनके ऊँचे-ऊँचे मस्तूल आकाश में अदृश्य नमूने से बना रहे थे, जब कि वह एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व पर हिल रही थीं। इन किश्तियों पर भारी लकड़ियों के पाइप खड़े हो गये थे; सब जगह चर्खियाँ दिखाई दे रही थीं ; रस्से और तार हवा में लटक रहे थे। जंजीरों की हल्की खनखनाहट आ रही थी। लाल-नीली कमीजों में मजदूर एक बड़ी भारी शहतीर को डेक पर खींच रहे थे, और शोर के साथ सरकते और काम करते हुए गा रहे थे :

"एक, दो—खींच लो ! एक, दो—खींच लो ! एक, दो—खींच लो !"

मचान और पाइप पर भी लाल–नीले धब्बे दिखाई दे रहे थे । हवा मनुष्यों के आकारों, उनकी कमीजों और पतलूनों में भर जाती, उड़ाती, बिगाड़ रही थी, जिससे वे कभी कुबड़े और कभी बैलून की तरह फूले दिखाई देते थे । डेक और मचान पर नंगे हाथ और बाँहें बाँधते, छीलते और आरियों से काटते, बर्मों से छेद करते और हथौड़े बजाते दिखलाई दे रहे थे। वायु उनकी हरकतों की जीती जागती ध्वनियों को नदी के पार ले जा रही थी। आरे दुष्टतापूर्ण प्रसन्नता से लकड़ी काट रहे थे । कुल्हाड़ों की चोटों के नीचे लकड़ी रूक्षता से घुर्रा रही थी; तख्ते वेदनापूर्ण चिल्लाहट के साफ फट

रहे थे; रन्दे धूर्त्ततापूर्ण छोटी-छोटी मसखरियाँ कर रहे थे। जँजीरों की खनखनाहट और चर्खियों की चीं-चीं, लहरों की कलकल के साथ मिल रही थी, और वायु बादलों को आसमान में हाँकती हुई चिल्ला रही थी।

"आओ लोगो! अब आओ!"

"एक और खींचो! एक और खींचो!" किसी ने ऊँची आवाज में प्रेरणा दी।

फ़ोमा अपनी ऊनी जाकिट और ऊँचे बूटों में खड़ा बहुत ऊँचा तथा सुन्दर दीख रहा था। वह एक मस्तूल से पीठ टेक कर, अपनी दाढ़ी को काँपती उँगलियों से खींच रहा था और मजदूरों की ओर प्रशंसा-भरी दृष्टि से देख रहा था। इस शोर-शराबे से उसका दिल हुआ कि वह चिल्लाये, इन मजदूरों के साथ काम में शामिल हो जाये, उन्हीं की तरह लकड़ी काटे, भारी बोझ उठाये और लोगों को हुक्म दे—एक शब्द में, वह उनका आकर्षण केन्द्र बन जाये ताकि हर कोई यह देख ले कि वह कितना बलिष्ठ, तेज और शक्तिशाली है। परन्तु वह वहीं अपने को रोके खड़ा था, न बोल रहा था न हिल रहा था। उसे एक लज्जा भी आ रही थी। वह इन लोगों का मालिक था, और यदि वह उनके साथ काम में शामिल हो गया तो कोई भी यकीन नहीं करेगा कि यह उसने अपने संतोष के लिये किया है; सब यही समझेंगे कि वह उनके सामने अपना उदाहरण रख कर उनसे ज्यादा काम लेना चाहता है।

एक सफेद घुँघराले बालों वाला, जिसने खुले गले की कमीज पहिन रखी थी, कभी अपने कन्धे पर तख्ता रखे या कभी अपने हाथ में कुल्हाड़ा पकड़े उसके बराबर से आता-जाता गुजरता। वह चारों तरफ एक बकरी की तरह उछलता, हँसी मखौल करता, गालियाँ बकता, अनथक काम कर रहा था। कभी एक को मदद करता कभी दूसरे को। बड़ी तेजी से कोलाहल-भरे डेक पर फुर्ती से ऊपर-नीचे जाता। फ़ोमा लगातार उसकी ओर देखता हुआ उससे ईर्ष्या कर रहा था।

"इसे बहुत खुश और सुखी होना चाहिये।" उसने सोचा और इस विचार से उसकी इच्छा हुई कि वह उसे छेड़े या किसी तरह नीचा दिखलाये या उसके दिल को ठेस पहुँचाए। सब मजदूर उस जरूरी काम की गर्मी और उत्तेजना में थे। एक संगठन से वे मचान और पाइट लगा रहे थे, चर्खियाँ चढ़ा रहे थे और डूबी हुई किश्ती को नदी के तले से निकालने की तैयारियाँ कर रहे थे। सब प्रफुल्ल और प्रसन्न थे तथा इस समय सब अपने पूर्ण जीवन में थे; और इधर यह अकेला, एक तरफ खड़ा विस्मय में सोच रहा था कि वह क्या करे। परन्तु उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह भी अनुभव कर रहा था कि वह इस महान परिश्रम और प्रयत्न से परे है और किसी को उसकी आवश्यकता नहीं। यह अनुभव करके कि वह वहाँ फिजूल था उसे कष्ट हो रहा था; परन्तु जितना ही अधिक वह उन्हें निहारता उतना ही अधिक उसे कष्ट होता था। इस विचार से कि यह सब कुछ उसके लिये किया जा रहा है, जिसमें उसका कोई हाथ नहीं उसके दिल में छुरी सी लग रही थी।

"मैं किस काम के लिये उपयुक्त हूँ?" उसने निराश भाव से सोचा। "मेरा काम क्या है?"

ठेकेदार जो नाटे क़द का नुकीली दाढ़ी व एक सफेद झुर्रीदार चेहरे में पतली फटी आंखों वाला था, उसकी तरफ आया और बोला—

"फोमा इग्नातेविच ! सब कुछ तैयार है," वह हल्की आवाज में प्रत्येक शब्द को साधते हुए बोला : "हम बिल्कुल तैयार हैं। आपके आशीर्वाद से काम शुरू कर देंगे।"

"शुरू करो," फ़ोमा ने चुभने वाली नजर से बचने के लिये मुँह मोड़ कर तेजी से पतली आवाज में कहा।

"परमात्मा की कृपा है;" ठेकेदार ने अपने कोट के बटन धीरे धीरे लगाते और कन्धों को चौड़ा करते हुए कहा। धीरे से सिर घुमाकर उसने किश्तियों पर खड़ी की गई मचान को देखा और बोला :

"लड़को ! अपनी अपनी जगह तैनात हो जाओ !"

मजदूर छोटी छोटी टुकड़ियों में डेक पर और बोझ खींचने वाली चर्खियों के पास एकत्रित हो गये और उन्होंने बात चीतें बन्द कर दी। कुछ मजदूर मचान पर, जहाँ से वे सारा नज़ारा देख सकते थे, चढ़ गये।

"लड़को ! आखिरी बार और सब देख लो," ठेकेदार की शान्त आवाज आई। "सब ठीक ठाक है ? जब औरत का प्रसव काल आ जाता है तब छोटे मोटे कपड़े सीने का समय नहीं रहता। तैयार ! आओ, सब मिल कर प्रार्थना करें।"

ठेकेदार ने अपनी टोपी उतार कर नीचे रख दी। आसमान की ओर मुँह उठाया और बार बार अपनी छाती पर क्रॉस का चिह्न बनाया। सब मजदूरों ने भी वैसे ही अपने चेहरे उठाये और छाती पर क्रॉस के चिह्न बनाये। कुछ लोगों ने ऊँची आवाज में प्रार्थना शुरू की और उनकी हल्की आवाजें लहरों की थपथपाहट में मिल गईं।

"हे प्रभु······और पवित्र कुमारी······और विनयी निकोलाई······ की कृपा से······"

फ़ोमा खड़ा सुनता रहा, और ये शब्द उसकी आत्मा पर बोझ की तरह गिरे। सबके सिर नंगे थे; परन्तु सिर्फ फ़ोमा ही सिर से टोपी उतारना भूल गया। प्रार्थना खतम होने के बाद ठेकेदार उसकी ओर मुड़ा और भर्त्सना करते हुए बोला:

"क्या आप नहीं समझते कि आपको······चाहिये ?"

"तुम अपने काम की फ़िकर करो, मुझे शिक्षा मत दो।" फ़ोमा उसकी ओर क्रोधपूर्ण दृष्टि डालते हुए गुस्से में बोला। जैसे ही काम आगे बढ़ा मजदूरों के बीच जिन्हें अपनी शक्ति में विश्वास था, और जो कई टनों के बोझ वाली किश्ती को सब उसकी बदौलत बाहर निकालने की तैयारियाँ कर रहे थे, उसके हृदय में व्यर्थता के अनुभव की चुभन तीव्र होती गई। वह आशा करने लगा कि वे असफल हों, वह उन्हें नीचा दिखाने की इच्छा करने लगा।

"शायद इनकी जंजीरें ही टूट जायें," उसके दिमाग में विचार दौड़ गया।

"सा–व–धान !" ठेकेदार चिल्लाया। फिर अपनी बाँह उठाकर इशारा करते हुए बोला : "खींचो !"

एक उत्तेजित खिंची हुई चिल्लाहट में मजदूर बोले :

"खींचो—हो ! खींचो–हो"

चर्खियाँ चर-चर करने लगीं, जंजीरें खिचती हुई खड़खड़ाने लगीं, मजदूर बोझ उठाने वाली चर्खी की आड़ी शहतीर से छाती टिका कर चिल्लाने लगे और एक गोल चक्कर में घुमाने लगे। बोझ उठाने वाली किश्तियों के बीच में पानी लहरों में उठने लगा जैसे कि वह अपनी खान को इन मनुष्यों के सामने समर्पण नहीं करना चाहता था। खिंची हुई जंजीरें और लोहे के रस्से फ़ोमा के चारों तरफ डेक पर उसके पाँव के पास भंयकर, लम्बे, भूरे साँपों के समान सरक रहे थे। वे एक-एक कड़ी करके ऊपर जा रहे थे और पीछे को चढ़कर टकरा रहे थे। परन्तु कानों को फाड़ने वाली मजदूरों की चिल्लाहट ने सबको अपने में डुबा रखा था।

"लो यह आई ! लो यह आई ! लो यह आई !" वे बड़ी खुशी के साथ चिल्ला रहे थे जबकि ठेकेदार की साफ आवाज शब्द की ठोस लहरों के बीच मक्खन में चाकू की तरह काट रही थी।

"सब साथ रहो ! सब साथ रहो !" वह चिल्ला रहा था।

फ़ोमा एक विचित्र रूप से उत्तेजित हो उठा। वह हृदय से चाहने लगा कि वह भी एक चौड़ी शक्ति-शाली बहती नदी का एक हिस्सा बन जाये, धातु की खड़खड़ाहट और गर्जना की लहरों के साथ मिल जाये। इस प्रबल इच्छा की शक्ति से उसके माथे पर पसीना आ गया और चेहरा लाल हो गया। अचानक वह मस्तूल से हटा और बोझ उठाने वाली चर्खी की ओर चला।

"सब साथ रहो ! सब साथ रहो !" वह आवेश में चिल्लाया। वह पूरी रफ़्तार से चर्खी की शहतीर को लेकर दौड़ा, परन्तु उसने अपनी छाती में दर्द का अनुभव नहीं किया। मजदूरों की आवज से अपनी आवाज मिला-कर वह उनके साथ घेरे में घूमने लगा और अपने पाँव से ताकत लगाकर

धकेलने लगा। उसकी छाती में चर्खी के घुमाने में खर्च की हुई शक्ति का स्थान लेने को एक गरम भाप सी आने लगी। उसने अनुभव किया जैसे कि वह अकेला ही चर्खी को घुमा रहा था और इस भारी बोझ को उठा रहा था, तथा उनके प्रत्येक बोझ के साथ उसकी शक्ति बढ़ती जा रही थी। अपने सिर को नीचा करके शरीर को कमान की तरह मोड़ उसने बैल की तरह आगे को सांस भर कर बढ़ने और बोझ को खींचने की कोशिश की जो प्रत्येक शब्द के साथ उसे पीछे धकेल रहा था, परन्तु उसके सामने उसे झुकना था। प्रत्येक कदम के साथ उसकी उत्तेजना बढ़ती गई और शक्ति के इस व्यय से उसमें एक उग्र अभिमान आ फूटा। उसका सिर, चक्कर खा रहा था, उसकी आँखें खून से लाल हो रही थीं और उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। बस एक बात जो वह जानता था, वह यह थी कि वह जीत रहा है, उस पर कामयाब हो रहा है और अपनी मांस पेशियों की शक्ति से एक प्रबल विशाल-शक्ति की बाधा को हटा रहा है—उसे फेंक रहा है, और ज्योंही यह काम हो जायेगा वह अभिमान के आनन्द से भरपूर स्वतन्त्रता और आसानी के साथ सांस ले सकेगा। अपने जीवन में पहली बार उसे पसीने का पता चला और उसकी भूखी आत्मा ने इसे पकड़ लिया। इसमें इसने नशे में चूर हुई अपनी चिल्लाहट अपनी खुशी और आनन्द को मजदूरों की चिल्लाहट में उड़ेल दी :

"लो यह आई ! लो यह आई !"

"रोको ! रोको ! बाँधो ! रोको !"

फ़ोमा अपनी छाती पर एक धक्के के साथ पीछे को फेंक दिया गया।

"बधाइयाँ, फ़ोमा इगनातेविच !" ठेकेदार ने कहा। उसके चेहरे की झुर्रियाँ सन्तोष की किरणों को प्रसारित कर रही थीं—"परमात्मा की दया है ! आप थक तो नहीं गये !"

एक ठण्डी वायु फ़ोमा के चेहरे पर बही। अपने चारों तरफ वह प्रसन्नता और और दर्प की गुनगुनाहट सुन रहा था। प्रसन्नचित्त मजदूरों ने

उसे चारों तरफ से घेर रखा था; बड़े आनन्दमयी स्वभाव से वे मुस्कर ते, गाली-गुफ्तार करते भौंहों का पसीना पोंछ रहे थे। वह भी विस्मय में हँस रहा था, और यह अनुभव करते हुए कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा और उससे सब बड़े प्रसन्न और खुश थे—वह बहुत उत्तेजित था।

"एक लाख सत्तर हजार पूद के बोझ को हमने मूली की तरह जड़ से उखाड़ लिया है।"

फ़ोमा ने केबिल के एक चक्कर पर से जहाँ कि वह खड़ा था, मजदूरों के सिरों से ऊपर से देखा कि पुरानी दो किश्तियों के बीच एक और किश्ती खड़ी है—जो काली है और चारों तरफ चिकनी मिट्टी से सनी हुई, और जंजीरों से बँधी हुई है। वह मुड़ी-तुड़ी किसी भयङ्कर बीमारी से सूजी सी कमजोर और कुरूप, अपने दो साथियों पर सहायता के लिये झुकी हुई थी। इसके टूटे मस्तूल से गँदले पानी की धारायें शोकपूर्वक निकल रही थीं और खून की तरह पानी इसके डेक पर बह रहा था और यह अभी तक ज़ंग लगे लोहे और मैली लकड़ी से लदी हुई थी।

"वह ऊपर आ गई है?" फ़ोमा ने उस भयङ्कर आकृति की ओर देखते हुए तथा कुछ सोच न सकने के कारण पूछा। क्या वह इस घायल और गन्दी बड़ी किश्ती के राक्षस को बचाने के लिये प्रसन्न और उत्तेजित हो गया था: उसने तिरस्कारपूर्वक सोचा।

"अच्छा, वह ऊपर आ गई है?" वह अस्पष्ट रूप से ठेकेदार की ओर गुनगुनाया।

"वह ठीक है। हम उसे अभी खाली कर देंगे और बीस या तीस तरखान उसकी मरम्मत करने ने लिये लगा देंगे और फिर वह तुरन्त अपने जहाजी रूप में आ जायेगी।" ठेकेदार ने दम-दिलासा देते हुए कहा।

सफेद बालों वाला लड़का फ़ोमा की ओर दाँत निपोर कर हँसा।

"क्यों, थोड़ी सी शराब, क्या सलाह है?" वह बोला।

"अभी इसके लिये बहुत समय है", ठेकेदार ने तेजी से कहा: "तुम देखते नहीं कि मालिक थक गये हैं?"

मजदूरों ने उसका समर्थन किया :

"निःसंदेह वह थक गये हैं।"

"यह कोई आसान काम तो नहीं।"

"जो व्यक्ति जिस काम का आदी नहीं होता, उसे करने में वह थक ही जाता है।"

"दलिया खाते-खाते भी थक जाते हैं, जो उसके आदी नहीं होते।"

"मैं थका नहीं", फ़ोमा ने तेजी से कहा।

लोग चारों तरफ से उसके नजदीक घिर आये और बड़ी इज्जत से अपनी सम्मतियाँ प्रगट करने लगे।

"यदि दिल लगाकर काम करो तो उसमें बड़ा मजा आता है।"

"शिकार की तरह।"

"औरत की तरह।"

परन्तु सुन्दर बालों वाला लड़का टलने वाला नहीं था।

"मालिक बस एक बाल्टी भर", उसने प्रसन्नतापूर्वक हँसी से प्रेरणा की।

जैसे ही फ़ोमा ने अपने सामने दाढ़ी वाले चेहरों को देखा, उसके हृदय में एक प्रबल इच्छा हुई कि वह उन्हें अपमानजनक बातें कहे। परन्तु उसका दिमाग घुँधला हो रहा था, और उसमें कोई विचार नहीं आ रहे थे। अन्त में वह बिना समझे बूझे बोल उठा :

"तुम लोग हमेशा शराब के बारे में ही सोचते हो! किसी और बात का ख्याल नहीं। जब कोई काम करो तो सोचना चाहिये कि क्यों? किस लिये? तुम्हें उसे समझने की कोशिश करनी चाहिये।"

दाढ़ी वाले चेहरों पर घबराई हुई नजर छा गई। लाल, नीली कमीजों वाले लोग आहें भरने लगे, सिर खुजाने लगे और घबरा कर ऐंठ गये। कुछेकों ने फ़ोमा की तरफ निराशापूर्ण नजर फेंकी और मुँह मोड़ कर चले गये।

"बहुत ठीक", ठेकेदार बोला : "समझना—एक बहुत अच्छी बात है। क्या बुद्धिमानी के और अच्छी तरह कहे गये शब्द हैं।"

"हम जैसे लोगों से समझने और सोचने की आशा नहीं की जाती", सफेद बालों वाले लड़के ने सिर हिलाते हुए कहा। फ़ोमा से उसकी दिलचस्पी जा चुकी थी और वह किसी कदर नाराजगी के साथ यह संदेह करने लगा कि फ़ोमा उन्हें शराब नहीं पिलाना चाहता है।

"ओह ! परन्तु तुम", फ़ोमा प्रशंसापूर्वक बोला। वह उस लड़के से प्रसन्न था क्योंकि वह सोचता था कि वह उसका आदर कर रहा है। फ़ोमा को अपनी तरफ फेंकी हुई मखौल-भरी नजरों का कुछ ख्याल नहीं था : "जब कोई समझ लेता है, वह अनुभव करता है कि यह काम उसे तब तक करना चाहिये, जब तक कि वह समाप्त न हो जाय।"

"भगवान् कसम !" ठेकेदार ने बड़ी धार्मिक आह में कहा : "सच है, ओह, ! बिल्कुल सच है !"

फ़ोमा के दिल में आ रहा था कि वह ऐसी सच्ची और सारगर्भित बातें कहे, जिससे उन लोगों का दिल उसके प्रति पलट जाये। उसे इस बात से नाराजगी हो रही थी कि सुन्दर बालों वाले लड़के के अलावा सब चुप हो गये थे और उसकी ओर विद्वेष-भाव से नाक-भौंह चढ़ा कर देख रहे थे।

"तुम्हें चाहिये कि", वह भौंहों को हिलाता हुआ बोला : "ऐसा काम करो कि एक हजार वर्ष के बाद भी लोग कहें कि इस काम को बोगारोदस्क के लोगों ने किया था।"

सुन्दर बालों वाले लड़के ने आश्चर्य में फोमा की ओर देखा।

"कैसा काम ?" वोलगा को पी जायें ?" वह नाक हिलाकर सिर बजाता हुआ बोला : "तुम जानते हो कि हम यह नहीं कर सकते, बिल्कुल फट जायेंगे।"

उनके शब्दों से फोमा चकरा गया। उसने चारों तरफ देखा और लोग उद्धतापूर्वक बिना किसी खुशी के हंस रहे थे। वे मुस्कराहटें सुइयों की तरह उसके हृदय में चुभ गईं।

एक सफेद दाढ़ी वाला गम्भीर दीखने वाला वृद्ध, जो अब तक चुप था, कुछ कदम आगे बढ़ा, अपना मुँह खोला और धीरे से बोला :

"यदि हम सारी वोल्गा को पी कर सुखा दें और आस-पास की पहाड़ियों को चबा जायें तो भी श्रीमान् सब उसे भूल जायेंगे। तुम जानते हो कि, जीवन बड़ा लम्बा होता है और उसमें सब बातें भुला दी जाती हैं। हम लोगों के लिये ये ऐसे काम नहीं जो अलग ही दिखाई दें।"

यह कह कर उसने जमीन पर थूका और दूर जाकर लोगों की भीड़ में ऐसे घुस गया जैसे पच्चर लकड़ी में फँस जाती है। उसकी बात से फ़ोमा पर आखिरी चोट लगी। उसने अनुभव किया कि लोग उसे मूर्ख और बेहूदा समझते हैं। उनके घटते हुए ध्यान को पुनः आकर्षित करने तथा उनकी नजरों में ऊँचा उठने के लिये वह छाती तान कर आगे आया और एक उपहासास्पद तरीके से अपने ओठों को फुला कर बोला :

"मैं वोदका की तीन बाल्टियाँ बलिदान करता हूँ!"

स्वल्प, संक्षेप और सारगर्भित भाषण हमेशा ही प्रभावशाली होता है। लोग इज्जत के साथ पीछे को हट गये, उसके सामने पीछे तक झुके और अपने चेहरों पर प्रसन्नतापूर्ण मुस्कान और समर्थन के शोर शराबे से धन्यवाद दिया।

"मुझे किश्ती से किनारे पर ले चलो," फ़ोमा ने यह जानते हुए कि प्रसन्नता की लहर, जिससे वह भरपूर है, देर तक नहीं रहेगी, कहा। एक प्रकार का कीड़ा उसके दिल को काटने लगा।

"मैं प्रत्येक चीज से थक गया हूँ, बीमार हो गया हूँ," उसने झोंपड़ी में घुसते हुए कहा, जहाँ कि साशा सुन्दर लाल पोशाक पहिने मेज पर भोजन-सामग्री और शराब रख रही थी। "साशा! तुम इस बारे में कुछ नहीं कर सकतीं?"

साशा ने उसे क्षण भर ध्यान से देखा और बेंच पर उसके बराबर में बैठ कर बोली :

"यदि तुम सब बातों से आजिज आ गये हो तो तुम्हें परिवर्तन की जरूरत है। कहो, तुम्हें क्या चाहिये?" उसने पूछा।

"मुझे कुछ पता नहीं," उसने दुख से सिर हिलाते हुए कहा।

"जरा फिर सोचो,"

"मैं कुछ नहीं सोच सकता।"

"तुम छोटे से बच्चे!" वह उससे परे हटती हुई तिरस्कार से बोली। "बस, मैं यही कह सकती हूँ कि तुम्हारा दिमाग ही बेकार है।"

फ़ोमा ने न तो उसकी आवाज को और न उसके हटने की गति को ही देखा। वह आगे को झुका हुआ बैंच को अपने हाथों में पकड़े हुए फर्श की ओर घूरता रहा था।

"कई बार मैं दिन रात इतनी बातें सोचता रहता हूँ कि वे बातें मेरे शरीर पर तारकोल की तरह चिपक जाती हैं, और फिर अचानक सब लुप्त हो जाती हैं, पतली हवा में ऐसे उड़ जाती हैं, और फिर मेरी आत्मा में क़ब्र जैसा अन्धेरा हो जाता है। यह बड़ा डरावना होता है। मुझे ऐसा दिखता है कि मैं मनुष्य ही नहीं हूँ। सब मुझे गहरी खाई की तरह दिखता है।"

साशा ने उसकी तरफ तिरछी नजर से देखा और मधुर आवाज़ में गाने लगी :

> अहा ! अहा ! पवन बहा
> कुहर अम्बु से उड़ा······

"मैं इस ग्राम्य जीवन से ऊब चुका हूँ—वही बातें बार बार : वही लोग, वही खुशियाँ, वही शराब। इससे मेरा खून उबल पड़ता है और दिल करता है कि इन सबको लोगों पर दे मारूँ। मैं इन लोगों को पसन्द नहीं करता। समझ में नहीं आता कि वे किसलिये जिन्दा हैं!!"

साशा दीवार से नज़रें गड़ाये गाती रही :

> प्राण रे ! तुझ बिना
> मर्म चर्म है घना······

"परन्तु ये लोग बड़ी शान शौकत से आनन्दमय जिन्दगी गुजारते हैं। इधर मैं ही अकेला खड़ा खड़ा आँखें झपकाता हूँ। शायद अपनी माँ के कारण ही मैं इतना भावनाशून्य हूँ। मेरे धर्मपिता कहते हैं कि वह बरफ जैसी ठण्डी

थी—और हमेशा किसी दूसरी ही जगह होने की चाह करती रहती थी। मेरी इच्छा होती है कि लोगों के पास जाकर कहूँ: "भाइयो! मुझे इससे बचाओ। मैं रह ही नहीं सकता! परन्तु जब मैं अपने चारों तरफ देखता हूँ तो कोई भी ऐसा नहीं दिखलाई देता जिससे कि मैं कुछ कह सकूँ। सब दोगले ही मिलते हैं।"

फ़ोमा ने एक गन्दी गाली बकी और चुप हो गया। इससे साशा अपने गीत को बीच में ही बन्द कर एक तरफ सरक गई। हवा खिड़कियों पर मुट्ठी भर भर कर गर्द फेंक रही थी। अँगीठी में से झींगुरों की सरसराहट सुनाई दे रही थी। खलिहान से बछड़ा प्रार्थना-भाव में हल्की सी आवाजें कर रहा था।

"लो! एक और अभागा—तुम्हारा भाई उधर रंभा रहा है!" साशा ने उसकी ओर मखौल से देखते हुए कहा: "जाओ उसके साथ शामिल हो जाओ, तुम दोनों मिल कर गीत गाओ।"

साशा ने उसके घुंघराले बालो में अपना सिर देकर उसे खेल खेल में धक्का दिया: "तुम क्यों आहें भर रहे हो? यदि जीवन से ऊब गये हो तो जाओ, अपने काम में लग जाओ।"

"हे परमात्मा! यदि मैं अपने दिल की बात तुम्हें समझा सकता। बस यदि मैं समझा सकता!" अत्यन्त निराशा से वह उसकी ओर चिल्लाया। "कारोबार, इसी को कारोबार कहते हैं; परन्तु यदि तुम ध्यान से सोचो तो यह समय खराब करने के अलावा और कुछ नहीं। इसका क्या लाभ है? धन कमाना। मेरे पास बहुत पैसा है। मैं तुम्हें इसमें लपेट सकता हूँ, सिर से पाँव तक तुम्हें इसमें गाड़ सकता हूँ। कारोबार—यह तो एक धोखेबाजी है। मैंने देखा है बहुत से व्यापारी—कारोबारी लोग अपने को कारोबार में लगाये रहते हैं, ताकि यह न देख सकें कि असलियत में वे हैं क्या। वह अपनी असलियत को खुद ही नहीं देखना चाहते, शतुरमुर्ग कहीं के। यदि वे उलट जायें तो उनकी क्या हालत हो। वे अन्धे आदमी की तरह ठोकरें खायें। तुम समझती हो कि वे इसलिये खुश हैं कि उनके पास कोई कारोबार है? ओह नहीं, यह तो

इसका एक हिस्सा है। नदी इसलिये बहती है कि उस पर नावें चल सकें; पेड़ इसलिये उगते हैं कि लोग उनका उपयोग कर सकें, यहाँ तक कि एक कुत्ते के जीवन का भी उद्देश्य है—घर की रखवाली करना। मनुष्यों के अलावा हर चीज का कुछ न कुछ उद्देश्य है। ये झींगुर के समान हैं जिनसे कोई लाभ नहीं। सब चीजें मनुष्य के लिये हैं, परन्तु मनुष्य ? वह किसलिये है ? उसका उपयोग क्या है ?"

फ़ोमा बहुत विजय अनुभव कर रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि, उसने कोई ऐसा तत्व खोज निकाला है, जो उसके लिये तो सहायक होगा परन्तु दूसरों को चोट पहुँचायेगा। वह ठहाका मार कर हँसा।

"क्यों, सिर में दर्द हो रहा है ?" साशा ने उसकी ओर ढूंढ़ती हुई नज़र से निहारते हुए पूछा।

"नहीं, मुझे तो आत्मा का दर्द है," फ़ोमा ने धृष्टतापूर्वक कहा। "मेरी आत्मा में दर्द है क्योंकि वह इन चीजों को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं, मुझे इसका जवाब जानना है। मैं कैसे रहूँ ? किस उद्देश्य के लिये रहूँ ? मेरे धर्म-पिता को ही लो—वह बहुत बुद्धिमान व्यक्ति है। वे कहते हैं : तुम जीवन से जो चाहो बना सकते हो। परन्तु दूसरे सब लोग कहते है : जीवन तुम्हें खा लेगा !"

"सुनो"; साशा ने गम्भीरता से कहा : "अगर तुम मुझसे पूछते हो, तो तुम्हें जिस चीज की जरूरत है वह है शादी। बस यह बात ऐसी ही है।"

"ऐसा क्यों करूँ ?" फ़ोमा ने कन्धे हिलाते हुए कहा।

"तुम्हें काठी में कस कर चलाने की जरूरत है; और—"

"ओह जाने भी दो ! अब मैं तुम्हारे साथ रह रहा हूँ या नहीं। और तुम सब एक जैसी ही हो—कोई एक दूसरियों से अधिक मधुर नहीं। तुम्हारे साथ रहने से पहले मेरे पास एक तुम्हारे जैसी ही थी। बिल्कुल तुम्हारी तरह की तो नहीं—क्योंकि वह चाहती थी इसलिये प्रेम करती थी। वह कुछ कारणों से मुझे चाहती थी। वह अच्छी किस्म की थी। परन्तु जब तुम इस

सीमा तक उतर आती हो, तो वह बिल्कुल ऐसी थी जैसी तुम, सिर्फ तुम उसकी अपेक्षा अधिक सुन्दर हो। परन्तु एक और थी—एक महिला, भद्र-समाज की एक वास्तविक महिला थी। लोग कहते हैं कि वह चरित्रहीन स्त्री थी। बुद्धिमान्, शिक्षित और बड़े ठाठ-बाट से रहने वाली। मैं सोचा करता था कि मुझे उससे जीवन का असली स्वाद मिलेगा। परन्तु वह मुझसे बहुत ऊँची और अच्छी थी। हो सकता है कि वह ऐसी न होती तो मेरे लिये सब बातें भिन्न होतीं। मैं उसे बहुत चाहता था। और अब उसकी स्मृति को मैं शराब में डुबोना चाहता हूँ—उसे भुलाना चाहता हूँ। यह भी कुछ अच्छा नहीं। ओह, मनुष्य कितना पशु है।"

फ़ोमा अपने विचारों में गुम-सुम हो गया, जबकि साशा ओंठ काटते हुए इधर-उधर घूम रही थी।

"सुनो!" अन्त में वह उसके सामने आकर रुकी और दोनों हाथों से अपने सिर को पकड़ कर बोली: "मैं तुम्हें छोड़कर जा रही हूँ।"

"तुम कहाँ जा रही हो?" फ़ोमा ने उसकी तरफ बिना देखे ही पूछा।

"मुझे पता नहीं। इसकी कोई जरूरत नहीं। तुम बहुत बात करते हो। मेरा दिल ऊब गया है।"

फोमा ने अपना सिर उठाया।

"बोलो, तुम्हारा यही मतलब है?" वह निराशा से तनिक हँसी में बोला।

"मैं भी तुम्हारी तरह ही हूँ। जब समय आता है तभी मैं चीजों के बारे में सोचना शुरू करती हूँ और यही मेरा अन्त होगा। परन्तु अभी तो बहुत जल्दी है। मैं पहले गुलछर्रे उड़ाऊँगी और बाद में—जो होना है वह होगा!"

"क्या मेरा भी ऐसा ही अन्त होगा?" फ़ोमा ने बातचीत के परिश्रम से थक कर उदासीनता से कहा।

"ऐसा ही होगा", साशा शान्त विश्वास भाव से बोली: "हमारे जैसे लोगों का अन्त बुरा ही होता है।"

वे दोनों एक दूसरे की ओर एक या दो मिनट तक बिना बोले देखते रहे।

"हमें क्या करना चाहिये ?" फ़ोमा ने पूछा।

"आओ, डिनर खाओ।"

"मेरा मतलब साधारण है। बाद में ··· ।"

"मैं···नहीं जानती।"

"अच्छा, तो तुम मुझे छोड़कर जा रही हो ?"

"हाँ, आओ हम जुदा होने से पहले खूब गुलछर्रे उड़ायें। काज़ान चलें और वहाँ खूब शोर-शराबा करें, जब तक कि सिक कर लाल न हो जायें। वहाँ मैं तुम्हारा सब शोक दूर कर दूँगी।"

"आओ चलें", फ़ोमा बोला : "विदाई पर। वस्तुतः हमें चलना ही चाहिये। इस जघन्य गलित जीवन का सत्यानाश हो। सुनो साशा, लोग कहते हैं कि तुम्हारे जैसी अवारागर्द स्त्रियाँ पैसे की बड़ी लालची होती हैं, और वे उसे चुराती भी हैं।"

"वे जो चाहें कह सकते हैं", साशा ने अव्यग्र भाव से कहा।

"तुम्हारा अपमान तो नहीं हुआ", फ़ोमा ने कौतूहल से पूछा : "कोई नहीं कह सकता कि तुम लालची हो। यह तुम्हारे हित की बात है कि तुम मेरे से लगी रहो, क्योंकि मैं धनी हूँ, परन्तु तुम मुझे छोड़कर जा रही हो। इसका मतलब है, तुम लालची नहीं।"

"मैं ?" साशा ने क्षणभर सोचा और फिर हाथ हिलाकर बोली : "हो सकता है कि मैं नहीं हूँ परन्तु इससे क्या ? मैं उन घटिया स्त्रियों में से नहीं जो गलियों में घूमती हैं। और जहाँ तक अपमान की बात है—मेरा अपमान कौन कर सकता है ? वे जो चाहें कहें। लोग बातें बनाते हैं, परन्तु मैं जानती हूँ कि उनकी बातों की क्या कीमत है। यदि मैं जज होती, तो मेरे द्वारा क्षमा किये गये व्यक्ति मृतक समान होते।" वह एक भद्दे तौर से हँसी। "आओ, दूसरी बात करें। आओ, भोजन करने बैठें।"

अगले दिन प्रातःकाल फ़ोमा और साशा एक दूसरे के साथ उस्त्य नदी के किनारे, बोट के डेक पर साथ-साथ खड़े थे। सब की नज़रें साशा के बड़े काले हैट पर थीं, जो बड़ी लम्पटता से ऊपर को मुड़ा हुआ था और जिसमें बड़े-बड़े सफेद पंख टँके हुए थे। इस कारण फ़ोमा उसके बराबर खड़ा होने में घबरा रहा था और अनुभव करता था कि सबकी प्रश्नात्मक नज़रें उसके चेहरे को घूर रही हैं। बोट एक बड़ी सिसकार और कम्पन के साथ हिला तथा दाँयीं तरफ टिकटघर से टकराया, जहाँ चमकीले कपड़ों में लोगों की भीड़ इकट्ठी हुई थी। इन सब अजनबी चेहरों में फ़ोमा ने एक परिचित चेहरे को भी देखा, जो दूसरे लोगों की पीठ के पीछे छिप रहा था, परन्तु जिसकी नज़र उस पर से नहीं हट रही थी।

"आओ, केबिन में चलें", उसने बेचैनी के साथ साशा से कहा।

"अपने पाप छिपाने की कोशिश मत करो", वह हँसी। "क्या कोई परिचित व्यक्ति दीख गया है ?"

"मालूम होता है कि कोई मेरी चौकीदारी कर रहा है।"

उसने फिर भीड़ की तरफ देखा, और उसके चेहरे में अचानक परिवर्तन आ गया।

"यह तो मेरा धर्मपिता है", उसने सांस रोकते हुए कहा।

लेण्डिग के पास दो मोटी स्त्रियों के बीच भिंचा हुआ मायाकिन खड़ा था। उसका आईकन जैसा चेहरा फ़ोमा की तरफ उठा हुआ था और वह नम्रतापूर्वक एक ज़हरीले पुट से अपनी टोपी हिला रहा था। उसकी दाढ़ी काँप रही थी, गंजी खोपड़ी चमक रही थी और उसकी आँखें फ़ोमा में बर्मा की तरह छेद कर रही थीं।

"बुड्ढा गिद्ध"; फोमा अपनी टोपी उठा कर झुकते हुए गुनगुनाया। इस झुकने से मायाकिन प्रसन्न हो गया, क्योंकि मामाकिन ने अब ईर्ष्यापूर्ण मुस्कान से सरकना और उछलना शुरू किया।

"दीखता है कि मेरा छोटा सा लड़का अब पकड़ा गया है।" साशा

इस आक्षेप और मायाकिन की हँसी से फोमा की छाती में आग लग उठी।

"हम इस बारे में देखेंगे।" उसने दाँतों के बीच से फुंकार मारी। परन्तु दूसरे ही मिनट उसका चेहरा पथरा गया। जैसे ही किश्ती ने लंगर डाला और मुसाफिर उतरने के लिये दौड़े, मायाकिन कुछ क्षणों के लिये भीड़ में गुम हो गया, परन्तु शीघ्र ही फिर ऊपर आया। उसके चेहरे पर विजय की मुस्कान थी। फ़ोमा ने अपनी तनी भौंहों से जहाज की सीढ़ी से नीचे जाते हुए घूरा। लोगों के धक्कम-धक्का, भीड़-भड़क्का और खींचा-तानी से वह और भी चिढ़ गया था। अन्त में वह वृद्ध पुरुष से टकराया, जिसने अलौकिक परम नम्रता के साथ अभिवादन किया।

"और, कहाँ जा रहे हो, फ़ोमा इग्नातेइविच ?" उसने पूछा।

"मैं व्यक्तिगत काम से इधर आया हूँ।" फ़ोमा ने अपने धर्मपिता के प्रत्याभिवादन का विचार न करते हुए कहा।

"बहुत अच्छी बात है" मायाकिन खुशी से बोला : "और ये पंखों वाली नौजवान स्त्री कौन है।"

"मेरी रखैल", फोमा ने अपनी आँखों को मायाकिन की चुभती नजर के नीचे स्थिर रखते हुए कहा।

साशा बिल्कुल उसके पीछे खड़ी थी और शान्त भाव से वृद्ध मनुष्य को देख रही थी जो फ़ोमा की ठोड़ी तक भी नहीं पहुँच रहा था। फ़ोमा की ऊँची आवाज से लोगों का ध्यान उसकी ओर खिंच गया और वे एक नजारे की प्रतीक्षा करने लगे। मायाकिन को भी ऐसी ही आशा थी क्योंकि उसने भी फ़ोमा की आक्रमक भावना को भांप लिया था। उसकी झुर्रियाँ हिलने लगीं और कुछ शान्त, नम्र आवाज में कहने से लिये ओठों को चबाने-सा लगा।

"मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ। क्या हम किसी सराय में चलें ?"

"बहुत अच्छा। परन्तु देर तक नहीं।"

"समय नहीं है। एक और किश्ती को तोड़ने की जल्दी है ।" वृद्ध पुरुष ने अपने ग़ुबार को रोकने में असमर्थ होते हुए कहा ।

"अगर तोड़ी जा सकती है तो क्यों न तोड़ा जाय ?" फ़ोमा ने जवाब में कहा ।

"क्यों नहीं, बेशक ? तुमने तो खरीदी नहीं हैं, इसलिये तुम्हें क्या परवाह ? अच्छा आओ, क्यों······घण्टा भर के लिये इस नौजवान स्त्री को कहीं डुबा नहीं सकते ?" मायाकिन ने कान में कहा ।

"साशा ! तुम जाओ और साईबिरिया में एक कमरा तय कर लो । मुझे देर नहीं लगेगी", यह कह कर वह फिर ढिठाई से बोला : "आओ चलें ।"

वे दोनों बिना एक शब्द बोले सराय में गये । यह देखकर कि उसके धर्मपिता को उसके साथ कदम मिलाने के लिये दौड़ना पड़ रहा था, फ़ोमा ने जानबूझ कर और भी अधिक लम्बे डग भरने शुरू कर दिये । वृद्ध मनुष्य की कदम मिलाकर चलने में असमर्थता के कारण उसमें विरोध और प्रतिवाद की भावना उग्र हो गई, जो उसमें उबल रही थी और किसी भी क्षण बाहर निकलने की धमकी दे रही थी ।

"मेरे लिये क्रेनबेरी के रस की बोतल लाओ, लड़के !" मायाकिन ने प्रसन्नतापूर्वक डाइनिंग रूम में घुसते हुए और कोने में रखी मेज की ओर जाते हुए वेटर से कहा ।

"और मेरे लिये एक कोन्याक की बोतल", फ़ोमा ने कहा ।

"यह तरीका अच्छा है कि", मायाकिन हँसा : "जब तुम्हारे पत्ते अच्छे न हों, तब हमेशा तुरुपचाल चलो ।"

"आपको नहीं पता कि मैं कैसे खेलता हूँ", फ़ोमा ने बैठते हुए कहा ।

"ओह, मैं नहीं जानता । बहुत से लोग इसी तरह खेलते हैं ।"

"मैं तो ऐसा करता हूँ कि या तो अपना सिर फोड़ लेता हूँ या दीवाल ही ", फ़ोमा ने जोर से मेज पर मुक्का मारते हुए कहा ।

"क्या तुम्हारे पिछले मदिरापान का असर ख़तम नहीं हुआ है ?" मायाकिन ने हल्की मुस्कान से कहा ।

फ़ोमा कुर्सी पर जम गया।

"धर्मपिताजी ! आप बहुत बुद्धिमान् हैं", उसने चेहरा घुमाते हुए कहा : "मैं आपकी बुद्धि का आदर करता हूँ।"

"इस बात के लिये धन्यवाद, वत्स !" मायाकिन ने आधा उठकर झुकते हुए कहा।

"मैं आपसे यह कहना चाहता था कि मैं अब बीस साल का नहीं हूँ, मैं बच्चा नहीं हूँ।"

"हाँ, तुम नहीं हो", मायाकिन ने सहमति प्रगट की। "तुम्हारे धूमिल सिर से बहुत सी सर्दियाँ गुज़र चुकी हैं। यदि एक मच्छर इतना लम्बा जीये तो वह मुर्गी जितना बड़ा हो जाये।"

"अपनी मखौल बाद के लिये रखिये", फ़ोमा ने इतनी स्थिर आवाज में कहा कि मायाकिन भौंचक रह गया और उसके चेहरे की झुर्रियाँ गम्भीर चिन्ता से कांपने लगीं।

"आप इधर क्यों आये ?" फ़ोमा ने पूछा।

"तुम......इधर शरारतें कर रहे थे। सोचा कि जरा चलकर देखूं कि क्या-क्या नुकसान हुआ है। मैं भी तो तुम्हारा सम्बन्धी हूँ—एक मात्र सम्बन्धी जो कि तुम्हारा है।"

"आपको फिकर नहीं करनी चाहिये थी, धर्मपिता जी ! सुनिये, दो में से एक बात करिये—या तो मुझे बिल्कुल अकेला छोड़ दीजिये या सारे कारोबार को ले लीजिये—आखिरी रूबल तक सारा।"

फ़ोमा को यह कह कर बहुत अचम्भा हुआ जैसा कि मायाकिन को सुनकर। उसे यह विचार पहले नहीं सूझा था। परन्तु जैसे ही उसने यह कहा, उसने अनुभव किया कि मायाकिन उसे उसकी सब सम्पत्ति से छुट्टी दे देगा और वह स्वतन्त्र हो जायेगा और जैसा चाहे कर सकेगा। वह हमेशा से बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। यद्यपि उसे पता नहीं था कि वे बेड़ियाँ क्या थीं, और उनसे कैसे छुटकारा पा सकता था। वही अब बड़ी आसानी

से बिना पीड़ा के टूट रही थीं। उसके हृदय में आशा की एक ज्योति जगी। इससे वह आनन्द और उत्तेजना से भर गया और असम्बद्ध रूप से गुनगुनाने लगा :

"यही ठीक रहेगा, आप मुझसे सब कुछ ले लें और छुट्टी दे दें; मैं जिधर चाहूँगा चला जाऊँगा। मैं इस तरह जीवन नहीं गुजार सकता। मुझे ऐसा दीखता है कि मुझे गोला और जंजीरें पहिना रक्खी है। मै स्वतन्त्र होना चाहता हूँ और चाहता हूँ चीजों को अपने आप पहिचानना। मैं अपना रास्ता अपने आप बनाना चाहता हूँ। अब क्या हूँ ? बस एक कैदी। मुझसे सब चीजें ले लो—ये सब जायें जहन्नुम में ! मैं व्यापारी नहीं बन सकता। मैं इन सबसे घृणा करता हूँ। यदि तुम सब कुछ ले लोगे, तो मैं कहीं चला जाऊँगा—कोई अपना काम तलाश कर लूंगा। इस तरह मैं बस शराब पीता हूँ। और अब मैं एक स्त्री से भी बंध गया हूँ... ।"

उसके चारों तरफ सराय में हल्का शोर-शराबा हो रहा था, लोग पास से आ जा रहे थे और यह देखे बिना कि बीच-बीच में रुक कर वह किसको प्रणाम कर रहा था, मायाकिन ठण्डे पत्थर जैसे कठोर चेहरे से उसे ध्यान से देखता रहा और उसकी बातें सुनता रहा, क्योंकि उसका सारा ध्यान अपने धर्मपुत्र के चेहरे पर स्थिर था जो कि बहुत ही घबराया हुआ, प्रसन्न और दयनीय मुस्कान वाला था।

"तुम बड़ी तेज, तुर्श, चटपटी मिर्च हो", अन्त में मायाकिन ने आह भरी। "तुम अपना रास्ता छोड़ चुके हो। बेहूदी बातें बक रहे हो। मैं जानना चाहता हूँ कि यह कोन्याक है या तुम्हारा कमजोर दिमाग।"

"धर्मपिता जी !" फ़ोमा ने निराकरण किया। "लोग ऐसा करते आये हैं—सब कुछ छोड़-छाड़ कर चले जाते रहे हैं।"

"मेरे जमाने में नहीं। मेरे जानों-बूझों में से कोई नहीं", मायाकिन ने कठोरता से कहा : "यदि उन्होंने ऐसा किया होता तो मैं उन्हें दिखा देता।"

"बहुत से चले गये और साधु बन गये।"

"यदि मेरा बस चलता तो वे ऐसा न करते। परन्तु तुम से गम्भीरता से बात क्यों करूँ? व...ह!"

"परन्तु धर्मपिता जी, क्यों नहीं?" फ़ोमा ने आवेश में कहा।

"सुनो, यदि तुम चिमनी साफ करने वाले हो तो छत्त पर चढ़ोगे, जाओ जहन्नुम में। यदि तुम फ़ायरमैन हो, तो तुम टावर पर चढ़ोगे! भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की जिन्दगी बसर करते हैं। बछड़ों से आशा नहीं की जाती कि वे रीछ की तरह चिंघाड़ें। तुम वही बनो जिसके लिये तुमने जन्म लिया है, और पराये बगीचों की ओर हिरस से मत देखो। अपना जीवन अपने ही तरीके से बिताओ।"

सुनिश्चित् और अविवादास्पद शब्द जिन्हें फ़ोमा इतनी बार सुन चुका था, अब वृद्ध पुरुष के अँधेरे छिद्र से छल-छलाते बहाव की तरह निकलने लगे। फ़ोमा अपनी स्वतन्त्रता के स्वप्नों में इतना डूबा हुआ था, कि उसने कुछ नहीं सुना। (उसे प्रतीत हो रहा था कि अब स्वतन्त्रता आसानी से प्राप्त की जा सकती है) उसका दिमाग पूरी तरह अपनी स्वतन्त्रता के स्वप्नों में लगा हुआ था, और उसके हृदय ने अपने धर्मपिता, जहाज, आमोद-प्रमोद और उन सब चीजों से, जिनके कारण जीवन इतना घुट रहा था, सबसे पीछा छुड़ाने का दृढ़ निश्चय कर लिया था।

वृद्ध मनुष्य की आवाज तश्तरियों की खड़खड़ाहट और शराबियों की चिल्लाहट और वेटरों के फर्श पर पाँव की सरसराहट की भाँति उसे बहुत दूर से आती हुई सुनाई दी।

"और यह सब बेहूदगी तुम्हारे सिर में तुम्हारी जवानी के जोश से आ गई है", मायाकिन ने मेज पर हाथ मारते हुए कहा: "तुम्हारी असावधानी मूर्खतापूर्ण है; तुम्हारे विचारों की कोई कीमत नहीं। तुम क्या करने की सोच रहे हो—क्या साधु आश्रमों में जाओगे?"

फ़ोमा ने यह बिना किसी टिप्पणी के सुना। सराय में शोर-शराबा

धीरे धीरे कम हो रहा था। उसने कल्पना की कि, वह एक बहुत भारी भीड़ बीच में है जिनकी आँखें माथे से बाहर घूर रहीं थी, जो किसी अज्ञात कारण से चिल्ला रहे थे, और बिना कहीं पहुंचे आपस में धक्कम धक्का कर गिरे पड़ रहे थे। वह यह समझने में असमर्थ था कि वे क्या चाहते हैं और उनकी क्या इच्छा है तथा उनके कहने पर विश्वास किया जाय कि नहीं। और इसी कारण वह बहुत व्याकुल हो गया। वह सोचने लगा कि, यदि वह इस सबसे परे हट कर दूर से देख सके तो वह सोच समझ सकेगा कि ये सब कुछ क्या हो रहा है और इन सबके बीच अपना स्थान तलाश कर सकेगा।

"मैं समझता हूँ," मायाकिन ने फ़ोमा को विचलित और व्याकुल देख-कर आवाज़ को कोमल करते हुए कहा, "तुम जीवन में सुख चाहते हो। परन्तु यह आसानी से नहीं मिलेगा। तुम्हें यह ऐसे ही तलाश करना पड़ेगा जैसे जंगल में खुम्भ तलाश करते हैं; तुम्हें इस पर कमर तोड़नी पड़ेगी और कभी तो जब तुम सोचते हो कि, तुमने उसका पता लगा लिया है तो वह कुकुरमुत्ता ही निकल आती है।

"अच्छा आप मुझे स्वतंत्रता देंगे या नहीं ?" फ़ोमा ने अचानक सिर उठाते हुए कहा। मायाकिन ने उसकी धधकती नज़रों से बचने के लिये मुँह मोड़ लिया। "मुझे आप सांस लेने का समय दें, मुझे सब चीजों से परे जाने का मौका दें। एक बार जब मैं सब चीजों को बाहर से देख सकूँगा, शायद मैं······। परन्तु, यदि में दूर नहीं हटा तो शराब पीते २ ही मेरी मृत्यु होगी।"

"बकबास बन्द करो ! कुछ अक़ल की बातें करो," मायाकिन गुस्से में चिल्लाया।

"बहुत अच्छा," फ़ोमा ने शान्ति से जवाब दिया। "आप मुझे मुक्त नहीं करेंगे ? तो यहाँ इस सबका खातमा। मैं सब कुछ योंही उड़ा दूँगा ! अब मुझे और आपको—एक दूसरे से कुछ नहीं कहना। नमस्कार ! अब मैं सीधा सब चीजें करूँगा, इसी समय से—आप इसकी चिनगारियाँ देखेंगे।"

फ़ोमा बहुत शान्त था और उसकी आवाज स्थिर थी; उसे निश्चय था कि अपना निर्णय कर लेने के बाद उसका धर्मपिता उसे रोक नहीं सकेगा और कुछ नहीं कर सकेगा। परन्तु मायाकिन ने अपनी कमर को सीधा किया और उसके ही जैसी स्थिर आवाज में कहा :

"तुम्हें पता है कि मैं क्या कार्यवाही कर सकता हूँ ?"

"जो कुछ आप चाहें", फ़ोमा ने हाथ हिलाते हुए कहा।

"बहुत अच्छा ! और देखो, मैं यह करूँगा : "मैं शहर में जाकर तुम्हारे पागल होने का ऐलान करवा दूँगा और तुम्हें पागलखाने भिजवा दूँगा।"

"क्या ऐसा हो सकता है ?" फ़ोमा ने भयार्त ध्वनि में अविश्वास-पूर्वक पूछा।

"नौजवान ! मेरे लिये सब कुछ सम्भव है।"

फ़ोमा ने अपने धर्मपिता की ओर घूर कर देखा और एक कँपकँपी के साथ सोचने लगा : यह ऐसा कर सकता है यह बड़ा निर्दय है।

"यदि तुमने अपने को बेवक़ूफ बनाने का पक्का इरादा कर लिया है, तो मैंने तुम्हारे पिता से वायदा किया था, मैं तुम्हें पाँवों पर खड़ा कर दूँगा, और यह मैं करना चाहता हूँ। यदि तुम खड़े नहीं होओगे तो मैं तुम्हें पट्टे में बांध दूँगा। तब तुम भली भाँति खड़े हो जाओगे। मैं जानता हूँ कि यह सब बहुत शराब पीने का नतीजा है। परन्तु यदि मैंने देखा कि तुम अपने पिता की गाढ़ी कमाई को इसी प्रकार रंगरेलियों में उड़ाते रहे तो मैं तुम्हें अपनी दाल में नमक बनाकर छिड़क दूँगा। मैं तुम्हें एक छोटे से छेद में घुमा दूँगा। नौजवान ! मैं आसानी से बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता।"

मायाकिन के गालों पर, झुर्रियाँ उसकी आँखों के नीचे सिमट आईं जो काले छेदों में कठोरता और उपहास से मुस्करा रही थीं। उसके माथे की लकीरों ने गंजी खोपड़ी के नीचे अजब से नमूने बनाये। उसके चेहरे पर क्रूरता और कठोरता का भाव था।

"दूसरे शब्दों में मेरे लिये कोई रास्ता नहीं है। तुमने मेरे सब रास्ते बन्द कर दिये हैं ?"

"सिर्फ एक रास्ता तुम्हारे लिये खुला है। इस पर चलो। रास्ता तुम्हें मैं दिखाऊँगा। इससे तुम ठीक जगह पर पहुँच जाओगे।"

अपने धर्मपिता के आत्म-सन्तोष और अजेय अभिमान को देखकर फ़ोमा पागल हो उठा। वृद्ध मनुष्य पर आघात करने की इच्छा से बचने के लिये उसने अपने हाथों को जेब में डाल लिया, वह सीधा सामने बैठ गया और दाँत भींच कर बोला :

"आप क्यों इतनी डींगें मारते है ? किस बात की डींगें मारते हो ? एह ! जीवन के बचाने वाले ! आपका पुत्र ? वह कहाँ है ? आपकी लड़की ? आपने उसे क्या बनाया है ? बहुत अच्छी बात है, आप दूसरों को सिखाने चले हैं ! सब जानते हैं, आप बड़े बुद्धिमान् हैं; जरा मुझे यह तो बताइये कि आपका जीवन किसलिये है ? क्या आपको मरने की आशा नहीं ? आपने कभी कौन सा ऐसा काम किया है जो करने के योग्य हो ? लोग आपको किस काम के लिये याद करेंगे ?"

मायाकिन की झुर्रियाँ काँपीं और गिर गई, जिससे उसके चेहरे पर रुग्णता, दुःख और उदासी का भाव छा गया। उसने अपना मुँह खोला, परन्तु उसमें से शब्द न निकल सके। वह अपने धर्मपुत्र की ओर आश्चर्य और लगभग भय से निहारता बैठा रहा।

"कुत्ते के बच्चे ! अपनी ज़ुबान बन्द कर", अन्त में वह धीरे से बोला।

फ़ोमा ने टोपी को सिर पर उछाला और वृद्ध पुरुष की ओर घृणा-पूर्वक निहारते हुए खड़ा हो गया।

"लो, अब मैं मदिरापान और रंगरेलियों के लिये चला। जो कुछ मेरे पास है सब उड़ा दूँगा।"

"बहुत अच्छा ! हम देखेंगे कि इसका क्या नतीजा होता है।"

"नमस्कार, सन्त महाराज नमस्कार !" फ़ोमा ने धृष्टता से मखौल में कहा।

"नमस्ते, जल्दी ही फिर मिलेंगे", मायाकिन ने हाँफते हुए धीरे से कहा।

याकब मायाकिन अब सराय में अकेला रह गया। वह मेज पर बैठा थाली में गिरी क्वास से काँपती उँगलियों से अजब-अजब नमूने बनाने लगा। उसका नुकीला सिर नीचे को ढुलक गया था जैसे कि वह यह पता लगाने की कोशिश कर रहा हो कि उसकी पतली हड्डियों वाली उँगली ने क्या शक्ल बनाई हैं। उसकी गंजी खोपड़ी पर पसीने की बूंदें आगईं और गालों की झुर्रियाँ बड़ी चिन्ता के साथ काँप रही थीं, जैसे कि प्रायः हिलती थीं।

अन्त में उसने वेटर को आवाज दी ?

"तुम्हारा क्या हिसाब है ?" उसने रौब से कहा।

१०.

मायाकिन के साथ झगड़े से पहले, फ़ोमा आधे दिल से शराब पीता था, क्योंकि वह जिन्दगी से ऊब चुका था। परन्तु अब वह ईर्ष्या, दुष्टता और निराशा में सब की अवहेलना कर खुल कर पीने लगा। कभी कभी वह अपनी इस धृष्टता और आग्रह से डर जाता था। उसने देखा कि गम्भीर, समझदार लोग मूर्ख व अभाग्यशाली थे और शराबी लोग घृणित व अधिक मूर्ख थे। वह अपने साथियों में से किसी में दिलचस्पी नहीं रखता था, उनके नाम पूछने की भी परवाह नहीं करता था और भूल जाता था कि वह उनसे कब और कहाँ मिला है। हमेशा उनका अपमान करने की उसे इच्छा होती। वह मँहगे फैशननेबल रेस्टोरेंटों में हमेशा पैसे से तंग, टुकड़ों, जादूगरों, एक्टरों और जमींदारों जैसे सभ्य लोगों से मिलता, जो अपनी सम्पत्ति को रंग-रेलियों में उड़ा चुके थे। पहले पहल इन लोगों ने उसके साथ बड़प्पन और आश्रयदान व अपने शौकों, और शराब और भोजन के विशेष ज्ञान की डींगें मारनी शुरू कीं; परंतु बाद में वे चापलूस, आज्ञाकारी और नम्र बन गये और उससे पैसा उधार लेने लगे जिसे कि वह स्वयं ही प्रामिज़री नोटों पर हस्ताक्षर करके लेता था। नाई, बिलियर्ड की बाजियों वाले, क्लर्क और गवइये, जब कभी वह किसी सस्ती सराय में जाता तो, गिद्धों की तरह उसके चारों तरफ मंडराते थे। इन लोगों के साथ वह बहुत अच्छा अनुभव करता। ये लोग कम भ्रष्ट और उसके लिये कम पहेली थे। कभी कभी वे तीव्र स्वस्थ भावनाओं को दिखाते थे और हमेशा मनुष्यतापूर्ण होते थे। परन्तु पैसे के मामले में वे ऐसे ही लालची और

इसे हासिल करने में वैसे ही मुँहफट थे जैसे कि 'प्रतिष्ठित' लोग। वह इस बात के लिये उन्हें भद्दे तरीके के ताने देता।

और निःसन्देह स्त्रियाँ भी थीं। एक स्वस्थ पुरुष होने के कारण फ़ोमा अपने लिये सस्ती और मंहगी, रूपवान और कुरूप सब ही प्रकार की स्त्रियाँ खरीदता। वह उन्हें बड़ी बड़ी रकमों की भेटें देता और लगभग हर हफ्ते बदल देता। साधारणत वह पुरुषों की अपेक्षा उनका अधिक आदर करता था। वह उनसे मखौल करता और उनसे लज्जाजनक, नीचा दिखाने वाली बातें करता। परन्तु कभी भी, यहाँ तक कि शराब के नशे में भी, वह उनकी उपस्थिति में अपनी झेंप दूर नहीं कर सकता था। वह जानता था कि औरतों में ढीठ से ढीठ और निर्लज्ज से निर्लज्ज भी एक बच्चे की तरह अबला थी। और उसे, जो पुरुषों के साथ हमेशा लड़ाई मोल लेने के लिये तैयार रहता था, कभी भी किसी स्त्री पर हाथ उठाते नहीं देखा गया, यद्यपि वह किसी कारण से उन्हें गन्दी गालियाँ बक देता था। वह जानता था कि किसी भी स्त्री के मुकाबले में वह बहुत बलवान और बहुत भाग्यशाली है। जो स्त्री उसके सामने विषय भोग के बारे में शेखी बघारती और कामुकता और लम्पटपन से मदिरा पान करती उसे देख वह लज्जा से भर जाता था। ऐसी स्त्रियों को देख कर वह व्याकुल और लज्जित हो जाता था। एक दिन ऐसी ही एक स्त्री ने संध्या के भोजन की मेज पर उसके गाल पर तरबूज का छिलका मारा। फ़ोमा शराब के नशे में था। वह उसकी तरफ गुस्से में लाल पीला होकर मुड़ा, खड़ा हुआ और अपने हाथ जेबों में डाले कांपती और डरावनी आवाज में बोला:

"निकल जा यहाँ से, कुतियाँ कहीं की। मेरी जगह कोई और होता तो इस हरकत पर तेरी खोपड़ी तोड़ डालता, परन्तु तू जानती है, मैं तुझ पर उंगली भी नहीं उठाऊँगा। इसे यहाँ से बाहर निकाल दो!"

जब वे क़ाज़ान में कुछ दिन रह लिये, साशा एक शराब बनाने वाले के लड़के के साथ रहने चली गई।

"नमस्कार, प्यारे!" वह अपने नये प्रेमी के साथ कामा की यात्रा पर

रोंदा जा कर लुप्त हो गया; वहाँ उसका धर्मपिता भी था जो सांप की तरह रेंग रहा था, लोगों के कन्धों पर उछल रहा था, उनकी टाँगों में से फिसल रहा था और अपने पेशीय पतले शरीर से हर रंग पट्ठे को चला रहा था; इनमें ल्यूवा भी थी जो चिल्ला रही थी, संघर्ष कर रही थी और अपने पिता को पकड़ने की कोशिश में कभी आगे बढ़ती और कभी पीछे गिरती थी; पेलागेया भी तेजी से एक दिशा में चल रही थी; सोफिया पावलोव्ना भी अपने पार्श्वों में निढाल हाथों को लटकाये खड़ी थी। जैसा कि वह आखिरी समय फ़ोमा के साथ ड्रांइग रूम में खड़ी थी, जब कि वह उससे मिलने गया था, उसकी बड़ी बड़ी आँखें भय से भरी हुई थीं; अविचल, अव्यग्र साशा धक्कम-धक्का का ख्याल किये बिना अपनी काली आँखों से गम्भीरतापूर्वक देखती हुई सीधी केन्द्र में आने की कोशिश कर रही थी। फ़ोमा ने उनकी चिल्लाहट, हँसी मखौलें, शराब के नशे की चिल्लाहटें व गरमा-गरम बहसों को सुना। इन मनुष्यों के उबलते शरीरों के ऊपर जो ज्वालामुखी के छिद्र में पकड़े गये थे, उसने गीत और रुदन सुने। ये लोग एक दूसरे को कुचल रहे थे, एक दूसरे के कन्धों पर कूद रहे थे, एक दूसरे से अन्धों की तरह टकरा रहे थे, एक दूसरे से टकराते हुए लड़ रहे थे और नजर से ओझल हो रहे थे। उसने एक प्रकार की सर-सराहट सुनी, जो चिमगादड़ों की तरह लोगों के सिर पर उड़ रहे थे, जिन्हें वे बड़े लालच के साथ लूट रहे थे; उसने सोने चाँदी की खनखनाहट, बोतलों की खड़खड़ाहट, कार्कों का उछलना, शराबियों की आहें और एक स्त्री की ध्वनि में गाने का टप्पा सुना—

> वर आओ! हम वर्तमान को करें प्यार
> कल से क्यों हो फिर डर अपार।
>
> नेह वर्तमान से करें—बढ़े चलें, बढ़े चलें।
> क्यों भविष्य से डरें—बढ़े चलें, बढ़े चलें।।

फ़ोमा इस दृश्य से अपने को मुक्त न कर सका जो बहुत स्पष्ट था और पहिले की अपेक्षा, हर बार जब वह देखता था, अधिक भयानक होता था, और

जो उसके हृदय में भय, क्रोध, दया और मृत्यु की भावनायें—प्रज्ज्वलित कर देता था, जो नदी में मिलने वाली धाराओं के समान आपस में मिल जाती थीं। ये भावनायें तब तक उसकी छाती में उबलतीं और बुलबुले उठातीं, जब तक कि वे एक ऐसी प्रबल इच्छा में परिवर्तित न हो जातीं, जो उसका गला घोटतीं, उसकी आँखों में आँसू लातीं और उसमें पशुओं की तरह लोगों को भयभीत करने के लिये जोर से चिल्लाने की इच्छा न पैदा कर देतीं। इस इच्छा का अभिप्राय निरर्थक चहल-पहल को बन्द करना होता, इस गड़बड़ में कुछ अपना जोड़ना होता और एक ऊँची आवाज में कुछ सार्थक शब्द कहना होता और लोगों को एक दूसरे के खिलाफ लगे होने की बजाय, एक दिशा में जाने के लिये कहना होता। वह चाहता था कि वह इन सब लोगों को पकड़ कर एक दूसरे से अलग कर दे; उनमें से कुछ को दण्ड दे, दूसरों को दुलार करे, सबको झिड़के और उन पर एक महान् अग्नि का प्रकाश फेंके।

परन्तु उससे इन दोनों में से कुछ नहीं होता—उसके पास न शब्द होते और न आग ही; एक ऐसी इच्छा के अलावा, जो शंकित, संदिग्ध और अप्राप्य होती, कुछ न होता। उसने अपने को इस ज्वालामुखी के पास खड़े देखा जिसमें लोगों की भीड़ घिर रही थी और जिसमें वह दृढ़-निश्चयी तथा मूक खड़े थे। वह इन लोगों को निश्चित् रूप से पुकार सकता था:

"तुम किस तरीके की जिन्दगी बसर कर रहे हो? तुम्हें लज्जा नहीं आती?"

परन्तु यदि वह उसकी आवाज सुनकर कहते: "हमें कैसा जीवन व्यतीत करना चाहिये?"

वह अच्छी तरह जानता था कि यदि उन्होंने यह सवाल पूछा तो वह ऊँचाई से लुढ़कता हुआ ज्वालामुखी की दरार में गिर पड़ेगा और लोगों के पाँवों से रौंदा जाकर चक्की के पाटों में पिस जायेगा। लोग उसके इस विनाश पर हँसेंगे।

कभी-कभी वह सोचता कि वह बहुत शराब पीकर पागल हो

है, और यही कारण था कि उसका दिमाग भय और कल्पनाओं से जकड़ा और भरा रहता तथा अपनी इच्छा की क्रिया से वह इसे दबा देता, परन्तु उसी क्षण वह अकेला रह जाता और जब बहुत शराब न पी होती तो एक प्रकार की मूर्छा वापिस आ जाती जो अपने बोझ से उसे वापिस दबा देती। स्वतन्त्र होने की इच्छा उसमें बढ़ने लगी और मजबूत होने लगी। परन्तु वह अपनी सम्पत्ति की बेड़ियों को उतार कर फेंक नहीं सकता था।

मायाकिन, जिसे अपना कारोबार चलाने के लिये उसने सब कानूनी अधिकार सौंप दिये थे, कोई भी दिन ऐसा न गुजरने देता जब वह उस पर समझ-और उत्तरदायित्व का जोर न डालना चाहता हो। लेने वाले अपने बिलों की रकमें लेने आते, ठेकेदार माल ढोने के समझौते करने आते, क्लर्क ऐसे मामलों पर बहस करने आते जिनका कि वह स्वयं ही फैसला कर चुके होते। वे उसे सरायों, शराबखानों में पाते। उससे पूछते कि अमुक बात कैसे करें, और वह बतला देता, प्रायः अपनी सलाह के ठीक होने पर संदेह भी करता और देखता कि वे उसकी सलाहों को संदेह से देखते और सब बातें अपने ही तरीके से करते, जो अधिक अच्छी होतीं। वह जानता था कि उसका धर्मपिता इन सब कार्यवाहियों के पीछे है और मायाकिन हर प्रकार से उस पर ऐसे दवाब डालना चाहता था कि वह उसके चुने रास्ते पर वापिस आ जाये। और वह यह भी जानता था कि वह अब अपने कारोबार का स्वामी नहीं था, परन्तु एक बहुत मामूली, अप्रधान सहायक मात्र था। इस नाराजगी से वृद्ध मनुष्य के प्रति उसमें घृणा और बढ़ गई। वह कारोबार से बिलकुल मुक्त होना चाहता था, चाहे उसका विनाश ही हो जाये। वह शराबखानों और वेश्यागृहों में बड़ी तेज रफ़्तार से पैसा उड़ाने लगा, परन्तु ऐसा देर तक न रह सका : मायाकिन ने बैंक का हिसाब बन्द कर दिया। जल्दी ही फ़ोमा ने अनुभव किया कि लोग अब उसे पहले की तरह पैसा जल्दी उधार नहीं देते। इससे उसके अभिमान को बड़ा धक्का लगा। परन्तु उसे पालग बना देने और भयभीत करने वाला धक्का तब लगा, जब उसने सुना कि उसका धर्ममिता उसके पागलपन के बारे

में अफवाहें उड़ा रहा है, और संकेत कर रहा है कि उसके ऊपर कानूनी गार्जिअन निश्चित करने की बड़ी भारी आवश्यकता है। फ़ोमा नहीं जानता था कि उसका धर्मपिता यहाँ तक जा सकता है और वह इस मामले में किसी और से सलाह करने में हिचकता था। वह मानता था कि व्यापारिक संसार में मायाकिन पर्याप्त प्रभावशाली व्यक्ति है, और वह जो चाहेगा, कर सकेगा। पहले पहल वह अपने धर्मपिता के भयङ्कर और बलवान् हाथ से डर गया, परन्तु शीघ्र ही अपने दुष्ट-चरित्र जीवन में तथा लोगों के अलावा किसी और चीज में दिलचस्पी न लेने का अभ्यासी हो गया। प्रतिदिन उसका विश्वास दृढ़ होता गया कि उसके आसपास के लोग उससे बहुत खराब थे और वे उससे भी निरर्थक जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे अपने जीवन के स्वामी नहीं थे, परन्तु खुशामदी चापलूस नौकरों की तरह थे, जिन्हें जीवन अपना मनमाना हुक्म देता, झुकाता और तोड़ मरोड़ करता।

इस प्रकार वह एक ऐसा जीवन व्यतीत करने लगा, जैसे कि वह किसी ऐसी दलदल को पार कर रहा हो जो उसे किसी भी समय अपने में लीन कर लेगी, जबकि उसका धर्मपिता सूखी जमीन पर उगी हुई अँगूर की बेल की तरह उस पर मरोड़े खा रहा था और दूर से उस पर तेज नजर रख रहा था।

फ़ोमा से झगड़ने के बाद मायाकिन बहुत उदास घर पहुँचा। उसकी आँखों में सूखी चमक थी और वह एक खिंची सीधी जंजीर के समान तना हुआ था। उसकी झुर्रियाँ अधिक गहरी हो गई थीं, उसका चेहरा अधिक पिचक गया और मलिन पड़ गया था। इसलिये जब ल्यूबा ने उसे देखा; वह समझी कि उसका पिता बहुत बीमार हो गया है। वह बड़ी उत्तेजना और बेचैनी से अपनी लड़की के प्रश्नों के जवाब में कुछ रूखे शब्दों को फेंकता, फर्श पर चलता हुआ अन्त में अधीरता के साथ बोला :

"मुझे अकेला रहने दो ! मेरे पास तुम्हारे लिये समय नहीं।"

वह उसकी हरी आँखों में मन्दता और कष्ट को देखकर दयार्द्र हो उठी, और जब वह डिनर के लिये बैठा, वह तेजी के साथ उसके पास गई और उसके कन्धों पर हाथ रक्खा।

है, और यही कारण था कि उसका दिमाग भय और कल्पनाओं से जकड़ा और भरा रहता तथा अपनी इच्छा की क्रिया से वह इसे दबा देता, परन्तु उसी क्षण वह अकेला रह जाता और जब बहुत शराब न पी होती तो एक प्रकार की मूर्छा वापिस आ जाती जो अपने बोझ से उसे वापिस दबा देती। स्वतन्त्र होने की इच्छा उसमें बढ़ने लगी और मजबूत होने लगी। परन्तु वह अपनी सम्पत्ति की बेड़ियों को उतार कर फेंक नहीं सकता था।

मायाकिन, जिसे अपना कारोबार चलाने के लिये उसने सब कानूनी अधिकार सौंप दिये थे, कोई भी दिन ऐसा न गुजरने देता जब वह उस पर समझ-और उत्तरदायित्व का जोर न डालना चाहता हो। लेने वाले अपने बिलों की रकमें लेने आते, ठेकेदार माल ढोने के समझौते करने आते, क्लर्क ऐसे मामलों पर बहस करने आते जिनका कि वह स्वयं ही फैसला कर चुके होते। वे उसे सरायों, शराबखानों में पाते। उससे पूछते कि अमुक बात कैसे करें, और वह बतला देता, प्रायः अपनी सलाह के ठीक होने पर संदेह भी करता और देखता कि वे उसकी सलाहों को संदेह से देखते और सब बातें अपने ही तरीके से करते, जो अधिक अच्छी होतीं। वह जानता था कि उसका धर्मपिता इन सब कार्यवाहियों के पीछे है और मायाकिन हर प्रकार से उस पर ऐसे दबाव डालना चाहता था कि वह उसके चुने रास्ते पर वापिस आ जाये। और वह यह भी जानता था कि वह अब अपने कारोबार का स्वामी नहीं था, परन्तु एक बहुत मामूली, अप्रधान सहायक मात्र था। इस नाराजगी से वृद्ध मनुष्य के प्रति उसमें घृणा और बढ़ गई। वह कारोबार से बिल्कुल मुक्त होना चाहता था, चाहे उसका विनाश ही हो जाये। वह शराबखानों और वेश्यागृहों में बड़ी तेज रफ़्तार से पैसा उड़ाने लगा, परन्तु ऐसा देर तक न रह सका : मायाकिन ने बैंक का हिसाब बन्द कर दिया। जल्दी ही फ़ोमा ने अनुभव किया कि लोग अब उसे पहले की तरह पैसा जल्दी उधार नहीं देते। इससे उसके अभिमान को बड़ा धक्का लगा। परन्तु उसे पालग बना देने और भयभीत करने वाला धक्का तब लगा, जब उसने सुना कि उसका धर्ममिता उसके पागलपन के बारे

में अफवाहें उड़ा रहा है, और संकेत कर रहा है कि उसके ऊपर कानूनी गार्जिअन निश्चित करने की बड़ी भारी आवश्यकता है। फ़ोमा नहीं जानता था कि उसका धर्मपिता यहाँ तक जा सकता है और वह इस मामले में किसी और से सलाह करने में हिचकता था। वह मानता था कि व्यापारिक संसार में मायाकिन पर्याप्त प्रभावशाली व्यक्ति है, और वह जो चाहेगा, कर सकेगा। पहले पहल वह अपने धर्मपिता के भयङ्कर और बलवान् हाथ से डर गया, परन्तु शीघ्र ही अपने दुष्ट-चरित्र जीवन में तथा लोगों के अलावा किसी और चीज में दिलचस्पी न लेने का अभ्यासी हो गया। प्रतिदिन उसका विश्वास दृढ़ होता गया कि उसके आसपास के लोग उससे बहुत खराब थे और वे उससे भी निरर्थक जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे अपने जीवन के स्वामी नहीं थे, परन्तु खुशामदी चापलूस नौकरों की तरह थे, जिन्हें जीवन अपना मनमाना हुक्म देता, झुकाता और तोड़ मरोड़ करता।

इस प्रकार वह एक ऐसा जीवन व्यतीत करने लगा, जैसे कि वह किसी ऐसी दलदल को पार कर रहा हो जो उसे किसी भी समय अपने में लीन कर लेगी, जबकि उसका धर्मपिता सूखी जमीन पर उगी हुई अँगूर की बेल की तरह उस पर मरोड़े खा रहा था और दूर से उस पर तेज नजर रख रहा था।

फ़ोमा से झगड़ने के बाद मायाकिन बहुत उदास घर पहुँचा। उसकी आँखों में सूखी चमक थी और वह एक खिंची सीधी जंजीर के समान तना हुआ था। उसकी झुर्रियाँ अधिक गहरी हो गई थीं, उसका चेहरा अधिक पिचक गया और मलिन पड़ गया था। इसलिये जब ल्यूबा ने उसे देखा; वह समझी कि उसका पिता बहुत बीमार हो गया है। वह बड़ी उत्तेजना और बेचैनी से अपनी लड़की के प्रश्नों के जवाब में कुछ रूखे शब्दों को फेंकता, फर्श पर चलता हुआ अन्त में अधीरता के साथ बोला :

"मुझे अकेला रहने दो ! मेरे पास तुम्हारे लिये समय नहीं।"

वह उसकी हरी आँखों में मन्दता और कष्ट को देखकर दयार्द्र हो उठी, और जब वह डिनर के लिये बैठा, वह तेजी के साथ उसके पास गई और उसके कन्धों पर हाथ रक्खा।

है, और यही कारण था कि उसका दिमाग भय और कल्पनाओं से जकड़ा और भरा रहता तथा अपनी इच्छा की क्रिया से वह इसे दबा देता, परन्तु उसी क्षण वह अकेला रह जाता और जब बहुत शराब न पी होती तो एक प्रकार की मूर्छा वापिस आ जाती जो अपने बोझ से उसे वापिस दबा देती। स्वतन्त्र होने की इच्छा उसमें बढ़ने लगी और मजबूत होने लगी। परन्तु वह अपनी सम्पत्ति की बेड़ियों को उतार कर फेंक नहीं सकता था।

मायाकिन, जिसे अपना कारोबार चलाने के लिये उसने सब कानूनी अधिकार सौंप दिये थे, कोई भी दिन ऐसा न गुजरने देता जब वह उस पर समझ और उत्तरदायित्व का जोर न डालना चाहता हो। लेने वाले अपने बिलों की रकमें लेने आते, ठेकेदार माल ढोने के समझौते करने आते, क्लर्क ऐसे मामलों पर बहस करने आते जिनका कि वह स्वयं ही फैसला कर चुके होते। वे उसे सरायों, शराबखानों में पाते। उससे पूछते कि अमुक बात कैसे करें, और वह बतला देता, प्रायः अपनी सलाह के ठीक होने पर संदेह भी करता और देखता कि वे उसकी सलाहों को संदेह से देखते और सब बातें अपने ही तरीके से करते, जो अधिक अच्छी होतीं। वह जानता था कि उसका धर्मपिता इन सब कार्यवाहियों के पीछे है और मायाकिन हर प्रकार से उस पर ऐसे दवाब डालना चाहता था कि वह उसके चुने रास्ते पर वापिस आ जाये। और वह यह भी जानता था कि वह अब अपने कारोबार का स्वामी नहीं था, परन्तु एक बहुत मामूली, अप्रधान सहायक मात्र था। इस नाराजगी से वृद्ध मनुष्य के प्रति उसमें घृणा और बढ़ गई। वह कारोबार से बिलकुल मुक्त होना चाहता था, चाहे उसका विनाश ही हो जाये। वह शराबखानों और वेश्यागृहों में बड़ी तेज रफ़्तार से पैसा उड़ाने लगा, परन्तु ऐसा देर तक न रह सका : मायाकिन ने बैंक का हिसाब बन्द कर दिया। जल्दी ही फ़ोमा ने अनुभव किया कि लोग अब उसे पहले की तरह पैसा जल्दी उधार नहीं देते। इससे उसके अभिमान को बड़ा धक्का लगा। परन्तु उसे पागल बना देने और भयभीत करने वाला धक्का तब लगा, जब उसने सुना कि उसका धर्मपिता उसके पागलपन के बारे

में अफवाहें उड़ा रहा है, और संकेत कर रहा है कि उसके ऊपर कानूनी गार्जिअन निश्चित करने की बड़ी भारी आवश्यकता है। फ़ोमा नहीं जानता था कि उसका धर्मपिता यहाँ तक जा सकता है और वह इस मामले में किसी और से सलाह करने में हिचकता था। वह मानता था कि व्यापारिक संसार में मायाकिन पर्याप्त प्रभावशाली व्यक्ति है, और वह जो चाहेगा, कर सकेगा। पहले पहल वह अपने धर्मपिता के भयङ्कर और बलवान् हाथ से डर गया, परन्तु शीघ्र ही अपने दुष्ट-चरित्र जीवन में तथा लोगों के अलावा किसी और चीज में दिलचस्पी न लेने का अभ्यासी हो गया। प्रतिदिन उसका विश्वास दृढ़ होता गया कि उसके आसपास के लोग उससे बहुत खराब थे और वे उससे भी निरर्थक जीवन व्यतीत कर रहे थे। वे अपने जीवन के स्वामी नहीं थे, परन्तु खुशामदी चापलूस नौकरों की तरह थे, जिन्हें जीवन अपना मनमाना हुक्म देता, झुकाता और तोड़ मरोड़ करता।

इस प्रकार वह एक ऐसा जीवन व्यतीत करने लगा, जैसे कि वह किसी ऐसी दलदल को पार कर रहा हो जो उसे किसी भी समय अपने में लीन कर लेगी, जबकि उसका धर्मपिता सूखी जमीन पर उगी हुई अँगूर की बेल की तरह उस पर मरोड़े खा रहा था और दूर से उस पर तेज नजर रख रहा था।

फ़ोमा से झगड़ने के बाद मायाकिन बहुत उदास घर पहुँचा। उसकी आँखों में सूखी चमक थी और वह एक खिंची सीधी जंजीर के समान तना हुआ था। उसकी झुर्रियाँ अधिक गहरी हो गई थीं, उसका चेहरा अधिक पिचक गया और मलिन पड़ गया था। इसलिये जब ल्यूबा ने उसे देखा; वह समझी कि उसका पिता बहुत बीमार हो गया है। वह बड़ी उत्तेजना और बेचैनी से अपनी लड़की के प्रश्नों के जवाब में कुछ रूखे शब्दों को फेंकता, फर्श पर चलता हुआ अन्त में अधीरता के साथ बोला :

"मुझे अकेला रहने दो! मेरे पास तुम्हारे लिये समय नहीं।"

वह उसकी हरी आँखों में मन्दता और कष्ट को देखकर दयार्द्र हो उठी, और जब वह डिनर के लिये बैठा, वह तेजी के साथ उसके पास गई और उसके कन्धों पर हाथ रक्खा।

"पिताजी, क्या आपका स्वास्थ ठीक नहीं है ?" उसने बड़ी कोमलता से देखते हुए पूछा।

वह कभी ही उसके प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करती थी, इसलिये उसके प्रत्येक प्रदर्शन से वह बहुत प्रभावित हो जाता था। यद्यपि वह कभी प्रत्युत्तर में प्रेम नहीं करता था, फिर भी वह इसे पसन्द करता था। इस बार उसने अपने कन्धे हिला कर उसका हाथ परे कर दिया और बोला :

"आओ, आओ, अपनी जगह बैठ जाओ ! तुम क्या सोच रही हो ?"

परन्तु ल्यूवा बैठी नहीं; वह उसके चेहरे की ओर देखती रही।

"पिताजी, आप हमेशा मुझसे ऐसे क्यों बातें करते हैं जैसे कि मैं कोई छोटी सी मूर्ख लड़की होऊँ ?" उसने पीड़ित आवाज में कहा।

"क्योंकि तुम बड़ी हो गई हो, और समझदार नहीं हुईं, बस यही बात है। बैठ जाओ, अपना भोजन करो।"

वह उसके सामने चुपचाप ओंठ भींचकर अपनी जगह बैठ गई। उसने और दिनों की अपेक्षा भोजन में अधिक समय लिया, अपने चमचे से खिलवाड़ करता रहा और खोया-खोया सा असावधान चित्त से सूप में घूरता रहा।

"साशा ! तुम्हारा मूर्खतापूर्ण मस्तिष्क अपने पिता के विचारों को नहीं समझ सकता !" उसने अचानक एक-एक शब्द आह भर कर कहा।

ल्यूवा ने अपना चमचा रख दिया।

"पिताजी, आप हमेशा मेरे दिल को क्यों चोट पहुँचाते रहते हैं ?" वह आँखों में आँसू भर कर बोली : "आप नहीं देखते कि मैं कितनी अकेली हूँ, किस बुरी तरह अकेली ? आप समझ सकते हैं कि मेरे लिये इस प्रकार जीवन व्यतीत करना कितना कठिन है, और फिर भी आप कभी कोई कृपा-पूर्ण शब्द नहीं कहते। परन्तु आप भी तो बुरी तरह अकेले हैं, और आपके लिये भी बहुत कठिन।"

"बलाम की गधी की तरह क्यों रेंक रही है !" बुड्ढे ने थोड़ा सा हँसते हुए कहा : "अच्छा, और तू कह ही क्या सकती है।"

"आप अपनी बुद्धिमत्ता पर बहुत अभिमान करते हैं, पिताजी !"

"कोई और बात ?"

"इतना नहीं चाहिये। और आप मुझे दूर-दूर क्यों हटाते रहते है ? आखिरकार आपके अलावा इस संसार में मेरा और कौन है ?"

ल्यूबा की आँखों में आँसू छलक आये, जिससे मायाकिन के चेहरे पर आश्चर्य की झलक आ गई।

"यदि सिर्फ तुम लड़की न होतीं !" उसने विस्मय में कहा : "अथवा तुम्हारा दिमाग मर्फा पोसाद्नित्सा जैसा होता। ओह ! ल्यूबा, तब मैं अपनी उँगलियाँ संसार की ओर चटकाता—फ़ोमा और दूसरे सब लोगों की तरफ ! आओ, रोओ मत।"

"फ़ोमा क्या कर रहा है !" उसने अपनी आँखें पोंछते हुए कहा।

"वह उबल रहा है और चारों तरफ लातें फेंक रहा है, कहता है जो मेरे पास है ले लो और मुझे मुक्त करो। वह मयखाने में मुक्ति ढूँढ़ रहा है। हमारे फ़ोमा के दिमाग में यह बात बैठ गई है।"

"परन्तु क्यों ?" ल्यूबा ने झिझकते हुए कहा।

"क्यों ?" मायाकिन आवेश में काँपता हुआ बोला : "यह या तो शराब के कारण है, या परमात्मा उसकी रक्षा करे ! उसकी माँ के कारण है—जो सनातनी विश्वास* की थी। यदि वह इसी प्रकार जंगलीपन से इधर-उधर दौड़ेगा तो मैं पूरी तरह ऐड़ी से चोटी तक उसका विरोध करूँगा। उसने मेरे खिलाफ छाती तानकर युद्ध की घोषणा कर दी है और अनन्त धृष्टता दिखलाई है। परन्तु वह नवयुवक है। उसमें चालाकी धोखेबाजी नहीं। वह कहता है कि वह सब कुछ पी जायेगा। ओह, पी जायेगा, क्या कभी ऐसा हो सकता है ? मैं उसे दिखा दूँगा !"

---

*सनातन धर्म पर विश्वास करना।

मायाकिन ने अपना मुक्का डरावनी तौर से हिलाया।

"तुम कैसे कर सकते हो ? तुम्हारे कारोबार की नींव किसने डाली ? वह किसने बनाई थी ? तुमने ? नहीं, तुम्हारे बाप ने। इसमें उसकी चालीस बरस की मेहनत लगी थी, और तुम इसे हवा में उड़ा देना चाहते हो ? हमें—हम व्यापारियों को सम्मलित रूप से आगे बढ़ना चाहिये—(हम) सबको एक पंक्ति में पहाड़ी की चोटी की तरफ सम्मिलित रूप से आगे बढ़ना चाहिये, जब तक कि हम एक लक्ष्य तक नहीं पहुँच जायें। हम व्यापारियों ने, दूकानदारों ने, पीढ़ियों से रूस को अपने कन्धों पर उठाया है, अब भी उठाया हुआ है। महान् पीटर में ईश्वर-दत्त बुद्धि थी। वह हमारा मूल्य जानता था। उसने हमारी सहायता के लिये क्या नहीं किया ? हमारे लियें किताबें छापीं, हमें कारोबार सिखाया। मेरे पास अभी तक उसकी छपी हुई किताब है, एक किताब जिसे पोलीदोर वर्जिन उर्बिन्स्की ने, आविष्कर्त्ताओं के बारे में लिखी थी। यह पुस्तक १७२० में छपी थी। जरा सोचो ! उसने हमें श्री गणेश करवाया। अब हम अपने पाँव पर खड़े हो गये हैं। परन्तु हम बिना किसी रोक-टोक के आगे बढ़ना चाहते हैं। हमने जीवन का आधार बनाया, हमने नींव में ईंटों के साथ अपने जीवन लगाये हैं। और अब जब समय आ गया है कि इस पर मञ्जिलें खड़ी करें, कृपया हमें काम करने की स्वतन्त्रता दीजिये। हम व्यापारियों की यही नीति-रेखा होनी चाहिये; हमारे सामने यही कार्य है। फ़ोमा इसे नहीं देख रहा। उसे देखना चाहिये, और आगे बढ़ना चाहिये। उसके पास अपने पिता के दिये साधन हैं, और जब मैं मर जाऊँगा तो मेरी सम्पत्ति भी उसकी हो जायगी। नौजवान ! आगे बढ़ो, मेहनत करो। परन्तु इसकी जगह वह अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा हो जाता है, और बड़ा शोर करता है। अच्छा, नौजवान, छैल-छबीले, थोड़ा ठहरो, मैं तुम्हें तुम्हारी जगह पर बैठा दूँगा।"

वृद्ध पुरुष का गला गुस्से से रुँध रहा था और उसकी आँखें चमक रही थीं जैसे कि ल्यूबा की जगह फ़ोमा खड़ा हो। ल्यूबा भयभीत हो गई।

"तुम्हारे पितृव्यों ने तुम्हारे लिये रास्ता साफ कर दिया है, और अब तुम्हें इस पर चलना चाहिये। पचास साल से मैं गुलाम की तरह मेहनत कर रहा हूँ, यह सब क्यों ? अपने बच्चों के लिये ? मेरे बच्चे कहाँ हैं।" वृद्ध मनुष्य की आवाज टूट गई और उसका सिर ढुलक गया। अगली बार जब वह बोला तो उसकी आवाज ऐसी खोखली थी जैसे कि वह आंतों से निकल कर आ रही हो :

"एक चला गया……दूसरा शराबी हो गया……और तीसरी लड़की है……मेरे मरने के बाद कौन काम चलायेगा ? यदि मेरा कोई दामाद होता ……यदि फ़ोमा अपनी जई बोकर बस जाता, मैं उसे तुम्हारा हाथ और सारी सम्पत्ति दे देता। परन्तु फ़ोमा ऐसा नहीं कर रहा। और मुझे कोई और भी नहीं दिखाई दे रहा। पहिले जैसे लोग अब नहीं रहे, वे लोहे की तरह होते थे। आजकल के लोग देर तक नहीं चलते। ऐसा क्यों है ? क्या कारण है ?"

मायाकिन ने भय से अपनी लड़की की ओर देखा, परन्तु उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"मुझे बताओ : तुम जीवन में क्या चाहती हो ?" वह बोला : "तुम क्या समझती हो, लोगों को कैसे रहना चाहिये ? तुम स्कूल में रही हो और बहुत सी किताबें पढ़ी हैं ? तुम क्या चाहती हो ?"

तेजी और आकस्मिकता से पूछे गये सवालों ने उसे व्यग्र और व्याकुल बना दिया। वह प्रसन्न थी कि पिता ने ये प्रश्न पूछे, परन्तु वह डरती थी कि कहीं उनके उत्तरों से वह पिता की नजर में गिर न जाये। इसलिये अपनी समस्त शक्ति को संचित कर, मानो कि मेज को फाँदने वाली हो, कंपित एवं अशांत स्वर में बोली :

"मैं चाहती हूँ कि हर एक सुखी और सन्तुष्ट रहे तथा सब लोग एक समान हों। प्रत्येक मनुष्य को स्वतन्त्रता प्राप्त हो, प्रत्येक मनुष्य को…… पवन की तरह। और प्रत्येक चीज में समानता हो।"

"ठीक जैसे कि मैं सोचता था—एक आशातीत मूर्ख !" उसके पिता ने तिरस्कारपूर्वक भुनभुनाते हुए कहा।

ल्यूबा मुरझा गई, शिथिल पड़ गई, परन्तु अगले ही क्षण वह अपना सिर पीछे को फेंक, प्रतिवाद स्वरूप बोली :

"परन्तु आपने ही तो स्वतन्त्रता के बारे में कहा था······ ।"

"अपनी जबान बन्द करो ! तुम इतना भी नहीं देख सकतीं कि किसी मनुष्य की नाक पर क्या लिखा है। सब लोग कैसे सुखी और समान हो सकते हैं, जबकि प्रत्येक एक दूसरे से आगे बढ़ना चाहता है । यहां तक कि भिखारी का भी अपना घमण्ड होता है, और अपने साथियों में वह किसी न किसी बात पर डींगें मार सकता है। यहाँ तक कि छोटे से छोटा बच्चा भी खेल में आगे आना चाहता है। ऐसे लोग तुम्हें नहीं मिलेंगे जो एक दूसरे के लिये रास्ता छोड़ दें—केवल मात्र मूर्ख ही ऐसा सोचा करते हैं। प्रत्येक मनुष्य की अपनी आत्मा होती है और सिर्फ वही मनुष्य तुम्हें एक नमूने में अपने को काटने देंगे, जिनमें अपनी आत्मा के प्रति कोई प्रेम नहीं होता। वाह ! तुमने बहुत पढ़ा है—सब तरह का कूड़ा-करकट निगला है······ ।" वृद्ध मनुष्य की आँखों में कटु निन्दा, तीक्ष्ण तिरस्कार और उपेक्षा थी। अपनी कुर्सी को आवाज के साथ पीछे कर वह खड़ा हो गया, अपनी पीठ के पीछे हाथों को बाँधा और तेजी से फर्श पर चहलकदमी करने लगा, अपने सिर को हिलाता हुआ सशब्द आवाज में कुछ गुनगुनाता रहा। ल्यूबा लज्जा, उत्तेजना, असहायता और मूर्खता से दलित उसके शब्दों को दिल की धड़कन के साथ सुनती रही।

"जोब की तरह······अकेला रह गया हूँ । ओह ! परमात्मा मैं क्या करूँ ? क्या मैं···बुद्धिमान नहीं ? क्या मैं······चालाक नहीं ?"

उसकी लड़की का हृदय पिघल गया, उसकी प्रबल इच्छा हुई कि वह उसे सब प्रकार की मदद पहुँचाये। जलती हुई आँखों से वह उसकी प्रत्येक गति को देखती रही, और फिर अचानक हल्की आवाज में बोली :

"पिताजी ! ऐसे दुखी मत होइए, आखिरकार तारास तो अभी जीवित है। हो सकता है वह······ ।"

मायाकिन एकदम रुक गया, जैसे कि उसे एक धक्का लगा हो और उसने धीरे से सिर उठाया।

"यदि कोई पेड़ जवानी में ही मुड़ जाये, तो वह बड़ा होकर तूफानों का क्या मुकाबला कर सकता है? और फिर भी यह सच है—तारास ही मेरा आखिरी तिनके का सहारा है, यद्यपि वह फ़ोमा से मुश्किल से ही अधिक कीमती होगा। कम से कम फ़ोमा में गर्देयेवों का आचार तो है।......उसमें अपने पिता का हौसला है। वह यदि चाहे तो बड़े-बड़े काम कर सकता है। परन्तु तारास......तारास......अच्छा किया तुमने, मुझे उसकी याद करा दी।"

और वृद्ध मनुष्य जो क्षण भर पहले पिंजरे में बन्द गिलहरी की तरह इधर-उधर दौड़ रहा था, अब स्थिर और शान्त चित्त से मेज की ओर गया, अपनी कुर्सी को बारीकी के साथ पहले की जगह रक्खा।

"मुझे तारास के बारे में कुछ पता लगाना चाहिये", वह गम्भीर भाव से बोला: "वह उसोल्य में किसी कारखाने में रहता है, यह मुझे किसी व्यापारी ने बतलाया था। लगता है कि कारखाना सोडे का है, उसके बारे में कुछ पता लगाने की कोशिश करूँगा।"

"पिताजी, आप मुझे उसे लिखने देंगे?" ल्यूबा ने शर्मा कर प्रसन्नता से काँपते हुए धीरे से पूछा।

"तू?" मायाकिन ने उसकी ओर तेजी से नजर फेंकी; फिर क्षण भर सोचकर बोला: "शायद यह और भी अच्छा हो। जाओ, लिखो। उससे पूछो कि क्या उसकी शादी हो गई है? उसके क्या हाल हैं, कैसे विचार हैं—परन्तु समय आने पर मैं बताऊँगा कि क्या लिखना चाहिये।"

"पिताजी, फिर अभी ही उसे लिख दें", ल्यूबा बोली।

"मेरा पहिला काम है—तुम्हारी शादी करना। मेरी नजर एक लाल बालों वाले हुशियार लड़के पर है, जिस पर योरोपियन प्रभाव भी है।"

"पिताजी! कहीं स्मोलियन तो नहीं?" ल्यूबा ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"यदि वही हो तो क्या?" मायाकिन ने एक वास्तविकता की ध्वनि में कहा।

"कुछ नहीं। मैं उसे नहीं जानती," ल्यूबा ने अनात्मसमर्पण से कहा।

"तुम्हें उसे जानना चाहिये। समय आ गया है, ल्यूबा! अब समय आ गया है। हम फ़ोमा पर भरोसा नहीं कर सकते—यद्यपि मेरी इच्छा नहीं कि वह अपनी मर्जी के माफ़िक चले।"

"मैं तो पहले ही उस पर भरोसा नहीं करती थी।"

"कितनी बुरी बात है। यदि तुमने पहिले कुछ समझ से काम लिया होता तो शायद वह उल्टे रास्ते न पड़ता। जब कभी मैं तुम दोनों को साथ देखता था, मैं सोचा करता था कि लड़का मेरी ल्यूबा का घर बसायेगा। परन्तु मेरे सब अनुमान उल्टे निकले।"

अपने बाप की बातें सुनकर वह विचारों में डूब गई। वह एक स्वस्थ, सबल लड़की थी और पिछले दिनों से शादी के बारे में बहुत सोचती रहती थी। अपने अकेलेपन को दूर करने का उसे कोई और दूसरा रास्ता नहीं दिखलाई दिया। उसके बाद से उसने अपने पिता का घर छोड़ने और पढ़ने जाने की इच्छा को भी दूसरी उथली इच्छाओं की तरह छोड़ दिया था। बहुत सी किताबों के कारण, जो उसने पढ़ी थीं, उसके दिमाग पर पंकिल निक्षेप बैठ गये थे, जो उन्हीं अर्थों में जीवित थे; जैसे कि प्रोटोप्लाज्म जीवित रहता है। इससे वह जीवन से असन्तुष्ट हो गई और अपने पिता के कठोर निरीक्षण से मुक्त होने के लिये उतावली हो गई। परन्तु वह अपनी मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकी और न ही वह यह देख सकी कि मुक्ति प्राप्त कैसे की जा सकती है। इस मध्य प्रकृति से अपने पथ पर चलती रही, और जब कभी वह तरुण-माताओं को गोद में बच्चों को लिये देखती, वह ईर्ष्या और प्रबल इच्छा से भर जाती। कई बार जब वह दर्पण के सामने खड़ी होकर अपने तरुण चेहरे को, जिस पर आँखों के नीचे काले-काले धब्बे थे, देखती, तब वह अपने प्रति दुःखी हो जाती। जीवन उसके बराबर से गुजर रहा था, उसे एक तरफ धकेल रहा था। अब जब वह अपने पिता को ध्यान से बैठी सुन रही थी,

वह सोचने लगी कि स्मोलिन कैसा होग ? उसने उसे पहले जिम्नाज़ियम में देखा था। जब वह विद्यार्थी था—वह धब्बेदार, छोटी चपटी नाक वाला, साफ सुथरा और सभ्य, छोटा सा दिल को उकता देने वाला, भद्दे प्रकार से नाचने वाला और अरुचिकर साथी था। परन्तु यह बहुत पहिली बात है। उसके बाद वह यात्रा और विदेश अध्ययन कर आया है। अब वह कैसा होगा ? उसके विचार स्मोलिन पर से अपने भाई की तरफ जाने लगे और डूबते दिल से वह अचम्भा करने लगी कि उसकी चिट्ठी के जवाब में वह क्या लिखेगा। जैसे कि अपने विचारों की कल्पना की थी, उसके लिये भाई का महत्त्व अपने पिता या स्मोलिन से कहीं अधिक था, और वह अभी मन ही मन विचार कर रही थी कि वह तब तक विवाह करना स्वीकार न करेगी, जब तक तारास को न देख लेगी। वह अपने विचारों में खो गई कि उसके पिता ने झकझोर दिया :

"ल्यूबा ! जाग। तू क्या सपने ले रही है ?"

"ओह, हाँ मैं सोच रही थी कि यह सब कितनी जल्दी गुजर जाता है।"

"क्या गुजर जाता है ?"

"सब चीजें। पिछले ही हफ्ते आपने मुझे मना किया था कि तारास का नाम न लिया करो, और अब······।"

"यह आवश्यकता है, जो मुझे बाध्य कर रही है। बच्ची ! आवश्यकता बड़ी भारी शक्ति है, यह लोहे को भी कमानी में मोड़ देती है। जब कि लोहा बहुत मजबूत होता है। तारास ! हम देखेंगे। मनुष्य अपनी कीमत जीवन के प्रति मुकाबले या प्रत्यावरोध से सिद्ध करता है। यदि वह झुकने और मुड़ने की अपेक्षा उसे झुका और मोड़ देता है, तो मैं उसके सामने अपनी टोपी उठाने को तैयार हूँ (तो मैं उसके सामने झुकने को तैयार हूँ)। आह, कितनी दयनीय बात है, आज मैं इतना वृद्ध हो गया हूँ। आजकल सब चीजें बड़ी चुस्त रफ्तार से तैयार हो रही हैं। जीवन प्रति वर्ष अधिक मनोरंजक और चटकीला होता जाता है। मैं कितना चाहता हूँ कि जीवित रहूँ और कार्य करूं।"

वृद्ध मनुष्य ने ओठों को थपथपाया, अपने हाथों को आपस में मला और उसकी आँखें चमकने लगीं।

"परन्तु नौजवान लोगो ! तुम्हारी नसों में पतला खून है। तुम पकने से पहले सड़ने लगते हो और पकी मूली की तरह स्पञ्जदार हो जाते हो। तुम यह भी नहीं देखते कि जीवन कितना अच्छा है। इस पृथ्वी पर मैं सरसठ साल से हूँ, अब मैं कब्र के किनारे खड़ा देख रहा हूँ कि मेरी जवानी में इस संसार में बहुत कम फूल थे, और आजकल के फूलों से घटिया थे। प्रत्येक चीज लगातार अच्छी २ होती जा रही है। जरा इन सुन्दर इमारतों को तो देखो, जो ऊपर जा रही हैं। और साधनों को—व्यापार के साधनों को, इन जहाजों को ! देखो, इन सब में कितना दिमाग लगाया गया है। इन सब को देखकर तुम कहने के लिये मजबूर होते हो : "लोगो ! यह सब कुछ तुम्हारे लिये अच्छा है ! यह तुम्हारे लिये अच्छा है ! हमारे बेटों और उत्तराधिकारियों में, जिनमें जीवन की चिनगारी नहीं है, के अलावा मजदूर और मेहनत करने वाले लोगों में, घटिया से घटिया मूर्ख में, हमारे जमाने के नौजवानों से अधिक दिल है। उसे ही लो—क्या नाम है उसका ? क्या नाम है उसका ?··· यझोव। बिल्कुल नगण्य व्यक्ति, परन्तु फिर भी उसमें संसार को परखने की धृष्टता है। उसमें अपने विश्वासों का साहस है। और तुम ? वाह! तुम भिखारियों की तरह रहते हो ! तुम्हारी जिन्दा खाल उधेड़ कर मांस पर नमक छिड़कना चाहिये—इससे ही तुम उछल-कूद करोगे। ठीक है !"

याकोब मायाकिन—छोटा, झुर्रीदार, हड्डियों का ढाँचा, गंजा, जिसके मुँह में काले-काले दाँतों के खूँटे से थे, खाल ऐसी मैली पड़ चुकी थी जैसे कि वह जीवन के तन्दूर से निकल कर आई हो, याकोब मायाकिन जब अपनी तरुण, शुभ्र, मोटी लड़की पर गरमा-गरम शब्द उड़ेल रहा था, बड़ी उत्तेजना से काँपने लगा। वह उसकी ओर अपराधिनी और अपने प्रति सज्ञान भाव से मुस्करा कर देखती रही। उसके हृदय की गहराई में इस वृद्ध मनुष्य—अपने पिता के प्रति आदर भावना बढ़ने लगी, जो अपनी मनचाही इच्छाओं के प्रति बड़े दृढ़ निश्चय से चल रहा था।

फ़ोमा अपने नाच-रंगपूर्ण जीवन में लगा हुआ था। शहर के एक आधुनिक रेस्तराँ में कलार के लड़के ने, जो साशा के साथ चला गया था, उसे प्रेमालिंगन में कस लिया।

"क्या खूब मुलाकात हुई है! तीन दिन से मैं अकेला हूँ। शहर में कोई भला आदमी ही नहीं—निराशा में कुछ पत्रकारों के साथ रहा। वे कोई बुरे लोग नहीं। पहिले-पहिल वे अपनी नाक के नीचे से देखते हुए मुझ पर अपना बड़प्पन दिखलाने लगे, परन्तु मैंने उन सब को शराब में मदहोश कर दिया। मैं उनसे तुम्हारा परिचय कराऊँगा। उनमें से एक फीचर-लेख लिखता है, एक वही जिसने तुम्हारे बारे में लिखा था—क्या नाम है-उसका? बहुत दिलचस्प आदमी है, शैतान उसे उठा ले!"

"अलक्जेंन्द्रा का क्या हाल है?" फ़ोमा ने इस ऊँचे लापरवाह व्यक्ति के तड़क-भड़कदार पहिनावे को देखकर भौचक होकर पूछा।

"ओह!" उसने मुँह बनाते हुए कहा: "वह तुम्हारी अलक्जेंन्द्रा, बिल्कुल अच्छी नहीं। उसमें कुछ बातें रहस्यपूर्ण और मलिन हैं। वह बहुत मन्द है, और मेंढ़क जैसी ठण्डी। ओह! मैं उसे छोड़ रहा हूँ।"

"वह ठण्डी है, यह ठीक है", फ़ोमा ने विचारमग्न होकर कहा।

"मनुष्य कोई काम करे, उसे अपनी योग्यता से करना चाहिये", शराब बनाने वाले के लड़के ने लच्छेदार भाषा में कहा: "एक बार जब तुम किसी की रखेल रहना मंजूर कर चुकीं, तुम्हें अपना कर्त्तव्य, यदि तुम ईमानदार स्त्री हो तो, पूरा करना चाहिये। क्यों कुछ वोदका पीयें, आओ!"

उन दोनों ने पी और वे नशे में चूर होगये।

उस सांझ को उस शराबखाने में एक बहुत शोर-शराबा करने वाली भीड़ इकट्ठी हुई। फ़ोमा ने मदमाती मोटी, भारी आवाज में कहा:

"इश···शब को मैं ऐंजे देखता हूँ: कुज लोग कीड़े हैं, कुज चिड़िया हैं। व्यापारी चिड़िया हैं। वे की···ड़ों को खाते हैं। उनका मतबल जह है। म···ग···र तुम और मैं किज···वाश्ते हैं? हमारे लिये कोई बहाना नहीं।

हमें कोई नहीं चाता। और वे शब······दूसरे······वे किशलिये है । जह् कुज शोजते हैं। मुझे···कोई···नहीं चाता। मुजे मार दो । मैं···मरना··· चाहता···हूँ।"

वह खूब मदमस्ती के आँसू भर-भर कर रोया। एक अजब सा काला सा आदमी उसके पास आया। उसके ऊपर झुका, उसके कान में कुछ फुस-फुसाया, अपने को उसकी छाती पर गिरा कर और मेज पर अपना चाकू मारते हुए बोला :

"चुप ! अब अधपके भाषण देंगे ! अब इस नारकीय जीवन के विशाल हाथी और मैमथ भाषण देंगे। अब अधपकी रूसी आत्मा के पवित्र शब्दों को सुनिये। गर्देयेव ! गरजो ! अपनी सम्पूर्ण शक्ति से गरजो !"

उसने फ़ोमा के कन्धों को अपने पंजों से पकड़ा और उसकी छाती पर गिर पड़ा तथा उसका गोल, काले बालों वाला–बारीक हजामत किया सिर, फ़ोमा की नाक के नीचे मुड़ता और मरोड़े खाता रहा, जिससे फ़ोमा को उसके चेहरे की कुछ २ झलक आती रही। फ़ोमा ने चिढ़चिढ़ाते हुए उसे धक्का देकर कहा :

"परे हट ! अपने मुँह को तो कम से कम परे रख !"

शराब के नशे में मदहोशों की हँसी और चिल्लाहटें सब तरफ से आ रही थीं, तथा शराब बनाने वाले के लड़के की खाँसी के बीच-बीच में किसी की कठोर चिल्लाहटपूर्ण हाँफने की आवाज भी आ रही थी।

"आओ ! इधर आओ ! सौ रूबल प्रतिमास खाना-पीना और कमरा साथ। अखबार–सब जाएं जहन्नुम में। मैं तुम्हें अधिक दूँगा।"

प्रत्येक वस्तु एक लयपूर्ण गति के साथ डोल रही थी; कभी भीड़ पीछे हटती, कभी पास-पास आ जाती, फर्श ऊपर उठता, छत्त गिरती और फ़ोमा को ऐसा प्रतीत होने लगता कि वह उन दोनों के बीच कुचल दिया जायगा। फिर वह कल्पना करने लगा कि वह एक द्रुतगामी, चौड़ी नदी पर पालबोट में जा रहा है। उसने अपने पांव हिलाये और भयार्त हो चिल्लाने लगा :

"हम कहाँ जा रहे हैं ? कप्तान कहाँ है ?" इसका उत्तर उसे एक ठिगने काले मनुष्य ने नशे में चूर, पतली तेज हँसी और भारी आवाज में दिया :

"ठी···ई···क है ! कप्तान कहाँ हैं ?"

× × × ×

फ़ोमा जब अपने दुःस्वप्न से जागा—वह एक छोटे से कमरे में था, जिसमें दो खिड़कियाँ थीं, और पहिली वस्तु जिस पर उसकी नज़र पड़ी वह खिड़की के ठीक बाहिर मुरझाया हुआ पेड़ था। उसकी मोटी शाखा, जिस पर से छाल उतरी हुई थी, कमरे में प्रकाश को आने से रोक रही थी और उसकी काली और मुड़ी हुई पल्लव-हीन शाखाएं शून्याकाश में टटोलती सी हिल रहीं थीं और जब हवा चलती थी तो प्रार्थनापूर्ण सरसराहट करती थी। वर्षा हो रही थी। पानी खिड़की की दहलीजों पर होकर बह रहा था और छत से रुदन-पूर्ण ध्वनि करता हुआ नीचे गिर रहा था। इसके साथ ही रुक कर कागज पर कलम के घसीटे जाने और गुनगुनाहट की हलकी सी आवाज आ रही थी।

कुछ कोशिश से फ़ोमा ने तकिए से सिर उठाया और उसने देखा काले सिर वाला व्यक्ति डेस्क पर बैठा बड़ी तेजी से लिख रहा है, समय २ पर रुक-रुक कर स्वीकृति में अपना सिर हिलाता है, अपने कंधों को झटकाता है और अपने छोटे से निर्बल शरीर (जो अंडरवीयर और नाइट शर्ट सें ढका हुआ है) की प्रत्येक अस्थि और प्रत्येक पेशी को निरन्तर गति दे रहा है जैसे कि वह गरम कोयलों पर बैठा हो, और किसी कारण से उन पर से उठ न सकता हो। अपनी पतली बांह से उसने अपने माथे को रगड़ा और हवा में षड्यंत्र-कारियों के गुप्त संकेतों की तरह उसे हिलाया। उसके नंगे पाँव आगे पीछे फर्श पर रगड़ते, उसकी गर्दन के पीछे रीढ़ की हड्डी हिलती, और यहाँ तक कि उसके कान भी फड़क रहे थे। जब उसने सिर मोड़ा, फ़ोमा ने देखा कि उसकी नुकीली नाक और छिदरी मूंछें, जब कभी वह हँसता या तो, हिलती थीं। उसका चेहरा पीला और झुर्रीदार था और उसकी काली काली आँखें उससे प्रथक दिखाई देती थीं।

जब फ़ोमा उसे भरपेट देख चुका तो उसने कमरे में अपनी आँखें चारों तरफ घुमाईं। दीवारें कीलों से ठुकी हुई थीं, जिन पर अखबारों के गुच्छे कुरूप भद्दे फोड़ों या बालों की तरह लटक रहे थे। सफेद कागज में जो छत से चिपकाया हुआ था, फफोले से पड़ चुके थे, और वे फ़फोले अब फट चुके थे, और चीथड़ों की तरह लटक रहे थे। फर्श पर कपड़े, किताबें, कागजों के टुकड़े बिखरे पड़े थे। सारा कमरा ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे कि इसमें से कोई भयङ्कर तूफान आकर चुका हो।

छोटे से आदमी ने अपनी क़लम रख दी और लिखने वाली मेज़ पर झुक कर बड़ी घबराहट के साथ उसके किनारे पर अपनी उंगलियाँ बजाने लगा और एक ऊँची पतली आवाज में अपने आप गाने लगा :

ढोल बजा निर्भय अभियान
चलो सिपाही तान कमान
नव बालायें प्यार करें,
कसें तुझे आलिंगन में
उनके लाल अधर गालों पर,
छाप लगादे अंकन में।
यही अर्थ दर्शन, विज्ञान,
कला यही है—यही महान।

"मैं सोडा-वाटर पीना चाहता हूँ" फ़ोमा ने गहरी सांस भरते हुए कहा।

"ओह !" छोटे से व्यक्ति ने आश्चर्य प्रकट किया और कुर्सी उठा कर फ़ोमा के पलंग के किनारे बैठ गया। "शुभ-प्रभात मित्र ! सोडा-वाटर ! कोन्याक के साथ या उसके बिना ही ?"

"अच्छा हो, यदि साथ हो," फ़ोमा ने अपनी ओर बढ़ाये गये उसके गरम पतले हाथ को पकड़ छोटे से आदमी के चेहरे की ओर घूरते हुए कहा:

"यगोरोव्ना !" छोटे से आदमी ने दरवाजे की ओर मुड़ कर कहा और फिर फ़ोमा से बोला "तुम मुझे नहीं पहिचानते, फ़ोमा इग्नातेविच !"

"हाँ, तुम कुछ जाने बूझे से दिखते हो। ऐसा प्रतीत होता है कि हम पहिले कभी मिले है।"

"चार साल लगातार; परन्तु यह बहुत पहिले की बात है, यभोव !"

'हे भगवान् !" फ़ोमा ने बांह से सिर ऊँचा करते हुए आश्चर्य में कहा: "क्या सचमुच तुम्हीं हो ?"

'इस पर कभी कभी विश्वास नहीं करता हूँ, मित्र ! परन्तु तथ्य जैसी कठोर वस्तु से संदेह ऐसे पीछे फेंक दिये जाते हैं, जैसे रबड़ की गेंद लोहे से"

यभोव ने हास्यास्पद तरीके से अपने मुँह को घुमाया और अपनी छाती टटोलने लगा।

"अ···च्···छा !" फ़ोमा ने लम्बी आवाज से सांस भरा; "तुम कितने बुड्ढे दिखाई दे रहे हो ! तुम्हारी अब क्या उमर है ?"

"तीस"

"और दिखाई पचास के दे रहे हो—सूखे, पीले पड़ चुके हो। जीवन ने, दिखता है तुमसे बहुत दुर्व्यवहार किया है।"

फ़ोमा अपने स्कूल के साथी को, जो कभी बड़ा चंचल और प्रसन्नचित्त लड़का था, इस थकी, हारी हालत में और इस छोटी सी माँद में रहता देख बहुत दुःखी हुआ। उसने शोक के साथ अपनी आँख झपकाई और जैसे ही वह दुःखपूर्वक उसकी ओर देख रहा था, उसने यभोव की आँखों में व्यग्रतापूर्ण चमक और उसके चेहरे के कम्पन को देखा। यभोव सोडा वाटर की बोतल को खोलने में लगा हुआ था। उसने बोतल को अपने घुटनों में थामा हुआ था और कार्क को खींचने में सारी शक्ति लगा रहा था। फ़ोमा उसकी कार्क को निकालने की असमर्थता से विचलित हो उठा।

"जीवन ने तुम्हें बिलकुल निचोड़ डाला है।" उसने विचार प्रकट किया। "और, कभी तुम पढ़ने में अच्छे थे ?"

"यह लो, ! पीयो !" मेहनत से पीले पड़े हुए यभोव ने गिलास थाम कर कहा। फिर उसने अपना माथा पोंछा और फ़ोमा के बराबर में बैठ गया।

"विद्या के बारे में कुछ न कहो;" वह बोला "मेरे मित्र ! विद्या देवी मदिरा है, परन्तु यह कच्ची शराब की तरह है। यह इस्तेमाल के लिये ठीक नहीं। यह मनुष्य को सुखी नहीं करती, और जिसके पास यह है, उसके लिये निस्संदेह एक सिर दर्द है। जैसी कि इस समय मेरे और तुम्हारे लिये है। बात-बात में, मैं पूछता हूँ—कि तुमने इतना पीना क्यों शुरू किया है ?"

"और, क्या कुछ कर सकता हूँ ?" फ़ोमा ने तनिक हँसी के साथ कहा।

यफ़ोव ने अपनी आँखें मीचीं।

"तुम्हारी इस टिप्पणी को कल रात तुम्हारे ओठों से निकले बुद्धिमत्ता-पूर्ण वाक्यों की तुलना करते हुए मैं नतीजा निकालता हूँ कि जीवन तुम्हारे लिये भी अच्छा नहीं।"

फ़ोमा ने जोर से सुनाई देने वाली एक आह भरी और पलङ्ग से उठ खड़ा हुआ।

"जीवन ?" उसने बड़ी कटुता से कहा। "जीवन एक पागलखाना है। मैं हमेशा अकेला हूँ······अचम्भे में हूँ कि यह सब किसलिये है। मैं इस सब को थूक कर कहीं दूर चला जाना चाहता हूँ, जहाँ मुझे कोई भी तलाश न कर सके। सब चीजों से परे चला जाऊँ। मैं इसे सहन नहीं कर सकता।"

"बड़ी अजब बात है," यफ़ोव ने हाथ मलते हुए और सारे शरीर से मरोड़े खाते हुए कहा। "बड़ी अजब बात है, यदि यह सच है तो यह तथ्य प्रमाणित हो जाता है कि असंतोष की पवित्र-आत्मा अब व्यापारियों के शयनागारों में भी पहुंच चुकी है, और उन मृतात्माओं को तलाश कर रही है, जो चर्बी के सूपों में, चाय के समुद्रों में और नाना प्रकार की शराबों में डूब चुके हैं। मित्र ! मुझे अपनी कहानी छोटी २ टुकड़ियों में सुनाओ और मैं एक उपन्यास लिख दूँगा।"

"मुझे बताया गया है कि तुमने मेरे बारे में पहिले भी कुछ लिखा है।" फ़ोमा ने अपने बचपन के साथी के चेहरे को पुनः अध्ययन करते हुए और

अचम्भा करते हुए कि यह निर्बल मनुष्य क्या कुछ लिख सकता है, कहा।

"हाँ, मैंने लिखा है। क्या तुमने पढ़ा है?"

"नहीं। मुझे उसकी कापी नहीं मिली।"

"उन्होंने तुम्हें क्या बताया?"

"यही कि तुमने मुझ पर काफी तेज़ चोटें की हैं, काफ़ी गालियाँ दी हैं।"

"हें-हें, क्या उसके पढ़ने में तुम्हें दिलचस्पी नहीं।" यझोव ने फ़ोमा की ओर नजर गढ़ाते हुए कहा।

"ओह! मैं इसे पढ़ लूँगा," फ़ोमा ने जल्दी से, उसकी उपेक्षा से यझोव को लगी चोट को भांपते हुए कहा। "निस्संदेह मुझे इसमें, यदि यह मेरे बारे में लिखा हुआ है, तो दिलचस्पी है," उसने साधु-स्वभाव से मुस्कराते हुए कहा।

दोनों, पुराने स्कूल के साथियों, के आपस में मिलन होने के कारण, उसके हृदय में अनेक कोमल भावनायें जाग उठीं जिनका सम्बन्ध बचपन की स्मृतियों से था, जो उसके दिमाग में अनेक वर्षों से छोटे छोटे टिमटिमाते दियों के बीच थी।

यझोव मेज के पास गया जिस पर एक समवार उबल रहा था, और बिना कुछ बोले उसने उसमें से तारकोल जैसी चाय के दो प्याले भरे।

"आओ, थोड़ी सी चाय पीयो," वह बोला, "और मुझे सब बातें कहो"

"कहने के लिये कुछ नहीं है। मैं बिलकुल खाली जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मैं तो तुम से कुछ सुनना चाहता हूँ—तुमने मुझसे अधिक देखा है।"

अभी भी यझोव का शरीर मुड़ रहा था और उसका सिर एक तरफ से दूसरी तरफ हिल रहा था, वह अपने विचारों में खोया हुआ था। इस विचार के समय अकेला उसका चेहरा ही नहीं हिल रहा था; उसकी आँखों के पास झुर्रियाँ किरणों की तरह फैली हुई थीं, और उसकी आँखें भौंहों के नीचे गहरे गढ्ढे में थीं।

"यह सच है, मेरे मित्र ! मैंने जीवन में कुछ चीजें देखी हैं", उसने सिर हिलाते हुए कहा : "और मैं समझता हूँ कि मैं आवश्यकता से अधिक जानता हूँ। मनुष्य के लिये अधिक जानना भी उतना ही बुरा है जितना कि कम जानना। अच्छा, तो तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें अपने बारे में सुनाऊँ। मैंने अभी तक अपने बारे में किसी को कभी कुछ नहीं सुनाया, क्योंकि किसी ने मुझसे रत्ती भर भी दिलचस्पी नहीं ली। यदि कोई भी व्यक्ति हममें तनिक सी भी रुचि न ले तो इस संसार में जीना ही कठिन हो जाय।"

"मैं किसी और चीज की अपेक्षा तुम्हारे चेहरे से देख सकता हूँ कि तुमने बहुत कठिन समय देखा है", फ़ोमा ने यह जानकर कि इस मनुष्य को भी जीवन कठोर लगा है, किसी क़दर संतोष अनुभव करते हुए कहा।

यझोव अपनी चाय निगल गया और उसने समवार का गिलास जोर से तश्तरी पर रखा, अपनी टाँगें कुर्सी के किनारे तक खींच लीं और अपने घुटनों को बाँहों में भर कर उन पर ठोड़ी रख दी। इस आसन में इण्डिया-रबर के टुकड़े की तरह वह छोटा और लचकीला दिखाई देने लगा।

"विद्यार्थी सच्कोव जो कभी मेरा ट्यूटर रहा था, और अब डाक्टर है, और जो जबान मरोड़ने का बहुत अभ्यासी था, जब कभी मैं अपना पाठ अच्छी तरह सुना देता था, तो कहा करता : "यह बहुत अच्छी बात है, कोल्या ! तुम बहुत होशियार लड़के हो। हम जैसे गरीब आदमियों को, यदि हम औरों से आगे निकलना चाहते हैं, जिन्हें जीवन में पीछे के दरवाजे से प्रवेश करना है, बहुत मेहनत से पढ़ना चाहिये। रूस को ऐसे आदमियों की बहुत आवश्यकता है जो बुद्धिमान् और ईमानदार हों। यदि तुम ऐसे आदमी बन जाओगे तो अपने भाग्य के स्वामी और समाज के बहुमूल्य सदस्य बन जाओगे। हम जैसे लोग ही ऐसे हैं, जो किसी खास श्रेणी के नहीं और हम पर ही देश की आशायें लगी हुई हैं। यह हमारा ही कर्त्तव्य है कि हम अपने लोगों में प्रकाश और सच्चाई प्रगट करें, इत्यादि इत्यादि। मैंने उस दोगले पर यकीन किया। उसके बाद से लगभग बीस बरस गुजर चुके हैं। हम लोग जो किसी

विशेष श्रेणी के नहीं, अब बढ़ चुके हैं; परन्तु हमने अपनी बुद्धिमत्ता का कोई चिह्न नहीं दिखाया है और न अँधेरे में कोई प्रकाश ही लाये हैं। रूस अभी भी पुरानी शिकायत या बदमाशों की बहुतायत से कष्ट उठा रहा है, और हमारे जैसे लोग उनकी पंक्तियों को बढ़ाते हैं। मेरा पहले का ट्यूटर, मैं फिर दोहराता हूँ, चापलूस और नगण्य है। वह वही करता है जो उसे मेयर हुक्म देता है। और मैं? मैं समाज की सेवा में एक भाँड़ हूँ। मैंने इस छोटे से शहर में कुछ मशहूरी भी प्राप्त कर रक्खी हैं। मैं जब सड़क पर गुजरता हूँ, गाड़ीवान भी एक दूसरे को कोहनी मार कर कहते हैं: 'देखो! वह यभ्फोव जा रहा है—शैतान कहीं का! इसका भौंकना बड़ा भयङ्कर है।' यहाँ तक कि ऐसी नामवरी हासिल करने के लिये भी मेहनत करनी पड़ती है, उसे जीतना पड़ता है, मेरे मित्र!"

यभ्फोव का मुखमण्डल कठोर एवं निःशब्द हो गया। वह हँसा, जिसमें उसके ओठों के अलावा और कुछ नहीं हिला। उसका एक शब्द भी फ़ोमा की समझ में नहीं आया। परन्तु यह सोचकर कि उससे कुछ आशा की जाती है, उसने जो कुछ उसके दिमाग में आया, टिप्पणी की:

"तो तुम भी अपने बनाये लक्ष्य तक नहीं पहुंच सके?" उसने कहा।

"नहीं। मैं सोचा करता था कि मैं बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति बनूँगा, और मैं बन भी जाता!"

पत्रकार ने कुर्सी से उछल कर कमरे में ऊपर-नीचे, इधर-उधर लपकते हुए पतली आवाज में कहा:

"परन्तु इस सबके लिये यदि मनुष्य स्थिर रहना चाहता है, तो उसके पास विपुल साधन होने चाहिये। मेरे पास ये साधन थे···। मैं बुद्धिमान् था। मुझमें अनुकूलता की योग्यता थी। परन्तु मैंने अपने सारे साधन अपनी शिक्षा में लगा दिये, जिसका अब मुझे कोई लाभ नहीं। मैंने और मेरे दूसरे साथियों ने एक फंड बनाकर अपने आपको धोका दिया। हमारा विचार था कि हम भविष्य में उससे पैसा बना सकेंगे। मेरे सब काम ऐसे थे जिनके कारण मैं

निकम्मा हो गया, अब तुम कल्पना कर सकते हो ! छः साल तक मैं मन्द-बुद्धियों को अक्षर-ज्ञान करवाता रहा और उनके पापाओं व मामाओं के अनेकों अपमानों को निगलता रहा—सिर्फ इसलिये कि मैं अपने शरीर और आत्मा को अपनी पढ़ाई के लिये बनाये रक्खूँ। मैं अपनी चाय-रोटी कमाता रहा, परन्तु मुझे अपने जूते कमाने का समय ही नहीं रहा। और फिर मैंने दान देने वाली सोसाइटियों से कर्ज की प्रार्थनायें कीं···। ओह ! ये सार्वजनिक-हितकारी संस्थायें मनुष्य के शरीर में जीवन की रक्षा के लिये उसकी आत्मा का कितना हनन करती हैं। यदि ये केवल अनुभव कर सकें कि रोटी के लिये दिये गये प्रत्येक रूबल में उसकी आत्मा को मारने के लिये निन्यानवे प्रति शत विष होता है। इन संस्थाओं के लोग अपनी दान-शीलता के कारण अभिमान और संतोष से भले ही फूले न समायें ! परन्तु इस धरती तल पर कोई भी प्राणी इतना घृणित और जघन्य नहीं, जो ऐसे दान देता है। और कोई प्राणी उससे अधिक दुःखी नहीं, जो इस दान को स्वीकार करता है।"

यभ्कोव अभी भी पागल की तरह कमरे में तेजी से चल रहा था। फर्श पर फैले हुए कागज उसके पाँव के नीचे आकर फट रहे थे और इधर-उधर उड़ रहे थे। वह अपने दाँत किटकिटा रहा था। गर्दन हिला रहा था, और बाँहों को टूटे डैनों की तरह फड़फड़ा रहा था। इस समय फ़ोमा के हृदय में उसे निहारते हुए दो विरोधी विचार उठे : वह उस पर रहम भी खा रहा था और साथ ही उसके कष्टों का दृश्य देखकर उसे प्रसन्नता भी हो रही थी।

यभ्कोव की छाती से बिना तेल दी हुई चूल की चरचर के समान हल्का सा शब्द आया।

"लोगों की दया से विषाक्त में किसी बड़े व्यक्ति की कृपा की आशा विनष्ट करता—यह झुकाव उन सब गरीब लोगों में होता है, जो समस्त संसार में ऊँचा उठना चाहते हैं। मैं अधिक विनाश की ओर चल पड़ा। ओह ! तपेदिक से इतने लोग नहीं मरते जितने कि अपने गुणों को न पहिचान पाने

उसके जाने वाले दरवाजे को खोलते हो तो गन्द और सड़ांद की बदबू से हवा भर जाती है, जिनसे तुम सांस लेते हो । इन दुखदायी प्राणियों को ही मजबूत सिद्धांतों और अपने विश्वास में पक्के बताया जाता है । कोई आदमी यह कहने का ख्याल नहीं करता कि उनके यह विश्वास अपनी आत्मा की नग्नता को छिपाने के लिये सिर्फ पजामे मात्र हैं । 'संयम और शांति' के शब्द उनके माथे के निचले भाग पर चमकीले शब्दों में अङ्कित होते है । झूठे शब्द ! जरा उनके माथे को मजबूत हाथों से रगड़ो और तुम्हें असली शब्द दीख जायेंगे : 'क्षुद्रता और मूर्खता ।'

"मैं ऐसे कितने आदमियों से मिला हूँ !" यफ्रोव ने भय में गुस्से से कहा : "वे ऐसी दूकानों के समान हैं, जिनमें सब तरह की चीजें—जैसे तार-कोल, मिठाई, झींगुर का जहर और कपड़े की जगह फटे चिथड़े—ताजी, स्वास्थ्यपूर्ण और आवश्यक चीजों के अलावा सब कुछ मिलता है । तुम उनके पास दिल में दर्द लिये, अकेलेपन से थके हुए, उत्साही शब्द सुनने की प्यास लिये आते हो, और वे तुम्हें पुरानी किताबों से चुराये हुए अधपके विचार देते हैं, जो इतने जुगाली किये जा चुके होते हैं कि उनका रेशा-रेशा अलग हो चुका होता है, और ये घुटे घुटाये विचार इतने निरर्थक और महत्वशून्य होते हैं कि उनको समझाने के लिये बहुत से अन्य मोटे-मोटे रौब में डालने वाले शब्द कहने पड़ते हैं । मैं जब कभी किसी ऐसे आदमी से बातें करता हूँ, तो मन ही मन सोचता हूँ : यह लो, खूब मोटा-ताजा, पाला-पोसा, चारों तरफ लटकी हुई घण्टियों से सुसज्जित घोड़ा है, जिसका काम शहर से बाहर गन्द ढोना है, और इस गरीब बद-किस्मत जानवर को इसके अलावा किसी दूसरे काम में आनन्द ही नहीं आ सकता ।

"ये लोग भी निरर्थक है", फ़ोमा ने कहा ।

यफ्रोव उसके सामने आकर रुका और तिरस्कार से मुस्कराया ।

"ओह ! यह बात नहीं, वह निरर्थक नहीं", उसने कहा : "जीवन में उनका उद्देश्य यह होता है कि वे ऐसा उदाहरण पेश करें कि कैसा नहीं

उसके जाने वाले दरवाजे को खोलते हो तो गन्द और सड़ांद की बदबू से हवा भर जाती है, जिनसे तुम सांस लेते हो। इन दुखदायी प्राणियों को ही मजबूत सिद्धांतों और अपने विश्वास में पक्के बताया जाता है। कोई आदमी यह कहने का ख्याल नहीं करता कि उनके यह विश्वास अपनी आत्मा की नग्नता को छिपाने के लिये सिर्फ पजामे मात्र हैं। 'संयम और शांति' के शब्द उनके माथे के निचले भाग पर चमकीले शब्दों में अङ्कित होते हैं। झूँठे शब्द! ज़रा उनके माथे को मजबूत हाथों से रगड़ो और तुम्हें असली शब्द दीख जायेंगे: 'क्षुद्रता और मूर्खता।'

"मैं ऐसे कितने आदमियों से मिला हूँ!" यझोव ने भय में गुस्से से कहा: "वे ऐसी दूकानों के समान हैं, जिनमें सब तरह की चीजें—जैसे तार-कोल, मिठाई, झींगुर का ज़हर और कपड़े की जगह फटे चिथड़े—ताजी, स्वास्थ्यपूर्ण और आवश्यक चीजों के अलावा सब कुछ मिलता है। तुम उनके पास दिल में दर्द लिये, अकेलेपन से थके हुए, उत्साही शब्द सुनने की प्यास लिये आते हो, और वे तुम्हें पुरानी किताबों से चुराये हुए अधपके विचार देते हैं, जो इतने जुगाली किये जा चुके होते हैं कि उनका रेशा-रेशा अलग हो चुका होता है, और ये घुटे घुटाये विचार इतने निरर्थक और महत्वशून्य होते हैं कि उनको समझाने के लिये बहुत से अन्य मोटे-मोटे रौब में डालने वाले शब्द कहने पड़ते हैं। मैं जब कभी किसी ऐसे आदमी से बातें करता हूँ, तो मन ही मन सोचता हूँ: यह लो, खूब मोटा-ताजा, पाला-पोसा, चारों तरफ लटकी हुई घण्टियों से सुसज्जित घोड़ा है, जिसका काम शहर से बाहर गन्द ढोना है, और इस गरीब बद-किस्मत जानवर को इसके अलावा किसी दूसरे काम में आनन्द ही नहीं आ सकता।

"ये लोग भी निरर्थक है", फ़ोमा ने कहा।

यझोव उसके सामने आकर रुका और तिरस्कार से मुस्कराया।

"ओह! यह बात नहीं, वह निरर्थक नहीं", उसने कहा: "जीवन में उनका उद्देश्य यह होता है कि वे ऐसा उदाहरण पेश करें कि कैसा नहीं

होना चाहिये। जब तुम इस बारे में गम्भीरता से सोचते हो, तो इन लोगों का स्थान शरीर शास्त्र के अद्भुतालय में है, जहाँ सब प्रकार कुरूप, अप्राकृतिक, असम्बद्ध नमूने—जो स्वाभाविक, साधारण से भिन्न हैं, प्रदर्शित किये जाते हैं। जीवन में कोई वस्तु निरर्थक नहीं, मेरे मित्र ! यहाँ तक कि मेरा भी उसमें एक स्थान है। केवल मात्र निरर्थक लोग वही हैं जिन्होंने अपने मृत-हृदय के स्थान पर, आत्म-प्रेम के मवाद से भरे बहुत बड़े सड़े फोड़े को बढ़ा लिया है। परन्तु उनकी भी उपयोगिता है, जिन्हें लक्ष्य बना कर मैं अपनी तिल्ली को हवा लगा सकता हूँ।

सारे दिन भर सांझ तक यभ्फोव बकबास करता रहा, और उन लोगों पर गन्द उछालता रहा जिनसे वह घृणा करता था। फ़ोमा उसके द्वेष और हिंसापूर्ण आवेश से विषाक्त हो गया, और इस विपाक्तता से वह विरोधी भावना में बह गया।

परन्तु बाद में कई ऐसे भी अवसर आये, जब यभ्फोव में उसका विश्वास कम हो गया और एक दिन उसने साफ-साफ कह दिया :

"क्या तुम ये सब बातें उन लोगों के ही मुँह पर कह सकते हो ?"

"हाँ, जब कभी मुझे उचित मौका मिलता है, मैं कह देता हूँ—और प्रति रविवार को समाचार पत्रों में। क्या मैं पढ़कर सुनाऊँ कि मैं क्या लिखता हूँ ?"

फ़ोमा के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने कीलों से लटकते कुछ पर्चों को फाड़ा और फर्श पर चहलकदमी करते हुए पढ़ने लगा। वह ठीक एक छोटे से कुत्ते के पिल्ले के समान; जो अपनी जंजीर को नपुंसक-क्रोध में खींचता, घुर्राता, भौंकता रहता है, अपने दाँत निपोरता रहा। फ़ोमा की समझ में उसके शब्दों का अर्थ नहीं आ रहा था, परन्तु वह अपने मित्र की प्रमत्तता और धृष्टतापूर्ण साहसिकता, उसके कटु-परिहास, और प्रज्वलित कोप को भलीभाँति जानता था और उसका उसने ऐसा ही आनन्द लिया जैसा

"तुमने बहुत अच्छा किया !" जब कभी कोई मुहावरा उसकी समझ में आ जाता, तो वह चिल्लाता : "इस बार तुमने उन्हें ठीक बता दिया।"

यझोव ने जब व्यंग कसने शुरू किये तो कभी तो वे आदर में आवृत सुई से चुभीले लगते, और कभी अनावृत और साहसिक लगते, तथा उनमें प्रतिष्ठित नागरिकों एवं उसके परिचित व्यापारियों के नाम फ़ोमा के सामने बार-बार दुहराये जाने लगे।

यझोव फ़ोमा की स्वीकृति और उसकी आँखों में चमकती प्रसन्नता से प्रोत्साहित हो चुका था, और वह अधिक जोर के साथ चिल्लाता तथा भौंकता रहा, कभी थक जाता तो फिर से कूद कर फ़ोमा की ओर जाने के लिये ही सोफा पर गिर पड़ता।

"जो तुमने मेरे बारे में लिखा था, उसे पढ़कर सुनाओ', फ़ोमा चिल्लाया।

यझोव ने कागजों के ढेर में तलाश किया, फिर अपने मित्र के सामने जो अपनी टूटी-फूटी कुर्सी में घँसा हुआ उस पर मुस्करा रहा था—टाँगें फैला कर जम गया।

लेख, नदी के बेड़े पर हुई रात के नाच-रंग से शुरू हुआ था। ज्यों-ज्यों यझोव पढ़ता जा रहा था, फ़ोमा ने अनुभव किया कि कुछ शब्द उसे मच्छर की तरह काट रहे थे। उसने अपना चेहरा लटका लिया, उसका सिर ढुलक गया और वह चिढ़ गया। मच्छरों का काटना बढ़ता ही गया।

"क्या तुमने मोटे, भद्दे तरीके से यह नहीं लिखा ?" अन्त में वह नाराज और लज्जित होकर बोला : "लोगों की निन्दा कर तुम परमात्मा की कृपा नहीं खरीद सकते।"

"चुप रहो ! ठहरो !" यझोव अपना लेख पढ़ता हुआ भौंकने के स्वर में बोला।

जब अपने लेख में वह इस पर प्रकाश डाल चुका कि मद्यपान करने और लड़ने-झगड़ने में व्यापारियों का मुकाबला कोई दूसरा वर्ग नहीं कर

सकता, वह रुका—यह पूछने के लिये कि ऐसा क्यों है, और जवाब में उसने लिखा :

"मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रकार जंगली व्यसन और मद्यपान की ओर झुकाव संस्कृति के अभाव तथा शक्ति और अवकाश की अधिकता से होता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ लोगों को छोड़कर हमारे व्यापारी बहुत पुष्ट होते हैं, किन्तु उन्हें अपने को काम में लगाने के लिये बहुत कम साधन और अवसर हैं।"

"बस, यह ठीक कहा तुमने !" फ़ोमा ने मेज पर हाथ मारते हुए कहा : "इससे अधिक सच्ची बात कभी नहीं कही गई। मुझे ही देखो : मेरे अन्दर एक बैल जितनी शक्ति है और काम चिड़ियों जितना करता हूँ।"

"व्यापारी लोग अपनी शक्ति का कैसे उपयोग करें ? स्टाक ऐक्चेञ्ज में इसका बहुत कम अंश खतम होता है, और इसलिये वह अपनी पेशीय पूँजी की बहुत भारी राशि शराबखानों में खर्च करते हैं, और उन्हें इस बात का कोई भी ख्याल नहीं कि यही वे समाज की भलाई में खर्च कर सकते हैं। व्यापारी अभी आदिम युग से आगे नहीं बढ़ा और उसका जीवन क्या है—एक पिंजरा है, जिसमें उसका सबल स्वस्थ और प्रबल स्वभाव समाता नहीं। सांस्कृतिक दिलचस्पी न होने के कारण वह विकारों को अपनाता है। एक व्यापारी का व्यभिचार पिंजरे में बन्द पशु के क्रोध के समान है। निःसंदेह यह शोचनीय बात है, परन्तु यह कितनी अधिक भ्रष्ट हो जाती है जब कि यह पशु अपनी आंतरिक पाशविक शक्ति के साथ बुद्धि का भी उपयोग करता है, जो कि उसके उद्देश्य को सिद्ध करती है। आप निश्चय रख सकते हैं कि उस समय वह कम हिंसक नहीं होगा, परन्तु उसकी हिंसा के कार्य ऐतिहासिक घटनायें बन जायेंगी। परमात्मा उस समय हमें बचाये, क्योंकि वह जो कुछ भी करेगा शक्ति को अपने हाथ में लेने और अपनी श्रेणी द्वारा दूसरी श्रेणी पर अधिकार करने की इच्छा से करेगा, और इस अवसर पर वह अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये किसी भी बात में नहीं चूकेगा, न किसी को छोड़ेगा ही।"

"क्यों ? मैं ठीक हूँ ना ?" यभ्भोव ने अपने अख़बार के लेख को खतम करते हुए और उसे नीचे फेंकते हुए पूछा ।

"मैं इसका अन्तिम भाग नहीं समझ सका," फ़ोमा ने जवाब दिया, "परन्तु उसकी शक्ति के बारे में तुमने ठीक कहा है ।"

और, विश्वास के उबाल में फ़ोमा ने जीवन और लोगों के बारे में यभ्भोव को अपने विचार बतलाये, और उसने उस आत्मिक उलझन का भी जिक्र किया, जिसमें वह खुद पड़ा हुआ था । जब वह खतम कर चुका तो सोफ़ा के ऊपर गिर पड़ा और चुप हो गया ।

"हूँ," यभ्भोव गुनगुनाया । 'अच्छा, तुम यहाँ तक पहुँचे हुए हो । और यह बहुत अच्छी बात है । पुस्तकों के बारे में तुम्हारा क्या विचार है । क्या तुम पढ़ते रहते हो ।"

"नहीं, मैं उन्हें पसन्द नहीं करता । मैंने कभी कोई किताब नहीं पढ़ी ।"

"तुम उन्हें पसन्द इसलिये नहीं करते क्योंकि, तुमने उन्हें कभी पढ़ा नहीं ।"

"मैं उनसे डरता हूँ । मैंने देखा है कि, एक व्यक्ति पर, एक लड़की पर, जिसे मैं जानता हूँ, उन्होंने क्या किया है । पुस्तक पढ़ना उसके लिये शराब से भी बढ़कर था । और इसका क्या लाभ ? इनमें जो कुछ तुम पढ़ते हो सब बनावटी होता है । यदि वे मनोरंजक हों, तो मुझे कोई आक्षेप नहीं । परन्तु वह मनुष्य पागल है जो सोचता है कि पुस्तकें यह सिखा सकेंगी कि उसे कैसे रहना चाहिये । आखिरकार इन पुस्तकों को परमात्मा ने तो बनाया नहीं; मनुष्य ने ही तो लिखा है, और मनुष्य अपने लिये क्या नियम, और उदाहरण बना सकता है ?"

'और धर्म ग्रन्थों के बारे में क्या बात है ? उन्हें भी मनुष्यों ने ही बनाया है ।"

"परन्तु उन्हें तो ईश्वर के भेजे हुए ऋषियों ने लिखा है । अब वे ईश्वर के भेजे ऋषि भी नहीं रहे ।"

"ठीक, बिल्कुल ठीक उत्तर है। आजकल ईश्वर का भेजा ऋषि कोई नहीं है; आजकल जुदासों के अलावा और कोई नहीं, और जुदास* भी कितने निकम्मे रह गये हैं ?"

फ़ोमा को इस बात से प्रसन्नता हुई कि यभ्शोव उसकी बातों को ध्यान से सुनता रहा। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब वह प्रत्येक शब्द को तोल-तोल कर कह रहा था। अभी तक किसी ने उसके साथ ऐसा नहीं किया था, और उसके लिये यह इतना उत्साहवर्धक हुआ कि फ़ोमा ने अपने विचार अपने मित्र के सामने शब्दों का विचार किये बिना, स्वतन्त्रता और साहस से विश्वास-पूर्वक रखने शुरू किये। उसे यह निश्चय हो गया कि यभ्शोव उसे समझ लेगा; क्योंकि यभ्शोव उसे समझना चाहता था।

"तुम बड़े जिज्ञासु आदमी हो," कुछ दिनों बाद बातचीत में यभ्शोव ने उससे कहा। "शब्द तुम्हारे मुँह में कठिनता से आते हैं, परन्तु मैं देखता हूँ कि तुम्हारा हृदय शूरवीर और साहसी है। यदि तुम्हें जीवन के बारे में कुछ ज्ञान होता, तो तुम भी कुछ कहते, और मुझे यह निश्चय हो गया है कि अब तुम पूरी शक्ति से कहोगे।"

"शब्दों से कोई स्वतन्त्र नहीं बनता।" फ़ोमा ने एक आहपूर्वक जोर देते हुए कहा—"एक बार तुमने उन लोगों के बारे में कहा था, जो सर्वज्ञता का दावा करते हैं और सब कुछ कर सकते हैं। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ—उदाहरण के तौर पर मेरे धर्मपिता को ही लो। यदि हम उनके बारे में कुछ कर सकें—उन्हें दिखा सकें ! वे कितने बड़े धोखेबाज लोग हैं।"

"फ़ोमा ! मैं नहीं जानता कि तुम अपने दिल पर इतना बोझ लिये कैसे रह रहे हो," यभ्शोव ने सोचते हुए कहा।

"यह नाटे क़द का, जीवन से पिसा—यभ्शोव भी पीता था। उसका दिन ऐसे शुरू होता : प्रात नाश्ते के समय वह स्थानीय-समाचार पढना, फीचर

*जुदास=झूठा, विश्वासघाती, धोखेबाज व्यक्ति। इस्करीयत का एक विश्वासघाती मुखबिर; भेदिया—जिसने ईसा मसीह के साथ विश्वासघात किया था।

कहानी के लिये मसाले को तलाश करता हुआ वह उसी मेज पर लिखने लग जाता। फिर वह अखबार के दफ़्तर दौड़ जाता, जहाँ से वह शहर से बाहिर के अखबारों की कतरनें छांटता ताकि 'प्रान्तीय जीवन का दृश्य' तैयार कर सके। शुक्रवार के दिन वह अपनी 'रविवार का फ़ीचर' कहानी लिखता। इन सेवाओं के लिये उसे सौ रूबल मासिक मिलते थे। वह बड़ी तेजी से काम करता और अपने फ़ालतू समय में "परोपकारी संस्थाओं का निरीक्षण और अध्ययन करते" अर्थात सारी रात भर वह और फ़ोमा एक क्लब, रेस्तराँ और शराब खाने से दूसरी रेस्तराँ, क्लब और शराबखाने में जाते रहते और प्रत्येक में वह अपने लेखों के लिये मसाला इकट्ठा करता था, जिसे वह "सामाजिक सद्विवेक की झाड़ू" बताता था। सेंसर या दोष-वेचक को वह भयानक विचारों का परिचायक बताता था, और समाचार पत्र में अपने काम को "अपनी आत्मा की खेरीज विक्री" या "पवित्र संस्थाओं पर अपनी नाक गड़ाने का प्रयास" बताता था।

फ़ोमा के लिये यह समझना बड़ा कठिन था कि यझोव कब मखौल करता था और कब ईमानदारी से कहता था। प्रत्येक चीज के बारे में वह बड़ी भावना से कहता और बड़ी निर्दयता से निर्णय करता। फ़ोमा को उसकी यह बात पसन्द थी, परन्तु कभी कभी वह अपने तेज व्यंग-पूर्ण आक्षेपों और विचारों के बीच में अपने विचार बदल लेता, और अभी कुछ समय पहले जिस चीज के बारे में वह मखौल और निन्दा कर रहा होता उसका प्रतिवाद करने लग जाता। ऐसे मौकों पर फ़ोमा अनुभव करता कि इस मनुष्य के लिये कोई चीज ऐसी नहीं, जिसे वह वस्तुतः प्यार करता हो या उसमें इतनी गहरी हो कि उससे संचलित होकर वह सब कार्य करता हो। जब अपने बारे में बात आती तो यझोव की आवाज बिलकुल दूसरी होती, और अपने बारे में वह जितनी भावुकता से कहता, उतनी ही निर्दयता से दूसरों की निन्दा और भर्त्सना करता। फ़ोमा के प्रति भी उसका व्यवहार व्यवस्थित नहीं था। कभी वह उसे प्रोत्साहन देता और बड़े जोर से कहता:

"सबको जितना चाहो तोड़ फोड़ दो। याद रक्खो मनुष्य से बढ़ कर

कोई चीज नहीं। अपनी ऊँची से ऊँची आवाज में 'स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता' के लिये चिल्लाहट करो।"

और जब फ़ोमा उसके भाषणों से प्रज्जलित हो उठता और यह सोचने लगता कि उन लोगों का कैसे विनाश किया जाये जिन्होंने अपने वैयक्तिक लाभ के लिये दूसरों के जीवन को संकुचित और क्षीण बना रक्खा है तो यभोव फट पड़ता :

"छोड़ ! इसे भूल जा ! तू कुछ नहीं कर सकता ? तुम्हारे जैसों की किसी को जरूरत नहीं, तुम्हारे दिन—तुम बलवानों और बेवकूफों के दिन लद चुके हैं। जीवन में तुम्हारे लिये कोई स्थान नहीं।"

"कोई स्थान नहीं ?···झूठ है !" फ़ोमा उसकी असम्बद्धता से उत्तेजित होकर चिल्लाता।

"बहुत अच्छा, तू इस बारे में क्या कर सकता है ?"

"मैं तुम्हें मार डालूँगा—यह कर सकता हूँ !" फ़ोमा अपनी मुट्ठी भींचता हुआ जवाब में बोला।

"अरे ! भुसभरे, असभ्य, गंवार !" यभोव कन्धे हिलाते हुए कहता। "इसका क्या लाभ ? मैं तो खुद ही आधा मरा हुआ हूँ"—और फिर एक अचानक क्रोध और निराशा से कहता, "भाग्य ने मेरे साथ बहुत प्रतारणा की है ! मैं इन बारह वर्षों तक एक गुलाम की तरह क्यों मेहनत करता रहा ? इसीलिये क्योंकि पढ़ सकूँ। मुझे बारह साल तक जिमनाज़ियम और युनिवर्सिटी में पढ़ने और नीरस, मन्द, परस्पर विरोधी व्यर्थता को निगलने की क्या आवश्यकता थी, जिसकी जीवन में मुझे कोई आवश्यकता नहीं ? इसीलिये क्योंकि, मैं फीचर-लेखक बन सकूँ, और प्रति दिन जनता की प्रसन्नता के लिये कलाबाजियाँ दिखाता, और अपने मन को समझाता रहूँ कि जनता को इसकी जरूरत है, इससे उसे लाभ पहुँचेगा। मैंने अपनी आत्मा के सब पटाखों को तीन कोपेक फ़ी पटाखे की दर से छोड़ दिया है और अब मैं किस में विश्वास रखता हूँ ? किसी में नहीं। संसार के वर्तमान रूप में, जैसा मेरा विश्वास है, उसकी रत्ती

भर भी कीमत नहीं, और यह कि इसकी सब चीजों को तहस नहस करके जमीन में मिला देना होगा। मैं किस से प्यार करता हूँ ? अपने से। फिर भी मैं यह मानता हूँ कि मेरे प्रेम का लक्ष्य उसके योग्य नहीं है।"

उसकी आँखों में लगभग आँसू भर आते, और वह अपने गले और छाती को अपनी पतली पतली कमजोर उंगलियों में पकड़ने लगता। परन्तु कभी कभी ऐसे भी समय आते जबकि वह आशा की लहरों में बह जाता, और फिर दूसरी ही तर्ज में बोलता।

"ओह, नहीं, मेरा गीत अभी खतम नहीं हुआ।" वह कहता, "तुम अभी मुझसे बहुत सुनोगे ! जरा प्रतीक्षा करो। मैं अखबार का काम छोड़ कर गम्भीर काम में लग जाऊंगा। मैं एक छोटी सी पुस्तक लिखने की सोच रहा हूँ। उसका नाम रखा है—'हंस-गीत'। यह एक मुमुर्षुओं का गीत है, और मेरी:यह पुस्तक इस समाज की मृत्यु शय्या के पास—जो अपनी कमजोरियों से दूषित और अपराधित हो चुकी है, धूपगन्ध के समान होगी।

यझोव की बातों और उसके भाषणों को आपस में सावधानी से तुलना करते हुए फ़ोमा इस परिणाम पर पहुंचा कि उसका मित्र भी वैसी ही गड़बड़ में था जिसमें कि वह स्वयं था। परन्तु फ़ोमा उसके भाषणों को सुन सुनकर शब्दों का प्रयोग सीख गया, और कभी कभी यह बात देखकर प्रसन्न होता था कि वह भी अपनी बात को स्पष्ट तौर पर अभिव्यक्त कर सकता है।

कई अवसरों पर वह यझोव के यहाँ ऐसे लोगों से मिला था, जो प्रतीत होता था कि सब कुछ जानते और समझते थे, और सब बातों में झूठ और धोखा देखते थे। वह उन्हें ध्यान से देखता और चुपचाप सुनता। वह उनकी धृष्टता और साहसिकता को पसन्द करता, परन्तु अपने प्रति उनके बड़प्पन के व्यवहार को देख व्याकुल हो जाता और घृणा करने लगता। वह इस तथ्य को देख विस्मित हो गया कि सड़कों या शराब खानों की अपेक्षा वे लोग यझोव के कमरे में कहीं अधिक सरल और बुद्धिमान दिखलाई देते थे। उनके कमरे के शब्द, कमरे के विषय और कमरे की जो भाव भंगिमा होतीं, वे सब उस कमरे को छोड़ते ही साधारण मनुष्य के रूप में बदल जातीं। कभी कभी जब

वे यभोव के कमरे में इकट्ठे होते, तो एक बड़ी आग की तरह जल उठते, जिनके बीच यभोव बहुत प्रकाशमान होकर जलता । परन्तु इस आग से फ़ोमा की अन्धकारपूर्ण आत्मा को बहुत कम प्रकाश मिलता ।

"हम एक पिकनिक पर जा रहे हैं", एक दिन यभोव ने उससे कहा : "हमारे कम्पोज़ीटरों ने एक सहकारी सोसाइटी बनाई है, और वे हमारे समाचार पत्रों में ठेके पर काम कर रहे हैं । इस अवसर के उपलक्ष में वे एक 'मौज उड़ाओ' दिवस मनाने चले हैं, और मुझे उसमें निमन्त्रित किया है (मैं भी उनमें से एक हूँ, जिन्होंने एक सोसयटी बनाने की सलाह दी है) । तुम आना चाहते हो ? शायद तुमसे उनका मनोरंजन ही होगा ।"

"शायद मैं भी आ जाऊँ", फ़ोमा ने कहा । वह काटे न कटने वाले अपने फालतू समय को कैसे भी व्यतीत कर सकता था । इससे उसके लिये कोई फ़र्क नहीं पड़ता था ।

उसी साँझ फ़ोमा और यभोव कुछ पीले चेहरे वाले लोगों के बीच बैठे हुए थे, जो शहर से बाहर एक जंगल के किनारे पर एकत्रित हुए थे । कम्पोजीटरों की संख्या बारह थी । वे भलीभाँति अच्छे कपड़ों में थे, और यभोव से समानता का व्यवहार कर रहे थे । इस बात को देखकर फ़ोमा विस्मित और नाराज हो गया, क्योंकि उसकी नज़र में यभोव उनसे बड़ा ओहदेदार था, और वे सब उसके नीचे थे । उन्होंने फ़ोमा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, यद्यपि यभोव के परिचय करवाने पर उन्होंने उससे हाथ मिलाया और मिलने की प्रसन्नता प्रकट की । फ़ोमा हेज़ल की एक झाड़ी के नीचे थोड़ी दूर पर लेटा देखता रहा और बहुत कुछ अनमेल और अप्रसन्न सा दीखता था । यभोव जानबूझ कर हटा-हटा सा दीखता था और उसने भी औरों की अपेक्षा अधिक ध्यान नहीं दिया । फ़ोमा ने देखा कि यह छोटा सा फीचर-लेखक हरचन्द कोशिश कर रहा था कि वह उन मनुष्यों के बीच समान स्वीकार किया जाये । उसने उन्हें आग सुलगाने में मदद की, उनके लिये बीयर की बोतलें खोलीं, जोर-जोर से हँसा और गालियाँ दीं, और सब प्रकार से

ऐसी कोशिशें कीं कि वह उनके जैसा ही समझा जावे। उसके कपड़े भी आम अवसरों की अपेक्षा अधिक सादा थे।

"भाइयो! तुम्हारे साथ मुझे बड़ा आनन्द आ रहा है", उसने डींग मारते हुए कहा : "मैं भी कोई बड़ा परिन्दा नहीं—एक मामूली, रात के चौकीदार, नौन कमीशन्ड आफीसर मात्वेई यझोव का लड़का हूँ।"

"इसे यह कहने की क्या जरूरत थी", फ़ोमा को विस्मय हुआ: "उन्हें क्या परवाह कि यह किसका लड़का है···। मनुष्य की कीमत उसके बाप पर नहीं, बल्कि उसकी बुद्धि पर निर्भर करती है।"

सूर्य अस्त हो रहा था। आसमान में आग जल रही थी, जो बादलों को लाल खूनी रंग में रंग रही थी। मूकता और सील जंगल से आ रही थी, जिसके किनारे पर काली-काली मनुष्य की आकृतियाँ शोर करती हुई हिल रही थीं। एक पतला मध्यम-आकार का मनुष्य, जिसने चौड़े किनारों वाला तिनकों का हैट पहिन रक्खा था; ऐकोर्डियन* बजा रहा था; जब कि दूसरा जिसकी काली मूछें थीं और जिसने अपने काले बालों पर टोपी पहिन रक्खी थी, कोमल स्वर में गा रहा था। उनमें से दो–एक छड़ी के दोनों छोरों को विपरीत दिशा में खींचकर अपनी शक्ति की परीक्षा कर रहे थे। कुछ लोग बीयर और भोजन से भरी छाबड़ी के ऊपर झुक रहे थे। एक ऊँचा, सफेद दाढ़ी वाला व्यक्ति, गाढ़े सफेद बादल के बीच खड़ा था और आग में लकड़ियाँ डाल रहा था। सीली लकड़ियाँ चटक रही थीं और आग पकड़ने पर सिसकार मार रही थीं। ऐकोर्डियन बजाने वाला एक आनन्दी राग बजा रहा था, और गवैया फाल्सेटो स्वर में गा रहा था।

तीन नौजवान लड़के छोटी सी घाटी के किनारे लेटे हुए थे, और यझोव उनके सामने खड़ा ऊँची आवाज में कह रहा था :

"तुम श्रम की पवित्र पताका को अपने हाथों से उठा कर ले जा रहे हो। मैं भी इसी सेना का एक साधारण सिपाही हूँ, हम सब महामहिम प्रेस

---

*ऐकोर्डियन = एक प्रकार का बाजा।

के सेवक हैं, और इसलिये हमें परस्पर बहुत गहरे और दृढ़ मित्र होना चाहिये।"

फ़ोमा ने अपना ध्यान अपने मित्र से हटा कर पास में होने वाले एक वार्तालाप की ओर किया। दो व्यक्ति आपस में बात कर रहे थे। उनमें से एक ऊँचा, क्षयी और मामूली कपड़े पहने हुए था और चेहरे से नाराज दीखता था। दूसरा नौजवान था जिसके बाल और दाढ़ी सफेद थी।

"यदि तुम मुझसे पूछो", बड़ा आदमी खांसता हुआ कह रहा था: "यह मूर्खता है। हम जैसे लोग कैसे विवाह कर सकते है? बच्चे जरूर होंगे, किन्तु उनकी निगरानी कौन करेगा? पत्नी को कपड़े चाहिये, और कौन जानता है कि वह कैसी निकले?"

"मेरी पत्नी अच्छी है", नवयुवक ने लजाते हुए कहा।

"हो सकता है कि ऐसी ही हो। कन्या होना एक बात है, पत्नी बनना दूसरी। परन्तु बात यह नहीं। बात तो यह है कि तुम उसका गुजारा कैसे चलाओगे। तुम्हें तब तक काम करना पड़ेगा जब तक कि तुम्हारी उँगलियों की हड्डियाँ घिस न जाँय, और उसे भी (पत्नी को) थका मारोगे। ओह, नहीं। शादी हम लोगों के लिये नहीं, साथी! जैसे कि हम अपनी कमाई से परिवार संभाल सकते हैं। मुझे ही देखो, सिर्फ चार ही बरस पहिले तो मेरी शादी हुई और अब मेरा खातमा भी हो चुका है।"

उसे खाँसी उठी—वह बहुत देर तक खाँसता रहा, खाँसी के अन्त में एक सीटी सी बजती और जब उसका दौरा खतम हो गया तो वह अपने साथी की ओर मुड़कर बोला।

"छोड़ो इसे,······इससे कुछ हासिल नहीं होगा······", उसने हाँफते हुए कहा।

नौजवान ने अप्रसन्नता से अपना सिर नीचे कर लिया और फ़ोमा ने दिल में सोचा: "वृद्ध मनुष्य सच कहता है।"

इस प्रकार उपेक्षित होने के कारण उसके दिल को चोट लग रही

थी, परन्तु फिर भी शीशे के धब्बेदार चेहरे वाले इन मनुष्यों का वह आदर कर रहा था, क्योंकि वे उसकी चापलूसी नहीं करते थे। वे गम्भीरतापूर्वक कुछ कुछ अपने काम के बारे में बहुत से अपरिचित शब्दों में बात कर रहे थे। उनमें से न तो कोई उसकी कृपा चाहता था और न ही उस पर अपने को थोपता था जैसा कि उसके शराबखानों वाले साथी। और उसे इस बात से प्रसन्नता थी।

"ये लोग कितने अभिमानी हैं", फ़ोमा मन ही मन हँसा।

"आओ, निकोलाई मात्वेईविच", किसी ने भर्त्सनापूर्ण आवाज में कहा : "तुम अपने चारों ओर देखी हुई बातों पर ही किसी बात को तोलना चाहते हो, न कि किताबों में लिखे अनुसार।"

"बहुत अच्छा मित्रो ! बहुत अच्छा, आपने अपने साथियों के अनुभव से क्या सीखा है ?"

फ़ोमा ने मुड़कर यभ्रोव की ओर देखा जो एक भड़कता हुआ भाषण देते हुए अपने हैट को हवा में हिला रहा था। परन्तु इसी समय किसी ने कहा :

"गस्पादीन* गर्देयेव ! क्या आप अधिक नजदीक नहीं आयेंगे ?"

एक गोल-मोल लड़का जिसने मजदूरों का ब्लाउज और ऊँचे जूते पहन रक्खे थे, उसके सामने खड़ा था और प्रसन्नतापूर्वक हँस रहा था। फ़ोमा ने इस मोटी नाक और गोल चेहरे को पसन्द किया तथा उत्तर में हँसा।

"बहुत प्रसन्नता से" उसने कहा : "परन्तु क्या समय नहीं हुआ है कि हम कोन्याक के नजदीक आयें ? मैंने बस मौके के लिये—लगभग दस बोतलें खरीद ली थीं।"

"ओह...हो ! दीखता है, एक व्यापारी ! मैं तुम्हारा संदेश साथियों को दे देता हूँ।"

---

*गस्पादीन = श्रीमान्।

लड़का बहुत देर तक तथा उच्च स्वर में इस मखौल पर हँसा। फ़ोमा उनके साथ सम्मिलित हो गया और उसे गरमाव आ गया, जो शायद लड़के से था या आग से था।

धीरे-धीरे सूर्यास्त भी मुरझा गया। ऐसा दीखता था जैसे पश्चिम में एक विशाल जामनी पर्दा गिरा दिया गया हो, जिसमें तारों के झिलमिल करते रात्रि के प्रकाश की अगम्य गहराई दिखाई दे रही थी। सुदूर शहर की ठोम कालिमा के ऊपर एक अदृश्य हाथ ने दीपक बखेर दिये थे, परन्तु यहाँ वन प्रांतर की कालिमा का कोई अन्त नहीं था। चन्द्रमा अभी आकाश में ऊपर नहीं आया था और सब मैदान एक उष्ण छाया में आवृत थे।

सब लोग आग के चारों तरफ एक बड़े घेरे में बैठ गये। फ़ोमा यझोव के बराबर आग की ओर पीठ करके बैठ गया, ताकि वह अग्नि से प्रकाशित प्रसन्न चेहरों को देख सके। मदिरा पान से हल्के हृदय, जिन्हें अभी नशा नहीं हुआ था, आपस में हँसे, मखौलें करने लगे, गीतों के टप्पे गाने लगे, कोन्याक पीने लगे और साथ ही रोटी, खीरा और सासेज* खाने लगे। फ़ोमा को प्रत्येक चीज में विशेष स्वाद आ रहा था और सबके साथ आमोद-प्रमोद में उसका दिल और बढ़ गया, तथा वह अनुभव करने लगा कि वह उन लोगों से कोई ऐसी बात कहे जो उन लोगों के लिये मदद की हो, और वे उसे चाहने लगें। यझोव जो उसके बराबर में ही बैठा था, लगातार इधर-उधर छटपटाता रहा, अपने कन्धों से उसे धक्के देता रहा और कुछ अस्पष्ट गुनगुनाता हुआ सिर हिलाता रहा।

गोलमोल व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा : "साथियो! आओ, विद्यार्थियों का गीत गायें। शुरू करो : एक, दो··· ।"

अधर लहर सा जीवन अपना
है लहरों की तरह तैरता······

---

*सासेज = मांस कोमा, जो नमक, कालीमिर्च इत्यादि के साथ आंतों में भर कर रखा जाता है।

किसी ने बास-ध्वनि* में आवाज पकड़ी :

नित नित बहता जायरे,
हमारा जीवन बहता है······

"साथियो !" यभ्कोव ने अपने पाँव पर लड़खड़ाते हुए और मदिरा का प्याला हाथ में थामे हुए कहा। वह डगमगाया और सहारे के लिये उसने फ़ोमा का सिर थामा। गाने का तांता टूट गया और सबकी नजरें उधर हो गईं।

"श्रमियो !" उसने कहा : "मुझे आज्ञा हो तो मैं कुछ हृदय के अनुभवपूर्ण शब्द कहूँ। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि मैं आज आपके बीच हूँ। मुझे संतोष है कि मैं आपके साथ हूँ, क्योंकि आप श्रम के मनुष्य हैं, मनुष्य जिनके सुख के अधिकार को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, यद्यपि अभी तक इसे अस्वीकार किया जाता है। एक अकेले और जीवन से दुःखी व्यक्ति के लिये यह कितना अच्छा और कितना स्वास्थ्य-प्रद है कि वह ऐसे ईमानदार मनुष्यों के उदात्त समुदाय में हो।"

यभ्कोव की आवाज लड़खड़ाई और उसका सिर हिला। फ़ोमा के हाथ पर एक बूँद गिरी और उसने अपने मित्र के हिलते चेहरे की ओर ऊपर देखा : "मैं अकेला नहीं हूँ", यभ्कोव ने सारे शरीर से काँपते हुए कहा : "हममें ऐसे बहुत हैं जो मेरी तरह हैं, और जो भाग्य द्वारा पीछा किया जाने से बिलकुल टूट चुके हैं। श्रमजीवियो ! हम तुमसे कम भाग्यशाली हैं, क्योंकि हम शरीर और आत्मा में निर्बल पड़ चुके हैं, परन्तु हम तुमसे इस बात में बलवान् हैं कि हम विद्या और ज्ञान से सुसज्जित हैं—जिसका हम कोई उपयोग नहीं कर सकते। हममें से सब बड़ी प्रसन्नता से तुम्हारे साथ आयेंगे और अपना सब कुछ तुम्हें दे देंगे, ताकि तुम्हारा जीवन सुखी हो सके। हमारे पास करने के लिये और कुछ नहीं। तुम्हारे बिना हम त्रिशंकु की तरह हवा में लटके हुए हैं; हमारें बिना तुम अन्धकार में हो। साथियो ! हम एक दूसरे के लिये बने हैं।"

---

*बास ध्वनि = एक प्रकार की आवाज।

"यह इन लोगों से क्या चाहता है", फ़ोमा को विस्मय हुआ। वह कम्पोजीटरों के चेहरों की ओर निहारता रहा और उसने देखा कि वे भी विस्मित, घबराये और थके हुए से लगते थे।

"मेरे मित्रों ! भविष्य आपका है।" यभ्फ़ोव ने अनिश्चित् भाव से सिर हिलाते हुए कहा, जैसे कि वह उनका भविष्य देने से इन्कार कर रहा हो और अपनी इच्छा के विरुद्ध उनकी शक्ति को मान रहा हो। "सच्चे ईमानदार श्रमजीवियों का भविष्य है। एक नये तर्ज की सभ्यता-निर्माण का कार्य तुम्हारे कन्धों पर है। मैं, एक तुच्छ सिपाही का लड़का तन-मन से तुम्हारे साथ हूँ, और मैं आपके भविष्य के लिये मदिरापान का प्रस्ताव करता हूँ ! हुर्रा !"

अपने ओठों से मदिरा का प्याला लगा कर यभ्फ़ोव जोर से जमीन पर बैठ गया। कम्पोजीटरों ने उसके टूटे नारे को पकड़ लिया, जिससे हवा एक चिल्लाहट से भर गई, जिसने आस-पास के पेड़ों के पत्तों को हिला दिया।

"अब एक गीत हो !" गोल-मोल व्यक्ति ने फिर कहा।

"हाँ, गीत !" दो–तीन स्वीकृति की आवाजें हुईं। बहुत गरमागरम बहस हुई कि क्या गाया जाये। इस बकवास को सुनता हुआ, यभ्फ़ोव अपने सिर के दूसरी तरफ हिलता रहा ताकि हर एक को अच्छी तरह देख सके।

"साथियो !" वह अचानक चिल्लाकर बोला : "मैं उत्तर चाहता हूँ ! आपके स्वागत का दो शब्दों में उत्तर होना चाहिये।"

और फिर, यद्यपि एकदम नहीं, सब लोग चुप हो गये और कुछ लोग विस्मय से, दूसरे अपनी मुस्कराहट को छिपाते हुए और कुछ लोग अपने अस्पष्ट चेहरों से उसकी ओर घूरने लगे। वह फिर खड़ा हुआ और आवेश में बोलने लगा :

"यहाँ हम दो ही हैं, जिन्हें जीवन ने अस्वीकार कर दिया है : हमारे अथिति और मैं। हम दोनों एक ही चीज चाहते हैं : इस अनुभव का विचार और प्रसन्नता कि हमारी आवश्यकता है। साथियो ! यह बड़ा क़द्दावर और

निकोलाई मात्वेइच ! हमारे अतिथि का अपमान न करें", किसी ने भारी असंतुष्ट आवाज में आक्षेप किया।

"यह व्यर्थ की बात है।" गोल-मटोल व्यक्ति ने फ़ोमा को आग की तरफ निमंत्रित करते हुए कहा : "कोई नाराज़गी की बात क्यों कही जाय ?"

"हम यहाँ आराम और मज़ा करने आये हैं"' किसी ने ऊँची आवाज से निश्चित् रूप से कहा।

"भोले-भाले लोगो", यभोव ने बनावटी तौर से हँसते हुए कहा : "सीधे-सादे भोले लोगो ! तुम्हें उस पर अफसोस है ? तुम्हें पता है, वह कौन है ? वह उन लोगों में से है जो तुम्हारा खून चूसते हैं।"

"बस, बहुत हो लिया, निकोलाई मात्वेइच !" लोग चिल्लाये, और यभोव की बिल्कुल उपेक्षा करते हुए वे अपनी बातचीत में लग गये। फ़ोमा को अपने मित्र द्वारा कही बात पर बड़ा दु:ख हुआ। वह तनिक भी नाराज नहीं हुआ। उसने देखा कि जो लोग उसकी रक्षा में आये थे वे फीचर-लेखक को जानबूझ कर भिड़क रहे थे, और उसने देखा कि यदि यभोव ने यह बात देखी तो उसका दिल दु.खेगा। इस प्रकार उसका ध्यान दूसरी तरफ खींचने के लिये उसने उसकी पसलियों में उङ्गलियाँ चुभोईं और प्रसन्नतापूर्वक बोला :

"आओ. गाली देने वाले ! आओ, कुछ मदिरापान करें ? अब घर जाने का भी समय हो लिया हे ?"

"घर ? जिस व्यक्ति का मनुष्यों के बीच स्थान नहीं, उसका घर कहाँ ? साथियो !" वह फिर चिल्लाया।

परन्तु उसकी चिल्लाहट सब लोगों की बातचीत में डूब गई और किसी ने जवाब नहीं दिया। यह सोचकर उसने सिर झुका लिया, और फ़ोमा से बोला :

"चलो घर चलें।"

"अच्छा, चलें······मेरा दिल तो ठहरने को कर रहा है। ये बहुत दिलचस्प लोग हैं, परमात्मा की क़सम ! बहुत भले शैतान हैं।"

"मैं देर तक नहीं ठहर सकता ; मुझे ठण्ड लग रही है ।"

फ़ोमा उठा, उसने टोपी उठाई और कम्पोजीटरों को झुक कर प्रणाम किया ।

"सज्जनो ! इस भोजन के लिये धन्यवाद ! नमस्कार", उसने आनन्द के साथ कहा ।

"थोड़ा सा ठहरियें । आप कहाँ जा रहे हैं ? एक गीत और हो···क्यों।"

"नहीं, मुझे जाना है । अपने मित्र को अकेला छोड़ना ठीक नहीं । ···साथ जरूरी है···आप हमारे बगैर मौज करें ।"

"ओह ! नहीं ! जरा और रुकते तो अच्छा रहता ।" गोल-मटोल व्यक्ति ने सांस भरते हुए कहा : "उसे अकेले को आपके बगैरं भी छोड़ आयेंगे ।"

"आप जरूर ठहरिये", क्षयी ने हल्की आवाज में कहा : "हम उसे शहर के किनारे तक छोड़ देंगे, उसे गाड़ी में डाल देंगे और वापिस आ जायेंगे ।"

फ़ोमा ठहरना चाहता था, परन्तु साथ ही वह डरता भी था । यझोव पाँवों पर लड़खड़ाता हुआ खड़ा हो गया ।

"आ···ओ", फ़ोमा को बांह से पकड़ते हुए वह बोला : "ये सब जायें जहन्नुम में !"

"नमस्कार, सज्जनो ! मैं जा रहा हूँ", फ़ोमा बोला औरउन के शोक-सूचक तथा स्नेहपूर्ण शब्द उसका दूर तक पीछा करते रहे ।

"ह···ह···ह··· !" लगभग बीस कदम जाकर यझोव हँसा । "वे हम पर जाते हुए आँसू ढलका रहे हैं । परन्तु, वस्तुतः प्रसन्न हैं कि मैं चला आया हूँ । मैं उनके रास्ते में रुकावट था—मैं उन्हें जंगली बनने से रोक रहा था ।"

"यह सच है कि तुम उनके रास्ते में रुकावट थे", फ़ोमा ने कहा : "तुम्हें भाषण देने की क्या जरूरत थी ? वे यहाँ हँसने-खेलने आये थे, न कि तुम्हारा भाषण सुनने । तुमने उन्हें थका दिया था ।"

"चुप रह, तू कुछ नहीं समझता !" यभोव ने कठोरता से कहा : "शायद समझता हो कि मैं शराब के नशे में हूँ ? मेरा शरीर नशे में है, परन्तु मेरी आत्मा ठीक है। यह हमेशा गम्भीर और सब चीजों को अनुभव करती है। ओह, इस संसार में कितनी दुष्टता, क्षुद्रता और मूर्खता भरी पड़ी है ! और ये मूर्ख अभाग्यशाली लोग !"

यभोव रुक गया और अपने दोनों हाथों में सिर पकड़ कर टांगों पर झूमने लगा।

ये लोग तो बिल्कुल औरों जैसे नहीं !" फ़ोमा ने धीरे से कहा : "ये नम्र हैं। बिल्कुल सभ्य हैं। इनकी सम्मतियाँ भी ठीक हैं। ये जानते हैं कि क्या कह रहे हैं। बिल्कुल सीदे-साधे श्रमजीवी।"

उनके पीछे अन्धकार से एक गीत उठा, जो सम्मिलित रूप से गाया जा रहा था। पहले यह लड़खड़ाती आवाज में आया, फिर ऊँचा हुआ और बाद में खाली खेतों के ऊपर रात की स्वच्छ वायु में एक शक्तिशाली तरंग के रूप में फैल गया।

"हे परमात्मा !" यभोव ने शोक संतप्त हो धीरे से सांस भरा : "हमारी आत्मा के पास लगाव के लिये रह क्या गया है ? प्रेम, मित्रता, भ्रातृ-भाव, शुद्ध और पवित्र श्रम के लिये इसकी प्यास को कौन बुझा सकता है ?"

"सीधे-सादे लोग", फ़ोमा ने धीरे से विचारपूर्वक कहा। वह अपने विचारों में इतना अधिक डूबा हुआ था कि अपने साथी की तरफ उसका ध्यान नहीं रहा। "यदि तुम इन्हें ध्यान से देखो, तो ये बुरे नहीं। ये थोड़े बहुत ······अजीब से हैं। मूझिक, मजदूर······पटिली सरसरी नजर से ये हांफते, नाक से घर्घर करते, परिश्रमी, धीरे २ चलते, मारवाड़ी घोड़े से अधिक कुछ नहीं दीखते··· ।"

"ये लोग हमारा सम्पूर्ण जीवन अपनी पीठ पर उठा कर ले जाते हैं", यभोव ने अधीरता से कहा : "और, ये लोग मोटी खोपड़ी वाले, दब्बू घोड़े

की तरह मेहनत करते रहते है। इनका दब्बूपन ही इनकी दुर्भाग्य है—अभिशाप है।"

कुछ समय तक वह लड़खड़ाता चुपचाप चलता रहा, और फिर अचानक रुंधती हुई आवाज से हवा में हाथ हिलाता हुआ, कविता गाने लगा :

छल चुका जीवन मुझे, गम्भीर मेरी दुख व्यथाएं।

"यह मेरे लिये ही लिखा गया था, मित्र !" उसने अपना सिर दुःख-पूर्वक हिलाते हुए तथा रुक कर कहा : "बाकी क्या है ? मैं भूल गया"""एह् !"

कामनाएं मर चुकीं जो, अब न जी पायें अरे वे ॥

"भई ! तुम मुझ से भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम—तुम मूर्ख हो।"

"यह रींट बहाना बन्द कर", फ़ोमा ने चिढ़ते हुए कहा : "जरा उन्हें गाते हुए सुनो।"

"मैं औरों के गीत को नहीं सुनना चाहता।" यझोव ने कहा : "मेरे अपने गीत हैं", और वह एक लम्बा रुदन करने लगा :

कामनाएं मर चुकीं जो, अब न जी पायें अरे वे।
अनगनित वे स्वप्न मेरे............

वह रिरियाने लगा और स्त्री की तरह विलाप करने लगा। फ़ोमा इससे शोकार्त और दुःखी हो गया, और बोला :

"बन्द कर, आगे बढ़", उसने अपने मित्र के कन्धों को खींचते हुए कहा : "भई ! तुम बहुत निर्बल हो।"

यझोव ने अपना सिर पकड़ा, अपने को सीधा किया और फिर बहुत प्रयत्न के साथ अपना शोकार्त रुदन करने लगा :

"अनगनित वे स्वप्न मेरे,
अब तंग उनकी काठियाँ, बाँधे कफन आलाप से।
दुःख भरे मैं गीत गाता, विकल हो परिताप से।"

"हे परमात्मा !" फोमा ने निराश होकर सांस लिया।

सुदूर के अन्धकार और नीरवता से मजदूरों के गाने की आवाज आ

रही थी। किसी ने उस गीत की टेक को सीटी में ताल दी और यह ऊँची, पतली सीटी बलिष्ठ ध्वनियों की तरंगों की चोटी पर बह निकली। फ़ोमा ने पीछे मुड़कर देखा कि काली दीवार खड़ी थी, जिस पर आग की लपटें खिलवाड़ कर रही थीं, और लोगों की धुँधली आकृतियाँ आग के चारों ओर चल रही थीं। वन एक विशाल वक्ष के समान और आग उसमें फटे घाव की तरह दिखाई दे रही थी। अन्धकार के धुँधलके में ढके लोग बच्चों के समान छोटे छोटे दिखाई दे रहे थे, और वे भी आग की लपटों से प्रकाशित आग की तरह दिखाई दे रहे थे तथा वे अपनी सबल ध्वनियों में गाते हुए अपनी बाँहें हिला रहे थे।

यभ़ोव जो फ़ोमा के बराबर खड़ा था, सिसकती आवाज में फिर चिल्लाया :

गा चुका हूँ गीत अपना, अन्त धुन वीणा बजाती।
आह प्रभु ! भव-दुख-पीड़ित आत्मा मम काँप जाती॥
आत्मा को शांति दे प्रभु ! आत्मा को शांति दे···
अनगनित वे स्वप्न मेरे·········

फ़ोमा उसके निराशापूर्ण रुदन से भड़क उठा। छोटे से फीचर-लेखक ने मृगी के बीमार की तरह एक चिल्लाहट की, और जमीन पर मुँह के बल गिर पड़ा, जहां वह बीमार बच्चे की तरह चुपचाप दीनतापूर्ण विलाप करने लगा।

"निकोलाई !" फ़ोमा ने उसे कन्धों से पकड़ते हुए कहा : "इसे बन्द करो। क्या मामला है ? तुम्हें लज्जा नहीं आती ?"

परन्तु उसे कोई लज्जा नहीं थी। वह पानी से निकला, मछली के समान जमीन पर फैल गया और जब फ़ोमा ने उसे उसके पाँवों पर खड़ा किया, तो उसने फ़ोमा को अपनी पतली बाँहों में भर लिया और रोने लगा :

"आओ, आओ !" फ़ोमा ने दाँत पीसते हुए कहा : "प्यारे साथी बहुत हो लिया, अब जरा शांत रहो।"

मनुष्य के लिये इतने दुःखदायी जीवन से नाराज तथा अपने मित्र के प्रति क्रोध से भरा हुआ फ़ोमा उधर को मुड़ा जिधर अन्धकार में शहर के दीपक टिमटिमा रहे थे; और अपनी कटुता के उद्वेग में वह अपनी फटी आवाज में गरजा :

"ओ, पिशाचो ! दुष्टो ! तुम्हारा सत्यानाश हो !"

११.

"ल्यूबा" एक दिन स्टाक ऐक्सचेञ्ज से लौटते हुए मायाकिन ने कहा: "आज सायंकाल अपने विवाह-प्रार्थी के स्वागत की तैयारियाँ करो। मेज खूब सजाकर रखना। चाँदी के सब पुराने बरतनों और फूलदानों को भी बाहर निकाल लेना, मेज सीधी उसकी नाक पर बजे। वह हमारे बहुमूल्य सामान को भी देख सके।"

ल्यूबा खिड़की के पास बैठी अपने पिता के जुर्राबों को रफू कर रही थी, उसका सिर काम पर झुका हुआ था।

"यह सब दिखावा किसलिये पिताजी?" उसने चिढ़ते हुए अस्वीकृति में कहा।

"स्वाद के लिये जैसे चटनी और सिरका। और, क्योंकि ऐसा ही होना चाहिये। कन्या घोड़े की तरह नहीं; उसे साज-शृङ्गार के बिना कोई नहीं खरीदेगा।"

ल्यूबा ने अपने सिर को जरा झटका दिया, अपना काम छोड़ दिया, और एक क्रोधपूर्ण लज्जा के साथ अपने पिता की ओर निहारने लगी, और— जुर्राब को फिर उठाकर अपना सिर पहले से भी अधिक लटका लिया। वृद्ध पुरुष आगे-पीछे चलता रहा, शून्य आकाश में देखता रहा और बड़ी तेजी से अपनी दाढ़ी नोंचता रहा, जैसे कि वह किसी कठिन समस्या पर गहरा विचार कर रहा हो। उसकी लड़की जानती थी कि यदि वह कुछ कहेगी, तो वह उस पर ध्यान नहीं देगा और अपने शब्दों से हुए अपमान की भी परवाह

नहीं करेगा। पति के बारे में ल्यूबा के विचार शृङ्गारपूर्ण भावुक थे कि वह एक मित्र की भाँति सुसंस्कृत होगा, उसके साथ उत्तम पुस्तकें पढ़ेगा और उसकी अस्पष्ट कामनाओं को समझने में सहायक होगा। ल्यूबा के ये सब स्वप्न उसे स्मोलिन के साथ विवाह सम्बन्धी पिता के अटल निश्चिय से नष्ट हो गये। इससे उसकी आत्मा में एक कटुतापूर्ण निक्षेप बैठ गया। वह अपने को व्यापारी श्रेणी की साधारण लड़कियों से बहुत श्रेष्ठ समझती थी, जो कपड़ों के अलावा और कुछ नहीं सोचतीं और उन पुरुषों से शादी कर लेती हैं जिनके साथ माँ-बाप ने सम्बन्ध तय कर दिया—जो नौजवानों की भावनाओं का कोई ख्याल नहीं करते। और, अब उसे भी विवाह करना था, सिर्फ इसलिये क्योंकि उमर हो गई थी, तथा उसके पिता को एक दामाद की जरूरत थी, जो उसका कारोबार संभाल सके। यह स्पष्ट था कि उसका पिता पति को आकर्षित करने में उसके रंग-रूप को अपर्याप्त समझता था और इसलिये वह सोने-चाँदी की सजावटों से उसे बढ़ाना चाहता था। घबराहट में उसकी उंगली में सुई चुभी और वह टूट गई, परन्तु उसने एक आह तक नहीं की, क्योंकि वह जानती थी कि उसका कोई भी कथन उसके पिता के हृदय तक नहीं पहुंच सकता।

वृद्ध पुरुष इधर-उधर चलता रहा, कभी वह दबी आवाज में कोई धर्म-ग्रन्थ का मन्त्र पढ़ता, कभी अपनी लड़की को शिक्षा देता कि विवाह-प्रार्थी की उपस्थिति में कैसे व्यवहार किया जाता है। अचानक उसने उंगलियों पर गिनती की, भौंह चढ़ाई, और फिर हँसा :

"हूँ,······परमात्मा मेरा न्याय करे, और वह मुझे प्रेम की भिक्षा और अपवित्र चपलूसी से बचाये। हूँ···ह···हूँ" अपनी माँ के पन्ना और पुखराजों को पहन लो, ल्यूबा !"

"ओह, काफी हो लिया, पिताजी !" बड़े दुःख से वह फूट पड़ी। "मुझे कृपया अकेला छोड़ दीजिये।"

"अब इन चालबाजियों की जरूरत नहीं ! जो कह रहा हूँ, वह करो।"

और वह फिर अपने हिसाब में लग गया, अपनी हरी आँखों को उङ्गलियों पर गिनता हुआ सिकोड़ने लगा।

"पैंतीस प्रतिशत, धोखेबाज,···हम पर अपना प्रकाश डालो··· ।"

"पिताजी", ल्यूबा ने भयपूर्वक कहा।

"हाँ ?"

"क्या वह···आप उसे पसन्द करते हो ?"

"कौन ?"

"स्मोलिन।"

"स्मोलिन ? वह बहुत तेज है। उसके कन्धों पर अच्छा सिर है। अच्छा, अब मैं जा रहा हूँ। कपड़े-लत्ते अच्छे पहन लेना, ल्यूबा !"

जब वह चला गया, ल्यूबा ने अपना काम रख दिया और कुर्सी के पीछे आँख बन्द करके झुक गई। उसके हाथों के जोड़ सफेद पड़ गये और उसकी उङ्गलियाँ मजबूती से भिंच गईं। अपने अपमान की कटुता से दब कर और भविष्य के डर से वह निःशब्द भाव से प्रार्थना करने लगी :

"प्यारे परमात्मा ! पवित्र प्रभु और रक्षक···वह सज्जन हो···प्यारे प्रभु, उसे सज्जन और कोमल बनाना···ज़रा सोचो, एक अज्ञात मनुष्य आ रहा है और तुम्हारी तरफ जम्हाई ले रहा है···उसे बरसों, बरसों तक अपना बनालो ! कितना भयङ्कर है ! कितना लज्जापूर्ण है ! हे परमात्मा, प्यारे परमात्मा, यदि कोई ऐसा होता जिससे मैं बात कर सकती। मैं बिल्कुल अकेली हूँ; यदि आज तारास यहाँ होता··· ।"

तारास का ख्याल आने पर वह और भी अधिक अनुभव करने लगी कि उसके साथ बुरा किया जा रहा है, और अपने प्रति दया भाव से भर गई। उसने तारास को एक लम्बा भावनापूर्ण पत्र लिखा था, जिसमें उसने बताया था कि वह उससे बहुत प्यार करती है और उसने उसे अपनी सब आशाओं का आधार बना रखा है; उसने प्रार्थना की थी कि जितनी जल्दी हो सके वह आये और पिता जी से मिले। उसने जीवन का बड़ा सुन्दर चित्र खींचा था जबकि वह साथ रहेंगे, उसे विश्वास दिलाया था कि उसका पिता बह

समझदार है, जो सब बातें समझ जायेगा, जो यद्यपि वृद्ध और अकेला है तथा जिसमें जीवन का आश्चर्यजनक प्रेम है। उसने अपने वृद्ध पिता के व्यवहार की भी शिकायत की।

दो सप्ताह तक उत्सुकता से वह पत्र की प्रतीक्षा करती रही, और अब उसके मिलने पर प्रसन्नता और निराशा के उन्माद में रोती रही। उत्तर शुष्क, सुन्दर और संक्षिप्त था। तारास ने उसे सूचित किया था कि एक महीने के अन्दर वह अपने कारोबार के लिये वोल्गा पर आयेगा और यदि उसके पिता को कोई आपत्ति नहीं तो उससे भी मिलेगा। इस पत्र में उत्साह नहीं था। इस पर वह रोई, उसकी तह की और तोड़-मरोड़ दिया, परन्तु कागज के सीलने से उसका संदेश नरम न पड़ा। चिट्ठी. करारे कागज की सतह, जो बड़े, मोटे व पक्के हाथ से लिखे अक्षरों से ढकी हुई थी, उसे एक आकृति सी प्रतीत हुई जो उसकी ओर अविश्वास से नाक-भौंह सिकोड़ रही थी—वह चेहरा उसके पिता जैसा ही पतला, तेज और झुर्रीदार लगता था।

लड़के की चिट्ठी ने मायाकिन पर दूसरा ही प्रभाव पैदा किया। तारास के चिट्ठी लिखने की खबर पाकर वह उत्तेजित हो उठा और एक विशेष प्रकार की, ओठों को ऐंठती हुई, हंसी के साथ वह तेजी से लड़की के पास आया :

"लाओ, चिट्ठी देना", वह बोला : "मुझे दिखाओ। ही...ही...ही ! जरा देखें तो कैसा आदमी है। मेरी ऐनक कहां है ? 'प्यारी बहन' हूँ ...हूँ...हूँ।"

वृद्ध पुरुष ने खामोशी से अपने पुत्र का संदेश पढ़ा। जब वह पढ़ चुका तो उसने चिट्ठी को मेज पर रख दिया और कमरे की ओर चल पड़ा, आश्चर्य से उसकी भौंहें ऊपर को खिच गयीं। फिर उसने उसे दूसरी बार पढ़ा और उसके बाद मेज के पास विचार-मुद्रा में खड़ा उसे बजाता रहा।

"बुरी नहीं", अन्त में उसने उच्चारण किया : "बहुत ठोस और अच्छी चिट्ठी है। कोई अनावश्यक शब्द नहीं। शायद सर्दी से वह सख्त पड़ गया है। वहां सर्दी भी भयङ्कर होती है। अच्छा, आये ; हम देखेंगे। बड़ी अजब बात

है, हूँ। जैसा कि डेविड के ग्रन्थ में कहा है : 'जब तूने मेरा शत्रु वापिस कर दिया और' याद नहीं आता कि इसके बाद क्या है, कुछ-कुछ ऐसा : "अन्त में मेरे शुत्रु के हथियार निर्बल पड़ गये और शोर-शराबे में उसकी स्मृति नष्ट हो गई।' अच्छा मैं और वह आपस में बिना शोर के बात करेंगे।"

वृद्ध पुरुष ने कुछ गर्व से मुस्कराते हुए शान्त भाव से बात करने की कोशिश की, परन्तु यह एक असफल मुस्कराहट थी ; उसकी झुर्रियाँ उत्तेजना से काँप रही थीं और उसकी आँखें अजीब तरीके से चमक रही थीं।

"ल्यूवा ! उसे एक और चिट्ठी लिखो। उससे कहो कि वह बिना किसी भय के यहाँ आये।"

ल्यूबा ने उसे दूसरा पत्र लिखा, जो पहले की अपेक्षा छोटा और संकोच-पूर्ण था। और अब वह फिर उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी और कल्पना करने लगी कि उसका रहस्यमय भाई कैसा होगा ? पहले वह उसे बहुत आदर और भक्ति के भाव से देखती थी जैसा कि भक्त लोग सन्तों और धर्म-गुरुओं का आदर करते हैं। अब वह उसके विचार से डर गई, क्योंकि बहुत कष्टों के दाम पर और देश निष्कासन में अपनी जवानी गुजारने की कीमत पर उसने मनुष्यों को परखने का अधिकार खरीदा था—और निश्चित् रूप से वह उससे कहेगा :

"क्या तुम अपनी स्वतन्त्र इच्छा से और अपने प्रेम के कारण इस पुरुष से शादी करना चाहती हो ?' एक के बाद दूसरा मलिन विचार उसके दिमाग में उठने लगा, जिससे वह गड़बड़ा गई और व्याकुल हो उठी। निराशा और किंकर्त्तव्यविमूढ़ता में बड़ी कठिनाई से वह अपने आंसू रोक पा रही थी। भले ही वह अर्ध-चेतन थी, किन्तु फिर भी अपने पिता की आज्ञाओं का अक्षरशः पालन कर रही थी। उसने मेज को चाँदी के बर्तनों से सजा दिया, भूरे रंग की रेशमी पोशाक पहनी, और शीशे के सामने बैठकर एक बहुत बड़ी मरकत-मणि को अपने कानों में पेच से कस दिया, जो किसी जमाने में रव्न्याज़* ग्रुभिन्स्की के पारवारिक आभूषणों में से थी, और जो धरोहर के कर्ज की रक़म चुकता न होने के कारण अन्य बहुमूल्य

*खन्याज़ =राजकुमार।

रत्नों के साथ मायाकिन के हाथ पड़ गई थीं।

जब दर्पण में उसने रेशमी परिधान से कसे हुए अपने विशाल उन्नत उरोजों को देखा और देखा अपने व्याकुल मुखमण्डल पर लालिमा लिये हुए गोल २ अधरों को, जो कि उभरे हुए अरुण कपोलों से कहीं अधिक लाल थे, उसे प्रतीत हुआ कि वह सुन्दर है और किसी भी पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखती है। वे हरे मरकत-मणि उसके कानों में निरर्थक थे, और उसकी रुचि के विपरीत, उनसे उसके गालों पर एक पीली झलक पड़ रही थी। उसने मरकत-मणि को उतार कर छोटे लाल पहन लिये और विस्मय करने लगी कि स्मोलिन कैसा होगा।

अपनी आँखों के चारों तरह के धब्बों से अप्रसन्न होकर उन्हें छिपाने के लिये वह पाउडर लगाने लगी, और अभी भी स्त्री होने के दुर्भाग्य पर तथा स्मोलिन के विषय में सोच रही थी और अपनी आचारहीनता के कारण अपने को कोस रही थी। जब धब्बे छिप गये तो उसने देखा कि पाउडर के कारण उसकी आँखों की चमक चली गई है। उसने उसे रगड़ कर साफ कर दिया। शीशे में एक नज़र करने से उसका विश्वास हो गया कि वह बहुत सुन्दर है, जिसमें तरुण देवदार के वृक्ष के समान दृढ़ व स्वस्थ सुन्दरता है। इस आत्म-विश्वास से उसका भय नष्ट हो गया और डाइनिंग रूम में अपने मूल्य को समझने वाली सम्पन्न और विवाह योग्य तरुण स्त्री के रूप में उसने प्रवेश किया।

उसका पिता और स्मोलिन उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

ल्यूबा क्षण भर अपनी आँखों को सुन्दरतापूर्वक घुमाती और अभिमान-पूर्वक अपने ओठों को मरोड़ती हुई रुकी। स्मोलिन उठा, उससे मिलने के लिये गया और झुका। ल्यूबा को उसका झुकना पसन्द आया और उसका कोट पसन्द आया, जो उसके शरीर पर बिल्कुल ठीक बैठता था। उसमें बहुत कम परिवर्तन आया था; उसके बाल पहले जैसे ही लाल और बारीक कटे हुए थे, तथा उसके चेहरे पर पहले जैसे ही धब्बे थे, परन्तु उसके सुन्दर गल-मुच्छे थे और आँखें पहले से अधिक सुन्दर दिखाई देती थीं।

"एक अच्छा नमूना है न, क्यों ?" मायाकिन ने स्मोलिन को दिखाते हुए, अपनी लड़की से कहा ।

नवयुवक ने उसके हाथों को दबाया और मुस्कराया ।

"मुझे आशा है कि आप अपने स्कूल के साथी को नहीं भूली होंगी।" उसने भरी गुरु-ध्वनि में कहा ।

"तुम दोनों बाद में बातें कर सकते हो," वृद्ध मनुष्य ने अपनी लड़की की तरफ देखते हुए कहा । "ल्यूबा ! तुम्हारी आज्ञा हो तो हम दोनों अपनी थोड़ी सी बातचीत, जो अभी चल रही थी, खतम कर लें । और, इस प्रकार आफ्रिकन दमित्रेइविच, जैसा कि आप कह रहे थे······"

"मैं क्षमा चाहता हूँ, ल्यूबोव याकोव्लेव्ना," स्मोलिन ने ल्यूबा से विजयी आवाज में कहा ।

"ओह, इसका विचार न करें," ल्यूबा ने कहा ।

"वह बड़ा विनम्र है," ल्यूबा ने सोचा । और मेज और बराबर की अलमारी के बीच आते जाते समय वह उसकी बातों को ध्यान से सुनती रही। उसकी आवाज कोमल और आत्मविश्वासपूर्ण थी ।

"जैसा कि मैं पहले कह रहा था, मैं चार साल से 'विदेशी मार्केट में रूसी चमड़े' के ऊपर सावधानी से अध्ययन करता रहा हूँ । तीस साल हुए हमारा चमड़ा सर्वोत्तम समझा जाता था, और अब उसकी माँग दामों के साथ साथ घटती जा रही है । यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि पर्याप्त पूँजी और पूर्ण ज्ञान के अभाव में चमड़े के हमारे छोटे उत्पादक अच्छे माल की आधुनिक माँग को पूरा करने तथा उसके उत्पादन का मूल्य कम करने में असमर्थ हैं । अभी वे जो माल पैदा कर रहे हैं, वह बहुत घटिया और मँहगा है । उन्होंने रूस की प्रतिष्ठा को बहुत धक्का पहुंचाया है, क्योंकि वह पहले बढ़िया चमड़ा पैदा करने वाला था । सब से बढ़ कर चमड़े के अपने छोटे उत्पादकों के पास पूँजी और टेक्नीकल ज्ञान की कमी है, और इस कारण वे इस व्यवसाय के आधुनिकतम साधनों

से वंचित हैं, इसलिये वे देश के लिये अभिशाप और व्यापार के लिये हानि-कारक हैं।"

स्मोलिन के शब्दों की नपी तुली सादगी में ल्यूबा ने अपने पिता के अभिमान को भांपा जिससे वह घृणा करती थी।

"हूँ !" वृद्ध पुरुष ने एक आँख से अपने अतिथि को और दूसरी से लड़की को देखते हुए कहा। "दूसरे शब्दों में तुम एक व्हेल जैसा कारखाना बनाना चाहते हो, जो सब छोटी छोटी मछलियों को निगल जायेगा ?"

"ओह, नहीं," स्मोलिन ने वृद्ध मनुष्य के आक्षेप का निराकरण करते हुए मृदु भाव से कहा। "मेरा उद्देश्य है कि विदेशी मार्केट में रूसी चमड़े के पुराने दाम और उसकी कदर बढ़ जाये। इस प्रकार पैदावार के आधुनिक तरीकों के ज्ञान से सशस्त्र होकर में एक आदर्श फैक्टरी बनाना चाहता हूँ, और आदर्श माल पैदा करना चाहता हूँ। देश की प्रतिष्ठा······"

"और आपने क्या कहा ? इस काम के लिये कितने पैसे की जरूरत है ?" मायाकिन ने सोचते हुए पूछा।

"लगभग तीन लाख।"

"पिताजी मेरे लिये इतना नहीं देंगे।" ल्यूबा ने सोचा।

"मेरे कारखाने में तैयार चमड़े के बूट, बैग, काठियाँ, साज सामान और पेटियाँ इत्यादि सब बनाये जायेंगे—"

"और आप कल्पना क्या करते हैं कि सूद कितना मिल जायगा ?" वृद्ध मनुष्य ने कहा।

"मैं कल्पना नहीं कर रहा, मैंने रूसी अवस्थाओं के अनुसार बिल्कुल ठीक हिसाब लगाया है" स्मोलिन ने जोर देते हुए कहा। "एक व्यवसायी का दिमाग़ उतना ही कठोर और क्रियात्मक होना चाहिये जितना कि यंत्र अन्वेषक का। यदि वह किसी बड़े तरीके से कोई बड़ा काम करना चाहता है, तो उसे यन्त्र के छोटे से छोटे पहिये का भी ख्याल रखना होगा। मैं चाहता हूँ कि आप

मेरे तैयार किये हुए नोट्स पढ़ें, जो रूस में पशु पालन और मांस की मार्केट के अध्ययन के आधार पर लिखे हैं।"

"अभी इन्हें देखें !" मायाकिन ने थोड़ी सी हँसी के साथ कहा। "नोट काफी होंगे। यह बहुत दिलचस्प है। कोई भी देख सकता है कि योरुप में तुमने अपना समय नष्ट नहीं किया। और आओ, अब पुराने बढ़िया रूसी तरीके से कुछ खा पी लें।"

"और, आपके क्या हाल हैं, ल्यूबोव याकोव्लेव्ना ?" स्मोलिन ने काँटा छुरी पकड़ते हुए कहा।

"कोई अच्छा हाल नहीं," मायाकिन ने अपनी लड़की की तरफ से कहा। "वह यहाँ सारे घर का काम करती है—सारा घर इसी के भरोसे चल रहा है, इसलिये इसे आमोद-प्रमोद के लिये समय ही नहीं मिल पाता।"

"न समय है, न साधन।" ल्यूबा ने कहा। "मैं व्यापारियों के दिये गये बाल-नृत्यों और पार्टियों को सहन नहीं कर सकती।"

"और थियेटर ?" स्मोलिन ने पूछा।

"मैं थियेटर भी प्रायः नहीं जाती, क्योंकि कोई साथी नहीं है।"

"थियेटर !" मायाकिन ने घरघराते हुए कहा। "शायद कृपाकर आप मुझे बतायेंगे कि थिएटरों में यह क्या नया फैशन चला है कि व्यापारियों को मूर्ख समुदाय के रूप में दिखलाया जाता है। यह मनोरंजक जरूर है; परन्तु है सचाई से बिल्कुल परे। टाउन कौन्सिल में सबका अग्रसर व्यापारी है, व्यापारी ही कारोबार के मुखिया हैं। इन थियेटरों के मालिक भी व्यापारी है फिर भी वे व्यापारियों को मूर्ख कहने का साहस करते हैं ? उनका व्यापारियों का ड्रामा जीवन में सच नहीं। ओह मैं समझ सकता हूँ, यदि आप कोई ऐतिहासिक दृश्य दिखायें, जैसे—'ज़ार का जीवन' जिसमें नाच गाना हो, अथवा 'हेमलेट' अथवा 'जादूगरनी' अथवा 'वसीलिसा'। ऐसे खेलों में जीवन कीसचाई की जरूरत नहीं, क्योंकि ये अतीत की चीजें हैं और इनका हमसे विशेष सम्बन्ध नहीं; सच्चा हो या झूठा, उन्हें तो कुछ न कुछ दिखाना है। परन्तु यदि आप हमारे

समय की कोई चीज दिखलाते हैं, तो कृपया सच कहिये और मनुष्य को उसके सच्चे प्रकाश में दिखलाइये।"

स्मोलिन नम्रतापूर्वक हँसता रहा जैसे कि वह वृद्ध मनुष्य की बातें सुन रहा हो। और उसने ल्यूबा की तरफ एक नज़र फेंकी, जो एक चैलेंज के समान थी कि वह अपने पिता की बात का उत्तर दे।

"आखिरकार, पिताजी!" वह कुछ व्यग्रता मे बोली, "आपको स्वीकार करना पड़ेगा कि अधिकांश व्यापारी और उनके परिवार गंवार और अशिक्षित हैं।"

"हाँ," स्मोलिन ने स्वीकृतिपूर्वक सिर हिलाते हुए कहा. "अभाग्यवश यह सच है। परन्तु आप किसी सोसायटी की सदस्य नहीं? इस शहर में सब प्रकार की सोसायटियाँ हैं।"

"हाँ, मैं जानती हूँ," ल्यूबा ने आह भरते हुए कहा, परन्तु किसी कदर मैं इन सबसे बाहर हूँ।"

"यह घर," उसके बाप ने बीच में पड़ते हुए कहा। "जरा देखिये हमने यह निरर्थक साज समान इकट्ठा कर लिया है। इस सबको गिनकर साफ़ सुथरा रखना पड़ता है।"

एक आत्म सन्तुष्टि के भाव से उसने चाँदी के बर्तनों से ऊपर तक लदी मेज की ओर इशारा किया, और चीनी के बर्तनों की अलमारी को दिखाया, जो मंहगे बर्तनों के बोझ से दबी जा रही थी, और किसी दुकान की खिड़की के प्रदर्शन का स्मरण करा रही थी। जैसे ही स्मोलिन ने इन सब चीजों की ओर देखा, उसके ओठों पर व्यंग की एक हँसी दौड़ गई। वह ल्यूबा की ओर मुड़ा, और उसकी नज़र ने ल्यूबा को जता दिया कि वह उसके प्रति मैत्री भाव और सहानुभूति रखता है। "धन्यवाद परमात्मा!" उसने अपने मन में कहा और उसके हृदय में एक भीरुतापूर्ण आनन्द का भाव दौड़ गया।

भारी धातु के बने झाड़ फानूस के चमकीले प्रकाश में कट-ग्लास और अधिक चमक रहा था और कमरा अधिक प्रकाशमान दिख रहा था।

"मैं अपने इस शहर को बहुत चाहता हूँ," स्मोलिन ने ल्यूबा की ओर मुस्कराते हुए कहा। "यहाँ सब सजीव और चित्रमय है। यहाँ के वायु-मण्डल में एक प्रकार का प्रोत्साहन और उत्तेजना है, जो काम करने की इच्छा बढ़ाते हैं। इसकी यह चित्रमयता ही मनुष्य को जीवनपर्यंत रहने और कठिन परिश्रम करने तथा गम्भीरतापूर्वक कार्य करने की प्रेरणा करती है। यह एक बौद्धिक शहर है। जरा देखिये हमारे यहाँ कैसा गम्भीर समाचार पत्र निकलता है। प्रसंगवश मैं बताना चाहता हूँ कि हम इसे खरीदने की सोच रहे हैं।"

"हम कौन ?" मायाकिन ने पूछा।

"उर्वन्त्सोव, श्रूकिन और मैं"

"बहुत बढ़िया !" वृद्ध मनुष्य ने धड़ाके से मेज पर हाथ मारते हुए कहा। "समय आ गया है कि हम उनके मुँह बन्द कर दें—यह होना तो इससे पहले ही चाहिये था। ख़ास तौर से वह यभ्झोव। उसके दाँत बहुत पैने हैं। उसके दाँतों को रेतना पड़ेगा, और अच्छी तरह रेतना होगा।"

स्मोलिन ने एक बार फिर ल्यूबा की ओर मुस्करा कर देखा और एक बार फिर उसके हृदय में आनन्द उमड़ आया।

"यदि मैं गलती नहीं करता तो आफ्रिकन दमित्रेइविच उनका मुँह बन्द करने के लिये, जैसा कि आप कहते हैं, अखबार नहीं ख़रीदना चाहते हैं," ल्यूबा ने तनिक लज्जा के साथ कहा। बाहरी तौर से वह अपने पिता से कह रही थी, और आन्तरिक हृदय से वह अपने प्रणयी को सम्बोधित कर रही थी।

"और, किस बात के लिये ये खरीदेंगे" वृद्ध मनुष्य ने कंधे हिलाते हुए कहा—"इन अखबारों का परिणाम शोर शराबा और गड़बड़ ही होती है। ओह, निःसन्देह यदि इनमें कारोबारी और व्यापारी लोग अपने बारे में लिखते तो हम···"

"समाचार पत्र का प्रकाशन," स्मोलिन ने सूत्र रूप से बीच में पड़ते हुए कहा "यदि केवल व्यापारिक दृष्टि से ही सोचा जाय तो यह लाभदायक व्यव-

साय है। परन्तु पत्र का एक और बहुत महत्वपूर्ण उद्देश्य है, अर्थात् व्यक्ति के अधिकारों तथा व्यापार और व्यवसाय के हितों की रक्षा ;"

"यही मैं कह रहा था—यदि व्यापारी ही पत्र को अपने हाथ में ले लें, तो इसका बहुत अच्छा उपयोग किया जा सकता है।"

"परन्तु, पिताजी !...." ल्यूबा ने शुरू किया। उसने स्मोलिन की उपस्थिति में अपनी बात कहने की प्रेरणा अनुभव की। वह उसे दिखाना चाहती थी कि वह उसे समझ गई है और यह कि वह व्यापारियों की साधारण लड़कियों जैसी नहीं जो कपड़ों और नाच रंग में ही दिलचस्पी रखती हैं। वह स्मोलिन को चाहने लगी। अब से पहले वह किसी व्यापारी से नहीं मिली थी, जो देर तक विदेश रह कर आया हो, जो प्रभावी बात कह सकता हो, जिसके चाल-ढाल और व्यवहार बहुत अच्छे हों, जो इतने अच्छे कपड़े पहनता हो और जो उसके पिता से, जो शहर में सबसे बुद्धिमान था, इस प्रकार गर्व से बात करता हो, जैसे कि किसी बच्चे से बात कर रहा हो।

"शादी के बाद मैं इसे विदेश ले चलने के लिये मना लूँगी।" ल्यूबा ने सोचा, और इस विचार की घबराहट में भूल गई कि वह अपने पिता से क्या कहना चाहती थी। वह बुरी तरह झेंप गई और डरने लगी कि कहीं इससे स्मोलिन की नजर में गिर न जाये।

"आप इतनी बातचीत कर रहे हैं कि आप हमारे अतिथि को मदिरा देना भी भूल गये," अन्त में वह हकलाती हुई बोली।

"यह तो तुम्हारा काम है। मेजवान-मालकिन तो तुम हो," उसके पिता ने कहा।

"ओह आप कष्ट न करें। मैं लगभग नहीं के बरावर पीता हूँ।"

"लो, यह और !" मायाकिन ने कहा।

"सच। बहुत कम मौकों पर एक या दो गिलास पी लेता हूँ जब कि मैं थका हुआ या अस्वस्थ होऊँ। आमोद-प्रमोद के लिये मदिरा-पान करना मेरी

समझ में ही नहीं आता। शिक्षित मनुष्यों के लिये और बहुत से उचित आमोद-प्रमोद के साधन हैं।"

"उदाहरण के तौर पर स्त्री!" मायाकिन ने आँख मारते हुए कहा।

"पुस्तकें, थियेटर और संगीत," स्मोलिन ने ल्यूबा की ओर निहारते हुए रुक्षता से कहा।

ल्यूबा इन शब्दों को सुन कर प्रसन्न हुई।

परन्तु मायाकिन ने योग्य तरुण पुरुष की ओर तिरछी नज़र मारी और व्यंगपूर्ण स्वीकृति में सिर हिलाया।

"जीवन बदल रहा है!" वह अचानक फूट पड़ा। "एक समय था, जब कुत्ते टुकड़ों पर रहते थे, परन्तु आजकल पिल्ले भी क्रीम को अस्वीकार कर देते हैं। मान्यवर सज्जन! मेरी तेज जबान को क्षमा करना, परन्तु जो कुछ अभी मैंने कहा है वह समय के अनुसार ही है। और निःसन्देह मेरा मतलब आपसे नहीं था।"

ल्यूबा पीली पड़ गई और भय से उसने स्मोलिन की ओर निहारा। वह पुरानी कारीगरी की 'क्लोइसोन् की नमकदानी' को ध्यान से देख रहा था, और अपनी मूंछें ऐसे मरोड़ रहा था जैसे कि उसने वृद्ध मनुष्य की बात को सुना ही न हो। परन्तु, उसकी आँखें साधारण की अपेक्षा कुछ काली पड़ गई थीं और ओठ भिंच गये थे, जिससे ठोड़ी की प्रमुखता बढ़ गई थी।

"और, इस प्रकार गास्पादीन एक कारखाने के मालिक हो जायेंगे। तीन लाख रूबल हुए और आपकी पाल चढ़ जायेगी, यही बात है न?" मायाकिन ने अपनी रफ़्तार में कहा जैसे कि उनका वार्तालाप भंग न हुआ हो।

"और फर्म के नाम में स्मोलिन और मायाकिन होंगे। और दूसरा कोई नहीं? बहुत अच्छा। नया उद्योग शुरू करने के लिये मुझे देर हो गई है, क्या आपका यह विचार नहीं? मेरे लिये तो कफन तैयार है। कहिये क्या विचार है?"

उत्तर को टालने के लिये, स्मोलिन यद्यपि ठण्डी उदासीनता से परन्तु जोर से हँसा।

"जाने दीजिये, आप मखौल कर रहे हैं," उसने अन्त में कहा।

हंसी के शब्द से वृद्ध पुरुष के शरीर में हलकी सी कंपकंपी दौड़ गई और वह अस्पष्ट रूप से ठिठक गया। तीनों ही एक क्षण के लिये चुप हो गये।

"ह—आ," मायाकिन ने अपना सिर उठाये बिना कहा। "हमें उस बारे में भी सोचना है, हमें इस पर विचार करना है।" अपना सिर उठा कर अभिलाषित हो उसने अपनी लड़की और स्मोलिन की ओर देखा, खड़ा हुआ और रूखेपन से बोला: "मैं तुम दोनों को एक मिनट के लिये छोड़ कर जा रहा हूँ, मुझे कुछ पढ़ना है।"

और वह सिर और कन्धों को ढुलकाये पांव को अपने पीछे खींचता हुआ बाहर चला गया।

उसके चले जाने के बाद तरुण युगल ने आपस में बातचीत करने की कोशिश की; परन्तु इससे उन पर बोझ ही पड़ा, अतः उन्होंने यह प्रयत्न छोड़ दिया और उन दोनों के बीच आशापूर्ण भद्दी नीरवता छा गई। ल्यूबा ने एक नारंगी पकड़ी और सारा ध्यान उसके छीलने पर केन्द्रित कर दिया। स्मोलिन ने अपनी नाक से नीचे मूंछों को देखा, बायें हाथ से उन्हें सावधानी से संवारा और दांये हाथ से चाकू पकड़ कर खिलवाड़ करने लगा।

"मुझे इस अशिष्टता के लिये क्षमा करें," अन्त में उसने आवाज हलकी करते हुए कहा, "परन्तु आपको, ल्यूबोव याकोव्लेव्ना! अपने पिता के साथ रहना बड़ा कठिन अनुभव होता होगा। मैं देखता हूँ, कि वे बड़े दकियानूस हैं, वे पुरानी चटशाला के हैं, और यदि आप मेरे कहने का बुरा न मानें तो किसी कदर—वे कठोर हैं।"

ल्यूबा विस्मित हुई और कृतज्ञतापूर्वक इस लाल बालों वाले नवयुवक की ओर देखने लगी।

"हाँ कठोर हैं", उसने स्वीकार किया, "परन्तु मैं इसकी आदी हो चुकी हूँ, पर उनकी कुछ अच्छी बातें भी हैं।"

"ओह, इसमें तो कोई सन्देह नहीं! परन्तु आप—इतनी नौजवान, इतनी सुन्दर, इतनी सुसंस्कृत और जीवन सम्बन्धी अपने विचारों सहित···।"

उसकी मुस्कान में कोमल सहानुभूति थी, और उसकी आवाज अवर्णनीय रूप से मधुर थी। ल्यूबा ने अनुभव किया कि उसका हृदय एक उष्णता से भर गया और सुख की एक हल्की आशा जिससे वह इतने दीर्घ काल से लटकी हुई थी, अब अधिक आशापूर्ण और प्रकाशमान हो गई।

१२

फ़ोमा यभ्कोव के कमरे में बैठा उसकी शहर की इधर-उधर की गप्पों को सुन रहा था।

"चुनाव का धूमधाम शुरू हो गई है", यभ्कोव ने कहा जो अखबारों के ढेर से ऊपर तक ढकी मेज के कोने पर बैठा था और तेजी से अपनी टाँगें हिला रहा था। "व्यापारियों ने तुम्हारे धर्मपिता, बुड्ढे भींगुर को नामज़द किया है। वह अमर है—अब उसे डेढ़ सौ साल का होना चाहिये। वह अपनी लड़की की शादी स्मोलिन से कर रहा है, याद है उसकी ? वही लाल बालों वाला। उसे बहुत भला आदमी बतलाते हैं, जो भी समझदार हो, वही भला बन सकता है, चाहे वह बदमाश ही क्यों न हो, क्योंकि सच्चे, असली और भले लोग आजकल ढूँढ़े नहीं मिलते। अफ्रीकन आजकल कोशिश कर रहा है कि वह सुशिक्षित लोगों में गिना जाये। शिक्षित लोगों में वह अपना रास्ता बना रहा है, और लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच रहा है। देखने में वह अव्वल दर्जे का धोखेबाज दीखता है। परन्तु लोगों की नजरें उस पर जल्दी ही गिरने वाली हैं। वह दुनियाँ में जरूर अपने को जमा लेगा, क्योंकि उसे पता है कि वह कितनी दूर तक जा सकता है। हाँ, मित्र ! अफ्रीकन स्मोलिन एक लिबरल है और एक लिबरल-व्यापारी भेड़िये और सूअर के बीच की दोगली नसल है।"

"वह जाये जहन्नुम", फ़ोमा ने हाथ हिलाते हुए कहा : "मैं उसकी क्या परवाह करता हूँ ? तुम पहले की तरह ज्यादा शराब पी रहे हो ?"

"क्यों न पीऊँ।"

अव्यवस्थित अर्धनग्न यभोव ने कहा। वह एक पंख उड़े मुर्गे की तरह दिखाई दे रहा था, जैसे कि क्रोध अभी भी लड़ाई के बाद ठण्डा न हुआ हो

"मैं पीता हूँ, मेरे लिये इसकी जरूरत है। अपने अन्दर सुलगती आग को बुझाने के लिये मुझे इसकी जरूरत है। और तुम ? तुम, गीले लक्कड़, अभी भी सुलग रहे हो ?"

"मुझे जाना चाहिये और बुड्ढे आदमी से बातें करनी चाहिये", फ़ोमा ने मुँह बनाते हुए कहा।

"बैल को सींगों से पकड़ने ?"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं चाहता।"

"तो मत करो।"

"परन्तु मुझे चाहिये।"

"तो फिर करो।"

"ओह, परमात्मा के नाम पर यह निरालापन छोड़ दो", फ़ोमा ने चिढ़ते हुए कहा : "जैसे कि तुम्हें इन बातों में कोई खास मजा आता है।"

"मुझे आता है !" यभोव ने मेज से उछलते हुए कहा : "कल के अखबार में मैंने एक प्रमुख नागरिक की खूब अच्छी कुट्टी बनाई है ! और इसके अलावा मुझे एक गम्भीर मखौल सुनने का भी मौका मिला है : समुद्र के किनारे कुछ लोग जीवन के बारे में फिलोसफी छाँट रहे थे। अचानक उनके बीच एक यहूदी आ धमका और बोला : "शच्चनो* ! लब्जों को क्यों खर्च करते हो ? मैं इस सपको एक लब्ज में रख शकता हूँ। जीवन का किंमत एक कुपेक भी नहीं, उश शमुद्र से अधिक नहीं······।"

"भूल जाओ इसे", फ़ोमा ने टोकते हुए कहा : "नमस्कार !"

"तुम अपने रास्ते लगो। मैं आज बहुत प्रसन्नचित्त हूँ और तुम्हारी कराहों को सुनने का मेरा दिल नहीं, तुम खासतौर से कराहते नहीं, परन्तु सूअरों की तरह घुर्राते हो।"

---

* यह यहूदी के बोलने का तरीका है।

फ़ोमा बाहर चला गया और यभोव को अपनी ऊँची आवाज में गाता छोड़ गया :

'अपने ढोल को निर्भय हो बजाओ।'

"तु खुद ही ढोल है", फ़ोमा ने अधीरतापूर्वक सोचा।

मायाकिन के घर पर उसे ल्यूबा मिली जो कि यकायक और बहुत घबराई हुई सी आई।

"तुम ?" वह बोली : "हे परमात्मा ! तुम कितने पीले पड़ गये हो···। कितने दुबले हो गये हो··· । दिखता है, अच्छा जीवन गुजार रहे हो।"

फिर उसके चेहरे पर भय का भाव आ गया और लगभग वह फुस-फुसाहट में बोली :

"ओह, फ़ोमा ! तुमने नहीं सुना ? आज···वहाँ सुनते हो उसे ? यह घण्टी है···हो सकता है वही हो।"

वह कमरे के बाहर सरक गई और अपने पीछे रेशम की सरसराहट तथा विस्मित फ़ोमा को छोड़ गई। अभी उसे पूछने का मौका ही नहीं मिला था कि उसका पिता कहाँ है ? याकोव तारासोविच घर पर ही था। वह लम्बा फ्रांक-कोट पहने, छाती पर सब तमगे सजाये, दरवाजे में अपनी बाँहें चौड़ी फैलाये और उसका एक किनारा पकड़े अपनी हरी छोटी आँखों से फ़ोमा का अनुशीलन कर रहा था। उनकी नज़र को अनुभव कर उसने सिर उठाया, उनसे नज़र मिलाई।

"मेरे भद्र पुरुष, क्या हाल है ?" वृद्ध पुरुष ने सिर हिलाते हुए भर्त्सना की। "और, आज तुमने यहाँ कैसे कृपा की ? और तुम्हारी सब चर्बी कौन पी गया है ? और क्या यह ठीक है कि सूअर गन्दे कीचड़ की तलाश में हैं, क्यों फ़ोमा ?"

"आपके पास मेरे लिये और कुछ नहीं ?" फ़ोमा ने अपने धर्मपिता की ओर कठोरता से निहारते हुए क्रोध में कहा।

अचानक उसने देखा कि उसका धर्मपिता हिला : उसकी टाँगें काँपीं,

आँखें झपकीं और उसने दरवाजे के छोरों को मजबूती से पकड़ लिया। फ़ोमा ने डरते हुए कि वृद्ध पुरुष बीमार न हो, एक कदम आगे बढ़ाया, परन्तु याकोब तरासोविच ने अधीरतापूर्वक उससे कहा :

"परे हो जाओ। एक तरफ हट जाओ।"

फ़ोमा एक कदम पीछे हट गया और उसने देखा कि उसके बराबर में एक गोल, छोटा सा आदमी मायाकिन के आगे झुक रहा था।

"पिताजी, नमस्कार !" वह बोला।

"नमस्कार......तारास याकोव्लेविच ! क्या हाल है", वृद्ध मनुष्य ने सिर हिलाते हुए; तिरछी मुस्कान से कहा। उसकी टाँगें काँप रही थीं, जिनके कारण वह दरवाजे के कोनों को छोड़ने का साहस नहीं कर रहा था।

फ़ोमा परे हट गया और कौतूहल से बैठ गया।

मायाकिन का निर्बल शरीर दरवाजे के बीच आगे और पीछे झूल सा रहा था और उसका सिर अपने पुत्र को बिना बोले निहारते हुए टेढ़ा सा हो रहा था। उसका पुत्र उसके सामने ऊँचा सिर किये खड़ा था और उसकी भौंहें बड़ी बड़ी काली आँखों के ऊपर खिच रही थीं। उसका चेहरा पतला और नाक पिता की तरह मोटी थी और उसकी दाढ़ी नुकीली और मूछें छोटी एवं काली थीं जो जरा सी हरकत से हिल रही थीं। उसके कन्धों के ऊपर से फ़ोमा ने ल्यूबा के पीले, विस्मित, परन्तु प्रसन्न चेहरे की झाँकी देखी; वह विनीत प्रार्थना भाव से पिता की ओर निहार रही थी, और ऐसा प्रतीत होता था कि अभी रोने ही वाली है। वे सब एक शब्द भी कहने या हिलने में असमर्थ और अपने आनन्द के आवेग में डूबे हुए थे। मायाकिन की विचित्र दबी और शान्त आवाज से यह चुप्पी भंग हुई।

"तुम वृद्ध हो गये हो, तारास," वह बोला।

उसका पुत्र मुस्करा दिया और एक बार उसने अपने पिता को ऐड़ी से चोटी तक देखा।

दरवाजे का छोर छोड़ कर, मायाकिन अपने पुत्र की ओर बढ़ा, परन्तु

अचानक ही रुका और भौंहें तान लीं। यह देखते ही, तरास मायाकिन आगे बढ़ा और उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"बहुत अच्छा······आओ चुम्बन करें," मायाकिन ने धीरे से कहा।

उन्होंने आवेश में एक दूसरे का आलिंगन किया। एक दूसरे को खूब जोर से चूमा और अलग हो गये। वृद्ध पुरुष की झुर्रियाँ बड़ी तेजी से हिल रही थीं, परन्तु उसके पुत्र का पतला चेहरा शान्त और लगभग कठोर था। ल्यूबा प्रसन्नतापूर्वक रिरिया रही थी। फ़ोमा अपनी कुर्सी में पासे पलट रहा था। उसे सांस लेना मुश्किल हो रहा था।

"बच्चे – हमारे हृदय के आनन्द नहीं, परन्तु दिल के नासूर हैं।" मायाकिन ने दयनीय रूप से साँस भरते हुए कहा, और इन शब्दों से उसकी आत्मा हल्की हो गई, क्योंकि, यह कहने के बाद ही उसका चेहरा दमक उठा; और वह एक नई शक्ति से भर गया। अब वह अपनी लड़की से सजीवतापूर्वक बोला : "तू भी इस ग्रुट में कोमल पड़ गई है। आओ, मेज सजाओ और हम भूले-भटके बेटे की दावत करें। वृद्ध मनुष्य ! शायद तुम अपने पिता को भूल गये हो कि वह कैसा है ? क्यों, नहीं भूले क्या ?"

तारास मायाकिन जिसके सिर और दाढ़ी के बाल सफेद हो गये थे, काली पोशाक में बिना किसी प्रकार की टिप्पणी किये अपने पिता की ओर मुस्कराता रहा।

"अच्छा, बैठ जाओ। बताओ तुम्हारा जीवन उधर कैसा रहा—तुम क्या करते रहे ? किधर देख रहे हो ? वह मेरा धर्मपुत्र है, इग्नात गर्देयेव का पुत्र ! इग्नात की याद है ?"

"सब याद है", तारास ने कहा।

"ओ ! बहुत अच्छी बात है—अगर तुम डींग नहीं मारते, तो क्यों, शादी हो चुकी है ?"

"मैं बिधुर हूँ।"

"बच्चे ?"

"मर गये। दो थे।"

"बहुत शोक। मेरे पोते होते तो··· । मैं पसन्द करता।"

"मैं तम्बाकू पी सकता हूँ ?"

"पीयो ! ओह ! तू सिगार पीता है।"

"आपको आपत्ति है ?"

"नहीं ! इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मेरा मतलब था, यह एक प्रकार का सिगार पीना, ऊँचे लोगों जैसा है। मैंने तो यों ही कह दिया था। हाँ, यह हास्यास्पद सा लगता है कि विदेशी कट के गलमुच्छों वाला इस तरह का गम्भीर वृद्ध व्यक्ति, जिसके दाँतों के बीच में सिगार हो। और वह कौन ? मेरा अपना बेटा ! हि···हि···हि !" वृद्ध मनुष्य ने तारास के कन्धों को थपथपाया, परन्तु उसी क्षण डर से पीछे ठिठक गया : क्या वह जल्दी ही तो प्रसन्न नहीं हो उठा। क्या इस सफेद बालों वाले आदमी का स्वागत करने का यही तरीका है ? उसने बड़ी-बड़ी काली आँखों में, जिनके नीचे पीला धुँआ था, सशंकित होकर देखा।

तारास अपने पिता की ओर स्वागतपूर्ण कोमलता से मुस्कराया।

"मैं आपको ऐसे ही याद करता हूँ—प्रसन्न और सजीव", उसने सोचते हुए कहा। "वर्षों के समय ने आप में कोई परिवर्तन नहीं किया।"

वृद्ध मनुष्य ने अभिमान से अपने कन्धे चौड़े किये और छाती पर मुक्का मार कर बोला :

"और मैं कभी परिवर्तित नहीं होऊँगा। क्योंकि जो मनुष्य अपनी कीमत स्वयं जानता है, उस पर जीवन की कोई सत्ता नहीं।"

"ओह, हो ! आप कितना अभिमान करते हैं !"

"मुझे अपने बेटे के पीछे ही चलना चाहिये", वृद्ध मनुष्य ने धूर्त्तता-पूर्वक खीजते हुए कहा : "भाई ! मेरा पुत्र ही ऐसा है कि वह सत्तरह वर्ष तक अभिमान वश चुप ही रहा।"

"यह इसलिये क्योंकि उसका पिता उसके बारे में सुनना ही नहीं चाहता था", तारास ने याद करवाया।

"बस, रहने दो", परमात्मा ही जानता है कि कौन दोषी है। वह न्यायकारी अपने ज्ञान से किसी दिन तुम्हें बता देगा। खैर, रहने दो! आपस में बहस करने का यह समय नहीं। तू मुझे बता, इन वर्षों में क्या करता रहा? तू सोडा की फैक्ट्री में कैसे पहुंचा? संसार में कैसे ऊपर चढ़ा?"

"यह एक लम्बी कहानी है", तारास ने एक आह भर कर कहा, और जब वह सिगार के धुँए का बड़ा बादल उड़ा चुका तो बिना जल्दी के आराम से कहना शुरू किया: "जब मुझे स्वतन्त्रता मिल गई, मैं सोने की खानों में, रेमेज़ोव के दफ्तर में, काम की तलाश में गया··· ।"

"मैं उन्हें जानता हूँ। तीन भाई हैं। मैं उन तीनों को जानता हूँ। एक अपाहिज है, दूसरा मूर्ख और तीसरा महाकंजूस।"

"उसके यहाँ मैं दो साल तक काम करता रहा, और इसके बाद मैंने उसकी लड़की से विवाह कर लिया", तारास ने घरघराती आवाज में कहा।

"तुम बहुत चलते आदमी हो।"

तारास अपने विचारों में डूब गया और चुप हो गया। उसके पिता ने उसके शोकार्त चेहरे को देखा।

"मैं समझ सकता हूँ कि तुम पत्नी से प्यार करते थे"; वह बोला: "मगर यहाँ किसी का बस नहीं चलता—मृतात्मा स्वर्ग चले जाते हैं, और जीवित यहीं लुढ़कते रहते हैं। अभी तुम बहुत बुड्ढे नहीं हुए हो। क्या तुम्हें विधुर हुए देर हो गई है?"

"तीन वर्ष।"

"तुम सोडा के कारखाने में कैसे पहुंचे?"

"यह कारखाना मेरे श्वसुर का है।"

"ओह! वह तुम्हें क्या तनख्वाह देता है?"

"लगभग पाँच हजार।"

"काफी रसेदार रोटी। हूँ···, और तिस पर तुम एक अपराधी हो

तारास ने अपने पिता की ओर कठोर नजर डाली।

"बात बात में", उसने रुक्षता से कहा : "आपके दिमाग में यह विचार कैसे पैदा हुआ कि मैं अपराधी था।"

वृद्ध मनुष्य ने विस्मय का भाव प्रकट किया जो जल्दी ही आनन्द में पलट गया।

"अच्छा !...फिर यह कैसे ? कैदी नहीं रहे ? जाये जहन्नुम में ! परन्तु फिर भी...यह सब हुआ कैसे ? बुरा मत मानो। मुझे कैसे पता लग सकता था ? मुझे पता लगा कि तुम साईबेरिया में हो ! और वहाँ अपराधी ही भेजे जाते हैं।"

"इसका; सदा के लिये, आखिरी खातमा करने के लिये" तारास ने प्रभावपूर्ण तरीके से अपने एक घुटने को हाथ से थपथपाते हुए कहा : "मैं बताता हूँ कि ये सब कैसे हुआ : मुझे साईबेरिया छः वर्ष के लिये देश निष्कासन हुआ था और इन वर्षों में मैं लेना कीसोने की खानों में रहा। मास्को के जेल में मैं नौ महीने ही रहा—बस यही मेरी सारी कहानी है।"

"मैं समझा, परन्तु फिर भी यह क्यों...?" मायाकिन ने शान्त, परन्तु घबराते हुए धीरे से कहा।

"वे सब मूर्खतापूर्ण अफ़वाहें यहाँ फैलाई गईं !" तारास घुरघुराया।

"मैं अब समझ गया, वे सब बातें मूर्खता की थीं", मायाकिन ने गुस्से में कहा।

"और एक समय इन्होंने मुझे बहुत नुकसान पहुँचाया।"

"जरूर पहुँचाया होगा ?"

"हाँ, मैंने कारोबार शुरू किया था... ।"

फ़ोमा कोने में बैठा दोनों मायाकिनों की बातचीत को सुनते हुए अविश्वासपूर्वक आँखें मटकाता रहा और उस नौजवान पुरुष का अध्ययन करता रहा। अपने भाई के प्रति ल्यूबा का व्यवहार उसकी हरकतों के बारे में सुनी सुनाई अफवाहों के आधार पर ही था, जिसके कारण फ़ोमा उसे साधारण मनुष्यों से पृथक एक असाधारण व्यक्ति समझता था। वह कल्पना

करता था कि वह विशेष तरीके से बात करेगा, विशेष तरीके से कपड़े पहिने होगा और दूसरे मनुष्यों से सर्वथा पृथक होगा, परन्तु यहाँ उसके सामने एक बिल्कुल भिन्न दिखाई देने वाला दूसरा ही सम्पन्न नागरिक बैठा था, जिसने सावधानी से कपड़े पहिन रखे थे, मुँह में सिगार के अलावा वह बिल्कुल अपने पिता जैसा दिखाई दे रहा था। वह साधारण तरीके से संक्षिप्त और मतलब से बात कर रहा था। उसमें ऐसी कौन सी खास बात है? अभी वह अपने पिता को बता रहा था कि सोड़े का व्यापार कितना लाभदायक है। और, वह कभी भी अपराधी नहीं रहा—इससे ल्यूबा के सब भेद भाव दूर हो गये।

वह लगातार आ जा रही थी। उसका चेहरा प्रसन्नता से दीप्त था और वह तरास से अपनी आँखें नहीं हटा सकती थी, जिसने एक विशेष भारी काले कपड़े का कोट, जिसमें बड़े बड़े बटन लगे हुए थे, पहिन रखा था। वहँ उसकी ओर गर्दन किये पञ्जों के बल आ जा रही थी। फ़ोमा प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी तरफ देख रहा था, परन्तु उसने उसे देखा भी नहीं क्योंकि वह द्वार से प्लेट और बोतलें हाथ में लिये जल्दी में चली गई।

ऐसा हुआ कि वह ठीक उस क्षण कमरे में घुसी जब उसका भाई अपने पिता को देश निष्कासन के बारे में सुना रहा था। वह ट्रे को फैलाये हाथों में लिये खड़ी उसके हर शब्द को पान कर रही थी जो वह अपनी सजा के कष्टों के बारे में बता रहा था। और, जब वह कह चुका तो वह मुड़ी और फ़ोमा की मखौलपूर्ण दृष्टि को न देखते हुए धीरे से दूर चली गई। फ़ोमा तरास के बारे में और अपने प्रति दिखाई गई उपेक्षा के विचार में इतना डूबा था कि कुछ समय तक वह उस बातचीत को भी पूरी तरह न समझ सका, और जब किसी ने उसे अचानक कन्धों से पकड़ा वह अचम्भे में खड़ा हुआ और अपने धर्मपिता को लगभग गिरा दिया।

"देख! यह है मायाकिन! तुम्हारे लिये इसे अच्छी तरह देख! यह सात कढ़ाइयों में उबाला गया है और फिर भी जिन्दा और मालदार होकर बाहर आया है। समझे! इसका क्या मतलब? और संसार में बिना किसी की मदद के वह

मालदार बनकर आया है। तुम समझते हो, इसका तुम्हारे लिये क्या मतलब है ? और उसने बिना किसी की सहायता के संसार में अपना रास्ता बनाया है। मायाकिन होने का ये मतलब है। मायाकिन हमेशा अपना भाग्य अपने हाथ में रखते हैं। समझे इसका मतलब ? इससे कुछ सीखो। यदि सैकड़ों में तुम इसके जैसा तलाश नहीं कर सकते तो हजारों में देखो। मायाकिन चाहे कुछ भी हो जाये, आदमी रहेगा। संसार की कोई शक्ति उसे सन्त या शैतान में नहीं बदल सकती, और इस बात को भूलना मत।"

फ़ोमा इन डींगों और बेतुकी बातों को सुन कर, जिनकी कि उसे आशा नहीं थी, अचम्भे में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या जवाब दे। उसने देखा कि तारास के अधर एक मुस्कान में हिले, जबकि वह शान्ति के साथ सिगार पीता हुआ अपने पिता को निहार रहा था। उसके चेहरे पर एक गर्व, सन्तोष का भाव था और उसकी सारी आकृति अभिमान और श्रेष्ठता की भावना से व्याप्त थी। वह वृद्ध मनुष्य की प्रसन्नता से विनोद प्राप्त कर रहा था।

"मैं इस, अपने सगे पुत्र, को नहीं जानता—उसने अभी तक अपना दिल मुझसे नहीं खोला है," मायाकिन फ़ोमा की छाती में उंगलियाँ चुभोता कहता जा रहा था। "हो सकता है कि हमारे बीच एक ऐसी खाई हो, जिसे बाज़ भी उड़ कर पार न कर सकता हो, अथवा शैतान भी न फलांग सकता हो। हो सकता है कि उसका खून इतना उबल चुका हो कि, अब उसमें पिता की बू तक भी बाकी न रही हो। और फिर भी वह है मायाकिन ही ! यह बात मैं एक-दम समझ गया। मैंने इसे देखा, और मन ही मन कहा : "अब तेरा विनम्र दास तेरे अपने हाथों में समर्पित है, हे सर्वशक्तिमान्।"

वृद्ध मनुष्य इतनी बुरी तरह काँप रहा था कि वह फ़ोमा के सामने एक प्रकार का नाच सा कर रहा था।

"पिताजी ! तनिक शान्त रहिये," तारास ने धीरे से खड़े होकर उसकी ओर आते हुए कहा "आइये, बैठ जाइए।"

तारास फ़ोमा की ओर लापरवाही से हंसा और अपने पिता को मेज़ की ओर ले गया।

"मैं खून में विश्वास करता हूँ," मायाकिन ने कहा। "मनुष्य की सारी शक्ति खून में है। मेरा पिता मुझसे कहा करता था, "याशा* ! तू मेरा असली खून है। मायाकिन-रक्त बहुत गाढ़ा है जिसे कोई स्त्री पतला नहीं बना सकती। आओ, इसी बात पर एक शम्पेन की बोतल पीएँ, क्यों ? और तुम मुझे अपने बारे में सब बातें सुनाओ···साईबेरिया में कैसा है ?"

और फिर जैसे कि वह किसी भयावह और गम्भीर विचार से झिझक गया हो, मायाकिन अचल दृष्टि से अपने पुत्र के चेहरे की ओर घूरने लगा, परन्तु कुछ ही क्षणों में तारास के विश्वास दिलाने वाले उत्तरों से वृद्ध मनुष्य आनन्द के एक नये आवेश में डूब गया। फ़ोमा उन्हें देखता रहा और कोने से, जहाँ वह बैठा था, उनकी बातें सुनता रहा।

"इसके कहने की आवश्यकता नहीं कि खानों से सोना निकालना बहुत अच्छा व्यवसाय है," तारास ने बहुत शान्ति और महत्ता से कहा, "परन्तु यह ख़तरे से खाली नहीं। इसके लिये बहुत पूँजी की जरूरत पड़ती है। वहाँ के वासियों के साथ व्यापार भी बड़ा लाभदायक है और यद्यपि यह बुरी तरह संगठित है, परन्तु फिर भी बहुत लाभदायक है। यह हमेशा ही अच्छा कारोबार है, जिसमें गल्ती की गुंजायश नहीं, परन्तु है कठिन। इसमें दिमाग की भी बहुत जरूरत नहीं और आदमी को बहुत बड़े बड़े विचारों की भी जरूरत नहीं।"

इसी समय ल्यूबा अन्दर आई और उन्हें मेज पर आने का निमन्त्रण दिया। जब पिता और पुत्र कमरे में चले जा चुके, फ़ोमा ने ल्यूबा को बांह से पकड़ा और पीछे को रोका।

"तुम क्या चाहते हो ?" ल्यूबा ने तेजी से पूछा।

---

*याशा—याकोव का प्रेम का नाम।

"कुछ नहीं," फ़ोमा ने हलकी मुस्कान से कहा, "बस मैं यही पूछना चाहता था कि तुम प्रसन्न तो हो।"

"खूब पूछा !" ल्यूबा विस्मय में बोली।

"क्यों ?"

"तू भी बहुत अजब है !" उसने फ़ोमा की ओर देखते हुए विस्मय में कहा। "तू अपने आप नहीं देख रहा ?"

"वाह !" फ़ोमा ने तिरस्कारपूर्वक कहा। "क्या कभी तेरे पिता से, या व्यापारी वर्ग से कोई भलाई पैदा हो सकती है ! और तू मुझसे झूठ ही कहती रही कि तारास ऐसा है, तारास वैसा है, वह तो साधारण व्यापारियों जैसे ही मोटे पेट वाला है।" ल्यूबा को लाल, पीला होते और क्रोध में अपने ओठों को काटते देख, उसे बड़ी प्रसन्नता हुई।

'तू···तू···फ़ोमा ! ·" ल्यूबा ने सांस लिया और पाँव पटक कर चिल्लाई : "मुझसे ऐसी बात कहने का साहस मत करो।" जब वह दरवाजे पर पहुंच ली, तो उसने सांस खींचते हुए और उसकी ओर गुस्से से देखते हुए कहा :

"नरद्रोही कहीं का।"

फ़ोमा हंसा। वह मेज पर उन तीनों प्रसन्न लोगों के बीच बैठना नहीं चाहता था। उसने उनकी सन्तोषपूर्ण हंसी और तश्तरियों की खनखनाहट सुनी तथा समझ गया कि इतना भारी हृदय लिये उनके बीच उसका कोई स्थान नहीं। उसके लिये और भी कहीं स्थान नहीं था। जबकि वह कमरे के बीच अकेला खड़ा था। उसने इस घर को छोड़ने का फैसला कर लिया जहाँ लोग आमोद-प्रमोद मनाने में लगे हुए थे। जब वह बाहर चला गया तो उसका हृदय उनके प्रति जिस प्रकार उन्होंने उसके साथ व्यवहार किया था, शिकायत और क्रोध से भरा हुआ था। अपने मन की आँखों में उसने अपने धर्मपिता का चेहरा देखा जिसमें झुर्रियाँ काँप रही थीं और उसकी आनन्दपूर्ण हरी आँखें चमक रही थीं। 'एक सड़ी लकड़ी ही अन्धेरे में चमकती है।' उसने कड़वाहट से सोचा। फिर उसे तारास का शान्त गम्भीर चेहरा और ल्यूबा की आकृति

जो उसकी ओर झुकी हुई थी, याद आई। इससे उसकी उदासी और ईर्ष्या जागृत हो उठी।

"ऐसी परिस्थिति में मेरी तरफ देखेगा भी कौन ?" उसने सोचा :

जहाजों की गोदियों के शोर शराबे में वह अपने आप पहुँच गया। उसके चारों तरफ लोग माल ढो रहे थे और उसे बाहर निकाल रहे थे; उनकी गतियों में उत्सुकता और शीघ्रता भरी हुई थी; वे अपने घोड़ों को आगे बढ़ाते हुए हांक रहे थे और एक दूसरे पर चिड़चिड़ाते हुए चिल्ला रहे थे। व्यर्थ की गड़बड़, और मजदूरों के शोर शराबे से रास्ते खचाखच भरे हुए थे। वे लोग संकरे पत्थरीले रास्ते पर तेजी से आगे पीछे आ जा रहे थे, जिसके एक तरफ ऊँची इमारतें थीं और दूसरी ओर नदी का तेज ढलान फ़ोमा को ऐसा दिखा कि उस भीड़ में से सब लोग अपने काम और गंदी गलियों को छोड़ भागने की योजना बना रहे हों। वे अपने ऊपर सोंपे हुए काम को खतम करने की जल्दी में थे, ताकि जितना जल्दी हो सके, वे भाग जावें। बड़े बड़े स्टीम बोट, जिनकी चिमनियों से धुआँ निकल रहा था, किनारे पर खड़े उनका इन्तजार कर रहे थे। नदी का गँदला पानी जहाजों और सब तरह की किश्तियों से कोलाहल कर रहा था और दीनता से किनारे पर आकर टकरा रहा था, जैसे कि वह क्षण भर की शान्ति के लिये प्रार्थना कर रहा हो।

थोड़ी दूर पर गोदी से मजदूरों के आनन्द-गीत "दुबिनुश्का" की सुरीली लय आ रही थी। बन्धानी बहुत जरूरी ढुलाई का काम कर रहे थे और उन्होंने अपने काम की गति के साथ गीत का स्वर भी ऊँचा कर दिया था :

व्यापारी पहुँचे मधुशाला।
पीते वोदका का प्याला॥

किसी एक ने गीत शुरू किया, दूसरों ने समवेत स्वर से उसका साथ दिया :

ओ हो हो हो दुबिनुश्का।

मंद ध्वनियों ने गीत के टप्पे को हवा में और ऊपर उठाया :

आई आई दुबिनुश्का।

और समतार ध्वनियों ने उसकी प्रतिध्वनि की :

आई आई दुबिनुश्का।

फ़ोमा ने कुछ समय तक गीत सुना, फिर गोदी में इसका पीछा किया। उसने देखा कि बन्धानी दो कतारों में खड़े जहाज के भीतरी हिस्से से बड़े-बड़े भड़ोलों को खींच रहे हैं। मैले, गले के पास खुले, लाल ब्लाउज और हाथों में काम के दस्ताने पहने, कोहनी तक नंगी बाँहों में, वे लोग डेकों के नीचे ढालों से अपने गीत के बीच-बीच खुशी, मखौल और पूरे सहयोग से रस्सों को खींच रहे थे। जहाज के भीतरी भाग से अदृश्य गवैये की हँसती आवाज आ रही थी :

किन्तु हमारे मजदूरों का
मेहनतकश—मजदूरों का
गला नहीं तर कर पाता
भरा वोदका का प्याला

इसमें बड़े जोर के साथ दूसरे भी सम्मिलित हो गये और सबने एक बड़ी सम्मिलित ध्वनि में गाया :

ओ हो हो हो दुबिनुश्का।

फ़ोमा ने देखा कि उनका श्रम गाने के साथ समरस है और उसे उन्हें देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। बन्धानियों के कठोर चेहरे मुस्कानों से मुखिर हो उठे। काम आसान हो गया और बिना किसी रुकावट के चलता रहा। गाने वाला एक प्रेरणा से प्रभावित हो गया। फ़ोमा ने सोचा कि ऐसे आनन्दपूर्ण गीत और ऐसे अच्छे साथियों के साथ, काम कितना आनन्ददायक होगा, तथा काम के थकने के बाद एक ग्लास वोदका का पीना और मोटी, प्रफुल्ल-बदन युवा स्त्री द्वारा बन्धानियों के लिये तैयार किया हुआ गाढ़ा चर्बीदार गोभी का सूप खाने में कितना आनन्द आयेगा।

"जोर से, जोर से लोगो, जोर से!" उसके बराबर से किसी ने खड़खड़ाती आवाज में कहा। एक फूले पेट वाला मोटा आदमी अपनी छड़ी से गोदी

के तख्तों को ठक-ठका रहा था, और अपनी छोटी-छोटी आँखों से बन्धानियों को देख रहा था। उसका चेहरा और गर्दन पसीने में नहा रही थी, जिसे वह बाँये हाथ से बार-बार पोंछ रहा था। वह ऐसे जोर से सांस ले रहा था, जैसे कि किसी पहाड़ी पर चढ़ाई करके आया हो।

फ़ोमा ने उसे विरोधी भाव से देखा और सोचने लगा :

"काम दूसरे करते हैं और पसीने-पसीने यह हो रहा है। परन्तु मैं इससे भी गया गुजरा हूँ।"

प्रत्येक नये प्रभाव से उसमें अपनी निरर्थकता के भद्दे विचार पैदा होने लगे। प्रत्येक चीज जिसकी ओर वह देखता था, उसे झिड़कती दिख रही थी, और प्रत्येक झिड़की के साथ उसकी छाती पर एक ईंट सी रक्खी जा रही थी।

रात को फिर वह मायाकिन के वहाँ पहुँचा। वृद्ध मनुष्य घर नहीं था। परन्तु ल्यूबा और उसका भाई डाइनिंग रूम में चाय पी रहे थे। जैसे ही वह दरवाजे के पास पहुँचा, फ़ोमा ने तारास को भारी आवाज में कहते हुए सुना :

"तो फिर, पिताजी उसकी चिंता क्यों करते हैं ?"

फ़ोमा के आते ही वह चुप हो गया और उसकी ओर कठोरता से घूरते हुए बैठ गया। ल्यूबा भी घबरा गई।

"ओह, तू है", उसने कहा जैसे कि माफी माँग रही हो।

"ये लोग मेरे बारे में बात कर रहे थे", फ़ोमा ने बैठते हुए सोचा।

तारास दूसरी तरफ देखने लगा और अपनी कुर्सी में आराम से जम गया। एक मिनट तक विचित्र चुप्पी छाई रही जो फ़ोमा को अच्छी लगी।

"क्या तुम दावत में जा रहे हो ?" ल्यूबा ने अन्त में पूछा।

"कौन सी दावत ?"

"तुम्हें नहीं पता ? 'कनोनोव' एक नया जहाज तैरा रहा है। इसका समर्पण-संस्कार होना है और इसके बाद वोल्गा की जल यात्रा।"

"मैं तो निमंत्रित नहीं," फ़ोमा ने कहा।

"किसी को भी निमंत्रण नहीं मिला। उसने सिर्फ ऐक्चेन्ज में घोषणा कर दी है कि यदि कोई भी सज्जन वहाँ पहुँच कर उसे सम्मानित करेंगे तो उसे ख़ुशी होगी।"

"ख़ैर, मैं नहीं परवाह करता।"

"अच्छा! देखना, वहाँ शराब ख़ूब उड़ेगी," ल्यूबा ने तिरछी नजर फेंकते हुए कहा।

"मैं, यदि चाहूँ तो, अपने पैसे से मदहोश हो सकता हूँ।"

"जानती हूँ!" ल्यूबा ने साभिप्राय सिर हिलाते हुए कहा।

तारास चाय के चमचों से खिलवाड़ कर रहा था और उन दोनों को भौंहों के नीचे से देख रहा था।

"धर्म-पिता जी कहाँ हैं?" फ़ोमा ने कहा।

"वह बैंक गये हैं। वहाँ संचालक—मण्डल की बैठक है। चुनाव होने वाले हैं।"

"क्या उन्हें फिर चुन लिया जायगा?"

"निश्चय।"

"कुछ देर के लिये वे रुक गये। तारास ने एक बड़े और धीमे घूंट में चाय पी, फिर बहिन की ओर देख कर मुस्कराया और बिना कुछ कहे अपना गिलास उसकी ओर सरका दिया। वह प्रसन्नतापूर्वक उसकी ओर हँसी, गिलास लेकर धो दिया। जैसे ही उसने चाय के गिलास को वापिस दिया, उसका चेहरा गम्भीर हो गया और उसने गर्दन आगे को खींच हलकी आवाज में लगभग बड़े आदर से कहा:

"तो फिर, हम वे ही बातें करें ना जो अभी कर रहे थे?"

"हाँ, हाँ," तारास ने संक्षेप में कहा।

"तुम कह रहे थे......मैं बिल्कुल समझी नहीं......मैंने कहा था यदि

तुम इसे काल्पनिक समझते हो······अभिप्राय यह कि यदि इसे तुम स्वप्न, या असम्भव समझते हो, तो एक ऐसे व्यक्ति को, जो अपने जीवन से सन्तुष्ट नहीं, क्या करना चाहिये ?"

उसने अपने भाई के शान्त चेहरे की ओर बड़ी तीव्र आशा से देखा। उसने अपनी बहिन की ओर देखा, कुर्सी पर उठा, सिर ढुलकाया और बहुत शान्त भाव से जोरदार तरीके से कहने लगा :

"हमें जीवन में असन्तोष के कारणों पर विचार करना चाहिये। कई अवस्थाओं में यह काम के प्रति आदर के अभाव से या कार्य की अयोग्यता से पैदा होता है। अथवा अपनी योग्यता के बारे में गलत सम्मति से भी पैदा होता है। अधिकांश लोग गलती करते हैं कि, वे कल्पना कर लेते हैं कि, वे इतने योग्य है, जितने वे वस्तुत: नहीं। वास्तव में एक व्यक्ति से बहुत कम मांग की जाती है; उससे आशा की जाती है कि वह काम का चुनाव ऐसा करे, जिसे वह अपनी योग्यता के अनुसार अच्छी से अच्छी तरह कर सकता है। यदि मनुष्य जो भी करता है, चाहे वह कितना ही मोटा काम हो; उसे प्रेम करता है, तो वही काम रचनात्मक बन जाता है। एक कुर्सी, जिसमें बनाने वाले ने अपना सारा दिल लगा दिया है, जरूरी बात है कि वह अच्छी, मजबूत और सुन्दर होगी और यह बात हर चीज के साथ लागू होती है। स्माइल्ज़ को पढ़ो—तूने उसे पढ़ा है या नहीं ? एक बहुत अच्छी पुस्तक है। लाभदायक पुस्तक है। और फिर···· लेब्रोक की "जीवन का आनन्द" को पढ़ो। याद रखो कि अंगरेजों से बढ़ कर कोई दूसरी कौम मेहनती नहीं, और यही कारण है कि वे व्यापार और व्यवसाय में असाधारण रूप से सफल हैं···। श्रम उनके लिये लगभग धर्म है। किसी भी राष्ट्र या कौम की साँस्कृतिक सतह उनके श्रम-प्रेम के सीधे अनुपात में होती है···। किसी भी राष्ट्र की जितनी ही ऊँची संस्कृति होगी और जितनी ही उनकी मांगें सन्तुष्ट होंगी, उतनी ही कम बाधायें उनकी मांगों की पूर्ति में होंगी। किसी व्यक्ति की माँगों की पूर्ति में ही सुख का पूर्णतः आधार है। इस लिये तुम देख सकती हो कि व्यक्ति का सुख श्रम के प्रति उसके व्यवहार पर निर्भर करता है।"

तारास मायाकिन के शब्द इतने धीरे धीरे निकले, कि कोई भी कल्पना कर सकता था कि, वह बोलने में थकान अनुभव कर रहा था। परन्तु ल्यूबा उसकी ओर आँखों में पिपासापूर्ण ध्यान से उसके भाषण को सुन रही थी और, उसकी प्रत्येक बात को बुद्धिमत्ता के मोतियों के रूप में स्वीकार करने और उन्हें अपने हृदय में सुरक्षित रखने के लिये तैयार थी।

"और यदि किसी मनुष्य को प्रत्येक चीज से घृणा और विद्वेष हो तो कैसे हो?" फ़ोमा ने पूछा।

"जैसे?" तारास ने शान्त भाव से उसकी ओर बिना देखे पूछा।

"सब कुछ,—उन्हें अच्छा नहीं लगता······काम,···श्रम···लोग···। उदाहरण के तौर पर वह प्रत्येक चीज को बनावटी पाता है। कारोबार पूर्ण नहीं, परन्तु पूरक, आत्मा का पूरक। कुछ लोग काम करते हैं, दूसरे पसीने में मरते हैं और हुक्म चलाते हैं; और उस पर तुर्रा यह औरों की अपेक्षा खूब मुनाफा कमाते हैं, ऐसा क्यों है?"

"मैं तुम्हारी बात नहीं समझा।" तारास ने कहा जबकि ल्यूबा की मुर्झा देने वाली नजर से भिज्ञ फ़ोमा अपनी बातचीत को खतम कर रहा था।

"आप नहीं समझे?" फ़ोमा ने परिहासपूर्ण नजर डालते हुए कहा। "अच्छा, इसे हम ऐसे कह सकते हैं: एक मनुष्य किश्ती में नदी की मझधार में जा रहा है, किश्ती बहुत अच्छी है, परन्तु नीचे पानी बहुत गहरा है, और चाहे किश्ती कितनी ही अच्छी और मजबूत क्यों न हो, एक बार जब मनुष्य गहराई से और पानी के कालेपन से डरना शुरू कर देता है, वह इससे बच नहीं सकता।"

तारास ने शान्त उदासीनता के साथ फ़ोमा को निहारा। उसने बिना कुछ बोले, धीरे धीरे अपनी उँगलियों से मेज के किनारे को थपथपाते हुए, उसे निहारा। ल्यूबा बेचैनी के साथ कुर्सी में मरोड़े खा रही थी। दीवार की क्लाक का लटकन हल्के चुपचाप शब्दों में आह भरते हुए समय की गति बतला रहा था, और फ़ोमा का हृदय धीरे धीरे भारी तरीके से धड़क रहा था, क्योंकि वह जानता था कि इस घर में उसकी व्याकुलता और उद्विग्नता में दयापूर्ण शब्द कहने वाला कोई नहीं है।

"मनुष्य के लिये श्रम ही सब कुछ नहीं जिसकी उसे जरूरत है," उसने औरों की उपेक्षा करते हुए स्वयं ही बड़बड़ाकर कहा। "यह सच नहीं कि श्रम ही हर चीज का फैसला करता है। कुछ लोग अपने जीवन भर जरा सा भी काम नहीं करते, फिर भी वे श्रम करने वालों से कहीं अधिक आराम से रहते हैं। इसकी आप कैसे व्याख्या करेंगे ? जहाँ तक तुम्हारे मेहनतकशों का सम्बन्ध है, वे तो अभाग्यशाली भारवाहक घोड़े हैं। दूसरे लोग उन्हें हाँकते हैं और वे इसीलिये होते हैं, बस यही बात है। परन्तु परमात्मा की नजरों में वे ठीक है। यदि उनसे पूछा जाये : 'जीवन में तुम्हारा क्या उद्देश्य था।' वे उत्तर देंगे : 'हमें इस बारे में सोचने का समय ही नहीं मिला—हम तो जीवन भर मेहनत करते रहे हैं।' परन्तु मेरा तो जीने के लिये औचित्य नहीं। और उन लोगों का क्या औचित्य है जो कभी कुछ नहीं करते, केवल दूसरों पर हुकम चलाते हैं ? वे जीवन के लिये क्या करते है ? मेरा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति को यह जानना चाहिये कि वह क्यों रह रहा है।"

वह रुका और सिर को पीछे को फेंक रुंधी हुई आवाज में चिल्लाया।

"क्या यह हो सकता है कि एक मनुष्य सिर्फ मेहनत करने पैसा बनाने, घर खड़ा करने, बाल बच्चे पैदा करने और मरने के लिये ही आया है ? मै इसे नहीं मानता; जीवन का कोई अर्थ होना चाहिये। मनुष्य पैदा होता है, रहता है और मर जाता है। किसलिये ? हमें यह पता लगाना है कि हम क्यों रह रहे हैं ? हमारे जीवन में रहने का कोई लक्ष्य नहीं। और फिर समानता नहीं—कोई भी इसे देख सकता है। कुछ लोग धनी हैं, उनके पास हजारों की सम्पत्ति है वे कोई काम नहीं करते, और दूसरे सारे जीवन भर पसीना बहाते रहते हैं और उसके बदले में दिखाने के लिये एक कोपेक भी नहीं। और तिस पर लोगों के बीच कोई बड़ा अन्तर नहीं। कुछ लोग जिन पर तन ढकने को कमीज नहीं उन लोगों से, जिनके शरीर रेशम से ढके होते हैं, सब बातें अधिक भली भाँति जानते हैं।"

फ़ोमा अपने विचारों में इतना बह चुका था कि यदि तारास अपनी

कुर्सी को मेज से हटा कर और खड़ा होकर उसे न टोकता, तो वह दिन भर बोलता रहता।

"बस, धन्यवाद, मेरे लिये यह काफ़ी है," उसने सांस तेजी से खींचते हुए कहा।

फ़ोमा ने अपने कन्धे हिलाये और ल्यूबा की ओर तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहट से देखा।

"यह फ़िलासफी तुमने कहाँ से सीखी ?" ल्यूबा ने अविश्वास और रूखेपन से पूछा।

"यह फ़िलासफी नहीं, अभिशाप है।" फ़ोमा ने सांस रोकते हुए कहा। "आँखें खोलकर अपने चारों तरफ देखो और ये विचार अपने आप तुम्हारी आँखों में काटने दौड़ेंगे।"

"प्रसंगवश ल्यूबा, क्या तुमने इस बात पर ध्यान दिया है कि निराशावाद ऐंग्लो-सैक्सन कौम के लिये बिल्कुल पराया है ?" तारास ने वहीं खड़े मेज की ओर पीठ किये दीवार की घड़ी की परीक्षा करते हुए कहा। "बायरन और स्विफ्ट का निराशावाद मनुष्य जाति और जीवन की अपूर्णताओं के बीच घोर प्रतिवाद मात्र है परन्तु शुद्ध, पृथक; तटस्थ निराशावाद अँगरेजों में नहीं पाया जाता ?" फिर जैसे कि अचानक उसे फ़ोमा की याद आ गई हो, वह उसकी ओर मुड़ा और अपने हाथों को पीठ के पीछे बाँध कर पिंडलियों के पट्ठों को हिलाता हुआ बोला :

"तुम एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न को उठा रहे हो। कुछ लोग इसे बचपन की बात बताते हैं। यदि तुम्हारी इधर गम्भीर रुचि है, तो तुम्हें किताबें पढ़नी चाहिये। किताबों में तुम्हें जीवन के उद्देश्य के बारे में अनेक बहुमूल्य विचार मिलेंगे। आप किताबें पढ़ते हैं ?"

"नहीं," फ़ोमा ने तुरन्त कहा। "मुझे वह पसन्द ही नहीं आ सकतीं।"

"परन्तु, पुस्तकें तुम्हारी थोड़ी बहुत सहायक हो सकती हैं," तारास ने हल्की हँसी में ओठों को छूते हुए कहा।

"यदि लोग ही मुझे सीधा सोचने में सहायता नहीं कर सकते, फिर पुस्तकें तो बिल्कुल ही नहीं कर सकतीं," फ़ोमा ने निराश भाव से कहा।

वह इस भावुकताशून्य सज्जन से बात करके थक चुका था। वह वहाँ से जाना चाहता था, परन्तु साथ ही उसी समय वह ल्यूबा से उसके भाई के बारे में कुछ अपमानजनक बातें कहना चाहता था। और इस आशा से वह प्रतीक्षा में बैठा रहा कि तारास कमरे से बाहर चला जायेगा। ल्यूबा चाय के प्याले धो रही थी। उसका चेहरा और हाथ तेजी से हिल रहे थे। तारास इधर-उधर कमरे में चीनी के बर्तनों की अलमारी के सामने जो चाँदी के बर्तनों से भरी हुई थी, धीरे धीरे सीटी बजाता, धीरे धीरे गिलास को अपनी उंगलियों से बजाते हुए, चीजों को देखते हुए, आँखें घुमाते हुए, कमरे में इधर से उधर घूम रहा था। एक दो बार ल्यूबा ने फ़ोमा की ओर असहमति और आशा पूर्ण नजर फेंकी जिसमें साफ़ इशारा था कि वह वहाँ से चला जाये तो उसे प्रसन्नता होगी।

"आज रात मैं यहीं बिताऊँगा," उसने एक मुस्कान से कहा। "मुझे धर्म-पिता जी से कुछ बातें करनी हैं। इसके अलावा वहाँ मेरे घर में बहुत अकेलापन है।"

"तो जा और मारफ़ूशा से कह दे कि वह तेरा बिस्तरा कोने के कमरे में लगा दे," ल्यूबा ने जल्दी में सलाह दी।

"बहुत अच्छा।"

वह खड़ा हुआ और कमरे के बाहर चला गया। परन्तु, जैसे ही वह बाहर गया उसने सुना कि तारास अपनी बहिन से धीमी आवाज़ में कुछ कह रहा है।

"मेरे बारे में," फ़ोमा ने सोचा। अचानक उसके दिमाग में एक बुरी बात सूझी : "क्यों न इन समझदार लोगों की बातचीत सुनी जाए।"

वह चुपचाप डाइनिंग रूम के बराबर वाले कमरे में चला गया। इसमें अँधेरा था, और प्रकाश की एकमात्र रेखा डाइनिंग रूम से मिलाने वाले दर-

वाज़े की झिरी से आ रही थी । फ़ोमा चुपचाप, साँस रोक कर दरवाजे के पास गया और खड़ा होकर सुनता रहा ।

"एक कठिन आचार वाला है", ताराम ने कहा ।

"यह बड़ा अभद्र और जंगली तरीके से जीवन गुज़ार रहा है", ल्यूबा ने हल्की आवाज में तेजी से कहा ।

"इसका व्यवहार और रवैया बड़ा असंगत और बेतुका है । यह अचानक ही शुरू हुआ : पहिले पहिल इसने वाइस गवर्नर के दामाद को पीटा। पिताजी ने अपवाद से बचने के लिये जमीन-आसमान एक कर दिये । खुश-किस्मती से, वह मनुष्य पहले ही बदनाम था । परन्तु इस सबके लिये पिताजी को दो हजार रूबल खर्च करने पड़े । और अभी जब पिताजी इस क़िस्से को खतम करने की कोशिश में थे, फ़ोमा ने एक पूरी पार्टी को वोल्गा में लगभग डुबा दिया ।"

"बड़ा अजब है । और साथ ही जीवन के उद्देश्य के बारे में ध्यान और विचार भी करता है !"

"एक दूसरे मौके पर यह अपने जैसे ही लोगों को नाव की सवारी के लिये ले गया । जब वे सब शराब के नशे में मस्त हो चुके थे, यह बोला: 'अब तुम सब अपनी अन्तिम प्रार्थनाएँ कर लो । मैं तुम सबको नदी में फेंकने वाला हूँ ।' वह बहुत ही बलवान् है । वे सब लोग चिल्लाने लगे, रोने लगे, और खुशामद मिन्नतें करने लगे । और यह बोला : 'मैं तुम सब कूड़ा करकट से मुक्ति देकर मातृभूमि की सेवा करना चाहता हूँ' ।"

"बहुत मखौलिया भी है ।"

"यह बहुत भयङ्कर है । यदि आपको वे सब बुरी-बुरी बातें पता हों, जो पिछले चन्द सालों में इसने की हैं और यह पता हो कि इसने कितना पैसा उड़ाया है !"

"यह तो बताओ : पिताजी किन शर्तों पर इसके कारोबार का प्रबन्ध कर रहे हैं ? तुझे पता है ?"

"नहीं, मुझे नहीं पता। परन्तु पिताजी के हाथ में ट्रस्ट के रूप में है। आप क्यों पूछते हो?"

"ओह, ऐसे ही···। यह अच्छा व्यवसाय है। इसमें सन्देह नहीं कि यह भद्दे पुराने रूसी तरीके से ही संगठित है, परन्तु व्यवसाय बहुत अच्छा है। यदि इसे ठीक तरीके से, जैसा चाहिये, किया जाये तो···।"

"फ़ोमा कुछ नहीं करता। सब कुछ पिताजी के हाथों में है।"

"यह बात?"

"कई बार मैं सोचती हूँ कि फ़ोमा के चिन्ता-मग्नता के दौरे और उसकी बातें, जो वह करता है, बहुत ईमानदारी की और सच्ची हैं। वह बहुत भला आदमी हो सकता है। परन्तु मैं उसके अभद्र जीवन से, जैसा कि गुजार रहा है और जैसी बातें करता है, कभी सुलह नहीं कर सकती।"

"और ना ही इसकी फिकर करने की जरूरत है। वह आलसी और अविकसित है और अपने आलस्य को छिपाने के लिये बहाने ढूँढ़ता है।"

"परन्तु कई मौकों पर वह—बिल्कुल बच्चों के समान बन जाता है।"

"बस, मैंने भी तो यही कहा—वह अविकसित है। एक जंगली अज्ञानी के बारे में, जो जंगली अज्ञानी ही रहना चाहता हो, फ़िकर करना, समय नष्ट करना है। तुमने सुना: वह सब बातों को ऐसे ही देखता है और परीक्षा करता है जैसे कि कहानी में भालू ने जुए को तोड़ा है।"

"आप बहुत कठोर हैं।"

"मैं हूँ। और लोगों को इसकी जरूरत है। हम सब रूसी लोग बड़े आराम-पसन्द हैं···। यह सौभाग्य की बात है कि जीवन ने अब ऐसा पलटा खाया है कि अब हमें अपनी रीढ़ को, चाहें या न चाहें, सीधा और सख्त बनाना ही होगा। नौजवान और कन्याएँ भले ही स्वप्न देखती रहें, परन्तु पुरुषों को गम्भीर काम ही करने हैं···।"

"कई बार, मैं फ़ोमा के लिये बहुत दुःखी हो जाती हूँ···। उसका पता नहीं क्या होगा?"

"कोई खास बात नहीं होगी, न अच्छी न बुरी··· । वह अपना सारा पैसा खतम कर लेगा और भिखमंगा हो जायेगा··· । बस करो, अब उसके बारे में; आजकल ऐसे लोग बहुत कम रह गये हैं । व्यापारी लोग अब शिक्षा की शक्ति समझने लगे हैं । और यह तुम्हारा धाय-भाई फ़ोमा, बरबाद हो जायेगा ।"

"बिल्कुल ठीक, श्रीमान् !" फ़ोमा ने दरवाजे से प्रगट होते हुए कहा। वह गुस्से में त्यौरी चढ़ाये, सफ़ेद हो रहा था । उसका मुंह ऐंठा जा रहा था। तारास की ओर कठोरता से देखता हुआ वह बोला : "बिल्कुल ठीक, मैं बरबाद हो जाऊँगा, 'एवमस्तु' । और, जितनी जल्दी हो जाऊँ उतना ही अच्छा ।"

ल्यूबा डर से उछल पड़ी और भाग कर तारास के पास दौड़ गई, जो शान्तिपूर्वक जेबों में हाथ डाले, कमरे के बीच में खड़ा था ।

"फ़ोमा !" वह दुःख से चिल्लाई : "ओह, फ़ोमा ! छिप कर सुनना! कितनी शर्म की बात है !"

"चुप कर, बकरी कहीं की ।"

"सच, लुक कर सुनना कोई–ई···अच्छी···बात···नहीं–ई", तारास ने फ़ोमा की ओर तिरस्कारपूर्वक देखते हुए कहा ।

"मैं क्या परवाह करता हूँ ?" फ़ोमा ने हाथ हिलाते हुए कहा: "इसमें मेरा क्या दोष, यदि किसी आदमी के पास लुक-छिप कर सच्चाई सुनने का ही एक रास्ता रह जाय ?"

"जाओ, फ़ोमा ! कृपया जाओ", ल्यूबा ने अपने भाई से सटते हुए कहा ।

"शायद तुम मुझसे भी कुछ कहना चाहते हो ?" तारास ने शान्त भाव से पूछा ।

"मैं ?" फ़ोमा ने विस्मय में कहा । "मुझे क्या कहना है ? कुछ नहीं, तुम हो और बस, आप सब कुछ कर सकते हैं ।"

"अच्छा ! तुम्हें मुझसे कुछ नहीं कहना ?" तारास ने फिर पूछा।

"कुछ नहीं।"

"मुझे प्रसन्नता है।"

और फ़ोमा से मुँह मोड़ कर उसने ल्यूबा से पूछा : "क्या पिताजी जल्दी लौट रहे हैं ?"

फ़ोमा ने क्षण भर तारास की ओर लगभग एक सम्मान के साथ देखा और चुपचाप बाहर निकल गया। वह अपने विशाल खाली घर में नहीं जाना चाहता था, जिसमें कदम-कदम पर प्रतिध्वनि होती थी, और इसलिये वह पतझड़ के पिछले भयानक मन्द प्रकाश से आवृत गली की ओर चल पड़ा। उसका दिमाग तारास मायाकिन के विचारों से भरा हुआ था।

"आदमी कठोर है। अपने बाप जैसा है, परन्तु चंचल नहीं। परन्तु शायद खेल खेलता है। और ल्यूबा सोचा करती थी कि वह संत है। बेवकूफ कहीं की। उसने क्या क्या बातें मेरे बारे में कही हैं ! योग्य जज है वह। मेरे प्रति दया भाव रखता है।" इन विचारों से न तो उसने तारास से घृणा और ना ही ल्यूबा को चाहना शुरू किया। उसके धर्मपिता के घोड़े दुलकी चाल में बराबर से गुजर रहे थे। फ़ोमा को याकोव मायाकिन की मुरझाई हुई शकल की झाँकी आई, परन्तु इससे भी उसने कुछ अनुभव नहीं किया। एक गलियों की बत्ती जलाने वाले ने जो उसके आगे-आगे चल रहा था लैम्प के खम्भे के साथ सीढ़ी लगाई जो अचानक फिसल पड़ी। बत्ती जलाने वाला दोनों हाथों से खम्भे से लटकने लगा और जोर-जोर से गालियाँ बकने लगा। एक नौजवान लड़की गुजरते हुए फ़ोमा से टकराई।

"ओह, मैं क्षमा चाहती हूँ", वह बोली।

फ़ोमा ने उसकी ओर बिना कुछ कहे निहारा। तुषार बुरी तरह पड रही थी। तुषार बिन्दुओं की सील से लैम्पें और दूकानों की खिड़कियाँ पिचकारी की हुई गर्द से ढक रही थीं, जो गले में जाकर सांस लेना मुश्किल कर रही थीं।

'क्या यभ्रोव की तरफ जाऊँ ?' फ़ोमा ने सोचा। 'हम मदिरापान करेंगे और रात गुजारेंगे।'

और, वह यभ्रोव के पास गया, यद्यपि उसकी इच्छा न शराब पीने की थी और न अपने मित्र से मिलने की।

यभ्रोव के कमरे में एक झबरा आदमी, जिसने ब्लाउज़ और भूरी पतलून पहिन रक्खी थी, कोच पर बैठा हुआ था। उसका चेहरा धुँए में पकाई हेरिंग-मछली के समान काला था। उसकी आँखों में नाराज़गी और ओठों पर मोटी-मोटी नुकीली मूँछें थीं। वह टाँगें समेटे सोफे पर बैठा था और अपनी भारी बाँहों को लातों से चिमटाये और घुटनों पर ठोढ़ी रक्खे हुए था। यभ्रोव एक आरामकुर्सी में एक पासे पर, कुर्सी की बाँहों पर टाँगें फैलाये बैठा था। मेज पर किताबों और कागजों के बीच वोदका की एक बोतल रखी थी तथा कमरा नमकीन मछली की बू से भरा हुआ था।

"तू क्यों भटक रहा है ?" यभ्रोव ने फ़ोमा से पूछा, और फिर सोफे पर बैठे आदमी की ओर सिर हिला कर बोला: "गोर्देयेव।"

"क्रास्नोश्चेकोव," एक किकियाती आवाज़ ने प्रत्युत्तर में कहा।

फ़ोमा सोफे के दूसरे किनारे पर बैठ गया।

"मैं यहाँ रात बिताने आया हूँ," फ़ोमा ने यभ्रोव को जगाया।

"बिल्कुल ठीक, वासिली ! आगे कहो।"

दूसरे मनुष्य ने आँखों के कोने से फ़ोमा की ओर निहारा और फिर चिचियाना शुरू किया।

"जैसा कि मैं देखता हूँ," वह बोला, "मूर्ख लोगों में घुमने में कोई अक्ल की बात नहीं जैसा कि तुम करते हो। मसानीयेलो मूर्ख था, परन्तु उसने वह काम अच्छी तरह किया जो उसे चाहिये था। विंकररीड भी शायद मूर्ख था, परन्तु यदि वह साम्राज्य की किरचों में न झपट पड़ता तो वह स्विस लोगों को हरा देता। ऐसे बहुत से मूर्ख होते हैं, परन्तु सचाई यह है कि, वे वीर बन जाते हैं और बुद्धिमान लोग कायर बन जाते हैं। जब सारी शक्ति से

आघात करने का समय आता है, वे सोच विचार में पड़ जाते हैं, आखिर नतीजा क्या होगा ? और यदि सारे प्रयत्न व्यर्थ जाँयें तो ? और वहाँ वे खम्बे की तरह खड़े रहते हैं जब तक बहुत देर नहीं हो जाती। वह अपने सिर से दीवार में टक्कर मार देता है। और अगर वह सिर तोड़ ले तो क्या ? बैल का सिर सस्ता होता है, और यदि वह दिवाल में थोड़ी सी तरेड़ डाल दे तो चालाक लोग आगे बढ़ आते हैं, इसे चौड़ा कर देते हैं, इसमें गुजर कर सारा श्रेय अपने सिर पर ले लेते हैं। नहीं, निकोलाई मात्वेइविच ! तुम गलती पर हो; वीरता दिमाग के बिना भी बहुत अच्छी चीज है।"

"तुम फिजूल बात कह रहे हो, वासिली," यभ्कोव ने उसकी तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"मैं मानता हूँ," वासिली ने सहमति प्रगट की। हाथ से कते खद्दर में मैं पारलर में कैसे घुस सकता हूँ, परन्तु फिर भी, मै अन्धा नहीं हूँ। मैं देख रहा हूँ कि बहुत से दिमाग वाले हैं, परन्तु उनसे भलाई कम निकलती है।"

"अभी मत जाओ", यभ्कोव ने कहा।

"मुझे जाना है। मैं आज रात ड्यूटी पर हूँ—अभी मुझे वैसे ही देर हो गई है। यदि बुरा न मानो तो मैं कल आऊँगा।"

"जरूर आओ। और मैं तुम्हारी कुट्टी बना दूँगा।"

"तुम्हारा काम ही यह है।"

वासिली ने धीरे-धीरे अपने शरीर को ताना, सोफे से उठा और यभ्कोव के पतले, पीले हाथों को अपने बड़े भूरे हाथों में लिया।

"नमस्कार।"

उसने फ़ोमा की ओर सिर हिलाया और एक ओर से दूसरी ओर असन्तुलन के साथ दरवाजे की ओर चला गया।

"तुम्हें यह कैसा पसन्द आया ?" उस दिशा में संकेत करते हुए जिधर से कोरीडोर में भारी कदमों की आवाज आ रही थी, यभ्कोव ने पूछा :

"वासिली क्रास्नोश्चेकोव, मेकेनिक का सहायक। तुम इसे अपना उदाहरण बना सकते हो—वह पन्द्रह वर्ष का था, जब उसने पढ़ना-लिखना

सीखा, और अब वह अट्ठाईस वर्ष का है। उसने कितनी किताबें पढ़ी हैं, जिसका मुझे पता नहीं और वह दो भाषायें जानता है। वह विदेश भी जा रहा है।"

"किसलिये ?" फ़ोमा ने पूछा।

"अध्ययन और अवलोकन के लिये कि दूसरे लोग कैसे रहते हैं। और तुम सब जगह लम्बा चेहरा लटकाये घूमते रहते हो।"

"जो कुछ उसने मूर्खों के बारे में कहा है बिल्कुल ठीक है", फ़ोमा ने कहा।

"मैं नहीं कह सकता क्योंकि मैं अपने आप बेवकूफ नहीं।"

"बुद्धिहीनों को जल्दी हरकत करनी पड़ती है—चीजों से टकराना, उन्हें छेड़ना पड़ता है।"

"फिर वही बात चल पड़ी ! आओ, दूसरे विषयों पर बात करें। मुझे बताओ, क्या सच है कि मायाकिन का लड़का वापिस आ गया है ?"

"हाँ, इससे क्या ?"

"कोई खास बात नहीं।"

"तुम्हारे चेहरे से मैं देख सकता हूँ कि कुछ बात है जरूर।"

"मैं उसके लड़के को जानता हूँ। मैंने उसके बारे में सब सुन रखा है। क्या वह बाप जैसा ही है ?"

"कुछ अधिक मोटा, और अधिक गम्भीर। परन्तु वैसा ही भावना-रहित।"

"ध्यान रखो दोस्त, नहीं तो वे तुम्हें तुम्हारे जानने से पहले निगल जायेंगे। उस तारास ने यक़तरीनबर्ग में अपने श्वसुर के काम को हड़प लिया है।"

"अगर वह चाहें तो मुझे भी निगल जायें, मैं उन्हें इसके लिये धन्यवाद ही दूँगा।"

"वही पुराना राग। सो तुम अपनी आजादी चाहते हो, क्यों ? किसलिये ? इससे क्या करोगे ? तुम किसी काम के लायक नहीं हो। अगर

अब मैं होता…" यश्रोव अपने पाँव पर उछला और फ़ोमा के सामने खड़ा होकर ऊँची आवाज में बकवास करने लगा : "अगर मैं वोदका को पीने और रोटी खाने की आवश्यकता से अपने को मुक्त कर सकता तो मैं अपनी दुखी आत्मा के अवशेषों को इकट्ठा करके अपने दिल के खून से अपने समाज के प्रतिष्ठित वर्ग पर थूक देता। परमात्मा उन्हें सदा के लिये नरक दे! और मैं उनसे कहता : 'बेशर्मो, तुम जो हमारे देश के निचोड़ हो, जिनकी सत्ता सदियों रूसी पुश्तों के खून और आँसू से वर्तमान रूप में आई है—तुम्हारा बुरा हो। तुम जूँ हो। देश ने तुम्हारे ऊपर इतना खर्च किया है! और तुम उसके लिये क्या कर रहे हो? क्या तुम अतीत के आँसुओं को मोतियों में बदलना चाहते हो? तुमने जीवन को उत्तम बनाने के लिये क्या कुछ किया? तुमने कभी भी कोई लायक काम किया है? तुम हमेशा हारे हो! और अब तुम क्या कर रहे हो? और, अब तुम अपनी मखौल करवा रहे हो'।" उसने गुस्से में अपने पाँव पटके, दाँत भींचे और फ़ोमा की ओर ऐसी आँखों से देखने लगा जो क्रुद्ध पशु की तरह चमक रही थीं। "मैं उनसे कहूँगा : 'तुम अपना समय वृथा बकवास और चापलूसी में खर्च करते हो, परन्तु तुममें दिमाग और शक्ति कम है। तुम कायर हो। तुम्हारे दिल पंखों के बिस्तर के समान आचार-शास्त्र और सद्भवनाओं से भरे हुए हैं—जो रचनात्मक आत्मा की सुख निद्रा के लिये बहुत आरामदेह बिस्तर है। और, फिर उसे पीटने की बजाय वे भूसे की तरह हिलाते हैं'। मैं अपनी उङ्गलियाँ अपने हृदय के खून में डुबो कर उनकी भौंहों पर लिखूँगा और वह शिक्षित वर्ग अपनी निर्बल आत्मा, घृणित आत्म परायणता का कष्ट उठायेगा—ओह, वे कैसे पीड़ित होंगे! मेरा चाबुक भारी होगा और मेरा हाथ मजबूत तथा मेरा प्रेम उनको बचाने के लिये बहुत गम्भीर होगा। अभी वे पीड़ित नहीं, क्योंकि वे अपने कष्टों के बारे में बहुत अधिक और बहुत ऊँचा शोर-शराबा करते हैं, वे झूठ बोलते हैं। सच्ची यातना मूकता में होती है; सच्चा आवेश सीमा नहीं जानता। आवेग! क्या कभी मनुष्य का हृदय फिर जानेगा कि आवेश क्या होता है? क्या हम सबका दुर्भाग्य है कि हम आवेग-रहित हैं?"

उसका सांस टूट गया और वह खांसने लगा। वह देर तक खांसता रहा, कमरे में इधर-उधर चक्कर काटता रहा और पागल की तरह अपनी बाँहें हिलाता रहा। जब वह फ़ोमा के सामने आकर रुका उसका चेहरा सफेद पड़ चुका था, उसकी आँखों में खून उतर आया था। उसका साँस तेज चल रहा था, और उसके ओठ इस भाँति हिल रहे थे कि उसके छोटे-छोटे नुकीले दाँत दिखाई दे रहे थे। अपने कटे सब तरफ ऊपर को खड़े सीले छोटे बालों से वह पानी से बाहर पड़ी मछली की तरह दिखलाई दे रहा था। फ़ोमा ने उसे कई बार इस हालत में देखा था और इस बार भी जैसा कि हमेशा पहले वह उसके आवेग में पकड़ा गया, वह चुपचाप इस छोटे से आदमी के निन्दापूर्ण वाक्यों को सुनता रहा और उनके अर्थ को समझने की कि वे किसके खिलाफ कहे जा रहे हैं, कोशिश नहीं कर रहा था। और यझोव की उड़ेली हुई शक्ति को सिर्फ सुखा रहा था। यझोव के शब्द उस पर गरम पानी की तरह उसकी आत्मा को गरम करते हुए गिर रहे थे।

"मैं अपनी शक्ति जानता हूँ," यझोव कहता गया, "वे लोग मुझ पर चिल्लाते हैं कि, मैं अपनी जबान बन्द रक्खूं। वे मुझसे परे परे भागते हैं। और यह वे बड़ी शक्ति, बड़ी बुद्धिमानी से, बड़ी ऊँचाई से मुझे नीचे देखते हुए करते हैं। मैं जानता हूँ कि मैं एक छोटा सा पंछी हूँ—ओह, मैं बुलबुल नहीं! उनके मुकाबले में मैं मूर्ख हूँ। मैं सिर्फ फीचर-लेखक हूँ जिसके जीवन का उद्देश्य जनता का विनोद करना है, परन्तु उन्हें मुझ पर चिल्लाने दो, मुझे दूर-दूर भगाने दो! मैं चेहरे पर उनकी चपत स्वीकार करता हूँ, परन्तु मेरा हृदय धड़कता जायेगा। और मैं उनसे कहूँगा : 'हाँ, मैं मूर्ख हूँ परन्तु तुमसे एक बात में ज्यादा हूँ कि मेरे पास एक भी पुस्तक के रूप में छपा सच नहीं जो मनुष्य से ज्यादा कीमती या मंहगा हो। मनुष्य विश्व है, और उसकी ही सदा स्तुति होनी चाहिये, क्योंकि उसमें ही सम्पूर्ण विश्व है। परन्तु तुम? शब्दों के लिये—जिनके अर्थ तुम नहीं जानते, केवल मात्र शब्दों के लिये तुम एक दूसरे को चोटें मारते हो, घाव करते हो—केवल मात्र शब्दों के लिये तुम एक दूसरे और अपनी तिल्ली पर हवा लगाते हो और अपनी आत्मा के प्रति हिंसा करते हो।

तुम इस सबका बहुत मंहगा दाम अदा करोगे, मेरे शब्दों को ध्यान में रक्खो। एक तूफान घिर कर आयेगा और तुम्हें इस पृथ्वी-तल से ऐसे धो देगा जैसे शाखाओं से गर्द को वारिश धो देती है। मनुष्य की भाषा में केवल मात्र एक ही शब्द है जो समझा और पसन्द किया जाता है, और यह शब्द है: 'स्वतन्त्रता'।"

"बिल्कुल ठीक, यही उनके लिये चाहिये," फ़ोमा सोफे से उछलता हुआ और यभ्भोव को कमर से पकड़ता हुआ बोला। उसने जलती हुई आँखों से यभ्भोव के चेहरे में झांका और जब वह यह कह रहा था, उसकी आवाज में कटुता और पीड़ा थी: "बिचारे निकोलाई, मुझे तुम पर कितनी दया आ रही है! मैं बता नहीं सकता कि मुझे तुम्हारे लिये कितना दुख है!"

"क्या है? ओह, नहीं!" यभ्भोव ने फ़ोमा की भावनाओं के अप्रत्याशित प्रदर्शन और अजब शब्दों से विक्षुब्ध होकर उसे परे धकेलते हुए कहा।

"आह, भाई," फ़ोमा ने स्वर नीचा कर कहा जिससे उसकी आवाज और अधिक सच्ची और सम्पन्न बन गई। "तुम एक प्रज्वलित आत्मा हो। कितना बुरा होगा, यदि तुम्हारे प्रयत्न व्यर्थ हो जायेंगे।"

"क्या? व्यर्थ! ये झूँठ है!"

"प्यारे साथी, तुम अपने दिल की किसी को नहीं कहते। कोई कहने के लिये है भी नहीं। तुम्हें कौन सुनेगा? मेरे अलावा और कोई नहीं।"

"जाओ जहन्नुम में!" यभ्भोव ने कांटे की चुभन की तरह उभलते हुए दुष्टता से कहा।

परन्तु फ़ोमा ने दर्द-भरी आवाज़ में उस पर दबाब डालते हुए पूछा:

"तुम मुझे बताओ, मैं तुम्हारा सन्देश जहाँ जरूरी होगा, ले जाऊँगा। मैं इसे समझता हूँ। और ओह! मैं मनुष्य की आत्मा को इससे झुलसा दूँगा। तुम जरा ठहरो! मेरा भी समय आयेगा!"

"परे हटो!' यभ्भोव उन्माद में चिल्लाया, जहाँ वह खड़ा हुआ था दीवार से सटा, कुचला और क्रुद्ध और अपनी बांह को, जिसे फ़ोमा ने पकड़ रखा था, हिलाता हुआ खड़ा था। इसी क्षण दरवाजा खुला, वहाँ एक औरत काले कपड़ों में गुस्से में तनी खड़ी थी। उसका चेहरा रूमाल में बँधा हुआ था।

"निकोलाई मात्वेइविच !" वह सिर को पीछे फेंक और यभोव की ओर हाथ बढ़ा सशब्द सांस और सीटी में बोली : "बस, बहुत होली, माफ़ करो। शोर-शराबा, लड़ाई-झगड़ा, हर रोज मेहमान। तुम पुलिस की नजरों में भी आ रहे हो, मेरी सहनशीलता की अब हद हो गई है। मैं परेशान हो गई हूँ। तुम्हें कल यहाँ से मकान छोड़कर जाना होगा। तुम रेगिस्तान में नहीं रह रहे, जानते हो। चारों तरफ लोग हैं। वे भी शान्ति से चुपचाप रहना चाहते हैं। और, मेरे दाँत में दर्द है। बस, कृपया कल।" वह बड़ी तेजी से बोल रही थी और उसके बहुत से शब्द सांस और सीटी में डूब रहे थे, जिन्हें वह बहुत चिल्लाकर कह रही थी। वही सुनाई पड़ रहे थे। रूमालों के छोर उसके सिर पर छोटे छोटे सींगों की तरह खड़े थे जो उसके बोलने से हिल रहे थे। अपने गुस्से में वह सब प्रकार से ऐसी परिहासपूर्ण दिख रही थी कि फ़ोमा फिर सोफे में गिर पड़ा। यभोव ही अकेला जहाँ का तहाँ खड़ा था, अपनी भौंहें पोंछ रहा था और उसके कहे को समझने की कोशिश कर रहा था।

"बस, यह बात है !" वह चिल्लाई ; और एक बार फिर दरवाजे के पीछे से : "कल, भूलना मत। कितनी शरम की बात है !"

"जा जहन्नुम में !" यभोव दरवाजे की ओर घूरते हुए गुनगुनाया।

"यह बड़ी कठोर है", फ़ोमा ने कुछ आश्चर्य से कहा।

यभोव ने अपने कन्धों को कुबड़ा किया और मेज के पास जाकर आधा गिलास वोदका का भरा। जब वह इसे पी चुका, वह कुर्सी में एक ढेर की तरह डूब गया। एक-दो मिनट तक दोनों में से कोई भी कुछ नहीं बोला।

अन्त में फ़ोमा डरता हुआ बोला। "यह सब बिलकुल अचानक हुआ। हमें सांस लेने का भी मौका नहीं मिला और जबान ऐसी मानो चाबुक !"

"जहाँ तक तुम हो", यभोव ने फ़ोमा पर जंगली नज़र फेंकते हुए, सांस रोक कर कहा : "तुम चुप हो जाओ। लेट जाओ और सो जाओ ! जहन्नुम। राक्षस···डराने वाला कहीं का···।"

उसने अपना मुक्का फ़ोमा की ओर हिलाया और एक गिलास वोदका का भरा और पी गया।

कुछ मिनटों बाद फ़ोमा कपड़े उतार कर सोफे पर लेट गया और आधी मुँदी आँखों से यभ्कोव की तरफ देखने लगा। यभ्कोव अभी भी मेज पर एक ढेर की तरह बैठा था और दरवाजे की ओर ओठ हिलाता हुआ घूर रहा था। फ़ोमा की समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसके प्रति नाराज क्यों हो रहा है। शायद इसलिये कि मकान मालकिन ने उसे घर से बाहर निकाल दिया है? परन्तु यह शोर-शरावा किया यभ्कोव ने ही था।

"ओ! शैतान", यभ्कोव दाँत पीसते हुए गुनगुनाया।

फ़ोमा ने तकिये के सहारे अपना सिर उठाया। और यभ्कोव बड़े जोर से एक सांस भर कर फिर बोतल की ओर पहुंचा।

"चलो, होटल चलें", फ़ोमा ने धीरे से सुझाया: "अभी भी बहुत देर नहीं!"

यभ्कोव ने उसकी ओर देखा और अजब तरीके से हँसा: फिर उसने बड़ी तेजी से अपना सिर रगड़ा और खड़ा हो गया।

"अपने कपड़े पहनो और चलो!" वह तेजी से बोला और फ़ोमा को धीरे-धीरे कपड़े पहनते देख फिर बोला: "जल्दी करो, सुस्त कहीं का? कहीं बात से फिरना तो नहीं चाहता।"

"गालियों की जरूरत नहीं", फ़ोमा ने सान्त्वना के ढङ्ग से मुस्कराते हुए कहा: "क्या यह उचित है कि हम इसलिये लड़ें क्योंकि घघरी मुँह से फट पड़ी है?"

यभ्कोव ने उसकी ओर देखा, थूका और जोर से हँसी में फूट पड़ा।

१३.
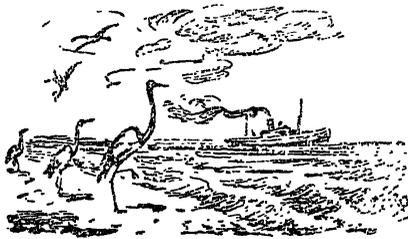
"सब आगए···ए ?" इल्या यफ़िमोविच कनोनोव ने अपने नये स्टीम बोट के अगले भाग से जहाँ वह खड़ा था, अपने चारों तरफ एकत्रित खड़े अतिथियों की ओर चमकती हुई नज़र से देखते हुए पूछा : "दिखलाई देता है, सब आ लिये।" फिर अपना प्रसन्न लाल चेहरा उठाकर पुल पर खड़े हुए कैप्टिन को आवाज दी :

"पेत्रूखा ! चलाओ !"

"हाँ हाँ !"

केप्टिन ने अपने गंजे सिर को नंगा किया और छाती पर क्रॉस का निशान बनाया जिसके बाद उसने आसमान की ओर मुँह उठाया और अपनी चौड़ी दाढ़ी पर हाथ फेरा।

"पीछे को ! धीरे, धीरे !" उसने कमाण्ड किया।

केप्टिन की नकल में अतिथियों ने भी अपनी छाती पर क्रॉस के निशान बनाये, अपनी टोपियाँ और सिल्क के हैट उतारे, जो हवा में काले पक्षियों की तरह चमके।

"तेरे आशीर्वाद, से, हे प्रभु !" कोनोनोव ने श्रद्धा भाव से कहा।

"पीछे के रस्सों को हटाओ ! घनी भाप से आगे !" केप्टिन ने आर्डर दिया—एक बड़े कम्पन के साथ जिससे 'इल्या मुरोमेत्स' का सारा विशाल ढाँचा हिल पड़ा और उसने घाट पर सफेद भाप का बादल फैला दिया और फिर वह हंस की तरह सुन्दर चाल से नदी के ऊपर चल पड़ा।

"यह चला," व्यापारिक सलाहकार रेभ्फ़निकोव ने, जो एक लम्बा, पतला, सुन्दर पुरुष था, कहा : "जरा भी नहीं डगमगाया ! मानो कि कोई लड़की नाचने के लिये जा रही है।"

"एक विशाल भारी जहाज," चेचक के दाग़ और झुके कन्धे वाले त्रोफ़िम जुयोव—जो गिरजे का बड़ा चंदा उघाने वाला और शहर का सबसे बड़ा सूदखोर था, सांस भरते हुए बोला।

वह दिन पीला और भूरा सा था। आकाश पतझड़ के बादलों में छिपा हुआ था जिसके प्रतिक्षेप से नदी का रंग ठण्डे सीसे के रंग सा दिखाई दे रहा था। इस मन्द पृष्ठ-भित्ति के पीछे ताजा रंग रोगन किया स्टीम बोट अपने चमकीले रंगों को छलका रहा था और अपने सांस के काले बादलों को पीछे फेंकता जा रहा था। बोट अपनी गुलाबी किनारी और चमकीले लाल पैडल-पहियों और गोल पोर्टहोलों सहित बड़ी प्रसन्नता और सन्तोषपूर्ण मुस्कान फेंक रहा था—जब कि वह ठण्डे जल की लहरों को आसानी से काटता हुआ उन्हें नदी तट की ओर बहाता जा रहा था।

"योग्य मित्रो," कोनोनोव ने अपना हैट उतारते हुए और अतिथियों को झुक कर अभिवादन करते हुए कहा। "अब क्योंकि हम, जैसा कि कहना चाहिये, जो परमात्मा का है वह परमात्मा को समर्पित कर चुके हैं, आईये बैण्ड की सहायता से सीज़र का सीज़र को सौंप दें।"

और अतिथियों के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने अपना हाथ मुँह पर रखा और बुलाया : "बैण्ड मास्टर ! ज़ार का गीत !"

मिलिट्री बैण्ड बजने लगा।

व्यापारी-बैंक के संचालक मकारबोब्रोव, ने बड़ी आनन्दप्रद मन्द ध्वनि में गाना शुरू किया, जबकि उसकी उँगलियाँ उसके विशाल पेट पर थपथपा रही थीं।

ज़ार का अभिवादन—हमारे रूसी ज़ार······त्रा-ला-ला : बूम बूम।

"और अब मित्रो ! मेज पर ! कृपया, इस विनम्र-भोजन का स्वाद

लीजिये । कृपा कीजिये !" कोनोनोव अतिथियों के झुण्ड में से गुजरता हुआ कहता गया ।

वे लगभग तीस थे, जो सब ठोस प्रमुख और व्यापारी वर्ग के अगुआ थे । इनमें से जो पुराने थे वे गन्जे और धौले थे—उन्होंने पुराने ढर्रे के फ्राक-कोट टोपियाँ और बोतल की शकल के बूट पहने हुए थे । पुराने व्यापारियों के प्रतिनिधि बहुत नहीं थे । उनकी अपेक्षा सिल्क हैटों, पेटेन्ट लैदर के बूटों और फेशनेबल कट वाले बहुत अधिक थे । ये सब लोग जहाज के अगले हिस्से में खड़े थे परन्तु कोनोनोव की प्रार्थना पर वे धीरे धीरे पिछले हिस्से की तरफ रिटायर होते गये, जहाँ एक चन्दोवे के नीचे भोजन की मेजें सजाई हुई थीं । लुप रेभ्फनिकोव मायाकिन की बांह को पकड़े था और उसे ले जाता हुआ कानाफूसी कर रहा था, जिससे मायाकिन के ओठों पर हलकी मुस्कान आ रही थी । फ़ोमा को, जिसे उसके धर्मपिता ने इस समारोह में शामिल होने के लिये बहुत जोर दिया था, इन लोगों के बीच—जिन्हें हो घृणा करना था एक भी साथी नहीं मिला, और इसलिये वह—पीला और नाराज—अकेला ही रहा। यभ्फोव के साथ दो दिन के भारी मदिरापान के बाद उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था । वह इस उच्च प्रतिष्ठित समाज में बहुत बेचैन और भद्दा अनुभव कर रहा था और बैण्ड, भीड़ और इञ्जन के शोर शराबे इत्यादि सबसे वह आपे से बाहर हो रहा था ।

उसकी प्रबल अदम्य इच्छा हुई कि वह मदहोश हो जाये । उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसका धर्मपिता आज उसके प्रति क्यों इतना प्रसन्न था, और वह उसे शहर के इन प्रतिष्ठित नागरिकों के बीच क्यों लाया था । और उसने कोनोनोव के समर्पण-संस्कार और भोजन में सम्मिलित होने की क्यों इतनी प्रेरणा—और यहाँ तक कि प्रार्थना, की थी ?

फ़ोमा समर्पण-संस्कार के बीच में जहाज पर पहुँचा और एक तरफ खड़ा हो गया । वहाँ से वह व्यापारियों के सब संस्कारों को देख सकता था ।

रहे थे और सभ्यतापूर्वक आहें भर रहे थे और पादरी के चारों तरफ एक एक ठोस अभेद्य काली दीवार के रूप में खड़े झुक रहे थे और छाती पर क्रॉस के चिह्न बना रहे थे।

"सब पाखण्डी हैं!" फ़ोमा ने उस क्षण जबकि कुबड़ी पीठ वाला, काना अवलिन गुश्चिन (जिसने अभी हाल अपने पागल भाई के बच्चों को गली में भीख मांगने के लिये खदेड़ दिया था।) डरावने आकाश की ओर एक आंख उठा कर भरे दिल से गुनगुना रहा था : 'प्यारे प्रभु! तेरा कोप मुझ पर न गिरे ना ही तेरा सच्चा क्रोध… "

फ़ोमा देख रहा था कि यह व्यक्ति परमात्मा की दया के लिये बड़े गहरे अविचलित विश्वास से प्रार्थना कर रहा था।

"हे प्रभु, हमारे पिताओं के परमात्मा, जिसने नोआह—अपने, सेवक को हुक्म दिया, मनुष्य जाति की रक्षा के लिये आर्क बनाने का……" पादरी ने गहरी मन्द ध्वनि में उच्चारण किया, और उसने अपनी बांह उठा कर आकाश की ओर नज़र उठाते हुए फिर उच्चारण किया: "इस नाव की भी रक्षा कर, अपने रक्षक देवदूतों को इसकी रक्षा के लिये भेज……जो इस पर यात्रा करें उनकी भी रक्षा कर…… "

सब व्यापारियों ने क्रॉस के लिये अपनी बांहें एक साथ छाती पर योग के चिह्न में हिलाईं और उन सबके चेहरों पर एक ही भाव था—प्रार्थना की शक्ति में विश्वास का भाव…।

फ़ोमा इससे बहुत अधिक प्रभावित हो गया और आश्चर्य करने लगा कि ये लोग जो परमात्मा की दया में इतना दृढ़ विश्वास रखते हैं, मनुष्य के प्रति क्यों कर इतने हृदय-शून्य और कठोर हो सकते हैं।

वह उनकी अभेद्य, कठोर योग्यता, उनके आत्मविश्वास, उनके धूर्त चेहरों, उनकी ऊंची आवाजों और उनके हास परिहास से उत्तेजित हो गया। अब वे सब मेजों पर बैठ चुके थे और एक बड़ी पंचपाली मछली, जिसके चारों तरफ बड़े बड़े हरे केंकड़ों की गोट लगी हुई थी, निहारते हुए जिह्वा रस का

रहे थे और सभ्यतापूर्वक आहें भर रहे थे और पादरी के चारों तरफ एक एक ठोस अभेद्य काली दीवार के रूप में खड़े झुक रहे थे और छाती पर क्रॉस के चिह्न बना रहे थे ।

"सब पाखण्डी हैं !" फ़ोमा ने उस क्षण जबकि कुबड़ी पीठ वाला, काना एवलिन गुश्चिन (जिसने अभी हाल अपने पागल भाई के बच्चों को गली में भीख मांगने के लिये खदेड़ दिया था ।) डरावने आकाश की ओर एक आंख उठा कर भरे दिल से गुनगुना रहा था : 'प्यारे प्रभु ! तेरा कोप मुझ पर न गिरे ना ही तेरा सच्चा क्रोध··· "

फ़ोमा देख रहा था कि यह व्यक्ति परमात्मा की दया के लिये बड़े गहरे अविचलित विश्वास से प्रार्थना कर रहा था ।

"हे प्रभु, हमारे पिताओं के परमात्मा, जिसने नोआह–अपने, सेवक को हुक्म दिया, मनुष्य जाति की रक्षा के लिये आर्क बनाने का······" पादरी ने गहरी मन्द ध्वनि में उच्चारण किया, और उसने अपनी बांह उठा कर आकाश की ओर नज़र उठाते हुए फिर उच्चारण किया : "इस नाव की भी रक्षा कर, अपने रक्षक देवदूतों को इसकी रक्षा के लिये भेज······जो इस पर यात्रा करें उनकी भी रक्षा कर······ "

सब व्यापारियों ने क्रॉस के लिये अपनी बांहें एक साथ छाती पर योग के चिह्न में हिलाई और उन सबके चेहरों पर एक ही भाव था–प्रार्थना की शक्ति में विश्वास का भाव··· ।

फ़ोमा इससे बहुत अधिक प्रभावित हो गया और आश्चर्य करने लगा कि ये लोग जो परमात्मा की दया में इतना दृढ़ विश्वास रखते हैं, मनुष्य के प्रति क्यों कर इतने हृदय-शून्य और कठोर हो सकते हैं ।

वह उनकी अभेद्य, कठोर योग्यता, उनके आत्मविश्वास, उनके घूरते चेहरों, उनकी ऊँची आवाजों और उनके हास परिहास से उत्तेजित हो गया। अब वे सब मेजों पर बैठ चुके थे और एक बड़ी पंचपाली मछली, जिसके चारों तरफ बड़े बड़े हरे केंकड़ों की गोट लगी हुई थी, निहारते हुए जिह्वा रस का

आनन्द ले रहे थे। ओफ़िम जुबोव की आँखें इसे देखते ही चकाचौंध हो गई जबकि वह अपनी गर्दन में नैप्किन बांध रहा था।

"जरा इसे देखो, इयोन निकोफ़ोरोविच," उसने अपने दाईं ओर बैठे एक मिल-मालिक से घरघराकर कहा। "सचमुच व्हेल है। तुम्हें निगलने के लिये काफी बड़ी है। तुम इसमें बूट में लात की तरह बिल्कुल ठीक बैठोगे, ऐह? हे—है—हे।"

छोटे से गोल पेट वाले इओन ने अपनी छोटी बाँह ताजी कैवियर से भरे प्याले को उठाने के लिये बढ़ाई और अपने ओठों को पोंछता हुआ सामने रखी बोतलों की ओर सावधानी से नजर डालता रहा, ताकि उनमें से कोई गिर न जाय।

कोनोनोव के बराबर में एक लकड़ी की तिपाई खड़ी थी, जिस पर पुरानी वोदका का भड़ोला रखा हुआ था, जिसे पोलेण्ड से मँगाया गया था। एक चाँदी की कलईदार बड़ी सीप जैसे बर्तन में घोंघे सजाये हुए थे परन्तु भोजन की मुख्य वस्तु रगीन पेस्ट थी जो एक मीनार के रूप में ढाली हुई थी।

"खाइये सज्जनो, खाइये," कोनोनोव बोला। "सब चीजें आपके सामने हैं, जिस चीज पर दिल करे, खाइये। हमारी मातृभूमि के, बढ़िया पुराने रूसी भोजन और विदेशी भी, सब एक साथ हैं। जैसा मेरी समझ में आता है, यही अच्छा तरीका है। जो चाहे खाइए? घोंघे? केंकड़े? कहते हैं कि ये सीधे-हिन्दुस्तान से आये हैं।"

जुबोव अपने पड़ौसी मायाकिन से कह रहा था:

"जो प्रार्थना पादरी ने पढ़ी है वह नदी के जहाज या खींचने वाले बोट के तैराने के अवसर के लिये उचित नहीं। यह नहीं कि यह उचित नहीं, परन्तु यह अपर्याप्त है। नदी का जहाज जिस पर मल्लाह दिन प्रति दिन रहते हैं, एक घर के समान है। इसके अनुसार गृह-समर्पण संस्कार की प्रार्थना भी इस प्रार्थना के साथ जोड़ी जानी चाहिये थी। आप क्या पीयेंगे? मैं शराब का शौकीन नहीं। मेरे लिये गिलास में वोदका डालिये," मायाकिन बोला।

फ़ोमा ने, मेज के अन्त में जहाँ साधारण अतिथि बैठे हुए थे, अपने धर्मपिता की नज़र को अनुभव किया।

"वह डरता है कि मैं कोई नज़ारा खड़ा न कर दूँ," उसने सोचा।

"भाइयो !" यश्चुरोव नामक एक मोटे पेट वाले स्टीम बोटों के मालिक ने खड़खड़ाती आवाज में कहा। "मैं बहुला के बग़ैर नहीं रह सकता। मैं बहुला से ही शुरू करता हूँ। यह मेरा स्वभाव बन गया है !"

"संगीत ! 'पर्शियन मार्च' चलने दो।"

"ठहरो ! 'ज़ार का उदय' चलाओ।"

"बहुत अच्छा ! 'जार का उदय' बजाओ"

इञ्जनों की सी सी, पेडल-पहियों का शब्द बैण्ड के संगीत से मिलता हुआ बहुत कुछ बर्फ़ानी तूफान के भयं र संगीत के समान प्रतीत हो रहा था। बांसुरी सीटी सी बजा रही थी। नफीरी कूक रही थी। पीतल का बैंण्ड बाजा गुर्रा रहा था। छोटा सा ढोल टं-टं-टं की आवाज निकाल रहा था, बड़ा ढोल ढमढमा रहा था और ये सब ध्वनियाँ पैडल-पहियों की अनवरत छिटकारों की ध्वनि के साथ हवा में एक दूसरे के साथ भगदड़ मचाकर जहाज के बराबर से एक तूफान की तरह दौड़ रही थीं, जिसके कारण लोग अपनी आवाज सुनाने के लिये चिल्ला कर बोल रहे थे। कभी कभी भाप छोड़ने के लिये इञ्जिन हिसकार करता, और इस ध्वनि में व्यथा, और घृणा मिश्रित चिल्लाहट, गर्जना और चींचीं की ध्वनियों की अव्यवस्था के बीच बीच में एक प्रकार की धमक हो रही थी।

"मैं तुम्हें इस बात के लिये क़ब्र तक भी माफ नहीं करूंगा कि तुमने मेरे प्रोमिज़री-नोट को अस्वीकार कर दिया," कोई ग़ुस्से में चिल्लाया।

"रहने भी दो ! क्या यह हिसाब किताब का समय है ?" बब्रोव की गहरी आवाज आई।

"सज्जनो, भाषण होना चाहिये।"

"संगीत ! चुप !"

"तू मुझसे बैंक में आकर मिलना और मैं तुझे समझा दूँगा कि मैंने, क्यों इन्कार किया था।"

"भाषण ! चुप हो जाओ।"

"संगीत बन्द करो...ओ !"

"'प्रमोदी विधवा'।"

"'मैदम अंगो' !"*

"नहीं, नहीं। भाषण दो ! याकोव तरासोविच !"

"इसे 'स्त्रासबर्ग पुडिंग' कहते हैं।"

"एक भाषण हो, भाषण !"

"पुडिंग ! ऐसी दिखती तो नहीं ; परन्तु, फिर भी चखते हैं...।

"मायाकिन ! भाषण शुरू करो... ।"

"बहुत आनन्द है, कहना पड़ेगा --! परमात्मा जानता है, बड़ा आनन्द आ रहा है... ।"

"और 'सुन्दरी हैलन' में प्यारे, वह स्टेज पर लगभग नंगी आती है... ।" रोब्रुस्तोव की नाक से पतली आवाज आई।

"अच्छा, जैकोव ने इसाव को धोका दिया, सच है। आ हा !"

"मायाकिन आओ, नखरे मत करो।"

"सज्जनो, चुप हो जाइये ! तरासोविच मायाकिन भाषण दे रहे हैं।"

इसके बाद निस्तब्धता में यकायक कोई गुस्से में फुसफुसाया

"उसने मुझे कैसे चुटकी भरी, छोटी सी कुतिया कहीं की।"

"कि—ि—स—जगह ?" बब्रोव मन्द ध्वनि में चिल्लाया।

उसी समय हंसी का ठहाका हुआ जो मायाकिन के खड़े होते ही एकदम बंद हो गया। उसने गला साफ किया, अपना हाथ गंजे सिर पर फेरा और सबका ध्यान खींचने के लिये चारों तरफ गंभीर नजर डाली।

"मित्रो ! कान खोलकर सुनिये !" कोनोनोव बोला।

---

*गानों के नाम हैं।

"व्यापारी सज्जनो !" मायाकिन ने तनिक हँसी के साथ शुरू किया "एक विदेशी शब्द है जिसे हम प्रायः विद्वानों और शिक्षित लोगों को प्रयोग करते सुनते हैं। इस शब्दा का नाम है 'कल्टीवेशन' (आचरण) अच्छा ! इसी शब्द के बारे में मेरे जैसा साधारण आदमी कुछ बातें कहना चाहता है।"

"सुनिये, सुनिये !"

"मान्य सज्जनो !" मायाकिन आवाज ऊँची करता हुआ बोला : "अखबार लगातार कहते रहते है कि हम व्यापारियों में 'कल्टीवेशन' नहीं। वे हमें जंगली बताते हैं। अच्छा, इस 'कल्टीवेशन' के क्या अर्थ हैं ? मेरे जैसे वृद्ध व्यक्ति के लिये ऐसी बातें सुनना आसान नहीं और इसलिये एक दिन मैंने इस शब्द का अर्थ निकालने का निश्चय किया।"

मायाकिन रुका और उसने एक विजयपूर्ण मुस्कराहट के साथ आगे बढ़ने से पहले श्रोताओं पर नज़र दौड़ाई :

"पता लगा कि इस शब्द का अर्थ व्यवस्था के प्रति प्रेम, उन्नति के प्रति प्रगाढ़ प्रेम। इस शब्द के यह अर्थ हैं। मैंने सोचा : दूसरे शब्दों में 'कल्टीवेट' आदमी वह है, जो व्यवस्था और उन्नति से प्रेम करता है। जो चीजों को बनाने का प्रेम रखता है, जो जीवन से प्रेम करता है, उसका मूल्य जानता है और साथ ही अपना मूलय भी समझता है··· । बहुत अच्छा !" वृद्ध मनुष्य के शरीर में एक कँपकपी सी दौड़ गई। उसके चेहरे की झुर्रियां उसकी मुस्कराती आँखों से ओठों की तरफ नीचे की ओर किरणों के रूप में फैल गईं, और उसका सारा गंजा सिर एक काले तारे की तरह दिखने लगा।

व्यापारी उसके प्रत्येक शब्द को ध्यान से सुनते हुए उसके मुख की ओर देख रहे थे। उनके चेहरे सावधानता से खिचे हुए थे। उनके शरीर मायाकिन के प्रारम्भिक शब्दों में जकड़े और जमे से पड़े थे।

"परन्तु, क्या यह बात है ? और यदि यह बात है, तो मैं कहूँगा कि

वे लोग हमें संस्कार-हीन जंगली बताते हैं और धूल उछाल कर हमारा अपमान करते हैं। क्योंकि वे शब्द के साथ प्रेम करते हैं न कि अर्थ के साथ। जबकि हम शब्द की जड़, उसके तत्व और सार को प्रेम करते हैं। हम काम से प्रेम करते हैं, हमारे जीवन का एक असली कल्ट (धर्म) है. अभिप्राय यह है कि हम जीवन की पूजा करते हैं—परन्तु वे नहीं। वे लोग बात पसन्द करते हैं, हम काम। और मेरे साथी व्यापारियो! हमारी कल्टीवेशन (आचरण) का प्रमाण और हमारी उन्नति के प्रेम का प्रमाण देखिये: वोल्गा! हमारी पवित्र प्यारी माँ वोल्गा! उसके जल का प्रत्येक बिन्दु हमारी प्रतिष्ठा की रक्षा कर रहा है और इस निन्दा की गन्द को धो रहा है। अभी केवल सौ वर्ष गुजरे हैं, जबकि पीटर महान् ने चपटे पेंदे वाले बोट वोल्गा के पानी में उतारे थे, और सज्जनो! आज हजारों स्टीम बोट उसके बन्दरगाहों पर चल रहे हैं। किसने उन्हें बनाया? रूसी मूझिक ने—वह, मनुष्य जिसके पास जरा-सी भी शिक्षा नहीं। ये बड़े-बड़े स्टीम बोट और माल ढोने वाले जहाज़ किसके हैं? हमारे। उन्हें किसने सोचा? हमने। यहाँ प्रत्येक चीज हमारी है। प्रत्येक चीज हमारे दिल, दिमाग, हमारे उद्योग और क्रिया प्रेम से पैदा हुई है। कभी किसी ने हमारी मदद नहीं की। हमने अपने आप डाकुओं के गिरोह को भगाया, जो वोल्गा नदी में घात लगाये पड़े रहते थे। अपने पैसे से हमने उन्हें नष्ट करने के लिये सिपाहियों को भाड़े पर लिया। और, फिर हमने हजारों पानी के जहाजों को वोल्गा के सैकड़ों मीलों में चलाना शुरू किया। वोल्गा नदी पर सबसे बढ़िया शहर कौन से हैं? वही जिनमें अधिकांश व्यापारी रहते हैं। शहर में किनके घर बढ़िया हैं? व्यापारियों के। गरीबों को कौन मदद देता है? हम एक-एक कोपेक इकट्ठा करके सैकड़ों हजारों रूबल दान में देते हैं। हमारे गिर्जे कौन बनाता है? हम। राज्य को सबसे ज्यादा कर कौन देता है? हम। सज्जनो! हम लोग ही काम के प्रेम से, जीवन को उत्तम बनाने के प्रेम से, ये सब बातें करते हैं। हम ही जीवन और व्यवस्था से प्रेम करते हैं। और वे हमारे बारे में क्या कहते हैं·········।" उसने अश्लील शब्दों पर ओठों को

चपचपाया। "यह बात है। उन्हें बकवास करने दीजिये, पिनव्हील अपना शब्द कर रहा है ; हवा बहना बन्द हो जाती है, पिनव्हील भी शब्द करना बन्द कर देता है। परन्तु तुम पिनव्हील से एक झाड़ू तक नहीं बना सकते ! एक निरर्थक खिलौना है। बस यह चारों तरह घूम सकता है और शोर कर सकता है, तथा उन लोगों ने, जिन्होंने अपने को हमारा जज समझ रखा है, क्या कुछ कभी किया है ? उन्होंने जीवन में क्या और कोई उन्नति की है ? मैंने अभी तक नहीं सुना। परन्तु हमारा काम तो साफ-साफ देखा जा सकता है। मेरे साथी व्यापारियो ! आप इस पृथ्वी के श्रेष्ठ लोग हो, कोई दूसरा इतना कठिन परिश्रमी और शक्तिशाली नहीं जितने कि तुम हो। यह सब जो कुछ हुआ है वह आपने ही किया है, और उसकी भी कोई सीमा नहीं जो आप कर सकते हैं, और इसलिये मैं आपकी प्रतिष्ठा में मदिरा-पान करता हूँ ! मैं आपको हृदय से प्रेम करता हूँ और आपका आदर करता हूँ, तथा मैं हृदय से कहता हूँ : रूस के वीर, कठोर श्रमी व्यापारियों की जय हो ! हमारी मातृ-भूमि के उदय के लिये आप सब फूलें और फलें !"

मायाकिन की पतली चिल्लाहट से वाह वाह का शोर हो गया। ये सब भारी, मांसल-शरीर एक दम हिल पड़े और उनके गलों से इतना जबर-दस्त शोर-शराबा हुआ कि उसके चारों तरफ सब चीजें काँपती दिखाई दीं।

"याकोव ! प्रभु प्रदत्त है !" मायाकिन के लिये अपने हाथ में शराब का गिलास थामे जुबोव बोला।

जब आनन्द और आवेग में सब व्यापारी अपने अपने हाथों में शराब के ग्लास थामे और आँखों में आँसू भरे मायाकिन की ओर भीड़ में बढ़े तो कुर्सियाँ उलट पड़ीं, मेजें टकराईं, बोतलें गिर पड़ीं और प्लेटें खड़खड़ाने लगीं।

"तुम्हें कैसी पसन्द आई ? कोनोनोव ने रोबुस्तोव को कन्धों से पकड़ कर उसे हिलाते हुए कहा : "समझा, क्या हुआ ? अभी तुमने एक महान् भाषण सुना है !"

"याकोव ! जरा माथा चूमने दो !"

"इसे हवा में उछालो ! हुर्रा !"

"संगीत ! संगीत !"

"संगीत! 'परशियन मार्च' !"

"संगीत नहीं !"

"क्या मायाकिन का भाषण काफी संगीत नहीं ! ऐह ! मायाकिन !"

"कद में छोटा है, पर दिमाग में बड़ा है !"

"यह झूंठ है, त्रोफीम !"

"बहुत बुरी बात है, मायाकिन ! तुम्हारी उमर ज्यादा हो रही है। तुम्हारे जाने के बाद हम क्या करेंगे ?"

"ओह ! इसका जनाजा कितना शानदार होगा ?"

"सज्जनो, आओ एक फंड की बुनियाद डालें जिसका नाम 'मायाकिन फंड' हो। मैं इसमें पहले हजार देता हूँ।"

"अपनी जबान बन्द रक्खो ! कौन सी जल्दी है !"

"सज्जनो !" मायाकिन ने फिर शुरू किया। उसका सारा शरीर काँप रहा था। "पृथ्वी पर हमारे सबसे श्रेष्ठ होने और अपने देश के सच्चे शासक होने का प्रधान कारण यह है कि हमारी [illegible] में किसान का खून दौड़ रहा है।"

"सच, कितना सच है !"

"हे परमात्मा, कैसा आदमी है !"

"इसे रोको मत" !

"हम शुद्ध-रक्त के रूसी हैं, और हम से जो बात होती है वह भी शुद्ध रक्त वाली रूसी होती है और इसलिये यह असली है। यह बात बहुत आवश्यक और प्रधान है !"

"ऐसे ही, जैसे कि दो और दो चार,"

"साफ़ है।"

"बुड्ढा उल्लू जैसा बुद्धिमान है !"

"और ऐसा नम्र है जैसा...... ।"

"जैसा बाज़ ! अ...हा...ह...ह !"

व्यापारियों ने वक्ता को चारों तरफ से घेर लिया और उसकी ओर आवेश के कारण शान्तिपूर्वक सुनने में असमर्थ होकर अपनी स्निग्ध-दृष्टियों से उसे निहारने लगे। उनकी आवाजों के शोर-शराबे, इञ्जन की धड़धड़ और पैडल-पहिये की धक-धक से, शब्दों का ऐसा तूफान उठ रहा था कि वृद्ध मनुष्य की आवाज उसमें विलीन हो गई।

"रूसी नाच हो ! कमारिन्स्की।"

"हमारे हाथों के काम को देखो !" मायाकिन नदी की ओर इशारा करता हुआ चिल्लाया : "हमारा, बस, यह हमारा ही ! हमने ही इस जीवन को बनाया है, जैसा कि यह है।"

अचानक एक आवाज सुनाई दी, जिसने दूसरी आवाजों को छिपा दिया।

"अच्छा, तुम हो, तुम ?" कोई चिल्लाया। "तुम .." और उसके गन्दे अश्लील शब्दों की लड़ी सी छूटी। उन्हें सबने सुना और क्षण भर के लिये एक निस्तब्धता छा गई, जब कि सब नज़रें वक्ता को ढूँढ़ रही थीं। इस क्षण केवल मात्र, जो आवाज सुनी जा रही थी, वह इञ्जन की आह और पतवार की जंजीरों की चीं, चीं।

"यह कौन बोला ?" त्यौरी चढ़ाते हुए कोनोनोव ने पूछा।

"ओह, जैसे कि बिना गन्दी हरकतों और नज़ारे के हम रह नहीं सकते", रेझनिकोव ने आह भरी।

व्यापारियों के चेहरों से भय, आश्चर्य, कौतूहल और भर्त्सना झलकने लगी और सब लोगों ने प्रतिवाद सा किया। याकोव मायाकिन ही अकेला ऐसा था, जिसने अपने मिज़ाज को ठीक रक्खा और जो कुछ हो रहा था उससे सन्तुष्ट दिखाई पड़ रहा था। वह पंज़ों के बल खड़ा हुआ। उसने गर्दन को आगे खींचा और टेबल के दूसरे छोर पर किसी चीज की ओर देखा।

उसकी आँखों में एक चमक थी, जैसे कि उसने जो कुछ देखा है, उससे, बहुत प्रसन्न है।

"फ़ोमा गोर्देयेव", इग्रोन युश्कोव गुनगुनाया।

सब चेहरे उस तरफ मुड़े जिधर मायाकिन देख रहा था।

उधर मेज पर अपने हाथ टिकाये फ़ोमा खड़ा था। वह दाँत निपोरे व्यापारियों की ओर अपनी खुली जलती आँखों से घूर रहा था। उसके निचले ओठ फड़फड़ा रहे थे, कन्धे हिल रहे थे और उंगलियाँ मेज के कोनों को पकड़े कपड़े को बुरी तरह आवेग में खींच सी रही थीं। उसकी क्रोधपूर्ण आकृति और उसकी आँखों की जंगली नज़र ने व्यापारियों को चुप कर दिया।

"तुम क्या घूर रहे हो ?" फ़ोमा ने एक और अश्लील शब्द-शृङ्खला को छोड़ते हुए अपने दिल का बोझ हलका किया।

"नशे में है", बब्रोन ने सिर हिलाते हुए कहा।

"इसे निमन्त्रण ही क्यों दिया ?" रेझनिकोव गुनगुनाया।

"फ़ोमा इग्नातेइविच, जरा होश में आओ", कोनोनोव ने गौरवपूर्ण आवाज में कहा। "यदि तुम···ने···कुछ बूँद···ज्यादा पी लिये हैं···तो चुपचाप एक केबिन में चले जाओ और आराम करो। लेट जाओ मेरे बच्चे, लेट जाओ।"

'अपना मुँह बन्द करो", फ़ोमा उसकी ओर आँखें घुमाकर गरजा: "मुझसे बात मत करो ! मैं शराब के नशे में नहीं हूँ ! मैं तुम सब लोगों से अधिक होश में हूँ, समझे ?"

"जरा एक मिनट, भले आदमी—तुम्हें किसने यहाँ निमन्त्रित किया है ?" अपमान से लाल चेहरा हुए विये कोनोनोव ने कहा।

"मैंने बुलाया है", मायाकिन ने कहा।

"ओह ! यदि यह बात है, तो फ़ोमा इग्नातेइविच, मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। परन्तु क्योंकि आप इसे यहाँ लाये हो, याकोव ! तुम्हें इस पर काबू करना चाहिये। यह···बड़ी अप्रिय···बात है।"

फ़ोमा हँसा और कुछ बोला नहीं। व्यापारी भी जो उसे देख रहे थे कुछ नहीं बोले।

"आह, फ़ोमा, फ़ोमा !" मायाकिन ने कहा। "मेरे बुढ़ापे को फिर बदनाम करता है ?"

"मेरे प्यारे धर्मपिता," फ़ोमा ने दांत निपोरते हुए जवाब में कहा, "अभी तक तो मैंने कुछ भी नहीं किया, इसलिये आपका झिड़कना समय से पहले है। मैं नशे में नहीं हूँ। मैंने एक बून्द भी नहीं पी है—बस बैठा सुनता रहा हूँ। सज्जनो ! कृपया मुझे भाषण करने दीजिये। अभी आपने मेरे धर्म-पिता का भाषण सुना है। अब धर्मपुत्र का सुनिये।"

"कैसा भाषण ?" रेझनिकोव ने कहा। "क्या हमें भाषण सुनने हैं ? हम तो यहाँ मनोरंजन के लिये आये हैं।"

"रहने दो, इसे ! फ़ोमा इग्नातेइविच।"

"इसकी जगह थोड़ा सा खाओ, पियो।"

"हाँ, आओ पीयें। आह, फ़ोमा तू बहुत अच्छे बाप का बेटा है।"

फ़ोमा मेज़ से हटा, अपने को सीधा किया और मुस्कराता हुआ चुप करने के उनके प्रयत्नों को सुनता रहा। उन सब प्रतिष्ठित नागरिकों में वह नौजवान और देखने में सुन्दर था। अपने मुकाबिले में पिलपिले बदन, और फूले पेटों वाले आदमियों के बीच अच्छी तरह फिट फ्रोककोट में एक सुन्दर आकृति में खड़ा था।

उसकी बड़ी बड़ी आँखों वाले चेहरे में एक बड़ी ताज़गी और समता थी जो दूसरे लोगों के फूले लाल चेहरों में लुप्तप्राय: थी। उसने अपनी छाती तानी, दांत भींचे, सामने से कोट खोल लिया और अपने हाथ पतलून की जेब में डाल लिये।

"तुम मेरा मुँह सुन्दर मुहावरों से बन्द नहीं कर सकते," उसने कठोर धमकी की आवाज में कहा। "मैं अपनी बात कहना चाहता हूँ, चाहे तुम सुनो या न सुनो। तुम मुझे बोट से भी हटा नहीं सकते।" उसने अपने सिर को

पीछे को खींचा और कन्धे ऊपर को उठाये। "और यदि कोई मुझे उंगली से भी छुएगा तो मैं उसे मार डालूँगा। परमात्मा की कसम, जहां तक होगा, मैं मार डालूँगा।"

लोगों का दल, जो उसके सामने खड़ा था, हवा में झाड़ियों की तरह हिलने लगा। भयपूर्ण कानाफूसियाँ सुनाई देने लगीं। फ़ोमा का चेहरा मलिन पड़ गया और उसकी आँखें पहले से भी बड़ी दिखाई देने लगीं।

"यहाँ कहा गया है कि, आप लोगों ने ही इस जीवन को, जैसा कि यह है, बनाया है, और जो कुछ इसमें अच्छा और ठोस है वह आपके हाथों का ही काम है।" उसने अपनी सांस को ऊपर खींचा। एक अवर्णनीय घृणा के साथ उसने इन चेहरों की ओर निहारा, जो क्रोध से सूज रहे थे। व्यापारी लोग और नजदीक घिर आये और एक शब्द तक न बोले।

"यह सब क्या है, ऐं? कोई लिखा-पढ़ा रहा है, या बुद्धि से बोल रहा है?" पिछली कतार से कोई गुनगुनाया।

"तुम कुत्तों के बच्चो—ओ!" फ़ोमा ने सिर हिलाते हुए सम्बोधन किया। "तुमने क्या किया है? संसार को उन्नत करने की बजाय तुमने इसे जेल में बदल दिया है; इसमें व्यवस्था लाने की बजाय, तुमने लोगों को जंजीरों में जकड़ दिया है। कोई भी मनुष्य, जिसमें जीवन की चिनगारी है, तुम्हारी गला घोटने वाली दुनियाँ में सांस नहीं ले सकता। तुम लोग—बस घातक हो, घातक, बस यही हो! और क्योंकि लोग बहुत दिनों से सहन करते आ रहे हैं, तुम अभी तक बच रहे हो। इसे मत भूल जाना।"

"यह क्या हो रहा है?" रेझनीकोव ने घृणापूर्वक हाथ मसलते हुए प्रतिवाद किया। "मैं ऐसा एक भी शब्द सुनना सहन नहीं कर सकता।"

"गोर्देयेव! हुशियार!" बब्रोव चिल्लाया। "तुम ऐसी बातें कह रहे हो, जिनके लिये तुमको अफ़सोस होगा।"

"तुम जानते हो ऐसी बातें कहने के लिये तुम्हें क्या मिल सकता है, ओह! ओह! ओह!" जुबोव ने सावधान किया।

"चुप !" फ़ोमा, जिसकी आँखों में खून उतर आया था, फुंकारा। "सूअरो ! जितनी चाहो बकवास कर लो।"

"सज्जनो !" मायाकिन ने भयानक, शान्त और धातु पर चलती रेती के समान घिसती आवाज में कहा। "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इसे रोकिये मत। यदि इसे इस बात से कुछ आनन्द आता है तो बोलने दीजिये। इससे आपको कोई चोट नहीं पहुंचेगी।"

"ओह क्यों नहीं पहुँचेगी ?" युश्कोव चिल्लाया।

स्मोलिन ने, जो फ़ोमा के बराबर खड़ा था, इसके कान में फुसफुसाया: "भले आदमी, बन्द करो ! तुम पागल तो नहीं ?"

"परे हट !" फ़ोमा ने उसकी तरफ जलती आँखों से देखते हुए तीक्ष्णता से कहा।

"जाओ, मायाकिन के हाथ चाटो, शायद वह कोई टुकड़ा फेंक दे।"

स्मोलिन ने एक हल्की सी सीटी बजाई और हट कर एक तरफ चला गया। एक एक करके सब व्यापारी भी दूर चले गये। इससे फ़ोमा और भी क्रोध में आ गया। वह उन्हें अपने शब्दों से रोकना चाहता था, परन्तु उसे पर्याप्त तीव्र शब्द नहीं मिल रहे थे।

"सो, आप लोग हो जिन्होंने यह जीवन, जैसा कि यह है, बनाया है, क्यों ?" वह चिल्लाया। "और आप लोग कौन हो, डाकू ! धोखेबाज !'

कुछ एक आदमी पीछे को मुड़ आये जैसे कि उसने उन्हें नाम से बुलाया हो।

"कोनोनोव ! तुम पर, जो तुमने उस छोटी सी लड़की के साथ किया है, कब अभियोग चलेगा ? तुम्हें इसके लिये कठोर कारावास मिले। यह तुम्हारी विदाई होगी, कोनोनोव ! बहुत बुरी बात है। तुमने यह बढ़िया बोट अभी बनाया है। निश्चय ही वे तुम्हें जहाज पर साईबेरिया ले जायेंगे।"

कोनोनोव एक कुर्सी में धस गया। उसके चेहरे पर खून दौड़ गया, और वह अपना मुक्का हवा में हिलाने लगा।

"बहुत अच्छा··· मैं तुम्हें दिखाऊँगा······मैं इसे [illegible]'

उसका चेहरा बिगड़ गया था और ओंठ बुरी तरह काँप रहे थे। जिससे फ़ोमा समझ गया कि इसी हथियार से इन लोगों को अच्छी चोट मारी जा सकती है।

'तुम कहते हो कि तुम जीवन को उन्नत करने वाले हो ? अच्छा, गुश्चिन, तुम अपने भतीजों को कभी भीख देते हो ? तुम उन्हें प्रति दिन सिर्फ कोपेक ही दे दिया करो। तुमने उनका काफी धन चुराया ···अब देने में तुम्हें नुकसान नहीं रहेगा। और बब्रोव ! यहाँ तुमने अपनी रखेल के खिलाफ क्यों झूंठ बोला कि उसने तुम्हारा पैसा चुरा लिया। यदि तुम उससे ऊब चुके थे तो उसे अपने बेटे को दे देते···कम से कम तुम्हारी अन्तिम प्रियतमा को तो उसने ले ही लिया है। तुम्हें नहीं पता ? ओह, मोटे सूअर !···और लूप, तुम ! तुमने वेश्या-गृह फिर क्यों नहीं खोल लिया ताकि तुम अपने भद्र ग्राहकों को उन्हें मारने से पहले लूट सकते। मैं अभी भी देख रहा हूँ कि तुम यही कर रहे हो। तुम्हारे जैसे पवित्र चेहरे वाले मनुष्य के लिये नर-हत्या करके बच निकलना बहुत आसान दिखता है। तुमने जिस मनुष्य की पीछे हत्या की थी वह कौन था; लूप !"

फ़ोमा यह सब कहता हुआ हँसता जा रहा था। वह देख रहा था कि उसके शब्दों का सुनने वालों पर कैसा अच्छा असर हो रहा है। पहले पहल जब उसने सबको एकत्रित रूप से सम्बोधित किया तो वे उससे परे हट गये। वे दूर चले गये और वहाँ छोटे छोटे दलों में खड़े हुए अपने चेहरों पर घृणापूर्ण मुस्कान से उसे निहारते रहे। उसने उनकी मुस्कराहट देखी और उनकी प्रत्येक हरकत की भर्त्सना की। और यद्यपि उसके शब्द उन्हें नाराज कर रहे थे उनसे उन्हें गहरी चोट नहीं लग रही थी। इससे उसका दिल बैठ गया और उसे अपने आक्रमण की असफलता को अस्वीकार करना पड़ा। परन्तु ज्योंही उसने अलग अलग व्यापारियों के बारे में नाम लेकर कहना शुरू किया उसके श्रोताओं में एक अचानक परिवर्तन पैदा हो गया।

परन्तु जब कोनोवोन फ़ोमा के परिहास से कुर्सी में गिर कर ढेर हो गया, फ़ोमा ने कुछ व्यापारियों के श्रोठों पर एक मुस्कराहट फूटती देखी। श्रौर उसने सुना कि किसी ने श्राश्चर्य श्रौर स्वीकृति में कानाफूसी की :

"लो, बहुत अच्छा रहा।"

"इससे फ़ोमा के अन्दर एक नई शक्ति श्रा गई श्रौर वह जिस पर उसकी नजर पहले पड़ी, उस पर ही निन्दा श्रौर मखौल की बौछार करने लगा।

उसके श्रोता सांस रोक कर चुपचाप उसकी बात सुनने लगे श्रौर उनमें से कई समीप श्रा गये।

कुछ श्रावाजें प्रतिवाद में भी श्राईं, परन्तु वे न ऊँची थीं, न जोरदार श्रौर जैसे ही फ़ोमा ने नये नाम लेने शुरू किये, व्यापारियों के कान खड़े हो गये श्रौर वे नये शिकार की श्रोर ईर्ष्यापूर्ण तिरछी नज़रें डालने लगे।

बब्रोव बेचैनी के साथ तनिक हँसा श्रौर उसकी छोटी-छोटी श्राँखों ने फ़ोमा को श्रारपार छेद दिया। लूप रेझनिकोव अपनी बाँहें हवा में हिला रहा था श्रौर चारों तरफ हाँफता फिर रहा था :

"श्राप लोग मेरे गवाह हैं···ऐसी बात के लिये मैं इसे कभी माफ नहीं कर सकता! मैं उसे अदालत में ले जाऊँगा···! इसने यह हौसला कैसे किया?"

फिर वह अचानक फ़ोमा की श्रोर बाँह फैलाकर चिल्लाया :

"इसे बाँध लो!"

फ़ोमा हँसा।

"सच्चाई नहीं बाँधी जा सकती! झूँठ!" वह बोला।

"अच्छा, हम देखेंगे इस बात को!" कोनोनोव ने भारी श्रावाज में कहा।

"सज्जनो", मायाकिन की पतली श्रावाज श्राई : "मैं श्रापसे प्रार्थना करता हूँ कि इसकी श्रोर अच्छी नज़र से देखें—अपने श्राप देख लें कि यह कैसा है।"

एक-एक करके सब व्यापारी फ़ोमा के नजदीक घिर आये, और उसने उनके चेहरों पर फूला हुआ संतोष, कौतूहल और भय तथा क्रोध का एक भयङ्कर भाव देखा। बहुत गरीब मेहमानों में से एक ने उसके कान में कहा :

"बढ़े जाओ, और उन्हें यही दो। ये सब तुम्हारी ही नामवरी होगी!"

"तुम किस बात पर हँस रहे हो, रोब्रुस्तोव ?" फ़ोमा चिल्लाया : "तुम किसलिये इतने प्रसन्न हो ? तुम्हें भी साईबेरिया जेल में होना चाहिये···।"

"इसे किनारे उतार दो !" रोबुस्तोव अपने पाँव पर उछलता हुआ चिल्लाया।

"पीछे को मोड़ो ! पीछे शहर की ओर ! मेयर के पास !" कोनोनोव बोट के कैप्टन की ओर चिल्लाया।

"यह सब बनावटी खिलवाड़ है। यह जानबूझ कर किया गया है। उन्होंने उसे पहले शराबी बना लिया है।"

"नहीं, यह खुली बग़ावत है।"

"इसकी मुश्कें कस दो ! बस, मुश्कें कस दो !"

फ़ोमा ने एक शेम्पेन की खुली बोतल पकड़ी और उसे हवा में हिलाया।

हाथ परे रक्खो ! चाहो या न चाहो, तुम लोगों को मेरी बात सुननी ही पड़ेगी।"

और फिर क्रोध की तरंग, और इन लोगों को अपने आघातों के नीचे तड़फते देख आनन्द की उमंग में उसने उनके नाम ले लेकर पुकारना शुरू किया और अपने शिकारों को गन्दी-से-गन्दी भाषा में गालियाँ देना शुरू किया। एक बार फिर प्रतिवाद और निन्दा की फुसफुसाहट बन्द हो गई। जो लोग फ़ोमा को नहीं जानते थे, वे उसकी ओर आश्चर्य और कौतूहल से देखने लगे, और कुछ सहमति से भी। उनमें से एक धौले बालों वाला नाटा-सा गुलाबी गालों और चूहे जैसी आँखों वाला आदमी अपमानित व्यापारियों की ओर मुड़ा और फुसफुसाहट की आवाज में बोला :

"यह इसकी आत्मा की आवाज है ! इसका कोई ख्याल न करो...। इसे तो सहन ही करना चाहिये... । यह तो पैगम्बर का इन्साफ है । हम सब पापी हैं : और हमें सच-सच कहना चाहिये, क्योंकि हम ऐसे ही हैं... ।"

"उन्होंने उसे अपनी फुसकारों से चुप कर दिया, और उसे नजर से दूर लुप्त कर दिया ।"

"जुबोव !" फ़ोमा ने पुकारा : "तुमने कितने लोगों को बिना कोपेक के खदेड़ दिया है ? क्या तुम्हारे स्वप्नों में इवान पेत्रोविच मायाकिन्निकोव का भूत नहीं आता, जिसने तुम्हारे कारण अपने को फाँसी लगा ली थी ? और क्या यह सच है कि तू प्रति रविवार गिरजे की दान की थाली में से दस चाँदी के रूबल चुरा लेता है ?"

जुबोव इस आक्रमण से असावधान पकड़ा गया और उसकी एक बाँह हवा में ही रह गई । जब उसे जरा होश आया, वह ऊपर-नीचे उछल-कूद करता हुआ चिल्लाने लगा :

"अच्छा ! तू मेरे पीछे भी है ? यह बात है । मेरे भी पीछे है ?" उसने गाल बजाये, फ़ोमा की ओर मुक्का दिखाया और चिल्लाता रहा : "मैं तुम्हारी पादरी से शिकायत करूँगा ! पागल, अधार्मिक ! तेरे जैसों को कठोर कारावास मिलना चाहिये ।"

जहाज पर गड़बड़ बढ़ गई, और क्रोध से इन लाल-पीले लोगों को देख फ़ोमा अपने को कहानियों के उस वीर की तरह अनुभव करने लगा, जो पंखों वाले साँप को मार रहा हो ।

वे चिल्लाते और अङ्ग-विक्षेप करते घूमने लगे । उनमें से कुछ के चेहरे लाल, कुछ के पीले और सफेद थे और वे अपमान तथा निन्दा की इस धारा को रोकने में शक्तिहीनता अनुभव कर रहे थे ।

"जहाज़ के मल्लाहों को बुलाओ !" रेझेनिकोव ने कोनोनोव के कन्धे पकड़ते हुए कहा : "इस सब का क्या मतलब है, इल्या ? क्या, तुमने हमारा तमाशा बनाने के लिये यहाँ बुलाया है ?"

"कुत्ते का बच्चा !" जुब्रोव चिंचियाया :

व्यापारियों का एक दल मायाकिन के चारों ओर घिर आया। वह उनके साथ शान्त भाव से बोल रहा था, और वे बीचबीच में सिर हिलाते हुए, क्रोधपूर्ण चेहरे से उसकी बातें सुन रहे थे।

"चलो, याकोव ! ऐसा ही करो।" रोबुस्तोव ने ऊँची आवाज़ में कहा : "हम तुम्हारे गवाह हैं। चलो।"

इस सब शोर-शराबे के ऊपर फ़ोमा की आवाज उठी।

"संसार में उन्नति करने की बजाय तुमने इसे कूड़ा करकट और गन्द का गड्ढा बना दिया है। तुम कर्मशील मनुष्य अवश्य होगे, परन्तु तुमने सब गन्द इकट्ठा किया है—जिससे बदबू उठ रही है। क्या तुम्हारी कोई आत्मा नहीं ? क्या तुम्हारा कोई परमात्मा नहीं ? हाँ, बस सोना ही तुम्हारा परमात्मा है। तुमने अपनी आत्मा को कहाँ खदेड़ दिया है ? हाँ, तुमने कहाँ खदेड़ दिया है। ओ ! तुम खून चूसने वालो ! तुम दूसरों पर गुजारा करते हो, तुम दूसरों के हाथों से काम करते हो। इस तुम्हारे 'महान् कार्य' की बदौलत कितने लोगों को खून के आँसू बहाने पड़े हैं। तुम जैसे दोगलों के लिये नरक भी बहुत अच्छी जगह है। आग की शुद्ध लपटों में नहीं, परन्तु उबलते गन्द में तुम्हें जलाना चाहिये—और सदियों तक तुम्हें यह यातना भोगनी चाहिये।"

अचानक एक हँसी के दौर में, फ़ोमा ने अपना सिर पीछे को फेंका अपने बगल को बचाया और अपने पाँव पर झूलने लगा। इसी क्षण कुछ आदमियों ने आपस में आँखें मारीं और वे एकदम फ़ोमा पर लपक पड़े। उसे अपने बोझल शरीर के नीचे दबा लिया। एक लड़ाई शुरू हो गई।

"पकड़ लिया !" कोई खुशी में चिल्लाया।

"अच्छा !…यह बात है", फ़ोमा हाँफा।

काली आकृतियों का एक दल थोड़ी देर तक फ़ोमा से अपने भारी पाँव मारते हुए तथा गला घोटने की आवाज करते हुए गुत्थम-गुत्था करता रहा।

"इसे नीचे फेंक दो !"

"इसके हाथ पकड़ लो···इसके हाथ !"

"ओह, मेरी दाढ़ी !"

"हाथ परे रखो ! हाथ परे रखो, मैं कह रहा हूँ !"

"सब ठीक है !"

"हे भगवान्, कैसे रग-पट्ठे हैं !" वे लोग फ़ोमा को खींचकर कैप्टिन की केबन के डेक तक ले आये, फिर अपने कपड़ों को झाड़ने और सीधा करने लगे और अपने चेहरों से पसीना पोंछने लगे। फ़ोमा बिना कुछ बोले पड़ा रहा। उसके कपड़े फट चुके थे और किसी अप्रिय वस्तु से सन गये थे, उसके हाथ और पाँव तौलियों से बाँधे हुए थे।

अब उनकी बारी थी कि सब उस पर ताने मारें। सबसे पहले ज़ुबोव ने शुरू किया। वह उसके पास गया और उसकी पसलियों में एक लात मारी।

"अच्छा ! पैगम्बर की कड़कती आवाज चुप हो गई है !" उसने बदले की खुशी में सारे शरीर से काँपते हुए मखौल में कहा : "क्यों, बेबीलोन का कैदी होना कैसा लगता है ?···ह···ह···ह।"

"ज़रा ठहरो", फ़ोमा ने उसकी ओर बिना देखते हुए कहा : "ज़रा ठहरो, ज़रा ठहरो, जब तक मैं साँस ले लूँ। तुमने मेरी जबान तो नहीं बांधी है।" परन्तु वह जानता था कि वह उसके अलावा और कुछ नहीं कर सकता था—इसलिये नहीं क्योंकि वह बँधा हुआ था, परन्तु इसलिये क्योंकि उसके अन्दर कोई चीज बुझ चुकी थी और उसकी आत्मा में अँधेरा तथा रिक्तता आ गई थी।

येझनिकोव भी आया और ज़ुबोव के साथ शामिल हो गया। इनके साथ और लोग भी मिल गये। बब्रोव, कोनोनोव और दूसरे लोग यकोव मायाकिन के पीछे-पीछे कैप्टिन के ब्रिज की ओर आये, जहाँ वह हल्की आवाज में कुछ बहस करते रहे।

बोट पूरे वेग से भाप छोड़ता हुआ शहर की ओर जा रहा था। इञ्जन की